अवधी शब्द-कोश

संपादक

प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित

डॉ० सजीवनलाल यादव

विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन

लखनऊ विश्वविद्यालय

BVP - 2113

11/6/18

40/54

Request for book

अवधी शब्द-कोश

संपादक
प्रो० सूर्यप्रसाद दीक्षित
डॉ० सजीवनलाल यादव

विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन
लखनऊ विश्वविद्यालय

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, लखनऊ के वित्तीय
अनुदान द्वारा प्रकाशित

अवधी शब्द-कोश

संपादक
डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित
डॉ० सजीवनलाल यादव

प्रकाशक : विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन
लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण 1996

मूल्य 50/- रुपये मात्र।
स्वत्त्वाधिकार- संपादक

मुद्रक : प्रकाशन केन्द्र, डालीगंज रेलवे क्रॉसिंग,
सीतापुर रोड लखनऊ - 226 020
फोन : 73035, 75538

आमुख

हिन्दी की विभिन्न जनपदीय विभाषाओं में सर्वाधिक प्राचीन और भाषा–भाषियों के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है अवधी। पदमावत और रामचरितमानस की भाषा होने के कारण यह विश्व मंच पर प्रतिष्ठित हो गयी है। सम्प्रति इसके अनेक रूप प्राप्त होते हैं, जिन्हें पूर्वी, पश्चिमी और मध्य अवधी कहा जाता है। यह भाषा उत्तर प्रदेश के अवध अंचल के एक दर्जन से अधिक जनपदों की बोल–चाल की भाषा है, सर्जना की भाषा है और संचार की भाषा है। ऐसे भी प्रमाण मिले हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि यह भाषा कुछ रजवाड़ों में प्रशासन की भाषा भी रही है। वस्तुतः इसका एक सार्वजनीन रूप है, इसीलिए इसे बोली न कहकर भाषा कहा जाता है।

दुर्भाग्य का विषय है कि ऐसी महिमा मण्डित भाषा का कोई मानक कोश उपलब्ध नहीं है। लगभग अर्द्धशती पूर्व श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' ने इसका एक कोश बनाने का उपक्रम किया था, किन्तु अधुना वह उपलब्ध नहीं है। दूसरे वह शब्दकोश सम्पूर्ण अवधी क्षेत्र का आच्छादन नहीं कर पाता, क्योंकि उसका शब्द संचय मुख्यतः पश्चिमी अवधी तक सीमित है। विगत दशक में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने अवधी कोश की एक महत्वाकांक्षी योजना बनायी थी। समय–समय पर सम्पादक मंडलों का पुनर्गठन भी किया गया, किन्तु अद्यावधि वह कार्य पूरा नहीं हो पाया। इस बीच डा० हरदेव बाहरी ने भी एक प्रयास किया, किन्तु कुल मिलाकर 'ढाक के वे ही तीन पात्र।'

अवधी भाषा–संग्रह की इस दुर्दशा की वस्तुस्थिति पर विचार करते हुए हमारे विभागीय प्रकाशन ने यह निर्णय लिया कि अपने सीमित संसाधनों द्वारा अवधी का एक व्यावहारिक लघु कोश शीघ्रातिशीघ्र संपादित एवं प्रकाशित किया जाए। चूंकि मेरे निर्देशन में तीन वर्ष पूर्व 'अवधी की ग्रामोद्योग शब्दावली का अध्ययन' मेरे प्रिय अन्तेवासी डा० सजीवन लाल के माध्यम से सम्पन्न हुआ था। इसलिए मैंने इस संपादन कार्य में उन्हें नियोजित किया। यह बड़े संतोष का विषय है कि उन्होने बड़े श्रम के साथ इस कार्य में हाथ बँटाया।

इस कोश को तैयार करते हुए मुख्य ध्यान यह रखा गया है कि इसमें केवल ठेठ अर्थात् देशज शब्दों का समावेश किया जाये। अर्थ–संकटवश इसका आकार छोटा ही रखा गया है। विभाग ने कभी दस खण्डों में सूर ब्रज भाषा–कोश प्रकाशित किया था।

यह पुस्तक उसका दशमांश है, किन्तु हिन्दी जगत् के एक अधूरे कार्य की आंशिक क्षतिपूर्ति का यह कार्य अवश्य है। इसके मुद्रणार्थ 'भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक' के महानिदेशक डॉ० शैलेन्द्र नारायण और उनके हिन्दी अधिकारी डा० देवेन्द्र नाथ त्रिवेदी से जो वित्तीय सहायता और रागात्मक संवेदना प्राप्त हुई है, उसके लिए मैं अपने प्रकाशन की ओर से और स्वयं अपनी ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

आशा है कि जनपदीय साहित्य संस्कृति के अध्येता पूर्ण मनोयोग के साथ इसका उपयोग करेंगे तथा लाभान्वित होंगे।

साभिवादन-

21 अगस्त 1996
तुलसी-जयंती

डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित
आचार्य एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय

दो शब्द

जिस अंचल की मिट्टी में जन्म होता है, उस मिट्टी से भावात्मक लगाव स्वाभाविक ही होता है। उसकी भाषा, उसकी संस्कृति आदि के प्रति आस्था स्वतः रूपायित होने लगती है। इसीलिए अवधी होने के कारण अवधी भाषा के प्रति मेरा भी ध्यान आकर्षित हुआ और अवधी भाषा के लिए समर्पित होने की मन में लालसा उत्पन्न हुई तथा इसकी सेवा करने का अवसर प्राप्त भी हुआ। अस्तु, अवधी भाषा की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि अवध की सीमाएँ लांघकर अन्य अंचलों में भी फैल गयी। अवधी साहित्य की समृद्धि हेतु 'मानस' जैसे विश्वविश्रुत महाकाव्य स्वयं प्रमाण हैं। अवधी साहित्यिक भाषा होने के साथ-साथ जनभाषा के रूप में अत्यन्त ग्राहय हुई। जिस भाषा का इतना बड़ा साहित्य हो, उसका कोई व्यवस्थित व प्राप्य कोश न हो तो उसकी सार्थकता अपूर्ण रहती है। इसी को ध्यान में रखकर, मेरे सभी प्रकार से हितू परमश्रद्धेय गुरुदेव आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित जी ने इस शब्द-कोश को स्वरूप प्रदान करने का बीड़ा उठाया तथा उनके स्नेह में मुझे भी इसमें हाथ बँटाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मैं भी आशा करता हूँ कि अवधी साहित्य व संस्कृति के अध्ययन-कर्त्ता इससे लाभान्वित होंगे।

डॉ० सजीवनलाल. यादव

संकेताक्षर

पु० – पुल्लिग	स्त्री० – स्त्रीलिंग
अ० – अरबी	सहा० क्रि० – सहायक क्रिया
संबो० – संबोधन	अव्य० – अव्यय
पर० – परसर्ग	वि० – विशेषण
क्रि० अ० – क्रिया अकर्मक	क्रि० स० – क्रिया सकर्मक
क्रि० वि० – क्रिया विशेषण	फा० – फारसी
सं० – संस्कृत	अं० – अंग्रेजी
उदा० – उदाहरण	कहा० – कहावत

अंकृतित- (पु०) एक विशेष प्रकार का बुरा स्वाद

अँकनहा- (वि०) कम उपजाऊ (खेत)

अँकनी- (स्त्री०) एक बार ओसाने के बाद बचा हुआ अनाज का खुरदरा भाग

अँकरा- (पु०) एक घास; अंकुर; कंकड़ का टुकड़ा

अँकवारि- (स्त्री०) आलिंगन; दोनों हाथ फैलाकर किसी को घेरने या भेंटने की मुद्रा

अँकाइब- (क्रि० स०) दूसरे से अँकवाना या अंदाज लगवाना

अँकुरी- (स्त्री०) जूता से फर्मा निकालने का लौह-यंत्र; अंकुर; लोहे की छड़, जिसका एक सिरा टेढ़ा हो

अँकोर- (पु०) रिश्वत

अँखिया- (स्त्री०) जेवरात में नक्कासी करने की कलम; आलू में अंकुरण चिह्न; आँख

अँखुआ- (पु०) अंकुर

अंगउबु- (क्रि० अ०) सहन करना

अंगनई- (स्त्री०) छोटा आँगन

अंगरखा- (पु०) ऊपर पहनने की एक पोशाक; कुर्ता

अंगरथ- (अव्य०) समायोजित; काम; प्रयोग; -**लगउबु (क्रि० स०) समायोजित करना**

अंगरा- (पु०) अंगारा

अंगरी- (स्त्री०) जिरह, बख्तर; लोहे के चमड़े का दस्ताना

अंगवारा- (पु०) खेत की जुताई में पारस्परिक सहायता; गाँव के छोटे हिस्से का मालिक

अंगस-बंगस- (वि०) उल्टा-सीधा, टेढ़ा-मेढ़ा

अंगा- (पु०) एक लम्बा बंददार मर्दाना पहनावा, अंगरखा

अंगारी- (स्त्री०) गड़ासे से काटा गया ईख का टुकड़ा

अंगिराबु- (क्रि० अ०) अंगड़ाई लेना

अंगुठा- (पु०) पैर के अंगूठे का आभूषण

अंगुरत्राना- (पु०) अंगुलियों का शीशा युक्त गहना; आरसी, हथपान

अंगुरीय- (स्त्री०) अंगूठी

अंगुसा- (पु०) अंकुर

अंगुसी- (स्त्री०) हल का फाल; सुनारों की वह नली, जिससे चिराग को फूँककर टाँका जोड़ते हैं

अंगौरिया- (पु०) मजदूरी के बदले हल-बैल लेकर अपनी खेती करने वाला मजदूर

अंघड़ा- (पु०) पैर के अंगूठे में पहनने का काँसे का छल्ला

अँचर-धरउआ- (पु०) विवाह की रस्म विशेष, जिसमें वर ससुराल में कुछ स्त्रियों का अंचल पकड़ लेता है और वे स्त्रियाँ कुछ न कुछ उपहार देकर ही मुक्ति पाती हैं

अँचेल्याबु- (क्रि० स०) खाने के बाद हाथ-मुँह धोना

अंछर- (पु०) अच्छर, अक्षर

अंजहा- (वि०) अनाज या गल्ले का (बाजार)

अंजुरी- (स्त्री०) खलियान में पुण्यार्थ निकाला गया अन्न

अंजोर- (पु०) उजाला, चाँदनी; **कबीर- यही अंजोरों बिछाय लेव**

अँटउबु- (क्रि० स०) वितरण पूर्ण करना, पहुँचाना; अँटइबु

अंटसंट- (वि०) ऊटपटांग, बेसिर-पैर की बात

अंटिया- (स्त्री०) छोटा मचान

अंटी- (स्त्री०) पास में पैसे रखने की शैली

अँठिलाबु- (क्रि० अ०) इठलाना; ठठोली करना

अँड़बु- (क्रि० अ०) रुकना; हठ करना

अँड़ार- (पु०) पशुशाला

अँड़िया- (स्त्री०) बाजरे की पकी हुई बाल; अटेरन पर लपेटा हुआ सूत

अंडुरी- (स्त्री०) कपड़े या रस्सी से बनी अड्डी, जो स्त्रियाँ सिर पर घड़ों के नीचे रखती हैं

अँतरा- (पु०) सामयिक अंतराल; अधिक कच्चे दानों का भुट्टा

अंतरिख- (पु०) अंतरिक्ष

अँतरी- (स्त्री०) जुताई में दो कूँड़ों के बीच में छूटी हुई जमीन; मक्का के वे छोटे-छोटे भुट्टे, जिनमें दाने न पड़े हों

अंते- (अव्य०) अन्यत्र
अंदुआ- (स्त्री०) हाथी के पैर में डाली गई काठ की बेड़ी
अंदेसा- (पु०) सन्देह
अंदोरा- (पु०) आंदोलन
अंबार- (फा० पु०) ढेर, समूह
अंबावस- (स्त्री०) अमावस्या
अंबिरथा- (वि०) अमिरथा, निष्प्रयोजन
अंबीर- (वि०) अमीर, मालदार (पु०) गुलाल
अंबोलवा- (पु०) छोटे-छोटे आम के पौधे
अँवनि- (स्त्री०) पहिया में लगी लोहे की छड़
अंसड़ या अंसढ़- (स्त्री०) शरीर की विशालता
अइँच-पइँच- (वि०) इधर-उधर अथवा व्यर्थ की (बात)
अइँचा-खइँची- (स्त्री०) खींचातानी
अइँठुआ- (पु०) जुआँ को बाँधने वाली रस्सी, रस्सी ऐंठने में प्रयुक्त डण्डा; वि० अइँठना;
अइँठोहर- (वि०) अकड़ने वाला; गर्वीला
अइँड़ी- (वि०) घमंडी
अइँढ़ना- (पु०) बैलगाड़ी में इस छोटे डण्डे से बररु (रस्सी) ऐंढ़ा (घुमाया) जाता है; ऐंठना
अइगुन- (पु०) दुर्गुण, हर्ज, हानि; (सं०) अवगुण
अइतवार- (पु०) रविवार, आदित्यवार
अइनी- (स्त्री०) वह कलम, जिसमें लोहे की निब हो
अइपनु- (पु०) हल्दी और चावल का पिसा हुआ घोल
अइबी- (वि०) दुर्गुणी, ऐबवाला
अइया- (स्त्री०) पति अथवा पिता की माँ; पितामह की माँ
अइल्याबु- (क्रि० अ०) मुरझाना
अइसी- (अव्य०) इधर
अइसै- (अव्य०) ऐसेही
अई- (स्त्री०) कमी, अभाव
अउँकरि- (स्त्री०) गर्वीली बात; कड़वी बात
अउँकी-बउँकी- (वि०) बेसिर-पैर की बात; इधर-उधर की या टालने की बात
अउँगबु- (क्रि० स०) धुरी में तेल आदि लगाना;- नु (पु०) अउँगने में प्रयुक्त सामान
अउँघाई- (स्त्री०) नींद
अउँठा- (पु०) अंगूठा
अउँधबु- (क्रि० अ० स०) उलट जाना, उलट देना
अउँधी- (स्त्री०) आग रखने में प्रयुक्त मिट्टी का पात्र; निआई
अउँसा- (पु०) नये अन्न का वह अंश, जो दान में दिया जाता है
अउगी- (स्त्री०) बैल आदि हाँकने में प्रयुक्त डण्डी
अउचटि- (स्त्री०) विपत्ति
अउजन- (वि०) अकेला, निराश्रित
अउजी- (अ० अव्य०) स्थानापन्न, बदले में
अउझड़ी- (वि०) सनकी
अउटबु- (क्रि० स०) दूध जलाकर खोया बनाना; औटना
अउढ़ा- (पु०) पंदा
अउदक- (स्त्री०) बरसात की शुभ मुहूर्त या बारी, समय
अउधरबु- (क्रि० स०) प्रारम्भ करना
अउरागोंज- (पु०) गड़बड़ स्थिति (वि०) मिश्रित; जो अलग न किया जा सके
अउरी- (वि०) दूसरी; **-वार- दूसरी तरफ**
अउरेबदार- (वि०) तिरछी सिलाई वाला
अउल- (पु०) गर्म गिचपिचा मौसम, जिसमें हवा बन्द हो
अउलाई- (स्त्री०) वमन करने की इच्छा
अउला-पउला- (अर० वि०) मस्त; उदार; मनमौजी
अउलि-अउलि- (क्रि० वि०) बार-बार (कटु स्मृति अथवा पश्चात्ताप के लिए)
अउलिया- (पु०) मस्त; मनमौजी पुरुष
अउली- (स्त्री०) खेत से पहले पहल काटकर लाया हुआ नया हरा अन्न; बिसुआ
अउवल- (वि०) प्रथम, श्रेष्ठ
अउसनि- (स्त्री०) उमस भरा मौसम, हवाहीन गरम मौसम
अउसबु- (क्रि० अ०) गर्मी में परेशान हो जाना

अउसान बीबी- (स्त्री०) दुरकइयाँ या दुरदुरइयाँ का भोग लेने वाली आराध्य देवी

अउसाहिन- (वि०) पसीने में भीगे हुए कपड़े की भाँति दुर्गंधमय

अउसेवरि- (स्त्री०) कष्टदायक अवस्था

अउँठा- (पु०) अंगूठा; (मुहा०) अंगूठा दिखाना, इनकार कर देना

अकंत- (वि०) एकांत, सूना, निर्जन

अकई- (वि० स्त्री०) दूसरी

अकउआ- (पु०) आक; मदार, उसका फल, पेड़ आदि

अकउटबु- (क्रि० अ०) एक हो जाना

अकक- (क्रि० वि०) एक-एक

अकच्छ- (पु०) अधिकता, अधिक उत्पात अथवा बाधा (वि०) परेशान

अकछीं- (अव्य०) छींकने पर जो शब्द कहा जाता है या मुँह से स्वयं निकलता है

अकजऊँ (वि०) हानिकारक (अवसर)

अकजहर- (वि०) हर्ज कराने वाला (व्यक्ति)

अकठा- (वि०) अकेला

अकतई- (स्त्री०) जल्दी

अकतहर- (वि०) जल्दबाज

अकताबु- (क्रि० अ०) आवश्यकता से अधिक शीघ्रता करना

अकबति- (स्त्री०) दशा, स्थिति

अकरउड़, अकरउड़ी- (स्त्री०) हरिस के नीचे पाट के विपरीत ठोंकी हुई लकड़ी

अकरसिजाबु- (क्रि० अ०) उचित समय पर जुताई न होने से खेत का कड़ा हो जाना

अकरकढ़ा- (पु०) प्रसिद्ध दवा

अकराबु- (क्रि० अ०) अस्वादिष्ट हल्की कड़वाहट आना; करछ्याबु

अकरास- (पु०) कष्ट

अकवा- (वि०) एक, दूसरा

अकवाई- (स्त्री०) लुहारों के यहाँ जला कोयला खींचने वाली सरिया

अकवाही- (स्त्री०) सींचने की सुविधा के लिए खेत के विभाजित अंश

अकस-मकस- (पु०) हीला-हवाला, टाल-मटोल, दीर्घ सूत्रता

अकसर- (वि०) इकहरा

अकसरा- (पु०) एक्स-रे

अकहुला- (पु०) चूल्हा

अकाक- (वि०) एकाध

अकुरहा- (वि०) असमान नमी युक्त, धोखे से मारने वाला, जल्द नाराज होने वाला

अकूपन- (क्रि० वि०) अंदाज से

अकोल- (पु०) एक जंगली पेड़ और उसका फल, जो लीची की भाँति गूदे और बीजवाला पर बाहर से चिकना होता है

अक्किला- (अ० वि०) अक्लमंद, बुद्धिमान

अक्को-बक्को- (पु०) दे० "ओंका-बोंका"... कहते हैं- अक्को-बक्को तीन तिलक्को लौआ लाठी बनकर काठी.....।

अक्खिर- (अव्य०) आखिरकार

अक्यात- (वि०) अकेला

अक्वाल- (अव्य०) रास्ते से हटकर दूर

अखइया- (स्त्री०) अनन्त तथा अनुपयोगी वस्तु

अखजबु- (क्रि० अ०) उबकाई आना

अखज्ज- (वि०) निकृष्ट खाद्य; प्रायः "अज्ज-खज्ज" तथा "अज्ज-गज्ज" के रूप में बोला जाता है

अखत्यार- (पु०) अधिकार, हक

अखनी- (स्त्री०) लकड़ी का उंगलीदार, फसलों को बटोरने व फैलाने का औजार; पचांगुर

अखम- (वि०) पर्याप्त, गहरा, भण्डार

अखर- (वि०) असह्य, बुरा, कटु

अखरा- (वि०) कोरा, साफ किया हुआ, सूखा (नाज)

अखीरी- (वि०) अंतिम, निश्चित

अखुरा-पखुरा- (पु०) अंग-प्रत्यंग; प्रायः घायल होने या टूटने के लिए ही प्रयुक्त

अखैनी- (स्त्री०) मढ़ाई का एक औजार

अखोर- (वि०) निकृष्ट, हेय (केवल व्यक्ति के लिए); कभी-कभी संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त

अगइली- (स्त्री०) हल के फार को कसने में प्रयुक्त लकड़ी का पुर्जा विशेष

अगउरा- (पु०) ऊँख का ऊपरी हिस्सा

अगन्तु- (पु०) भावी कुसमय; अगला जन्म

अगमन- (वि०) अपेक्षित शीघ्र, पहल; अगहर

अगर- (वि०) अगला

अगरदब्ब- (वि०) (गाड़ी) जो आगे दबी हो

अगरदाबाद- (स्त्री०) ऊधम वाली स्थिति

अगरवाँत- (स्त्री०) हल के फार को कसने वाली लकड़ी; वि० गोंसिया

अगरादोहरी- (वि०) क्रमरहित, गड्डी लगाते समय सीध में न होने की गड़बड़ी

अगराबु- (क्रि० अ०) गर्व दिखाना, काम न करना

अगरासनु- (पु०) गऊ आदि के लिए पहले से निर्गत भोजन

अगली दस्त- (स्त्री०) बकरे के अगले पैरों का ऊपरी भाग

अगवाँ- (क्रि० वि०) प्राचीन समय में

अगवानी- (वि०) अगुवा (स्त्री०); बारातियों का कुछ चलकर किया गया स्वागत

अगवारि- (स्त्री०) खलिहान में तैयार नये अन्न का वह भाग, जो देवताओं, ब्राह्मणों आदि के लिए पहले ही निकाल कर रख दिया जाता है; वि० अगावरि

अगवारु- (पु०) आगे का स्थान (भवन आदि का)

अगवासी- (स्त्री०) हल के फार में आगे लगने वाला एक छोटा पतला लकड़ी का टुकड़ा; वि० गोंसिया

अगसरबु- (क्रि० अ०) आगे बढ़ जाना

अगहर- (वि०) अपेक्षाकृत शीघ्र या जल्दी; अगमन

अगाऊँ- (क्रि० वि०) आगे

अगि- (पु०) भविष्य

अगावरि- 'अगवारि, देखिए

अगाह- (वि०) समय से पहले तैयार (फसल, फल आदि); सूचित, विज्ञापित

अगाही- (स्त्री०) किसी बात के दूसरे द्वारा कही जाने के पहले ही कुछ ऐसी बात कह देने की चालाकी, जो पहले का काट अथवा उत्तर है; आगाही

अगाहूँ- (वि०) पूर्व ही, अग्रिम

अगिया- (पु०) एक रोग, जो गेहूँ आदि फसलों में लगता और जिसके कारण अन्न काला पड़ जाता है; इस नाम का एक कीड़ा भी होता है, जिसके छू जाने से मनुष्य की खाल जल-सी जाती है; ऋण; वि० लाखा

अगिया-बैताल- (पु०) विक्रमादित्य के दो प्रसिद्ध पार्षद; अति तीव्र एवं बलवान व्यक्ति

अगियारि- (स्त्री०) देवी-देवताओं के निमित्त भोग, जो अग्नि पर घी आदि डाला जाता है

अगुआ- (वि०) आगे चलने वाला

अगूढ़- (पु०) जटिल प्रश्न, कठिन समस्या

अगोलिया- (स्त्री०) राब के बर्तनों के भीतर ऊँख के खंड को रखने की क्रिया; चूड़ियों के आगे पहना जाने वाला गहना

अगोछबु- (क्रि० स०) आगे बढ़कर रोक लेना

अगोरबु- (क्रि० स०) प्रतीक्षा करना, रक्षा करना

अगोरा- (पु०) प्रतीक्षा, उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा

अग्गर- (वि०) अलभ्य; गर्वीला

अग्वाटबु- (क्रि० स०) समेटकर पकड़ना, कब्जा करना

अडऊँ- (पु०) वह वस्तु, जो किसी देवता, ब्राह्मण या पुण्य के लिए निकाल कर अलग रख ली गयी हो

अडहरु- (पु०) रूई का टुकड़ा (घाव आदि पोंछने का)

अडिया- (स्त्री०) यह शब्द पश्तो में स्त्री-पुरुषों दोनों के गंजी जैसे कपड़े के लिए आता है; चोली

अचकनु- (पु०) मुसलमानों का वस्त्र विशेष

अचगर- (पु०) अनुचित काम, अनहोनी

अचड़-अचढ़- (वि०) खेत का वह भाग, जहाँ पानी कठिनाई से पहुँचे

अचला, अचेला- (पु०) साधुओं के पहनने का कपड़ा, जिसे धोती की भाँति ऊपर छाती तक लपेट लेते हैं

अचारज- (पु०) यज्ञोपवीत तथा विवाह-संस्कार में आचार्य का काम करने वाला व्यक्ति

अछन-बिछन- (क्रि० वि०) बहुतायत से

अछनाधार- (क्रि० वि०) निरंतर, केवल रोने के लिए प्रयुक्त

अछयबर- (पु०) अक्षयवट; वि० चिरंजीवी
अछरी- (स्त्री०) अप्सरा
अछार- (पु०) यश के स्थान पर अपयश
अछार-दुलार- (पु०) आदर
अछींक- (वि०) कृषि कार्य में अप्रशिक्षित बैल
अछूधा- (वि०) अत्यधिक; आवश्यकता से अधिक; ऐच्छिक
अजगइबी- (वि०) विचित्र
अजगुति- (स्त्री०) अनोखी बात
अजदहा- (पु०) विशालकाय सर्प, अजगर
अजमउबु- (क्रि० स०) परीक्षण करना, परखना
अजमूजा- (पु०) अंदाज
अजरिहा- (वि०) रोगी
अजर्रा- (वि०) बहुतायत, खूब
अजलति- (स्त्री०) बदनामी, अपराध
अजाची- (वि०) तृप्त
अजारू- (पु०) रोग
अजियाउर- (पु०) घर या गाँव, जहाँ से किसी की आजी (दादी) ब्याह कर आई हो
अजीरनु- (पु०) अजीर्ण
अजुग्गि- (स्त्री०) अद्भुत बात
अजुर- (वि०) अप्राप्य, जो जुर न सके
अजुरता- (पु०) धन आदि की कमी, आर्थिक तंगी
अजूबा- (वि०) अनोखा, अद्भुत
अजोधा- (स्त्री०) अयोध्या
अज्ज-खज्ज- 'अखज्ज' देखिए
अटकबु- (क्रि० अ०) रुकना
अटकर- (पु०) अंदाज, पता
अटकरबु- (क्रि० स०) पता लेना या लगाना
अटकहुला- (पु०) रुकावट, अड़चन
अटबु- (क्रि० अ०) पूरा पड़ना, पहुँचना
अटारम- (पु०) प्रबंध, तैयारी
अटाला- (पु०) बहुत-सा सामान
अटेरन- (स्त्री०) सूत की आँटी बनाने का यंत्र
अटेरबु- (क्रि० स०) सूत की आँटी या गुल्ली बनाना
अट्ट-पट्ट- (वि०) बुरा-भला; बुरा
अट्ठिमी- (स्त्री०) अष्टमी, दुर्गाष्टमी
अठक्का- (क्रि० वि०) एकत्र, इकट्ठा, एक साथ
अठई-कठवा- (पु०) फटकार भरी बात
अठपहरा- (वि०) वह ज्वर जो २४ घण्टे न उतरे
अठवाल- (वि० स्त्री०) पालकी, जो आठ कहारों से उठे
अठान- (पु०) व्यंग्य
अठिलाबु (क्रि० अ०) इठलाना, व्यर्थ की हँसी करना
अठुर- (वि०) जो किसी की बात न माने
अठुली- (स्त्री०) आम की गुठली; गुठलू
अठोहबु- (क्रि० स०) पुरानी बात को प्रयत्न से याद करना
अड़ंगा- (पु०) बाधा, रोक
अड़बी-तड़बी- (स्त्री०) टेढ़ी-मेढ़ी भाषा, शान से बोली गई भाषा
अड़संबु- (क्रि० स०) किसी पोले स्थान में दूसरी वस्तु का ठूँसना
अड़हुलु- (पु०) गुड़हल का फूल, जो लाल रंग का और देवी का परम प्रिय होता है
अड़ान- (वि०) वह (पशु) जिसका गर्भपात हो गया हो
अड़ानी- (स्त्री०) भैंस बाँधने का स्थान
अड़ार- (स्त्री०) मिट्टी का बडा टुकड़ा, जो फटकर (विशेषतः नदी अथवा कुएँ के किनारे पर) गिर जाए
अड़ियल- (वि०) वह (घोड़ा) जो पूर्ण रूप से चलने में प्रशिक्षित न हो
अड़िल- (वि०) बेहूदा ढंग से अड़ जाने वाला (व्यक्ति)
अड़ी-गड़ी- (अव्य०) आवश्यकता पड़ने पर; हारे-अटके
अड्डवे- (पु०) किवाड़ों में लगने वाले डण्डे; पुस्तीवान
अड़ेरि- (स्त्री०) जानबूझकर किया हुआ व्यर्थ का झगड़ा
अड़ेरी- (वि०) "अड़ेरि' करने वाला
अड़ेरौ- (पु०) शोर
अड़ोरबु- (क्रि० स०) उडेलना
अढ़इबु- (क्रि० स०) आज्ञा देना

अढ़इया- (स्त्री०) सेर भर का देहाती तौल; जो पसेरी का आधा होता है

अढ़इल- 'अड़हुल' देखिए

अढ़उती- (स्त्री०) गन्ने की पतोई का रूप विशेष

अढ़ती- (वि०) शैतानी करने वाला, शैतान, नटखट

अढ़व-अढ़- (स्त्री०) अनावश्यक शीघ्रता

अढ़ाई- (वि०) ढाई; **कहा० - नौ दिन चले अढ़ाई कोस**

अढ़िया- (स्त्री०) छोटी लकड़ी की तश्तरी; डोकिया; छोटे-मोटे बर्तन

अढुक- (पु०) अड़चन

अढ़ैनी, अढ़ौनी- (स्त्री०) बेड़ी का पानी गिरने के लिए बनाया गया गड्ढा

अण्डू- (वि०) जिस (पशु आदि) के अण्डुकोष सुरक्षित हों

अतना- (वि०) इतना

अतर- (स्त्री०) इत्र

अतरबु- (क्रि० अ०) अंतर पड़ना, बीच में नागा पड़ना

अतरा- (पु०) मक्का के भुट्टे की दाना पड़ने के पूर्व की अवस्था; अंतर

अतरि-खोतरि- (क्रि० वि०) कभी-कभी; बीच-बीच में अंतर डालकर

अतरिया- (वि०) ज्वर का वह प्रकार, जो बीच में एक या दो दिन छोड़कर आता है

अतरी- (स्त्री०) काफी भीतर वाली कोठरी; अंतड़ी

अतलस- (वि०) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा, जो पहले स्त्रियाँ पहनती थीं; ठाठ-बाट की पोशाक; चुनरी

अता- (वि०) विशेष विधि से खस्सी किया हुआ बैल

अताई- (वि०) स्वांगी

अतिबारु- (पु०) विश्वास

अतिराबु- (क्रि० अ०) गर्व करना, इतराना

अतिसह- (अव्य०) अतिशय

अतीरा- (पु०) तरीका, स्वभाव

अतुराई- (स्त्री०) आतुरता

अत्तसबाजु- (पु०) आतशबाजी बनाने वाला; आतशबाज, आतिशबाज

अत्ति- (स्त्री०) चरम सीमा (प्रायः अत्याचार आदि), अत्याचार

अत्तौ- (वि०) बराबर (हिसाब); इतना भी

अथइब- (क्रि० अ०) डूबना (सूर्य, चन्द्र आदि का)

अथक्क- (वि०) न थकने वाला, अथक

अथरा- (पु०) बड़े बर्तनों की पेंदी बनाने के लिए नीचे लगाया गया साँचा

अदग- (वि०) दागरहित, बेदाग

अदति- (स्त्री०) वस्तु; (अर०) अदद; आदत; स्वभाव

अददहा- (वि०) कमजोर, रोगी

अदना- (वि०) छोटा, नीच

अदबदाक- (अव्य०) जानबूझकर, ऐन मौके

अदमोहरी- (स्त्री०) सोने की छोटी मोहर

अदरबु- (क्रि० अ०) अप्रचलित होना, चलन से बाहर होना

अदहरा- (पु०) कंडे या कोयले की धुआँ रहित लाल आग

अदान- (वि०) अज्ञान, नादान

अदारबु- (क्रि० स०) हटा देना, चलन से बाहर कर देना, नष्ट कर देना

अदावँ- (पु०) धोखा

अदावति- (स्त्री०) लड़ाई, अनबन

अदाह- (स्त्री०) बड़ी आग

अदेनिया- (वि०) न देने वाला, दरिद्र

अदेह- (वि०) जिसका शरीर बहुत मोटा हो, जो अपने शरीर को संभाल न सके

अद्दरा- (पु०) आर्द्रा नक्षत्र, पानी बरसाने वाला प्रसिद्ध १५ दिन का अवसर

अद्धा- (पु०) छोटी बैलगाड़ी, जूते में नीचे आगे आधे भाग में लगा चमड़ा (वि०) आधा

अद्धी- (वि०) दो अंगौछों का सहरूप अर्थात् चौके का आधा, (स्त्री०) देशी बंदूक

अधउखा- (पु०) गन्ने का आधा टुकड़ा; छोटी टोकरी; गाँड़ा

अधउट- (वि०) आधा खौला हुआ

अधकरिया- (स्त्री०) आधे साल का लगान

अधन्ना- (पु०) आधे आने का सिक्का

अधरिया- (स्त्री०) बैलगाड़ी में बंधे खटोला के पीछे भाग में लगी लकड़ी की पट्टियाँ

अधारी- (स्त्री०) मुसाफिरी थैला

अधिरजी- (वि०) खाने-पीने में उतावला एवं लालची, अधिक व जल्दी खाने वाला

अधेड़ी- (स्त्री०) एक रोग, जो बड़े-बड़े गीले दानों के रूप में कमर के एक ओर या कमर से गले तक कहीं भी होता है; वि० अधेंगी या अढ़ेंगी

अधेला- (पु०) पैसे का 1/2 अंश

अनंतचउदसि- (स्त्री०) अनंतचतुर्दशी

अनंता- (पु०) भुजाओं का गहना विशेष

अनइया- (वि०) लाने वाला; **पठवैया- स्त्रियों** को लाने और ले जाने वाला (ससुराल आदि में)

अनउनी-पठउनी- (स्त्री०) स्त्रियों को लाने और भेजने की प्रथा

अनउवा- (पु०) किसी को लाने के (विशेषतः स्त्रियों के) समय आया हुआ सामान

अनऊ- (पु०) बच्चे के जन्म के पूर्व पैसा लेकर सासू उतारती हैं और सूप में चावल व सोठौरा लेकर उतारकर रख देती हैं। इस क्रिया संपादन से लोक विश्वास करता है कि बच्चा जल्दी पैदा हो जाता है

अनकनि- (वि०) अस्वस्थ, खराब

अनकबु- (क्रि० स०) कान लगाकर सुनना; दूर से सुनना; जो कठिनता से सुना जा सके उसे सुनना

अनकुसु- (पु०) कष्ट

अनकूत- (वि०) जिसंका अनुमान न लग सके; जो कूता न जा सके

अनखन्ह- (पु०) काजल का टीका

अनगबु- (क्रि० स०) खपरैल युक्त छत की मरम्मत करना

अनगयर- (वि०) दूसरा, अपरिचित; सं० अन + अर० गैर (दूसरा); सं० का अन निरर्थक है

अनचीन्हा- (वि०) अपरिचित

अनजउरा- (पु०) वह घर, जहाँ अनाज रखा जाय, अनाज का भण्डार

अनजलु- (पु०) रहने का अवसर

अनजाद- (स्त्री०) अनुमान

अनटस- (स्त्री०) मनमुटाव, भीतरी बैर

अनती- (स्त्री०) छोटे बच्चों के कान में पहनने की बाली

अनधन- (वि०) बहुत (द्रव्य); गीतों में (अनधन सोनवाँ) सं० अन + धन (जो धन न समझा जाए अर्थात् बहुत होने पर साधारण माना जाय)

अनबंतु- (पु०) बिगाड़

अनबानी- (स्त्री०) अनुचित वाणी

अनबोल- (वि०) बेहोश, जो पशुओं की भाँति बोल न सके

अनभलु- (वि०) अहित

अनमन- (वि०) अन्यमनस्क, उदास

अनम्यार- (स्त्री०) अपरिचित जगह

अनर-चोटवा- (पु०) बिना देखे या सोचे-समझे किया हुआ काम; अन्हर (अंधा) + चोट, जैसे अंधा बिना देखे चोट करता या मारता है

अनराजबु- (क्रि० स०) अन्दाज या पता लगाना

अनवट- (स्त्री०) पैरों के अंगूठों में पहनने का गहना

अनवाँसबु- (क्रि० स०) उद्घाटन करना

अनवादी- (अव्य०) अनुसार

अनसइत- (वि०) अंशवाला, भाग्यवान

अनसइता- (वि०) अयोग्य

अनसुहाति- (स्त्री०) बुराई; अशोभनीय स्थिति, ऐसी बात, जो दूसरों को बुरी लगे

अनसूई- (वि०) अनिन्दक, असूया रहित

अनसोवनि- (स्त्री०) न सोने देने की स्थिति; नींद में बाधा

अनहक- (अव्य०) व्यर्थ

अनहड़- (वि०) विचित्र

अनहद- (वि०) अनाहत (राग)

अनहोनी- (स्त्री०) न होने वाली घटना; अनापेक्षित दुर्घटना

अनाब-सनाब- (क्रि० वि०) निरर्थक प्रलाप; अंड-बंड

अनार कली- (वि० स्त्री०) ऊपर की ओर चिह्नों से युक्त रंगीन तथा नक्कासीदार (चूड़ी)

अनार दली- (पु०) सोने का हल्का ताबीज

अनी- (स्त्री०) सेना; दुर्घटना; नोक

अनेग- (वि०) अनेक

अनेठि- (वि०) जिस दिन बाजार न हो

अनेति- (स्त्री०) अत्याचार, अन्याय

अनेर- (वि०) दूसरे स्थान का (पशु) कभी-कभी अनजान भटके राही के लिए भी आता है

अनेरै- (क्रि० वि०) व्यर्थ में, बिना कारण

अनोखेक- (वि०) विचित्र, अलभ्य, प्रायः वस्तुओं के लिए

अन्ता- (पु०) बैलगाड़ी की पहिया में लगने वाला एक लोहे का छल्ला

अन्देसा- (पु०) सन्देह; वि० अनेसा; अंदेस

अन्नर- (वि०) भीतर, अन्दर

अन्ना- (पु०) चाँदी गलाने के लिए चबूतरा जैसा आग जलने का स्थान; **-भैंसा** स्वतंत्र घूमने वाला भैंसा

अन्नास- (क्रि० वि०) बिना किसी कारण के, सं० अनायास

अन्नास-बदे- (क्रि० वि०) बिना छेड़-छाड़ के

अन्निउँ-पन्निउँ- (क्रि० वि०) प्रत्येक दशा में, चाहे जैसी दशा हो

अन्नु- (पु०) अनाज

अन्नेगिन- (वि०) अनगिनत, असंख्य

अन्हउटी- (स्त्री०) (बैल की) आँखों पर बंधी हुई पट्टी

अन्हर-चोटवा- दे० 'अनार-चोटवा'

अन्हरा- (वि०) अंधा (मनुष्य)

अन्हसेटबु- (क्रि० स०) (बैल की) आँखों पर अन्हौरी बाँधना

अन्हाउबु- (क्रि० स०) स्नान करवाना

अन्हार (पु०) अंधेरा

अन्हेरि- (स्त्री०) अन्याय, अंधेर

अन्होरी- (स्त्री०) गर्मी में शरीर पर होने वाले छोटे-छोटे दाने

अपड़ँड़ी- (वि०) नटखट, शैतान; **अपैंडु- (पु०)** शैतानी

अपजसु- (पु०) बदनामी

अपटनु- (पु०) उबटन

अपधुआ- (पु०) दोष

अपनपौ- (पु०) आत्मीयता, मेलजोल, घनिष्ठता

अपया- (वि०) बिना पैर वाला, असमर्थ

अपर- (अं० पु०) जूते का ऊपरी हिस्सा; **-बल-** (वि०) उद्धत, दुष्टा

अपरबु- (क्रि० स०) पार हो जाना, अंत तक पहुँच जाना

अपरबल- (वि०) सर्वोपरि, प्रबल

अपरम्पार- (वि०) असीम

अपलच्छ- (स्त्री०) अकर्मण्यता, सुस्ती

अपलच्छनु- (पु०) आरोप; गंदा कार्य; पोषण कर्म

अपवादि- (स्त्री०) शरारत

अपसर- (पु०) अफसर

अपसा- (क्रि० वि०) आपस में

अपहरबु- (क्रि० स०) अन्यायपूर्वक ले जाना

अपाढ़- (वि०) कठिन, दुष्प्राप्य

अपीसर- (पु०) अफसर

अपुआ- (सर्व०) स्वयं

अपुसा- (अव्य०) आपस

अपूरी- (वि०) पूरी, भरपूर, व्याप्त

अप्छरा- (स्त्री०) अप्सरा, सुन्दर नारि

अफनाबु- (क्रि० स०) घबराना; आपे से बाहर हो जाना

अफरबु- (क्रि० स०) छक जाना; पेट भर जाना

अफरादाँ- (वि०) व्यर्थ, अधिक

अफलातून- (वि०) बड़े गर्व एवं मस्तिष्क वाला (व्यक्ति)

अफायाँ- (वि०) व्यर्थ, निरर्थक

अबखोरा- (पु०) गिलास

अबगा- (वि०) जिसमें पानी न मिला हो (विशेषकर दूध एवं गन्ने का रस)

अबटनु- (पु०) उबटन; अपटन

अबतर- (वि०) खराब; और खरा (प्रायः स्थिति के लिए)

अबर- (पु०) बादल

अबरा- (पु०) रंदे नामक औजार में तेग के साथ लगने वाला दूसरा लोहा

अबलखा- (पु०) सफेद रंग का घोड़ा

अबवाब- (पु०) वह सरकारी टैक्स, जो जमींदारों से माल-गुजारी पर शिक्षा, सड़क आदि के लिए वसूल होता था

अबीरि- (स्त्री०) अबीर

अबुझु- (पु०) चने का साग

अबेर-सबेर- (क्रि० वि०) समय-कुसमय

अबेरि, अब्यार- (स्त्री०) बिलंब

अभरनु- (पु०) आभरण, गहना

अभिरबु- (क्रि० अ०) फँसना; झगड़ना

अभिलाख- (स्त्री०) अभिलाषा; हार्दिक इच्छा

अभुवाबु- (क्रि० अ०) जोर-जोर से चिल्लाना; जंभाई भरना

अभेर- (पु०) संघर्ष

अभोखन- (पु०) आभूषण, भोजन या पान का सामान (प्रायः देवी या देवता का)

अमउआ- (पु०) एक हरा कपड़ा, जो कच्चे आम के रंग का होता है

अमचुर- (पु०) आम की सूखी खटाई

अमल- (पु०) समय; नशा (जो समय पर लगता है)

अमला- (पु०) कर्मचारीगण

अमलोनी- (स्त्री०) एक खट्टा साग

अमवारी- (स्त्री०) आम की बाग

अमानी- (स्त्री०) निर्धारित पारिश्रमिक; (वि०) मानरहित

अमाबु- (क्रि० अ०) अंदर आ सकना (किसी वस्तु का)

अमावट- (स्त्री०) पके आम के रस की पपड़ी, जो धूप में सुखाकर बनती है

अमिया- (स्त्री०) कच्चे आम का छोटा फल; अम्बिया

अमिर्त- (पु०) अमृत

अमिर्ती- (स्त्री०) जलेबी की तरह की प्रसिद्ध मिठाई

अमिला- (वि०) एक प्रकार की बुआई, जो धान के लिए आती है

अमिलाबु- (क्रि० अ०) खट्टा हो जाना

अमिली- (स्त्री०) इमली

अमेठियाँ- (वि०) जिस दिन बाजार न हो

अमोला- (पु०) आम का छोटा पौदा या पेड़

अम्बर- (वि०) सिल्लैट चूड़ी की आधी व गोलपन से युक्त (चूड़ी)। इसका प्रचलन अतिसाधारण स्त्रियों में ज्यादा होता है; (पु०) बादल

अम्बलबेलि- (स्त्री०) लता विशेष, जिसको जमीन की आवश्यकता नहीं होती; अमरबेलि; परजीवी लता

अयना- (पु०) मुँह देखने का शीशा

अयरन- (पु०) कान में पहनने की बाली

अयलाहिन- (वि० पु०) मुँह के स्वाद को खराब करने वाला

अयस- (पु०) मजा, आनन्द

अरंबु- (पु०) ढेर

अरइहा- (वि०) ऊँची भूमि वाला

अरई- (स्त्री०) बैलों को तेज दौड़ने के लिए चुभोई जाने वाली नुकीली लौह यंत्र; चोक्का कोदई; (वि०) जो उबली न हो;

अरगड़ा- (पु०) सुनारों के यहाँ प्रयुक्त खाँचेदार लम्बी बल्ली; खटखटा

अरगण्डी- (स्त्री०) आधुनिक सूती साड़ी

अरगनी- (स्त्री०) कपड़ा टाँगने की लकड़ी या रस्सी

अरगनु-परगनु- (पु०) सारा पड़ोस

अरगला- (स्त्री०) जंजीर (जानवरों आदि के बाँधने में प्रयुक्त); हठ; मचल पड़ने की स्थिति

अरघा- (पु०) लकड़ी का पात्र, जिसमें शिव शालग्राम आदि की मूर्ति पर चढ़ाया हुआ जल गिरता है

अरछा- (वि०) साफ

अरजाल- (पु०) बोझ; उत्तरदायित्व; व्यर्थ की बदनामी

अरजूमाल- (वि०) कठिनता से संभालने वाला (व्यक्ति)

अरझबु- (क्रि० अ०) झगड़ना; फँसना

अरझट्टा- (पु०) अड़चन, बाधा; झटका

अरतें-विरतें- (क्रि० वि०) अवसर पड़ने पर

अरथी- (स्त्री०) शव को उठाने में प्रयुक्त सींढी, टिकथी

अरदा देबु- (क्रि० अ०) अनुकूल रहना, नियन्त्रण में रहना, सफल हो पाना

अरदावनि- (स्त्री०) चारपाई के पैंताने लगने वाली रस्सी

अरधेल- (वि०) जिसके पिता या माता असली न हों

अरबरु- (पु०) शीघ्रता

अरबा- (स्त्री०) विशेषता

अरवी- (स्त्री०) सब्जी विशेष; वि० घुइयाँ

अरसा- (पु०) समय

अरसी- (स्त्री०) फूल विशेष; तिलहनी अनाज

अरसील- (वि०) आलसी

अरसेट- (स्त्री०) बाधा

अरहनु- (पु०) तरकारी पकाते समय उसमें मिलाया गया आटा या बेसन

अरायज नवीस- (पु०) कचहरी का वह व्यक्ति, जो प्रार्थना पत्र लिखा करता है

अरार- (स्त्री०) मिट्टी या पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े, जो नदी के किनारे या पहाड़ में से फटकर गिरते हैं

अरियउबु- (क्रि० स०) किसी नाम का उपेक्षात्मक उच्चारण करना

अरुआ- (पु०) अरुई या घुइयाँ का बड़ा रूप, जिसे बण्डा भी कहते हैं

अरुआरबु- (क्रि० स०) प्रारम्भ करना

अरुग्ग- (वि०) आरोग्य, स्वस्थ, रोगरहित

अरुई- (स्त्री०) घुइयाँ; वि० अरवी

अरुठ- (वि०) अरुचिकर, सूना

अर्चावन- (स्त्री०) अदवान, रस्सी विशेष

अर्जु- (पु०) कपड़े की चौड़ाई, पनहा

अर्रहा- (पु०) झगड़ा, झंझट; अरहर

अर्रही- (स्त्री०) अरहर

अर्रहैंट- (वि०) जिस (खेत में) अरहर बोई गई हो

अर्वारबु- (क्रि० स०) छोटी चीजों में से बड़ी चीजों को अलग करना

अलई-पलवा- (वि०) इधर-उधर की बातें, असंबद्ध

अलकापा- (पु०) काले रंग का कपड़ा

अलगंजु- (पु०) व्यर्थ की वस्तुएँ

अलगउझा- (पु०) पारिवारिक विघटन

अलगट्ट- (वि०) अलग; वि० अलगण्ट

अलङ- (पु०) किनारा, भाग, (अव्य०) ओर

अलफ- (वि०) खड़ा, रुष्ट, अलग; (स्त्री०) भावी दुर्घटना

अलमहिंदा- (वि० पु०) अत्यन्त भद्दा व कुरूप

अलमीरा- (वि०) सूचक

अलयपनु- (वि०) सुस्ती, काहिली

अलवान- (स्त्री०) ऊनी चादर

अलहदी- (वि०) आलसी

अलहिद- (अव्य०) अलग

अलाई- (वि०) बहुत सुस्त, काहिल

अलान- (वि०) अलग (पु०) ऐलान

अलाल- (वि०) कामचोर, आलसी; बछेड़ा (पु०); जबान बछेरा

अलियावन- (पु०) कूड़ा-कचड़ा

अलुहा- (पु०) आलू के पौधे; (वि०) आलू वाला (खेत आदि)

अलेंदी- (स्त्री०) बेइमानी; जाश्ती

अलेल- (वि०) बहुत (वस्तुओं के लिए)

अलोप- (वि०) गायब, लुप्त

अल्लम-गल्लम- (पु०) व्यर्थ की वस्तुएँ

अल्लाहु- (पु०) लौ युक्त अग्नि

अल्हड़- (वि०) युवा, बच्चा जैसा

अल्हारबु- (क्रि० स०) मिश्रण में से बड़ा अंश अलग करना; अर्वारबु

अवँठि- (स्त्री०) मिट्टी के बर्तनों की ऊपरी धार

अवकाति- (स्त्री०) सामर्थ्य

अवँनि- (स्त्री०) पहिया के बीच में लगी ढोलाकार लकड़ी

अवँरा- (पु०) आँवला

अवचक- (क्रि० वि०) अकस्मात

अवचट- (स्त्री०) आकस्मिक; विपत्ति

अवर्दा- (स्त्री०) समय-सीमा; समय

अवसान-खता- (पु०) खतरा (जिससे कोई बच गया हो)

अवसेवरि- (स्त्री०) छेड़-छाड़; कष्ट

अवाँरी- (स्त्री०) पंक्ति

अवाँसबु- (क्रि० स०)(नईवस्तुका)उपयोगप्रारम्भ करना; वि० अनवाँसबु

अवाचब- (क्रि० अ०) मरने के पूर्व अनबोल हो जाना

अवाट-बवाट- (स्त्री०) व्यर्थ की बात, गाली-गलौज

अवादा- (पु०) वादा, वचन, प्रण

अवारजा- (स्त्री०) जमा खर्च की बही

अस- (अव्य०) समान, जैसा; ऐसा

असकति- (स्त्री०) आलस, न करने की इच्छा

असक्कि- (स्त्री०) निर्बलता

असत्ती- (वि०) भूख से अधिक खाने वाला

असत्तु- (पु०) अपेक्षित अधिक मात्रा में भोजन लेने की इच्छा; असतीत्व

असबाब- (पु०) सामान, माल

असमानी- (वि०) दैवी, सुलतानी; भगवान का या राजा का (हुक्म); अपनी शक्ति के बाहर की बात

असम्हौ- (अव्य०) असभव

असरैइब- (क्रि० स०) सेवा करते रहना, पालना, आश्रित रहना

असाई- (स्त्री०) मक्खी, जो सड़ी वस्तुओं, या घावों आदि पर मल त्यागकर कीड़े पैदा करती है

असाढ़ू- (पु०) मोटी सिल्ली

असाधि- (वि०) अत्यन्त सुस्त, बहुत ही आलसी, जो उठने-बैठने में आलस्य करे

असिल- (वि०) सच्चा, खरा; असिली

असौ- (क्रि० वि०) इस वर्ष

अस्तीन- (स्त्री०) बुशर्ट आदि की बाँहों का अगला भाग

अस्सेरा- (पु०) आधा सेर का बाँट

अहँका-तोहकी- (स्त्री०) तर्क-वितर्क, अपनी-अपनी बात को सिद्ध करने की प्रक्रिया

अहँजबु- (क्रि० स०) (शरीर को) तोड़ देना, निर्बल कर देना

अहँड़ा- (पु०) बर्तन (प्रायः मिट्टी के); भाण्ड

अहँड़ोरबु- (क्रि० अ०) जी मिचलाना, उथल-पुथल मचाना

अहंदबु- (क्रि० स०)भोजन करना(उपेक्षित); पीटना

अहंदा- (पु०) धँसने योग्य कीचड़

अहंदिक- (क्रि० वि०) खूब, कसके, आवश्यकता से अधिक

अहंदु- (पु०) दल-दल; गड्ढा; अहंदा

अहक- (स्त्री०) उत्कंठा, हार्दिक इच्छा

अहका- (स्त्री०) जोर की प्यास

अहकाइब- (क्रि० स०) तरसाना, अहक पूरी न होने देना

अहतर- (पु०) पोशाक में लगा भीतरी कपड़ा; अस्तर

अहथाप- (स्त्री०) स्थापना

अहथिर- (वि०) स्थिर, निश्चिंत, शांत

अहदंकबु- (क्रि० अ०) डर जाना, घबरा उठना

अहदियाबु- (क्रि० अ०) घबराना

अहदी- (वि०) सुस्त

अहरबु- (क्रि० स०) **छील कर सीधा करना** (लकड़ी); छक लेना

अहरा- (पु०) दीवालों में बनाये गये आल या ताख; चूल्हे के बाहर कहीं जलाने हेतु लगा सुडौल कंडों का ढेर; आल, ताख, आर

अहरी- (स्त्री०) जानवरों को पानी पिलाने के लिए प्रयुक्त ईंट आदि का बना बड़ा बर्तन; चरही

अहली करबु- (क्रि० स०) पानी भरे खेतों में जुताई करना

अहसन- (पु०) धान

अहहुँ- (सहा० क्रि०) हूँ

अहिका- (सर्व०) इसका

अहिबातु- (पु०) सधवापन, सौभाग्य

अहिर- (पु०) यदु क्षत्रिय को, जिनके वंशज यादव कहलाये, प्राप्त उपाधि सं० अहि (साँप) + ईरः (मारने वाला); गोपालक

अहिलउबु- (क्रि० स०) पेशाब करना; ढरकाना

अहिलौ- (वि०) पर्याप्त, (पु०) बाढ़

अहिवात- (पु०) सुहाग, सधवापन

अहुजी- (स्त्री०) एक व्यंजन, जिसमें दूध, चावल और जीरे के साथ लौकी के बारीक लच्छे पकाये जाते हैं

अहेरिया- (पु०) शिकारी; अहेर करने वाला; वि० अहेलिया

आँकन- (पु०) ज्वार की लटों का भूसा; दोष

आँकर- (वि०) उच्च कुलीन; गहरा

आँकरि- (वि०) दिल में लगने वाली; गहरी; अभद्र

आँकू- (पु०) बैलगाड़ी का वह पुर्जा, जिसमें लोहे की धुरी लगाई जाती है

आँखा- (पु०) आलू आदि में अंकुर फूटने के स्थान या (अक्षि); लोहे या चमड़े का चलना, जिससे कोई वस्तु छानी जाती है

आँगा- (पु०) अंगरखा

आँगी- (स्त्री०) स्त्रियों के सीने पर धारण करने वाला वस्त्र विशेष; अंगिया

आँच- (स्त्री०) अग्नि की गरमी; अस्तित्व

आँचरु- (पु०) अंचल पर रहने वाला धोती का सिरा; स्तन; अँचरा

आँचा- (वि०) परिपक्व; अच्छा

आँजनु- (पु०) आँख का अंजन

आँट- (स्त्री०) मचान; उंगुली का अगला पोटा

आँठा- (पु०) माँस अथवा जमे हुए लहू का छोटा टुकड़ा

आँठी- (स्त्री०) जमा हुआ दही

आँड़ा- (पु०) पतावर का फूला हुआ अंश; **-डोइयाँ** (क्रि० वि०) बिना सोचे-समझे; जो जैसा था वैसे

आँतरु- (पु०) जब दो जोड़ी बैल एक साथ जोते जाते हैं तो उनकी माचियों को जोड़ने वाली रस्सी; दो कूडों के बीच बिना जुती छूटी जमीन

आँधर- (वि०) अंधा

आँब- (पु०) आम

आँव- (पु०) फेना युक्त टट्टी

आँवरि- (स्त्री०) गाय या भैंस की आँवल

आँसवँ- (अव्य०) इस साल

आइसु- (पु०) नेवता, भोजन का निमन्त्रण

आक- (स्त्री०) बरसात में सूख जाने वाली घास विशेष;(वि०) एक

आखत या आखति- (स्त्री०) नसी पीटने की मजदूरी के नेग स्वरूप दिया गया अनाज

आगर- (पु०) एक आभूषण; (वि०) चतुर

आगरि- (वि०) अग्रणी, चतुर

आङ्छु- (पु०) अंग अथवा शरीर का प्रभाव; व्यक्ति विशेष का प्रभाव

आजा- (पु०) पितामह

आजिद- (वि०) परेशान

आठाठेली- (स्त्री०) परस्पर हिंसका, एक-दूसरे को काम सौंपने की प्रवृत्ति या ढिलाही

आढ़ति- (स्त्री०) शैतानी

आतशपारा- (फा० पु०) अग्निकण, चिनगारी

आतशबजाँ- (फा० वि०) जिसके अन्दर आग ही आग हो, अग्निगर्भ

आतशरंग- (फा० पु०) आग जैसे रंग

आतशी- (फा० वि०) आग का बना हुआ; **रूख-** आग जैसा; **-सीसा** (पु०) सोना पकाने में सहायक धातु

आदि- (स्त्री०) इतिहास, ब्योरा, रहस्य, स्मरण; आरम्भ

आदी- (स्त्री०) अदरक; (वि०) अभ्यस्त

आनबु- (क्रि० स०) लाना, ला देना

आनि- (स्त्री०) दैवीय मान्यता

आनी- (वि० स्त्री०) दूसरी-जाति (स्त्री०) अपने से अलग की जाति

आनु- (पु०) गड्ढा (गहरा)

आफरु- (पु०) खलिहान

आब- (स्त्री०) शक्ति, रोब, प्रभाव

आबरुह- (स्त्री०) इज्जत, प्रतिष्ठा

आमगौर- (पु०) गहना विशेष

आमदि- (स्त्री०) लाभ, आय

आमलेट- (स्त्री०) गहना विशेष; अण्डों का पकवान

आमा हरदी- (स्त्री०) एक प्रकार की हल्दी, जो दवा में प्रयुक्त होती है

आम्बाझोर- (क्रि० वि०) सतत झांकायुक्त; अम्बाझोर, आमाझोर

आयल- (पु०) पैर का एक गहना; **-दार (वि०)** देनदार; ऋणी, बोझ से दबा

आर- (पु०) सामान रखने हेतु दीवालों में बने छोटे-छोटे सुडौल खाँचे; ताख, आल

आरचा- (स्त्री०) पूजा

आरज- (पु०) आर्य

आरबल- (स्त्री०) आयु

आरम्ब पुलिस- (स्त्री०) सशस्त्र पुलिस

आरर- (वि०) (वृक्ष या डाल) जो जल्दी टूट सके; खुरदरापन से युक्त

आरव- (पु०) आहट

आरसी- (स्त्री०) शीशायुक्त अंगुलियों का गहना; हथपान, अंगुरताना

आरसु- (पु०) आलस्य

आरा- (पु०) बैलगाड़ी की पहिया में तीली की तरह लगी हुई पट्टियाँ; लकड़ी चीरने का यंत्र

आराकस- (पु०) आरा चलाने वाला (बढ़ई); लकड़चिर्रा

आरागजु- (पु०) बैलगाड़ी के दोनों पहियों के किनारे की लम्बी लकड़ी

आरु- (पु०) दीवारों में वस्तुएँ रखने हेतु बने हुए स्थान; ताख

आरू- (स्त्री०) एक लता, जिसके पत्तों की तरकारी बनती है

आर्मलेट- (स्त्री०) गहना विशेष, जो बाजू में पहना जाता है

आलंग- (स्त्री०) गधों की मस्ती

आल-गाल- (क्रि० वि०) इधर-उधर की बातें

आलनु- (पु०) पशुओं के पैरों से कुचला हुआ चारा, जो गोबर पाथते समय मिलाया जाता है

आलमु- (पु०) भीड़, स्थिति, संसार

आला- (पु०) यंत्र (बीमारी देखने में प्रयुक्त); (वि०) बढ़िया, ऊँचा

आलांन- (स्त्री०) हाथी बाँधने की जंजीर

आलि- (वि०) हल्की कच्ची (रोटी आदि); वि० स्यावारि

आली- (स्त्री०) सखी

आले-आले- (वि०) बड़े-बड़े; एक से एक बढ़कर

आल्हर- (वि०) नया, दो-चार दिन का; बहुत पैदा (घास के लिए)

आवँ-बावँ- (पु०) उल्टी-सीधी बात

आवँरि-पावँरि- (स्त्री०) वंशज, संतति

आवभगत- (स्त्री०) सेवा-सत्कार

आवाँ- (पु०) मिट्टी के बर्तनों को पकाने का भट्ठा

आसनी- (स्त्री०) बैठने की छोटी चटाई, दरी आदि

आसरा- (पु०) आश्रय, भरोसा, आशा

आसीविख- (स्त्री०) सर्पिणी

आहिउ- (सहा० क्रि०) हो

आहूँ- (स्त्री०) गर्वोक्ति, चुनौती

इंगुई या इंगुवा- (स्त्री० पु०) घुरइन का पेड़

इंगुदी- (स्त्री०) हिंगोट (वृक्ष)

इंगुरहा ज्वारा- (पु०) लाल रंग युक्त लाख की चूड़ी

इधे- (अव्य०) इधर

इंडरी, इड़री- (स्त्री०) गाय या भैंस के ब्याने पर पहले दिन के दूध का पका हुआ रूप

इंडोरन- (पु०) देखने में सुन्दर, गोल किन्तु कड़वा फल

इंतिहा- (स्त्री०) अंदाज, अंत, बहुत पंसद; इंतहा

इंदारा, इनारा- (पु०) कुआँ

इकबाल- (वि०) स्वीकृत (कचहरी में किया गया विशेषतः किसी अपराध को)

इजराय- (अ० स्त्री०) (किसी हुक्म का) कचहरी से प्रकाशित, विज्ञापित या रवाना होने की क्रिया

इजलास- (अ० स्त्री०) कचहरी

इजहार- (अ०, पु०) (कचहरी में दिया) बयान

इजाफति- (स्त्री०) दावत

इजाफा- (पु०) वृद्धि (विशेषतः लगान का)

इजारबंद- (पु०) पाजामा बाँधने का नाड़ा;

इजारा- (पु०) ठेका

इटकोह- (पु०) ईंट का टुकड़ा

इटारि- (स्त्री०) पांडेय लोगों का प्रसिद्ध स्थान

इत्ता- (वि०) इतना, इस प्रकार

इत्तिला- (वि०) सूचना

इत्थिर- (अव्य०) इस जगह

इनाइति- (स्त्री०) कृपा

इन्सानु- (पु०) उपकार, कृतज्ञता; मनुष्य
इफराति- (वि०) प्रचुर, अधिक
इमानु- (अ० पु०) धर्म, नेकनीयत
इमारी- (स्त्री०) हौदा
इरखहा- (वि० पु०) ईर्ष्यालु
इरखा- (स्त्री०) ईर्ष्या
इलटि- (स्त्री०) मैली चीज
इलहिका- (वि०) अलग
इल्लति- (स्त्री०) मैल, दोष, झंझट, दुर्व्यसन
इलासति- (स्त्री०) खेत और बाग की सम्पत्ति
इल्लिम- (स्त्री०) इल्म, ज्ञान, विद्या
इसपात- (पु०) फौलाद
इस्तालक- (पु०) उत्साह, प्रोत्साहन
इस्तिरी- (स्त्री०) कपड़े की कलप कलप करने की मशीन; स्त्री
इहिका- (सर्व०) इसका, इसको
ईंटनु- (पु०) बर्तन धोने का चबूतरा
ईखि- (स्त्री०) फसल विशेष; ईख, गन्ना, ऊखि, उखुड़ि
ईमा- (सर्व०) इसमें
ईरघाट- (क्रि० वि०) इधर-उधर
ईसर- (पु०) भगवान, परमेश्वर; कहा० "ईस्वर आवैं दलिद्दर जायँ"
उंघे- (अव्य०) उधर
उँचवाँस- (वि०) ऊँचा सिरा (खेत आदि में)
ऊँटकउँहा, उठकुरुआँ- (क्रि० वि०) पैरों पर भार देकर (बैठना)
उँटरा- (पु०) गाड़ी के आगे लगने वाली टेढ़ी लकड़ी, जो बैलों के हटने से गाड़ी का आगे का सिरा उठा रहता है
उँटाबु- (क्रि० अ०) उँटनी का गर्भिणी होना
उआरा न्योछा- (वि०) किसी देवता अथवा ब्राहमण को देने के लिये रखा हुआ
उई- (सर्व०) वह, वे
उकठा- (वि०) सूखा **-पवाँरा (पु०) परस्पर की** गई बुराई; एक-दूसरे की बुराई
उकठबु- (क्रि० अ०) (पेड़ का) सूख जाना; उकसबु
उकवति- (स्त्री०) दाद की तरह का एक रोग, जिसमें से पंछा निकलता रहता है
उकाँव- (पु०) भूसा मिला हुआ वह अन्न, जो अभी ओसाया न गया हो
उकुर- (पु०) हक; अवसर विशेष पर जो कुछ किसी को मिले, जैसे सम्बन्धियों, नौकरों आदि में
उकुरुँ- (क्रि० वि०) चूतड़ों को भूमि से बिना छुआये केवल पैरों पर (बैठना)
उक्कुन- (पु०) छोटे बर्तन को लटकाने का फंदा
उखमज- (वि०) दुष्ट
उखर बेंट- (वि०) व्यक्ति (जिसके सम्बन्ध में कुछ ज्ञात न हो)
उखार- (पु०) खड़े-खड़े विरोधी पहलवान को कमर के बल पटकने का दाँव
उखारि- (स्त्री०) ईख, देशी गन्ना
उखारी जोत- (स्त्री०) आषाढ़ की पहली साधारण जुताई
उखाव- (पु०) जो खेत ईख की खेती के लिये रखा गया हो
उखेरा- (पु०) ईख
उगठापवाराँ- (पु०) दूसरों की बुराई या शिकायत
उगड़बु- (क्रि० अ०) सूख जाना
उगहनी- (स्त्री०) चंदा करने की क्रिया
उगालदान- (पु०) वह बर्तन, जिनमें थूका या कुल्ला किया जाता है
उगोहिया- (पु०) साहूकारों द्वारा नियुक्त धन व ब्याज वसूल करने वाला व्यक्ति
उघारबु- (क्रि० स०) खोलना; कपड़ा हटाना
उचकुन- (पु०) वह वस्तु, जो किसी दूसरी को ऊँची करने के लिये नीचे रखी जाये
उचरबु- (क्रि० अ०) उखड़ना
उच्छू- (पु०) उच्छ-वास विकार; पानी आदि पीते समय आने वाली खाँसी
उछरबु- (क्रि० अ०) निशान पड़ना; दिखाई देना; ऊपर आना
उछार- (स्त्री०) वमन
उछाह- (पु०) उत्साह
उछिद्दिर- (वि०) मुक्त; ऋण मुक्त
उछिन्न- (वि०) नष्ट

उजबक- (वि०) अशिक्षित; गवाँर

उजर- (वि०) साफ; सफेद

उजरति- (स्त्री०) मजदूरी, फीस (लिखने आदि की)

उजरबु- (क्रि० अ०) नष्ट होना

उजवास- (पु०) प्रबन्ध

उजहबु- (क्रि० अ०) लुप्त हो जाना

उजार- (वि०) नष्ट, समाप्त; -होना (क्रि० अ०) फसल आदि का अन्त होना

उजीर- (पु०) मन्त्री, शतरंज का फर्जी

उजुर- (पु०) आपत्ति; प्रार्थना; (वि०) अमान्य

उजेरु- (पु०) उजाला, प्रकाश

उझिला- (पु०) उबटन का सुगन्धित सामान जिसमें तिल, सरसों नागरमोथा आदि पड़ता है

उटंग- (वि०) लम्बाई में कम; वि० उटंक, बाँछ

उटड़ा- (पु०) गाड़ी का अगला हिस्सा जमीन पर टिकाने के लिये जुएँ के नीचे लगायी जाने वाली लकड़ी; वि० उटरा

उठइया- (स्त्री०) प्रसवकाल के दौरान प्रसूता के उतरे हुए कपड़ों की गठरी

उठनि- (स्त्री०) रिवाज

उठल्लू- (वि०) आवारा, इधर-उधर घूमने वाला, निठल्ला

उठाईगीर- (पु०) जो दूसरे की वस्तु लेकर चल दे; धोखेबाज

उठाट- (पु०) उजाड़ने का काम

उठान- (स्त्री०) चौकड़ी

उड़नछू- (वि०) जो छूते ही उड़ जाये

उड़ाही- (स्त्री०) वह चोरी, जो छप्पर को एक ओर से उठाकर की गई हो

उड़िया- (स्त्री०) डोली; उड़ीसा प्रान्त की मातृभाषा

उडुस- (पु०) खटमल

उढ़र गंडा- (वि०) पुरुषों को दी जाने वाली एक गाली

उतकबु- (क्रि० स०) उलटकर खोलना या हटाना

उतन्ना- (पु०) कानों के ऊपरी हिस्से में पहनने का गहना

उतरंगु- (पु०) दरवाजे की ऊपर की बेंड़ी लकड़ी या चौखट

उतरहरि- (स्त्री०) उत्तर दिशा से आने वाली हवा

उतराबु- (क्रि० अ०) पानी में ऊपर आना; घमन्ड करना

उतान- (वि०) पीठ के बल लेटने की अवस्था

उतारु- (वि०) नदी आदि को पैदल निकलने की अवस्था, (पु०) टोना-टटका

उतारू- (वि०) आमादा; असम्मानित

उताहिल- (वि०) शीघ्रता करने वाला

उतीरा- (पु०) तरीका

उतेर- (पु०) ज्वार, बाजरा या अरहर का खेत

उत्तू- कुटा-पिटा हुआ कच्चा चमड़ा

उत्थिर- (अव्य०) उस जगह

उदंत, उदत्त- (वि०) जिस (पशु) के जन्मजात दाँत मौजूद हों अर्थात, गिरकर पुनः न निकले हों

उदगरबु- (क्रि० अ०) जोश में आना, सीमा के बाहर आ जाना

उदबस- (पु०) सुख से बैठे रहने में विघ्न

उदम- (पु०) परिश्रम, काम

उदमादा- (वि०) **उद्यत, तैयार, आसक्त**

उदहबु- (क्रि० स०) हाथ से पानी निकालना

उदुम्बर- (पु०) गूलर

उधध- (वि०) फीका

उधान- (वि०) उद्यत, उन्मत्त

उधाबु- (क्रि० अ०) किसी कार्य या आदत में अति करना; अधिक उत्पात करना

उधिराबु- (क्रि० अ०) छेड़छाड़ करना, दूसरों को तंग करके स्वयं दुःख उठाना

उधुआँ- (वि०) व्यर्थ

उनरबु- (क्रि० अ०) ऊपर आना, उबर जाना, उखड़ना

उनारबु- (क्रि० स०) उखाड़ना

उन्दा- (वि०) बढ़िया

उपछबु- (क्रि० स० अ०) फटक-फटक कर साफ करना; पानी में साँस न ले पाने से तिलमिलाना

उपधिया- (स्त्री०) ब्राहमणों की एक उपजाति

उपरदरा- (वि०) तनख्वाह के अलावा

उपरदेसिया- (स्त्री०) जुते खेत में बीज बिखेरकर केवल पाटा चलाकर छोड़ने की विधि

उपरहरि- (वि०) अपेक्षाकृत ऊँचा क्षेत्र या हार

उपरहितु- (पु०) पुरोहित; संस्कार सम्पन्न कराने वाला ब्राह्मण

उपरी- (स्त्री०) गोबर की बनी हुई मोटी- मोटी खपटियाँ, जो लाने के काम आती हैं

उपरसंसी- (स्त्री०) ऊपर से साँस नीचे हो जाना

उपरौर- (पु०) कन्डों (उपलों) का पर्वताकार सुडौल ढेर

उपल्ला- (पु०) कपड़े का ऊपरी भाग

उपसहा- (वि०) व्रत रखने वाला

उपाटु- (पु०) अटपटापन

उपास- (पु०) व्रत, भोजन न करने का दिन

उफनाबु- (क्रि० अ०) नदी आदि का जल ऊपर को चढ़ना, हिलोरें मारना

उफरबु- (क्रि० अ०) अकस्मात मर जाना

उबका- (पु०) रस्सी का वह फंदा, जिससे लोटा आदि फाँसकर पकड़ा जाता है

उबराबु- (क्रि० अ०) कुएँ आदि का पानी बढ़कर ऊपर आना

उबहनि- (स्त्री०) कुआँ से पानी खींचने में प्रयुक्त मोटी रस्सी

उबहा- (वि०) (ईख का रस भरने का) मटका

उबीध- (वि०) सुन्दर, उत्तम

उमथबु- (क्रि० स०) मथकर बाहर निकालना (पानी आदि)

उमथ्याबु- (क्रि० अ०) मिचलाना

उमस- (स्त्री०) बिना हवा की गर्मी

उमहबु- (क्रि० अ०) घिर आना (बादल)

उमाँह- (स्त्री०) उमंग, उत्साह

उमानबु- (क्रि० स०) आदमी के शरीर की नाप लेना

उमासबु- (क्रि० स०) जरा से उठाना

उमेद- (स्त्री०) आशा, उम्मीद

उम्बी- (स्त्री०) गेहूँ की भुनी हुई बाल

उरकी- (स्त्री०) पतावर का झुरमुट

उल्याड़बु- (क्रि० स०) अस्वीकृत करना, छोड़ना

उरगह- (पु०) मुक्ति (सूर्य अथवा चन्द्रमा की ग्रहण से) उरगा

उरठ- (वि०) सूखा, नीरस

उरिन- (वि०) ऋणमुक्त

उरुम्बु- (पु०) ढेर

उरेहबु- (क्रि० स०) चित्रित करना

उर्द- (पु०) उड़द, माष

उर्याहबु- (क्रि० स०) निर्मित करना, बनाना

उर्सी- (वि०) समाप्त, बाजार आदि का पूरा हुआ समय

उलका- (पु०) पिण्ड (वि०) उतावला, उलकी धेरिया उलको दमाद, नाचे धेरिया गावें (द्यावें) दमाद;

उलका-पत्तर- (पु०) उत्पात, गड़बड़

उलझा- (पु०) पीछे का डाला हुआ मिट्टी का ढेर

उलदबु- (क्रि० स०) (बर्तन में रखी चीज को) उलट देना, जैसे- पानी, दूध, अनाज आदि।

उलदाबल्दु- (पु०) उलट-फेर, इधर-उधर

उलरु- (वि०) अत्यधिक, अधिक

उलरबु- (क्रि० अ०) चिढ़ना; उछलना

उलरुआ- (पु०) उलार होने पर नीचे जाने से गाड़ी को रोकने के लिए पीछे की ओर लगायी जाने वाली लकड़ी

उललाबु- (क्रि० अ०) अति उत्साहित होना

उलहबु- (क्रि० अ०) पानी की आपूर्ति के बावजूद बिना पके फसल सूखना

उलारबु- (क्रि० स०) उछालना

उल्था- (पु०) उलटा जवाब

उल्ल- (वि०) असंतुलित

उल्ला- (पु०) बुरे काम के लिए प्रोत्साहन

उवादा- (पु०) वादा

उवारबु- (क्रि० स०) सिर के ऊपर घुमाना

उसकिना- (पु०) घास का मुट्ठा, जिससे बर्तन मांजा जाये: वि० जूना

उसवाङ - (पु०) स्वाँग

उसार- (पु०) घर का सारा सामान

उसियार- (पु०) कूड़ा-करकट

उसिजबु- (क्रि० अ०) उबल जाना

उसिनबु- (क्रि० स०) उबालना (चावल, आलू आदि)

उसीका- (पु०) लिखित ठेका या अन्य कार्रवाई

उसीयति- (स्त्री०) उत्तराधिकार, इच्छा-पत्र

उसीला- (पु०) ठौर, सिलसिला, सम्बन्ध; सिफारिश

उसूल- (अ० पु०) कायदा, सिद्धान्त

उहवाँ- (स्त्री०) फसल

ऊकड़-बाकड़- (वि०) अंड-बंड, अपशब्द

ऊकबीक- (वि०) परेशान

ऊकर- (पु०) एक घास या खरीफ की फसल का खर-पतवार

ऊखाहरन- (पु०) लम्बी चौड़ी कथा; निरर्थक बात; वाणासुर की कन्या उषा का श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध द्वारा हर ले जाने की कथा

ऊढ़- (पु०) बेनाम का मनुष्य (काम न करने वाला)

ऊत- (पु०) एक प्रकार का भूत; विचित्र पुरुष

ऊथल- (वि०) छिछला, उथला

ऊदी- (वि०) हल्की ललाई लिये हुए काले रंग की

ऊपडाम- (पु०) दिखावा, उत्साह

ऊहि- (स्त्री०) स्मृति (बचपन की)

एँडा- (पु०) पैर या जूते का पिछला भाग

एकंगा- (वि०) एक अंग वाला, असन्तुलित

एकदन्तबाद- (पु०) एकान्तवास

एकदरा- (पु०) वह कमरा, जिसमें एक द्वार हो पर किवाड़ न हों

एकनध, एकनहरि- (स्त्री०) दल जोतते समय एक बैल पर रखा गया पूरे हल का भार

एकलंगी- (स्त्री०) तरफदारी, पक्षपात

एकसाँ- (वि०) संगठित, समान

एकहथँ- (अव्य०) एकजुट, एक

एखत्थी- (वि०) एक ही व्यक्ति द्वारा दुही जाने वाली (भैंस आदि); एक हाथ वाली; एक हत्थी

एजाँ- (क्रि० वि०) इस स्थान का

एटुका- (पु०) बहुत से पानों का बंधा गड्डर

एठाईं, एठियाँ- (क्रि० वि०) इसी स्थान पर

एड़ा- (पु०) थूनी का जमीन में गड़ा व हुआ निचला भाग

एहर- (क्रि० वि०) इधर

ऐन मौके- (अव्य०) ठीक या उचित समय, अवसर

ऐबी- (वि०) दोषी; शैतानी करने वाला

ऐबु- (पु०) दोष, दुर्गुण; -लगउबु क्रि० स०) व्यभिचरण दोष लगाना

ऐरन- (पु०) कानों में पहनने का गहना

ओंका-बोंका- (पु०) एक खेल, जिसमें बच्चे हाथ की मुट्ठियाँ बाँधकर ऊपर नीचे रखकर कहते हैं- ओंका-बोंका तीन तिलोका लैया लाती चंदन काती

ओंड़ा- (पु०) वह बड़ी कौड़ी, जिससे खेल में ढाही मारी जाती है

ओईंठि- (स्त्री०) पानी देने के बाद खेतों में जोतने योग्य हुई मिट्टी

ओइना- (वि० पु०) परेशान (मु०)गाँड़ि ओइना होना- अत्यधिक परेशान होना; (पु०) सुतली कातने का एक साधारण काष्ठ का यंत्र

ओइसी- (अव्य०) उधर; उधे

ओकलाई- (स्त्री०) उलटी, मिचली

ओखम- (स्त्री०) गर्मी

ओखरी- (स्त्री०) जमीन में बनाया गया पत्थर का पात्र, जिसमें अनाज कूटा जाता है; गाली

ओगरोधा- (पु०) पानी निकालने के लिये कुएँ की खुदाई का काम

ओगे- (अव्य०) सुविधा से या सुविधाजनक

ओछर- (वि०) नीच, ओछा

ओजा- (पु०) घट-बढ़

ओझबु- (क्रि० अ०) फँस जाना (विशेषकर कीचड़ या दलदल में)

ओझाई- (स्त्री०) भूत उतारने की प्रक्रिया

ओड़इला- (पु०) बचायी हुई घास

ओड़ा- (पु०) बड़ा टोकरा

ओड़ान- (पु०) कुएँ का वह स्थान ,जहाँ पुरवट का पानी गिरता है

ओढ़र- (पु०) बहाना; आरोप

ओढ़री- (स्त्री० पु०) अनब्याही पत्नी

ओत- (पु०) बहाना; आलस्य

ओती- (वि०) आलसी

ओदारबु- (क्रि० स०) बनाना, नष्ट करना

ओदी- (स्त्री०) कलम (पेड़ पौधों आदि की); चर्म रोग विशेष

ओदु- (पु०) मिट्टी की नमी

ओनउबु- (क्रि० स०) पाटा से खेत कसने केबाद जुताई करना; (क्रि० अ०) सुनना

ओनाबु- (क्रि० अ०) सुनना, ध्यान देना।

ओन्हबु- (क्रि० स०) रस्सी से बाँधकर नीचा कर देना (छप्पर आदि)

ओपु- (पु०) उचित जानकारी; किसी घटना का हालचाल

ओफाँ- (पु०) लाभ, उन्नति (स्वास्थ्य में); प्रोत्साहन

ओबर- (स्त्री०) मिलिट्री जूते में लगने वाली अगली ठोकर

ओबरि- (स्त्री०) बैठक का सुन्दर स्थान

ओबरी- (स्त्री०) ऐसी कोठरी, जिसमें हवा और रोशनी के लिए रास्ता न हो

ओबा- (स्त्री०) घोर संक्रामक बीमारी; जैसे- हैजा आदि; इसे दैव प्रकोप समझकर 'ओबा माई (जैसे- माता, शीतला माता, काली माई आदि) कहा जाता है

ओरखबु- (क्रि० अ०) ध्यान देना; बात सुनना

ओरहनु- (पु०) उलाहना

ओरा- (पु०) ओला; कमी

ओल्हौरी- (स्त्री०) दाल भरी पूड़ी

ओसउबु- (क्रि० स०) अनाज साफ करने के लिए किसी पात्र में भरकर हवा में थोड़ा-थोड़ा गिराना; वसउबु

ओसरी- (स्त्री०) बारी

ओसहनु- (पु०) वह अनाज, जो ओसाया जाये

ओसारु- (पु०) बरामदा

ओहँटी- (स्त्री०) सिंचाई की सुविधा हेतु बनाई गई बड़ी क्यारी

ओहारबु- (क्रि० स०) लकड़ी का बसुला से छीलना; मारने हेतु (हाथ या पाँव) उठाना

औंकर- (पु०) पशु का आँव नामक रोग, पेचिस

कँकना- (पु०) हाथ का गहना

कंकाला- (वि०) झगड़ालू; कर्कश

कंकाली- (पु०) एक घुमक्कड़ जाति के लोग, जो शिकार करते, भीख माँगते और गाते फिरते हैं (शायद ये लोग किसी समय शिव उपासक और कंकाल के पुजारी थे)

कँखरी- (स्त्री०) काँख

कंगड़ि, कंगनी- (स्त्री०) नदी आदि के कटाव से निर्मित किनारेकी धार; कगार; चबूतरा आदि का किनारा

कंगला- (पु०) दरिद्र लोग, जो बिना आमंत्रण, विवाह अथवा तेरहवीं आदि अवसरों पर खाने के लिए पहुँच जाते हैं

कंगही- (स्त्री०) कपड़ा बुनने की हस्त मशीन में प्रयुक्त छिद्र युक्त, पट्टी जिसमें ताना फँसाया जाता है

कंगा- (पु०) बिना बुलाये खाने के अवसर पर पहुँच जाने वाला व्यक्ति

कंचित- (क्रि० वि०) शापद

कंचुकी- (स्त्री०) स्त्रियों का वस्त्र विशेष

कंजा- (पु०) एक कँटीला जंगली पेड़, जिसके फल भूरे रंग केहोते हैं तथा कई औषधियों में काम आते हैं; (वि०) जिसकी आँखे भूरी हों अथवा जिसकी आँख दागी हों

कँटिया- (स्त्री०) छोटा तराजू

कंटेन- (वि०) पूर्ण, सुगन्धित

कंडउरा- (पु०) वह कमरा, जिसमें कंडा रखा जाये

कंडज- (स्त्री० पु०) एक जंगली पौधा, जिसकी दातून बनाई जाती है और जिसमें फली भी लगती है उसकी कड़वी गंध दाँतों के कीटाणुओं को मारती है

कँड़ा- (पु०) पैरों में पहनने का आभूषण

कंडा- (पु०) गोबर का उपला

कँड़िया- (स्त्री०) जमीन में गड़ा कंकड़ों व पत्थर से निर्मित वह पात्र, जिसमें मूसल से चावल, दाल आदि छाँटते या कूटते हैं

कंडील- (पु०) पतले और प्रायः रंगीन कागज के बने पिंजडे, जिसमें दिया जलाकर विशेष अवसरो पर रखे जाते हैं

कंता, कंथ- (पु०) पति, प्रेमी; कहा० "जैसे कंता घर रहे वैसे रहे विदेश"

कंतूतुरि- (स्त्री०) अंधेरे में रहने वाला मेंढक की भाँति रेंगने वाला जन्तु **विशेष**

कंथा- (पु०) कथरी गुदड़ी, योगियों का वस्त्र विशेष

कंदइल- (स्त्री०) कनेर का फूल

कंदहिला- (वि०) गंदा

कंधरु- (पु०) कुसमय, दुर्दिन

कंपा- (पु०) तिकोनी लकड़ी, जिस पर बुलबुल पकड़ने के लिए लासा लगा दिया जाता है

कँवरी- (स्त्री०) काँवरि, काँवर

कंस- (पु०) द्वेष, ईर्ष्या; मथुरा का प्रसिद्ध राजा

कइँचु- (पु०) तिरछापन

कइंजड़- (पु०) एक नीच जाति, जो गीदड़ आदि का शिकार करते हैं। ये लोग प्रायः जंगली एवं बहुत लड़ाकू होते हैं

कइँड़ा- (पु०) लकड़ी का २ इंच का टुकड़ा

कइँता- (पु०) मार्ग, सँकरा रास्ता; अंकुर

कइँती- (स्त्री०) पौधों के पेड़ से निकले हुए नए

कल्ले; --डारबु (क्रि० स०) अनाज माड़ते वक्त किनारे का अंश बीच में डालना ; पट्टा मारबु

कइठूँ- (वि०) कितने

कइति- (स्त्री०) एक जंगली पेड़ और उसका फल, जो गोल, सफेद और पकने पर **खटमिट्ठा** होता है

कइती- (अव्य०) ओर, तरफ

कइथा- (पु०) खट्टा फल विशेष

कइथिनि- (स्त्री०) कायस्थ की स्त्री

कइथी- (स्त्री०) वह भाषा ,जिसमें कायस्थ लोग प्रायः लिखते हैं। इसमें अक्षरों के ऊपर पाई नहीं लगती और यह शीघ्रता से लिखी जाती है। अवधी भाषा की लिपि

कइदि- (स्त्री०) जेल, कैद; कइनारा (पु०) शाखा, डाल

कइनि, कइनी- (स्त्री०) बाँस आदि की पतली टहनी

कइयउ- (वि०) कई

कइरी- (वि०) कयरी रंग की

कइसन- (वि०) कैसा

कइहा- (क्रि० वि०) कब, किस दिन

कउआक मामा- (पु०) एक जंगली लता और उसका फल, जो पकने पर लाल हो जाता है; शायद यह नाम इसलिए है कि पकने पर इसे कौए बहुत खाते हैं

कउआबु- (क्रि० अ०) सोते हुए व्यक्ति का बड़बड़ाना

कउआरी- (स्त्री०) एक जंगली पौधा, जो जहरीला होता है

कउथाँ- (क्रि० वि०) कौन-सा बार

कउनी- (क्रि० वि०) किस मार्ग से, किधर

कउरा- (पु०) जाड़ों में तापने के लिये जलाई गई आग

कउर यउबु- (क्रि० स०) कौरी या बाँहों में लेना या पकड़ना

कउली- (स्त्री०) दोनों बाहों को दोनों ओर से फैलाकर जितना घेरा बन जाता है उसके भीतर का स्थान (वि०) वचन देने वाला, प्रण करने वाला

कउलु- (पु०) प्रण

कउस- (वि०) गोरा पर देखने में बुरा

ककई- (स्त्री०) **राब की तरह पतली मीठी** द्रव वस्तु, जो गन्ने के रस से तैयार की जाती है

ककहा- (पु०) बड़ा कद्दू

ककही- (स्त्री०) एक घास, जिसका फूल कंघी के आकार का होता है और जिसके पत्तों में लबाब होता है; घास खींचने का कृषि यन्त्र विशेष; कंघी; अर्द्धचन्द्रकार मोतीयुक्त नाक का आभषण

कक्का– (पु०) काका, चाचा

ककिया– (स्त्री०) काकी, चाची

ककेटि– (स्त्री०) पान की एक उपजाति

कक्कन– (पु०) दोनों हाथों की उंगलियों को आपस में फँसाकर जोर से चाहे अपने ही दोनों हाथों या किसी दूसरे के हाथ को पकड़े रहने की मुद्रा

कक्कू– (पु०) काका या 'कक्का' का प्यार वाला रुप

कखउरी– (स्त्री०) आँख; कँख के बाल

कगाड़ि– (स्त्री०) दीवाल के आकार का किनारा या तट, कगार

कचउंधनि– (स्त्री०) शोर शराबा

कचकटी– (वि०) पताम साफ करने वाला (रंदा विशेष)

कचकन– (स्त्री०) ठेस

कचड़बा– (पु०) लड़ाई, झगड़ा, अशांति

कचपचिया– (स्त्री०) सूक्ष्म तारों का एक समूह, जो ठीक गिने नहीं जा सकते

कचर– (स्त्री०) थोड़ा अपच, अधिक खाने के पश्चात की दशा- **कचर (क्रि० वि०)** बकवाद, जल्दी–जल्दी

कचरा– (वि०) मिट्टी का गीला व कड़ा रुप (पु०) कीचड़

कचलुआ– (पु०) पेहँटुआ ककरी से छोटा फल ; पेहँटुआ

कचवाँसी– (स्त्री०) अरहर का मरा हुआ दाना

कचाइंधि– (स्त्री०) कच्चेपन की बू

कचाहिन– (स्त्री०) अशांति; दुःख; निरंतर अशांति

कचिया– (स्त्री०) गन्ने के रस की पतोई का अन्तिम रूप

कचूर– (स्त्री०) एक पौधा, जिसकी जड़ सुगन्धित और दवा के काम आती है

कचेठ– (वि०) कुछ–कुछ पक्का

कचेल्वा– (पु०) पतली व सादी काले रंग की चूड़ी। विवाह आदि अवसरों पर ज्यादा प्रचलन होता है; बच्चो की चूड़ियाँ; करुवा

कचोरा– (पु०) कटोरा

कच्च–पच्च– (पु०) भीड़; शोरगुल; बच्चों की बहुतायत; (वि०) कच्चा-पक्का

कछई– (स्त्री०) अनाज रखने के लिये मिट्टी का छोटा बर्तन

कछावर– (पु०) नदी या झील का किनारा; ऐसे स्थान की भूमि या आबादी

कछेउड़ा– (पु०) क्यारियों का खेत

कज– (फा० पु०) ऐब, दुर्गुण

कजकई– (स्त्री०) चालाकी

कजरा– (वि०) वह (बैल आदि), जिसकी आँखें काली हों

कजरार– (वि०) काला, काजल की भाँति

कजरी– (स्त्री०) दीपक से निकला हुआ कालिख; कालिमा, बादलों की घनी काली घटा; **–तीज– भादों का त्योहार विशेष**

कजहा, कजहिल– (वि०) भूरे बाल व आँख वाला; वर देखने आने वाले; दोष युक्त;

कजहाई– (स्त्री०) ब्याह वाली

कजा– (स्त्री०) अंत, मृत्यु

कजाक– (वि०) चालाक

कजावाँ– (पु०) ऊँट पर सामान रोकने का ढाँचा, क़ाठी

कजियावें– (अ० पु०) झिकझिक, मीन–मेष (काजी) की भाँति बाल की खाल निकालने की क्रिया

कजी– (वि०) दुर्गुण, ऐबी

कठई– (स्त्री०) भैंस या गाय का निर्जीव या कृत्रिम बच्चा; कर्ती

कटउंझनि– (स्त्री०) मार–पीट; मार–काट लड़ाई–झगड़ा

कटउआँ– (वि०) काटने से ही जाने वाला (पानी) ;योग्य फसल

कटकरी– (स्त्री०) धान के पुआल का बारीक भाग; बिना दाने का धान; (वि०) सर्दीरहित मौसम

कटघरा– (पु०) लकड़ी का घर या घेरा

कटच्छर– (पु०) कटा अक्षर (लिखावट में) अशुद्धि

कटनी - (स्त्री०) पकड़े न जाने के लिये घूमकर दूसरी ओर से निकल जाने की प्रक्रिया; फसल काटने की प्रक्रिया

कटत्री- (स्त्री०) चमड़ा सिलने का वह औजार, जो थोड़ा कटा होता है; वि० कटिया, सुतारी

कटरा- (पु०) काठ का घेरा; मैदान, जिससे कोई चीज काटकर साफ कर दी गई हो

कटलहा- (वि०) कटा हुआ

कटलासी- (स्त्री०) फटा हुआ आम

कटहरबु- (क्रि० स०) पीटना; खूब मारना

कटहा- (वि०) काट खाने वाला;**बाभन**-(पु०) महा ब्राहमण, ब्राहमण वर्ग से पितृ तर्पण आदि संस्कार कराने वाला

कटहिला सेराविन- (स्त्री०) अँकुरियों से युक्त पाटा, जिससे घास उखड़ आती है

कटा- (वि०) परेशान, आसक्त, संघर्षरत

कटाकट्ट- (क्रि० वि०) बिना अन्न जल के निराहार; स्पष्ट (बोलना); कट्ट-कट्ट

कटानि- (स्त्री०) काटने का दाँव; **काटने की** जगह

कटार- (स्त्री०) मिट्टी का प्याला; छोटी तलवार

कतासि- (स्त्री०) काटने की इच्छा; 'सि' लगाकर इच्छा प्रकट की जाती है

कटिया- (स्त्री०) जूता आदि सिलने का सूजा; गहना विशेष; हल में लगी बड़ी कीलें; फसल काटने का समय

कटुआ- (पु०) एक विशेष प्रकार का गहना, जिसके किनारे कटे हुए हों

कटूसी- (स्त्री०) बचाने की कोशिश; कंजूसी

कटेरी- (स्त्री०) भटकटइया (वनस्पति)

कटेसुआ कटेहना- (पु०) जहाँ पर चारा काटा जाता हो अर्थात् जहाँ पर मशीन गड़ी हो; थाने की जेल या वह कमरा, जिसमें अपराधियों को अवरुद्ध किया जाता है

कट्टी- (स्त्री०) श्वाँस; **-साधबु (क्रि० स०)ध्यान** न करना

कट्टू- (पु०) (काल्पनिक) जन्तु, जो काट ले; बच्चों का डराने के लिये प्रायः यह शब्द प्रयुक्त होता है

कट्ठा- (पु०) भूमि मापक जो 5 हाथ लम्बा होता है; पक्की भूमि जो नहाने, बर्तन धोने के काम आती है

कठइला- (पु०) लकड़ी का कठवता

कठई- (स्त्री०) गाय या भैंस दुहने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन

कठऊ- (पु०) गन्ना पेरने में प्रयुक्त काठ का कोल्हू

कठकरेजी- (वि०) बड़े दिलवाला

कठबपवा- (पु०) वह बाप, जिसने किसी की विधवा माँ से ब्याह किया हो और ऐसी अवस्था में पहले बाप से उत्पन्न संतानें माँ के साथ 'कठबपवा' के यहाँ आ जाती हैं

कठलेवा- (पु०) कड़ा लेव

कठहंडी- (स्त्री०) लकड़ी की हंडी

कठाइन- (वि०) जिसमें काठ की-सी गन्ध या स्वाद हो

कठुआबु- (क्रि० अ०) फल आदि का ठीक ढंग से भुन न पाने पर कड़ा हो जाना;

कठुरा- (पु०) अनाज के साथ मिली हुई गाँठ; वि० गिठुरा

कतला- (पु०) **बच्चों का गहना विशेष**

कठेठ- (वि०) कड़ा, कठोर

कठेल- (स्त्री०) धुनियों की कमान

कठोली- (स्त्री०) लकड़ी की कटोरी

कड़की- (स्त्री०) कमी, गिरावट; आर्थिक कमजोरी

कड़कोलि- दे० 'कड़ाकुलि'

कड़खा - (पु०) गड़रियों का एक गीत

कड़बड़ा- (पु०) सफेद और काले बालों वाला गधा

कड़हल - (वि०) अच्छी तरह जोती व सूखी हुई मिट्टी

कड़हिया- (स्त्री०) कड़ाही

कड़ाकुलि- (स्त्री०) पहाड़ी चिड़िया विशेष, जो जाड़ों में मैदान की ओर समूह रूप में उड़ती व बोलती हुई आती है;

कड़ावल- वि०) वह चाँदी , जो कड़ा एवं सुतिया में प्रयुक्त होती है

कडुआ-(पु०) बच्चों के हाथ या पैर में पहनाया जाने वाला कँड़ा

कढ़नी- (स्त्री०) बरसात में खेतों की वह जुताई, जिसके बाद अन्न बोना ही शेष रह जाता है

कढ़ा- (पु०) काढ़ा (वि०) प्रशिक्षित

कढ़ायन- (वि०) अनुपयोगी, व्यर्थ

कढ़ी- (वि०) तुरेदार वस्त्रों का कढ़ाई युक्त (रूप) (स्त्री०) खाद्य विशेष

कढ़ुआ- (पु०) जबरदस्ती किसी की कन्या का डोला निकलवाकर उससे ब्याह कर लेने का रिवाज़

कण्डहुरी- (स्त्री०) वह कोठरी, जहाँ कण्डे रखे जाते हैं

कण्डुवा- (वि०) कीटाणुओं एवं रोगों को आश्रय देने वाला

कतन्त्री- (स्त्री०) बाल कतरने का यंत्र, कैंची ; कतरनी

कतर ब्योंतु- (पु०) कठिनतापूर्वक; प्रबंध किसी प्रकार प्रबन्ध; काट- छाँट

कतरा- (अ० पु०) बूंद, कतला

कतरी- (स्त्री०) लकडी के कोल्हू में प्रयुक्त मोटी लकडी; वि० कातरि

कतली- (अ० वि०) कत्ल करने वाला,

कतवार- (पु०) कूड़ा-करकट

कतारी- (स्त्री०) एक तरह की ईख

कतिया- (स्त्री०) कैंची

कत्तल- (पु०) ईंटों आदि का कतरन

कत्ता- (वि०) कितना

कत्ती- (स्त्री०) एक प्रकार की बंधी-बंधाई पगड़ी, जिसे सिर पर हाथ से फिर बाँधने की आवश्यकता नहीं पड़ती

कत्थू- (वि०) किसी भी; प्रायः यह शक निरर्थकता प्रगट करने के लिये प्रयुक्त होता है

कथरा- (पु०) बड़ी मोटी कथरी

कदर- (स्त्री०) मूल्य, आदर, कद्र

कदरई- (स्त्री०) कातरता

कदराबु- (क्रि० अ०) हिम्मत हारना, डरपोक हो जाना

कधवँ- (क्रि० वि०) कान जाने, शायद

क़नइया- (स्त्री०) रस्सी का वह हिस्सा, जो पशुओं की गर्दन में बांधा जाता है

कनइल- (स्त्री०) एक फूल, जो लाल तथा पीला होता है

कनई- (स्त्री०) कीचड़

कनकइया- (स्त्री०) कागज की वस्तु, विशेष, जो तागे से उड़ाई जाती है; पतंग, गुड्डी

कनखा, कनुखा- (स्त्री०) शाखा, कोपल

कनखिया – (स्त्री०) आँख का कोना

कनगर- (वि०) तेज स्वभाव वाला (कुत्ता)

कनचोदा- (वि०) बदमाश, हरामी; कान (पिता) का जन्माया हुआ

कनटाइन- (स्त्री०) झगड़ालू स्त्री

कनफटा- (पु०) वह साधू, जिसके कान फाड़ दिये गये हो; ऐसे साधू कुछ कबीरपंथी और कुछ गोरखनाथ के अनुयायी होते हैं

कनफुसवरि- (स्त्री०) कानाफूसी; कानों में की गई बात

कनफोर- (पु०) जोर का कर्ण कटु शब्द, जो बराबर होता रहे

कन बोजा- (पु०) कान के दोनों किनारों का भाग

कनमइलिया- (पु०) कान से मैल निकालने वाला पेशायुक्त व्यक्ति

कनमनाबु- (क्रि० अ०) सोते से जाग जाना; भुनभुनाना

कनवा- (वि०) जिसके एक ही आँख ठीक हो, काना

कनसहिया- (स्त्री०) शाखदार सूखी लकड़ी

कनाई- (स्त्री०) कोंपल की बढ़ी हुई सूई

कनियाँ- (स्त्री०) गोद

कनियार – (वि०) योग्य; दूसरों के लिए कुछ करने वाला

कनी- (स्त्री०) छोटा टुकड़ा; प्रायः बहुमूल्य रत्नों के टुकड़ों के लिए प्रयुक्त

कनु- (पु०) कण; चावल गेहूँ आदि अन्न के छोटे टुकड़े; अन्न का टूटन या मैल

कनुआबु- (क्रि० अ०) गन्दा हो जाना (पानी का) बरसात के बाद अथवा सफाई होने पर

कनेठी- (स्त्री०) कान पकड़ने की क्रिया

कनेहरा- (वि०) गोद में रहने का आदती (बच्चा)

कन्छट- (स्त्री०) स्त्रियों का कोई गुप्तांग; यह शब्द केवल गाली में प्रयुक्त हाता है

कन्जड़- दे० कइंजड़ि

कन्तारा, कन्तेरा- (वि०) बड़े कानों वाला

कन्दई- (स्त्री०) किंवाड़ के नीचे रखा जाने वाला टुकड़ा; वि० कन्दरी

कन्ना- (पु०) कन्नी का बड़ा रूप (वि०) कीड़ा लगा हुआ (फल, गन्ना आदि)

कन्हावरि- (स्त्री०) वह कपड़ा, जो वर की ओर से वधू के भाई (प्रायः छोटे) के लिए ब्याह में आता है

कपच्छई- (पु०) दीर्घजीवी पौधा

कपछई- (स्त्री०) विपत्ति, कष्ट; क्षय रोग

कपटबु- (क्रि० स०) काट लेना, कतर लेना

कपट्यार-(स्त्री०) व्यंग्य

कपिला- (वि०) काले और लाल रंगों के बीच के रंग की; प्रायः गाय के लिए ही यह विशेषण आता है

कपिसा- (वि० मिट्टी की किस्म विशेष, जो पानी में शीघ्र पिघलती है तथा उतनी हीजल्दी सूखती भी है; कापिस

कपूरा- (पु०) बकरे का अंडकोष

कपूरी- (स्त्री०) एक बूटी, जिसकी जड़ में कपूर-सी सुगन्ध होती है। इसकी पत्ती साँप की दवा के काम आती है

कप्फनु- (अ० पु०) शव पर ओढ़ाने का कपड़ा; कफन

कफ- (स्त्री०) पोशाक में बाँह का अगला हिस्सा; जमा हुआ थूक

काफी- (स्त्री०) बलगम, कफ

कबाइति- (स्त्री०) नियमानुकूल चलने, उठने बैठने आदि की क्रिया

कबाबु- (पु०) भुना हुआ मांस का छोटा टुकड़ा, जिसमें मसाला मिला होता है और जिसे लोहे के सिंकचे पर रखकर सेंकते हैं

कबाला- (पु०) लिखित बिक्री पत्र

कबाहति- (स्त्री०) परेशानी; झंझट

कबीं- (वि०) राजी

कबीर- (स्त्री०) एक प्रकार का देहाती गीत, जो फागुन में गाया जाता हैं और जिसमें प्रायः गाली गलौज होता है

कबीसनु- (पु०) कमीशन

कबुज- (स्त्री०) कब्ज़, अपच

कबुर- (स्त्री०) कब्र

कबेलू- (पु०) एक रंग; खपरैल

कबोधनि- (स्त्री०) व्यर्थ की बात

कबोंया कब्बौं- (क्रि० वि०) कभी

कमकर-(पु०) नीची जाति का व्यक्ति; (वि०)नीच, जिसके माँ बाप का ठीक पता ना हो; शूद्र

कमगर- (वि०) काम का ; लाभदायक

कमती- (स्त्री०) पतले बाँस की खपची

कमबुझ- (वि०) कम बुद्धि वाला

कमरबस्ता- (पु०) बाँस, जो छप्पर के बीच में खड़ा-खड़ा लगाया जाता है

कमरी- (स्त्री०) बड़ा एवं मोटा हाथ का बुना कम्बल; कामरि

कमहगि- (स्त्री०) काम करने की अवधि, मजदूरी; परिश्रम

कमान- (वि०) पैदा किया हुआ, उपर्जित; (स्त्री०) धनुष

कमानी- (स्त्री०) बरमी चलाने वाली लकड़ी की पट्टी; धुनकी में लगा पुर्जा विशेष, मोटर आदि में लगा लौह, पुर्जा

कमासुत- (वि०) कमाई करने वाला पुत्र

कमेरा- (वि०) कमाने वाला

कमेल- (स्त्री०) नदियों में लगाई जाने वाली चार बाँसों से निर्मित चार चार हाथ लम्बी खपचियों की एक जाल

कमेलाघर- (पु०) कसाईबाड़ा

कमोरा- (पु०) मिट्टी का बड़ा बर्तन; मटका

कम्बरी- (स्त्री०) कमली

कम्याड़ा- (पु०) दरवाजे का पल्ला

करइल- (स्त्री०) बाँस का कोंपल; बाँस की नई डाल

करइहा- (स्त्री०) करहिया

करई- (स्त्री०) मिट्टी का छोटा बर्तन; परई

करकच- (स्त्री०) बार-बार का झगड़ा, उपद्रव

करकर- (वि०) स्वस्थ, मजबूत (वृद्धा[illegible]ा के दौरान)

करकस- (वि०) सख्त काम लेने वाला

करकसा- (वि०) झगड़ालू

करक्का- (वि०) काला

करगदा- (पु०) धागे का गहना विशेष

करघा- (पु०) कपड़े बुनने का यन्त्र; वह गड्ढा, जिसमें पाँव लटकाकर जुलाहा कपड़ा बुनता है; करगह

करछ- (स्त्री०) नमकीन एवं कटु स्वाद

करतूति- (स्त्री०) कर्तृत्व, गुण

करदा- (पु०) बट्टा, मैल; आटा पिसाने के बदले में दिया जाने वाला आटा

करधना- (पु०) कमर में पहना जाने वाला तागे का माला

करधनी- (स्त्री०) कमर का आभूषण

करनी- (स्त्री०) कर्म; करतूति आर्थिक मदद

करबस- (स्त्री०) हथियार लटकाने के लिये जीन या चारजामें में कसी हुई पट्टी

करबी- (स्त्री०) ज्वार के पौधे

करमटा- (पु०) हल्का काला कपड़ा

करसी- (स्त्री०) कंडे का टूटा बारीक भाग, लोहारों की भट्ठी; मिट्टी का बर्तन विशेष

करहा- (पु०) खेतों में डाँड़ी बनाने में प्रयुक्त बड़ा यंत्र

करहिया- (स्त्री०) कड़ाही

करही- (स्त्री०) रूई धुनकने वाली मशीन में लगा हुआ पटरा; खेतों में पतली मेड़ें बनाने में प्रयुक्त उपकरण; सनई के पौधों का एक भाग

करहुँ- (पु०) बाजरे आदि की बाली का फूल; धुआँ से बना जाला

करा- (पु०) सन या मूंग की पतली लट; दो करें मिलाकर रस्सी बटी जाती है

कराइन- (स्त्री०) छप्पर का अवशेष

करारा- (वि०) सख्त, बलवान

करारी- (वि०) अवश्य; निःसन्देह, करार के अनुसार

करिक्का- (वि०) काला

करिना- (स्त्री०) कन्या; अविवाहित लड़की

करिया- (वि०) काला

करियारी- (स्त्री०) एक जंगली पौधा, जिसमें विष होता है

करिल- (पु०) कल्ला, नये पत्ते

करिहावँ- (पु०) कमर

करीं- (स्त्री०) कली

करी- (स्त्री०) कड़ी, यह शब्द प्रायः लकड़ी के अर्थ में ही प्रयुक्त **होता है**

करीना- (पु०) तरीका, आदत, व्यवहार

करुअई- (स्त्री०) कड़ुआपन

करुआबु- (क्रि० अ०) फली आदि के दाना मजबूत होने लगना; कड़ुवा जाना

करुआर- (पु०) लोहे का काँटा

करुई- (वि०) थोड़ी देर पूर्व लगी हुई (नींद)

करुख- (वि०) कटु (शब्द)

करुवा-कचेला- (स्त्री०) पतली व सादी काले रंग की (चूड़ी) इनका प्रचलन विवाहादि अवसरों पर ज्यादा होता है

करू- (वि०) कड़ुवा

करेंठा- (वि०) काला

करेंहटा- (पु०) काला व्यक्ति

करेजी- (स्त्री०) बकरे आदि केकलेजे का नरम भाग जो खाया जाता है

करेजु- (पु०) कलेजा, हिम्मत; दिल

करेर या कर्‌यार- (वि०) सख्त; कड़ा; अधिक अवस्था का (जवान)

करैलहा- (वि०) वह खेत, जिसकी मिट्टी हल्के काले रंग की हो

करौंछ- (वि०) ऊँट की एक जाति

करौंछी- (स्त्री०) काले रंग की बड़ी बदली

कर्ती- (स्त्री०) मरे हुए पशु–बच्चे की खाल में घास आदि भरकर उसी आकार का बना रूप

कर्नैता- (वि०) कुछ लालिमा लिए हुए रंग का ऊँट

कर्रा- (वि०) कड़ा, सख्त, बुरा

कर्दा- (पु०) राब रखने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन

कर्रीकुर्रा- (पु०) उत्तेजित व संघर्षमय वार्तालाप

कर्वाविनि- (स्त्री०) दूध पकाने में प्रयुक्त बर्तन की जली खुरचन

कल- (स्त्री०) शांति

कलई- (स्त्री०) भेद

कलऊ- (पु०) कलियुग

कलक- (स्त्री०) हृदय की अपूर्ण इच्छा; दुःख, खेद

कल-कुसल- (स्त्री०) आनंद, मंगल, कल्याण

कलछुलि- (स्त्री०) सब्जी आदि चलाने का यंत्र

कलजुगहा- (वि०) कलयुग का, दुश्चरित्र

कलझबु- (क्रि० अ०) दुःख या वियोग से तड़पना

कलथरा- (पु०) जुलाहों का एक लकड़ी का औजार; चक्र

कलन्द- (वि०) चितकबरी शक्तिवर्द्धक स्वादिष्ट (मछली)

कलप- (स्त्री०) कष्ट; कल्प

कलपउबु- (क्रि० स०) जी दुखाना

कलपबु- (क्रि० अ०) हार्दिक इच्छा करना

कलफुलु- (पु०) कान का आभूषण

कलबली- (स्त्री०) खुजली की एक उपजाति

कलबूता- (पु०) काठ का एक उपकरण, जिससे जूते का अगला भाग ताना जाता है

कलमी- (वि०) कलम बाँधकर तैयार की गई (पौध)

कलसा- (पु०) पानी भरने के काम वाला मटकी नुमा पात्र

कलाँ- (वि०) उम्दा, बढ़िया, बड़ा

कलाई- (स्त्री०) बर्तन आदि पर चढ़ा रांगा आदि का लेप, कलई; हाथ

कलाक- (पु०) घंटा, यह शब्द प्रायः बम्बई, कलकत्ते आदि से नौकरी करके लौटे हुए देहाती बोलते हैं

कलाछ- (स्त्री०) (घोड़े की) उछाल या कूद

कलादा- (पु०) हाथी की गर्दन का वह भाग, जहाँ महावत बैठता है

कलिंदा- (पु०) तरबूज

कलि- (स्त्री०) आराम, सुख, छुटकारा (बीमारी से)

कलिया- (स्त्री०) मांस; उदा०- "हाजिर है जो कुछ दालदलिया। समझिए उसको पुलाव कलिया।"

कली- (स्त्री०) बंद फूल, खटाई का टुकड़ा

कलील- (वि०) थोड़ा कम

कलुट्टा- (वि०) काला, काले रंग का

कलोरि- (स्त्री०) गर्भधारण करने योग्य बछिया

कलोल- (पु०) खेल, आनंद; स्त्री-प्रसंग

कलछुला- (पु०) बालू निकालने का बड़ा चम्मच

कल्ला- (पु०) शाखाओं की चोटी का भाग विशेष; चेहरा

कल्लाबु- (क्रि० अ०) दर्द होना, जलन होना; भूख लगना

कल्ली- (स्त्री०) करहिया, जिसमें चबेना भूजा जाता है

कल्हरी- (स्त्री०) पाँच सौ कटी ऊँखों का ढेर

कल्हारबु- (क्रि० स०) चबेना आदि कराही में डालकर इधर उधर चलाना

कवर- (पु०) नेवाला, ग्रास

कवरा- (पु०) रोटी का टुकड़ा, जो प्रायः कुत्ते को दिया जाता है

कवही- (स्त्री०) दरवाजे के पीछे का वह भाग, जहाँ से बाहर की बात सुनाई दे

कस- (वि०) कैसा

कसक- (स्त्री०) अपूर्ण इच्छा, हार्दिक इच्छा

कसनि- (स्त्री०) कस देने की क्रिया; कसने की बात

कसबिन- (स्त्री०) दुश्चरित्रा; वेश्या

कसबी- (स्त्री०) वेश्या

कसमाकसमी- (स्त्री०) परस्पर उठाई गई कसम

कसयपनु- (पु०) कसाई का काम; निर्दयता

कसरई- (स्त्री०) तंगी, संकीर्णता

कसरि- (स्त्री०) कमी; अपच; प्रतिशोधात्मक भावना

कसाघात- (स्त्री०) कोड़े की चोट

कसाबु- (क्रि० अ०) (किसी पदार्थ का स्वाद) खराब या काँसे का-सा स्वाद हो जाना

कसाला- (पु०) कष्ट, बहुत परिश्रम

कसी- (पु०) कदम

कसीकसा- (स्त्री०) तंगी, खिंचाव, संघर्ष, भीड़-भाड़

कसीदा- (फा० पु०) बेलबूटे का काम

कसीस- (स्त्री०) तूतिया

कसु- (पु०) रस, नमी; तम्बाकू; दम

कसूस- (पु०) अपराध

कहकहा- (पु०) जोर की हँसी

कहका- (पु०) बुरा कहने का रास्ता

कहकुति- (स्त्री०) जनश्रुति, व्यर्थ की बात

कहलबु- (क्रि० स०) चबेना भूनना या कल्हारना

कहवाँ- (क्रि० वि०) किस स्थान पर

कहाउति- (स्त्री०) मृत्यु की सूचना

कहिया- (क्रि० वि०) किस दिन

कहिका- (सर्व०) किसका

काँकरि- (स्त्री०) ककड़ी

काँकुनि- (स्त्री०) सावाँ जैसा अनाज विशेष

काँखा सोती- (क्रि० वि०) एक कोख के नीचे से ले जाकर दूसरे कंधे के ऊपर से, बँधने की पद्धति जैसे दुपट्टा बाँधा जाता है

काँच- (स्त्री०) पुरुषों की धोती का वह भाग, जो धोती लपेटने के बाद नीचे से पीछे ले जाकर ऊपर कमर पर खोंस लिया जाता है; लांग

कांजी- (स्त्री०) पानी में डालकर कुछ फलों या गाजर आदि के टुकड़ों से बनी खटाई, जो पाचक रूप में पी जाती है; दूध दही से जमता है, काँजी ते फटि जाय

काँड़ा- (पु०) धुली दाल (उड़दकी)

काँड़ी- (स्त्री०) माचिस की तीली; कूँ डी जिसमें धान कूटा जाता है

कांदा- (पु०) कीचड़

काँपा- (पु०) चिड़िया फँसाने की लासा लगी लकड़ी

काँवरि- (स्त्री०) बहंगी, जिसके दोनों ओर मनुष्य बैठाये जाते हैं जैसा श्रवण ने किया था

काँस- (पु०) वह खर, जिससे डलवा बीना जाता है

काँसा- (पु०) कसकुट (फूल और पीतल) का मिश्रित रूप; बरसाती घास विशेष, जिसमें सफेद फूल निकलते हैं

काइयाँ- (वि०) धूर्त, चालाक; मक्कार

कागर- (पु०) कागज; कपड़ा

काची-कूची- (स्त्री०) कचड़ा; प्रायः माताएँ छोटे बच्चों का मुँह धोते समय कहती हैं काची-कूची कौआ खाय, दूध-भात मोर भैया खाय; वि० कीची-कीची; काचा-कूची

काछबु- (क्रि० स०) मटुकी आदि से (दही) निकालना

काज- (फा० पु०) बटन बन्द करने वाले गड्ढे; कार्य

काटू- (पु०) डरावना जीव; डराने वाला व्यक्ति; हौवा

काठि- (स्त्री०) तेल में बैठने वाली कीट या महीन खली

काठी- (स्त्री०) ऊँट की पीठ पर रखी जाने वाली लकड़ी की गद्दी; शरीर

काढ़ा- (पु०) छाल आदि जड़ी-बूटियों को उबालकर बनायी गई औषधि

कातरि- (स्त्री०) लकड़ी के कोल्हू में लगा एक पटरा; कतरी

कातिब- (अ० पु०) दस्तावेज या दूसरा कानूनी कागज लिखने वाला व्यक्ति

काथरि- (स्त्री०) कंथा या कथरी

कादर- (वि०) डरपोक, निकम्मा, सुस्त

कादहुँ- (क्रि० वि०) क्या सचमुच; शायद

कान- (पु०) सूरन; कर्ण

कानि- (स्त्री०) लज्जा; अपने व्यक्तित्व अथवा मर्यादा आदि का ध्यान

कानिस- (स्त्री०) दीवाल में छत के करीब पहुँचकर बनी डिजाइन विशेष; गल्ता

कानी- (स्त्री०) पगही और गेरावँ के अग्र भाग में अलग से बंधी रस्सी, जिससे गर्दन फँसी जाती है (वि०) एक आँख वाली

कानीहउदु- (पु०) अनाथ जानवर बन्द करने का स्थान; कांजी हाऊस; हरहाघर

कानू- (पु०) बनियों की एक उपजाति

कान्ह- (पु०) डेहरी के ऊपर का किनारा; कंधा

काफर- (वि०) धूर्त, दुष्ट, नटखट

काबर- (वि०) कबरा; काला और सफेद बूटी वाला

काबि- (स्त्री०) प्रयास, उपाय, बुद्धिमानी तर्क-वितर्क

काबिल- (वि०) योग्य, उपयुक्त

काबिला- (पु०) चरखी में लगे हुए दो लोहे के डण्डे

काबिस- (वि०) कच्चे मिट्टी के बर्तन रंगने के लिए रंगदार (मिट्टी)

कामकाजी- (वि०) परिश्रमी, व्यवसाय में अनुरत, कर्मठ

कामिल- (वि०) अच्छा

कार- (वि०) कारी, काला (पु०) कार्य; चौपहिया वाहन विशेष

कारन- (पु०) कारण; झगड़ा; **-करबु** (क्रि० अ०) बुरी तरह से रोना या चिल्लाना

कारपरदाज़- (फा० पु०) जो किसी दूसरे का काम करे; नौकर

कारबारी- (वि०) परिश्रमी: व्यापार करने वाला

कारस्तानी- (फा० स्त्री०) निर्देशन; चालबाजी

काराराति- (स्त्री०) काली रात; प्रायः यह शब्द स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है या सौगन्ध खाने के लिये

कारी- (स्त्री०) कलंक

कालसुदास- (वि०) खुशबूदार छोटे चावल का (धान)

काला कँकड़ा- (पु०) महा विषैला सर्प

कालिका- (स्त्री०) काली का छोटा रूप, छोटी काली

काली कपीली- (वि०) काली धारियों वाली चूड़ियाँ

कालेवाड़ी- (पु०) किस्म या बाना जान लेने के बाद व्यापारी द्वारा पूछा गया मूल्य

काव- (अव्य०) क्या, किस पर

कावा- (पु०) सेरावनि के किनारे लगने वाली दो लकड़ियाँ; चक्कर; टेढ़ा मार्ग

कासि- (स्त्री०) एक जंगली और लम्बी घास, जो बरसात में होती है

कास्त- (फा० स्त्री०) खेती

काह- (सर्व०) क्या; प्रायः कविता में प्रयुक्तः (पु०) पाल के दोनों तरफ लगे दो डण्डे (कावा)

काहिल- (अ० वि०) आलसी, प्रमादी

किंदल- (पु०) प्रशंसनीय कार्य (बच्चों के)

काहू- (सर्व०) किसी

किंदवा- (वि०) गन्दा (पानी आदि)

किचकिच- (स्त्री०) कीचड़ की अधिकता; कहासुनी, बहस

किचाहिन- दे० 'कचाहिन'

किचिर-किचिर- (क्रि० वि०) थूकने या बेमतलब की बात की आवाज

किटपिलिया- (वि०) केले की एक जाति

किता- (पु०) टुकड़ा

कित्ता- (वि०) कितना, किस प्रकार

किनकी- (स्त्री०) खूदा (चावल आदि के) टूटे हुए टुकड़े

किमाड़ा- 'कम्याड़ा' देखिए

किमियागर- (पु०) मिट्टी से सोना निकाल लेने वाले कारीगर

किम्यागोई- (स्त्री०) बिना कहे किसी कार्य के करने की पहल; तर्क

कियाँ- (पु०) क्रीड़ा

किरखी- (स्त्री०) कृषि, खेती

किरखुन- (पु०) दाल की चूनी का महीन कण

किरला- (पु०) अनुभूति, कर्म

किरवा- (पु०) कीड़ा

किरिन- (पु०) सेवक

किरिया- (स्त्री०) शपथ; कर्म, करनी

किरोध- (पु०) क्रोध

किर्चा- (पु०) टुकड़ा

किलना- (पु०) गोल मोटे कीड़े, जो प्रायः जानवरों के बदन पर चिपके रहते हैं

किलवतिया- (वि०) दुबारा तंबाकू के पौधों को लगाने की रीति

किलहँटा- (पु०) मैना जाति का एक पक्षी

किल्ला- (पु०) अंकुर

किल्ली- (स्त्री०) दरवाजों को भीतर से बन्द करने में प्रयुक्त लकड़ी की मोटी पट्टी; हाथ की कुहनी

किसबत- (स्त्री०) नाइयों की, सामान रखने में प्रयुक्त छोटा बक्सा

किसिम- (स्त्री०) किस्म, प्रकार; आम की उपजाति

किसुली- (स्त्री०) गुठली

किस्ती- (स्त्री०) मिठाई आदि रखने में प्रयुक्त चौकोर थाली

किहनी- (स्त्री०) कहानी, छोटा सा किस्सा

कीकर- (पु०) बबूल

कीट, किटाई- (स्त्री०) जमी हुई मैल, भूसा आदि की महीन धूल

कीन धरा- (वि०) किया हुआ या किया गया

कीना- (पु०) लज्जा, शर्म, पछतावा

कीमा- (पु०) महीन पिसा हुआ कच्चा मांस

कील- (स्त्री०) गहना विशेष; छोटा आम **वि० रीरी**

कीलबु- (क्रि० स०) बंद करना; (देवता भूत आदि) स्थापित कर देना (कील गाड़कर)

कुंजड़ा- (पु०) साग-तरकारी बेचने वाला व्यक्ति

कुंजा- (पु०) एक रोग, जिसमें शरीर भर में दाने पड़कर खुजली होने लगती है

कुँटिहर- (पु०) कुट्टी के लिए घर

कुँड़सार- (वि०) कूँड़ में बोने की पद्धति; सेवँ

कुँड़िया- (स्त्री०) कुण्ड (छोटा)

कुंडी- (स्त्री०) दरवाजा बन्द करने की जंजीर

कुंदुरखा- (पु०) पूरों या गड्ढों का ढेर

कुंभी- (स्त्री०) छोटा कुंभ, जो ६ वर्ष पर आता है; जल- तालाबोंकी घास विशेष

कुइयाँ- (स्त्री०) छोटा कुआँ

कुकुरउढ़िया- (वि०) बैलों के पिछले दाँत

कुकुर छिनारा- (पु०) बुरी तरह फँस जाने की स्थिति, क्योंकि कुत्तों के मैथुन में दोनों बहुत देर तक फँसे रहते हैं

कुकुरदंता- (वि०) (वह व्यक्ति) जिसके दाँतों के ऊपर दाँत हो

कुकुरनिनिया- (स्त्री०) कुत्ते की नींद

कुकुरहौं, कुकुरह्याँव- (पु०) कुत्तों का बराबर भौंकते रहने की क्रिया

कुकुराबु- (क्रि० स०) कुतिया का कुत्ते से संगम कराना

कुकुरी- (स्त्री०) मकाई का फल या भुट्टा; वि० औंड़िया

कुचकुचवा- (पु०) इस नाम का एक इतिहास है। कहते हैं कि जब लक्ष्मण जी के शक्ति लगी और हनुमान दवा हेतु पर्वत ही उठा लाये तो बहुत विलम्ब हो गया और सारी रात बीत गई। उल्लू पक्षी बोला- "काच-कूच-काच-कूच" अर्थात् जल्दी कुचकुचाकर दवा लगायें तभी से इसका यह नाम पड़ा; उल्लू

कुचरा- (पु०) बड़ा झाड़ू

कुचिला- (पु०) एक विष

कुचुरा- (वि०) जिसकी आँखें बन्द-सी हों; जो ठीक से देख न सके

कुच्चा- (वि०) चिथड़ा, कुचला हुआ, पिच्चा (पु०); भुनी हुई आलू आदि का कुचला हुआ रूप, भुर्ता; **वि० कुचला**

कुजगहाँ- (अव्य०) बुरे स्थान पर; कुजागे

कुजूनि- (स्त्री०) कुबेला, विलम्ब (भोजन, स्नान आदि के लिए)

कुज्झा- (पु०) पानी पीने का मिट्टी का बर्तन; रूपान्तर- भुरका, कुल्हड़, घट, कुम्हा

कुटकी- (स्त्री०) दाल में गैर पका दाना; छोटा कीड़ा; टुकड़ों वाली तंबाकू

कुटनी- (स्त्री०) दूती, स्त्रियों को पराये पुरुषों के लिए बहकाने वाली स्त्री

कुटानि- (स्त्री०) कूटने की मेहनत या आवश्यकता

कुटिहा- (वि०) कूठ या व्यंग्य कर्त्ता

कुटुक- (वि०) जरा भी कठोर नहीं

कुटुमु- (पु०) परिवार, बालबच्चे

कुटेम- (स्त्री०) अतिकाल, विलम्ब

कुटेव- (स्त्री०) बुरी आदत

कुट्ट- (वि०) समाप्त (बातचीत, समझौता आदि)

कुट्टी- (स्त्री०) अलगाव, सम्बन्ध विच्छेद, कटा हुआ चारा

कुठाँव- (पु०) बुरा स्थान

कुड़कबु- (क्रि० अ०) मुर्गी का अण्डा देने की क्रिया रोक देना

कुड़की- (स्त्री०) कुर्की, जब्ती

कुड़ी- (पु०) गधा

कुढ़- (स्त्री०) हल का हत्था; मोठिया

कुढ़बु- (क्रि० अ०) भीतर ही भीतर रुष्ट होना

कुढ़ा- (पु०) एक हल्की मोटी लकड़ी, जिसे जंघा भी कहते हैं

कुणनी- (स्त्री०) छोटा कूँड़ा; कूँड़ीं

कुण्ढा- (पु०) सुनारों में प्रचलित 'रुपये' का गुप्त नाम

कुतरक- (स्त्री०) कुसमय अथवा अव्यवस्थित भोजन, स्नान आदि

कुतुआ- (वि०) अंदाज से निश्चित, बिना गिना या तोला

कुतुनबु- (क्रि० स०) काट लेना, थोड़ा-सा कतर लेना

कुत्ती- (फा० स्त्री०) कुश्ती, मल्लयुद्ध

कुदारि- (स्त्री०) कुदाल; (वि०) दुष्ट

कुदीठि- (स्त्री०) कुदृष्टि, नज़र

कुधानि- (स्त्री०) बेईमानी से प्राप्त धन

कुनह- (स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष

कुनाई, कुनाव- (स्त्री० पु०) गेहूँ आदि का मड़ा हुआ ढेर

कुनेति- (स्त्री०) बुरी नीयत

कुप्पा- (पु०) चमड़े का बर्तन; वि० मसक

कुफार- (पु०) व्यंग्य, कटु वाक्य

कुफुति- (स्त्री०) आंतरिक वेदना

कुफुर- (पु०) भीषण परिवर्तन; घोर तथा अवांछनीय स्थिति

कुबाच- (पु०) बुरा वचन

कुबेरिया- (स्त्री०) संझवतिया, गोधूलि का समय, कुसमय; विलम्ब

कुभागु- (पु०) अशुभ या अहितकर वचन

कुमंरगी- (वि०) बुरे मार्ग पर चलने वाला

कुमेटी- (स्त्री०) सलाह; समिति

कुम्भरई- (स्त्री०) मिट्टी के बर्तन बनाने का धंधा

कुम्भिल्याबु- (क्रि० अ०) कुम्हलाना

कुम्हड़ा- (पु०) कद्दू

कुम्हा- (पु०) पानी पीने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन; रूपान्तर– कुल्हड़, घट, कुज्झा, भुरका

कुरउनी- (स्त्री०) ढेरी

कुरउबु- (क्रि० स०) उड़ेलना, ढेर लगा देना

कुरक अमीन- (पु०) कुर्की या वसूली करने वाला अफसर

कुरकुटा- (पु०) मोटा व सूखा–रूखा अन्न

कुरकुसा- (पु०) अर्थ–व्यवस्था

कुरथी- (स्त्री०) सब्जी या चारा विशेष

कुरमा- (पु०) परिवार, कुल

कुरहिलु- (पु०) खेतों को बराबर करते समय जगह–जगह लगे मिट्टी के ढेर

कुरिया- (स्त्री०) वह स्थान, जहाँ पर ताड़ी निकालने का काम होता है; छोटा घर; ढेरी

कुरी- (स्त्री०) डुडुआ और कबड्डी के खेलों में खिलाड़ियों की पारी; गोत्र

कुरुख- (वि०) कठोर (शब्द)

कुरुब- (पु०) पड़ोस

कुरुम- (पु०) बूट–जूतों में काम देने वाला अच्छा और मुलायम चमड़ा

कुरेदबु- (क्रि० स०) खरोंच देना

कुरेधु- (पु०) दुःखानुभूति, संवेदना

कुलंच या कुलाँच- (स्त्री०) छलांग

कुलंजनु- (पु०) पान की जड़

कुलच्छन- (पु०) बुरे लक्षण

कुलफा- (पु०) सब्जी विशेष

कुलही- (स्त्री०) ज्वार के दाने के ऊपर की भूसी; बच्चों की टोपी विशेष

कुलाबा- (पु०) नहर से खेत तक पानी लाने का रास्ता

कुलामनाय- (वि०) (बात) जो किसी के कुल भर में मना (निषिद्ध) हो

कुलाह- (स्त्री०) हल की मुठिया

कुलुफ- (पु०) ताला

कुल्थी- (स्त्री०) एक अन्न, जिसके फलियों का साग और बीज की दाल बनाते हैं

कुल्हरा- (पु०) बड़ी कुल्हाड़ी

कुल्हिया- (स्त्री०) मिट्टी का अत्यन्त छोटा बर्तन

कुसंभा- (पु०) अफीम और भांग को मिलाकर बनाया गया मादक पदार्थ

कुसढाब- (स्त्री०) कुश घास का अंकुर
कुहिरी- (स्त्री०) मोट से पानी निकालने की क्रिया
कुहीकाल- (वि०) तेज, चतुर, चालाक
कुहुक- (स्त्री०) कूक
कुहेसा- (पु०) कुहरा
कूँच- (स्त्री०) आम आदि का फूल, स्तन; यात्रा का प्रारम्भ; एँड़ी
कूँचबु- (क्रि० स० अ०) कुचलना; पौधों में मंजरी का निकलना
कूँचा- (पु०) गली, मुहल्ला
कूँटा- (पु०) डंठल के टुकड़े, जो अन्न तैयार हो जाने पर खलिहान में पड़े रहते हैं
कूँटी- (स्त्री०) फसल काटने पर पौधे का बचा डंठल; ठूँठी
कूँड़- (पु०) बालू रखने का बर्तन (भाड़ में) हल द्वारा बनी पतली नाली
कूँड़ी- (स्त्री०) मिट्टी या पत्थर का खुले मुँह का बर्तन
कूँत- (क्रि० वि०) थोक (पु०) अंदाज
कूँतबु- (क्रि० स०) कीमत आँकना
कूकुर- (पु०) कुत्ता
कूचुर- (वि०) जिसकी आँख मुलमुलाती हो
कूड़ी- (स्त्री०) आलू की फसल सींचने में प्रयुक्त पतली नाली
कूत-कूत- (संबो०) छोटे कुत्तों को बुलाने का शब्द
कूना- (पु०) रोटी आदि का अत्यंत छोटा टुकड़ा
कूफर- (वि०) निर्जन, अयोग्य
कूबति- (स्त्री०) शक्ति
कूबा- (वि०) जिसकी पीठ टेढ़ी हो
कूरा- (पु०) ढेर, हिस्सा
कूला- (पु०) दिल के नीचे का भाग; कमर के दोनों ओर का निचला भाग
केउ- (सर्व०) कोई
केउटी- (स्त्री०) कई दालों का मिश्रण
केकर- (सर्व०) किसका
केकरहा- (पु०) केकड़ा
केकही- (स्त्री०) कैकेयी
केकाँ- (सर्व०) किसको
केठई- (क्रि० वि०) किस स्थान पर
केड़वारी- (स्त्री०) आम के नये वृक्षों का समूह
केड़ुला- (पु०) नया वृक्ष
केतनिउ- (अव्य०) कई
केतहँत- (क्रि० वि०) कहाँ तक
केतहाँ- (क्रि० वि०) कहाँ
केताढ़ा- (पु०) मोटा गन्ना
केतिक- (वि०) कितना
केथुअई- (अव्य०) किस वस्तु
केथू- (वि०) किसी; किसी भी
केनारि- (वि०) अधिक दूध या घी वाली (गाय)
केर- (कारक चिह्न) का, की, के
केरइया- (स्त्री०) अनाज विशेष
केरमुआ- (पु०) पानी में होने वाला एक साग
केरा- (पु०) केला
केराना- (पु०) किराना, अनाज
केराव- (पु०) मटर विशेष
केव- (सर्व०) कोई
केवाँड़ा- (पु०) किंवाड़
केहर- (क्रि० वि०) किधर
केहाँ-केहाँ- (पु०) छोटे बच्चे के चिल्लाने या रोने की आवाज़
केहुँचा- (पु०) हाथ का अग्रभाग; पहुँचा
केहू- (सर्व०) किसी भी
कै- (संबो०) क्यों जी, (वि०) कितने
कैर- (वि०) सफेदी लिए हुए
कैल- (वि०) बीमार, लज्जित
कोंखि- (स्त्री०) गर्भ, पेट
कोंछु- (पु०) (स्त्रियों का) अंचल
कोंछि- (स्त्री०) फलों का गुच्छा
कोंड़- (स्त्री०) आनंद, हँसी
कोंडर- (पु०) किसी नदी या नाले का मोड़ वाला स्थान
कोंतिया- (वि०) दुबला-पतला और ऐसे बैठक का, जो शीघ्र बूढ़ा न हो (बैल, व्यक्ति)

कोंपरि- (स्त्री०) डाल का पका हुआ आम; वि० सीप

को- (सर्व०) कौन

कोइँछा- (पु०) स्त्री के अंचल का वह हिस्सा, जिसमें कुछ बाँधकर छोर कमर में खोंस लिए जाते हैं

कोइंधाकालु- (पु०) अत्यधिक बदबू

कोइना- (पु०) महुए का फल

कोइरी- (पु०) एक हिन्दू जाति के लोग, जो कंठी पहनते हैं और मांसादि नहीं खाते

कोइल- (स्त्री०) कोयल

कोइलटि- (स्त्री०) एक लोकगीत

कोई- (स्त्री०) कोख (पशु की)

कोका- (पु०) मूर्ख; उल्लू

कोखदर- (पु०) पसलियों के नीचे का भाग

कोचनी- (स्त्री०) काले रंग का महीन मलमल का कपड़ा

कोठि- (स्त्री०) बाँस का झुरमुट

कोठिला- (पु०) अनाज रखने में प्रयुक्त मिट्टी का बड़ा पात्र

कोड़रा- (पु०) वृत्ताकार रेखा

कोड़वा- (पु०) पानी के बहाव से बना बड़ा एवं गहरा गड्ढा

कोड़ी- (स्त्री०) बीस की राशि

कोढ़ा- (पु०) खेत का वह स्थान, जहाँ खाद के लिए पशुओं को रखते हैं; कुंढा

कोढ़ी- (स्त्री०) जंजीर रोकने की कड़ी; (वि०) कुष्ट रोगी

कोतरे- (वि०) एकांत

कोतल- (वि०) केवल सवारी हेतु प्रयुक्त

कोतहगरदनिया- (वि०) जिसकी गर्दन छोटी हो

कोताह- (फा० वि०) कम, तंग

कोताही- (फा० स्त्री०) त्रुटि, शैथल्य

कोतियाँ- (वि०) जिस बैल के सींग आगे को झुके हों; वि० सुइया

कोदबु- (क्रि० स०) दाँव न दिये जाने पर दाँव न पाने वाले बच्चों द्वारा गाली का दिया जाना

कोधे- (अव्य०) तरफ, दिशा

कोनइठे- (अव्य०) कोने की तरफ, कोने में

कोनवा- (पु०) आम की एक जाति

कोनाव- (पु०) गेहूँ की फसल का मड़ा हुआ ढेर

कोनिया या कोन्सी- (स्त्री०) खेत जोतते समय दो हराइयों के बीच व सिरे पर छूटी जमीन

कोमर- (पु०) नदी के कटाव का वह कोना, जहाँ घास आदि बहुतायत से हो

कोयर- (पु०) जानवरों के खाने का चारा; वि० दबा हुआ; गाय आदि का वह बच्चा, जो गर्भावस्था में जननी के द्वारा अधिक चारा खाने से दुबला हो गया हो

कोयरहा- (वि०) पशुओं के लिए घास आदि छीलने वाला

कोयरी- (पु०) यह जाति शायद साग-भाजी की खेती करने के कारण ही (कोयरकी) ऐसा कहलाती है

कोरचा- (पु०) छिपा हुआ धन, चुराकर बचाया हुआ पैसा

कोरमबु- (क्रि० अ०) रस्सी से लटक कर आत्मघात करना

कोरव- (पु०) छत में लगने वाला लकड़ी या बाँस का टुकड़ा

कोरवर- (पु०) सूखा पकौड़ा; गीले को भिजवर कहते हैं

कोरवा- (पु०) कोख, गोद; छप्पर में प्रयुक्त बाँस या कोर

कोरवान- (वि०) पवित्र, जिसका उपयोग न किया गया हो

कोरहा- (पु०) दरवाजे पर कोरें (रेखाएँ) खींचने का औजार

कोरा- (स्त्री०) गोद

कोराइब- (क्रि० अ०) (गाय, भैंस का) ब्याने की अवस्था के करीब पहुँचना

कोराव- (पु०) भैंस आदि के ब्याने की अवस्था

कोरि- (स्त्री०) किनारा, धार

कोर्रा- (पु०) रेंडी के पेड़ के सूखे तने

कोलइया- (स्त्री०) महुआ का फल

कोलई, कोलवा- (स्त्री०, पु०) वह खेत, जो केवल दो बिस्वे का हो

कोलनी- (स्त्री०) चिलम में छेद करने के लिए भाले के आकार की एक छुरी

कोलिया- पतली गली

कोल्हौरु- (पु०) वह स्थान, जहाँ कोल्हू गड़ा होता है

कोसली- (स्त्री०) गुझिया

कोसा- (पु०) मिट्टी का छोटा कटोरा

कोहँडा- (पु०) कद्दू

कोहँड़ौरी- (स्त्री०) सफेद कुम्हड़े से बनी बड़ी या मिठाई

कोहबर- (पु०) विवाह के समय का वह स्थान, जहाँ वर–वधू एक पास बिठाये जाते हैं

कोहला- (पु०) खली युक्त पानी से भूसे का सना हुआ रूप

कोहाँर- (पु०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला

कोहाइनि- (स्त्री०) कुम्हार की स्त्री

कौड़ियारा- (वि०) कम विष वाला साँप, जिसकी पीठ पर कौड़ियों के निशान होते हैं

क्यँवारा- (पु०) किंवाड़

क्यसन- (पु०) कृष्ण

क्यान- (पु०) दूध आदि हेतु प्रयुक्त पीपा

क्वँड़रा- (पु०) रेखांकित घेरा

क्वयिली- (स्त्री०) कोयल

क्वाँप- (पु०) कोयल

क्वाठा- (पु०) छत में प्रयुक्त मोटी लकड़ी, पाचन शक्ति, भण्डारण

क्वार- (स्त्री०) छप्पर में लगा बाँस; झूला

क्वारा- (पु०) गोद, क्रोड़

क्वाक- (पु०) कटहल का बीज; बीज का आवरण

सीताफल- (पु०) कद्दू

खंखड़- (वि०) अधिक सूखा एवं कठोर

खंगोरिया- (स्त्री०) (गरीब ग्रामीणों के पहनने की) चाँदी की हँसुली

खंधारबु- (क्रि० स०) (बर्तन आदि) धोना, ढूँढना

खंचड़- (पु०) दोगला घोड़ा

खँचरा- (वि०) नाटा बैल; ठिगना व्यक्ति

खँचिया- (स्त्री०) छोटी टोकरी

खँचुहा- (पु०) कछुआ

खँचोला- (पु०) खंचिया का बड़ा रूप

खंझड़ी- (स्त्री०) एक छोटा सा बाजा, जो एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से बजाया जाता है

खंझर- (वि०) मिला हुआ (अन्न)

खंटा- (वि०) खट्टा, अम्ल

खंडवानी- (पु०) खाँड़ का रस

खंडसरी- (स्त्री०) खाँड़ बनाने की दूकान

खंडसारी- (स्त्री०) गुड़ का वह भेद, जो गीला होता है और जिससे शक्कर बनाते हैं

खँड़िया- (स्त्री०) टुकड़ा (मछली, माँस का)

खँड्डुआ- (पु०) हाथ का कड़ा या कंगन

खँढ़उली- (स्त्री०) ईंट या कंडा का टुकड़ा

खंता- (पु०) मिट्टी खोदने का औजार

खंती- (स्त्री०) छोटा खंता; गड्ढा

खंधानी- (स्त्री०) पहिए के पुट्ठों को जोड़ने वाले खाँचे या चूल

खंभियाबु- (क्रि० अ०) पौध में अन्य अंकुर फूटना

खइँचनी- (स्त्री०) माचि से मिलकर बंधी हुई एक विशेष लकड़ी

खइँचा- (पु०) घास आदि भरी जाने वाली बड़ी डलिया

खइँतड़- (वि०) निकृष्ट (व्यक्ति), झगड़ालू

खइका- (पु०) भोजन

खइखानु- (पु०) घर गृहस्थी की समस्या या उत्तरदायित्व

खइर- (स्त्री०) कुशल; खैर

खइरात- (पु०) दान; मुफ्त

खइबरि- (स्त्री०) मट्ठा बनाने की लकड़ी

खइहँसु- (पु०) झंझट; (हृदय या मस्तिष्क को) दुखाने वाला

खउकबु- (क्रि० अ० स०) जोर से बोलना; डाँटना

खउरहा- (वि०) जिसे (विशेषतः कुत्ते के) खुजली हो; शुष्क चर्म वाला

खउरा- (पु०) खुजली (प्रायः पशुओं, विशेषतः कुत्तों की)

खउहटि- (स्त्री०) खाने के लिए दी हुई मजदूरी, अनाज आदि; स्वप्न

खउहाबु- (क्रि० अ०) क्रोधित होना

खउहार- (पु०) झंझट, झगड़ा

खक्खा- (पु०) बहुत ऊँचा, किंतु दुबला हाथी; - साह- लेन-देन में खरा व्यक्ति

खखरहा- (वि०) पुराना, बीच–बीच में छेद वाला (टोकरा)

खखाबु- (क्रि० अ०) जोर से हँसना

खखारि- (स्त्री०) कफी

खखुण्डी- (स्त्री०) भुट्टे का डंठल, जिसमें से दाना निकल गया हो

खगउरा- (पु०) हाथ का आभूषण

खड.वा-(पु०) पशुओं का एक रोग, जिसमें खुर सड़ने लगते हैं

खजहजा- (पु०) फल विशेष

खजुरा- (पु०) छप्पर के छोर व दीवाल केबीच की साँस; दाँतों में लगने वाला मैल; रोयेंदार घास विशेष, जिसके लगने से खुजली उत्पन्न हो जाती है

खटक- (स्त्री०) संदेह; आवाज

खटकिरवा- (पु०) खटमल

खटखटा- (पु०) चौकोर खाँचेदार बल्ली, जिसमें सुनार तार बढ़ाते हैं; चिड़िया आदि को भगाने में सहायक वाद्य विशेष

खटपटी- (स्त्री०) पैर में पहनने की खड़ाऊँ

खटपूरा- (पु०) ढेले तोड़ने की मुंगरी

खटबिन्द- (पु०) काले तिलों के तेल से बना एक आहार

खटमचवा- (पु०) छोटी सी चौकी या खाट, जिस पर रोगी आदि को रखकर ले जाएँ

खटलुस- (वि०) थोड़ा खट्टा, जरा खट्टा

खटरस- (वि०) कई रसों वाला, मजेदार

खटरागु- (पु०) झंझट

खटारा- (वि०) गड़बड़ या पुरानी (गाड़ी)

खटिया- (स्त्री०) चारपाई

खट्टदि- (क्रि० वि०) खट की आवाज से; अविलम्ब

खट्वाला- (पु०) बच्चों की खाट

खड़इँचा- (पु०) खंजन पक्षी, जो अधिकतर वर्षा ऋतु के अंत में दिखाई पड़ते हैं।

खड़उना- (पु०) गहना विशेष

खड़खड़िया- (स्त्री०) गाड़ी, जिसके पहिये खड़खड़ करते हों, पुरानी गाड़ी

खड़बिड़हा- (वि०) टेढ़ा–मेढ़ा

खड़मंडलु- (पु०) नाश, गड़बड़

खड़हरु- (पु०) भग्नावशेष, खंडहर

खड़ही- (स्त्री०) बहुत छोटा खेत; वि० डेबरी; बरिया; खाद

खड़हुली- (स्त्री०) कण्डे का खंड,

खड़िहा- (स्त्री०) हल की हरीस में लगने वाली लोहे या लकड़ी की खूँटी; धोबी के पाटे में बनी धारें; लिखने में प्रयुक्त मिट्टी ।

खडुहा- (पु०) बच्चों के पैरों का आभूषण

खतखश या खसखस- (पु०) लकड़ी में रेखा खींचने में प्रयुक्त यंत्र विशेष।

खतहा- (पु०) गड्ढा, छोटा गढ़ा

खतही- (स्त्री०) पशुशाला में जमा होने वाली खाद

खत्ती- (स्त्री०) ऊपर से बंद गहरा, चौड़ा गड्ढा; बखारी

खदरबु- (क्रि० अ०) मरना

खदरबदर- (क्रि० वि०) गड़बड़; उबलने की ध्वनि

खदरहा- (वि०) जमीन में बने हुए पशुओं के पदचिह्नों का सूखकर कड़ा हुआ (रूप)

खदराउर- (वि०) खाद वाला, उपजाऊ

खदरिहा- (वि०) खादर (नदी के आस-पास पाया जाने वाला बैल)

खदानि- (स्त्री०) खोदने की जगह; खान

खदाही- (पु०) घोड़े का चरवाहा

खदिगर- (वि०) खाद वाला

खदुका- (पु०) ऋण लेने वाला

खदुआ-बरहना-खदुहा-बेरहिमा- (वि०) खोटा; ऐरा–गैरा, असम्बद्ध

खदोह- (पु०) रेंड़ी का बदबूदार पानी

खनता- (पु०) खोदा हुआ स्थान, गड्ढा

खनमाँ- (क्रि० वि०) क्षण भर में; तुरंत ही बाद

खन्डन की मुर्ती- (स्त्री०) चाँदी की दो मूर्तियों वाली ताबीज

खन्ती- (स्त्री०) चौकोर एवं गहरा गड्ढा

खन्धखु- (पु०) जमीन में बना चौड़ा गड्ढा

खन्ना- (पु०) चारा काटने के स्थान पर कठोर मिट्टी का बनाया गया गोलाकार छोटा टीला; नस्ल

खपउबु- (क्रि० स०) व्यतीत करना, लगा देना

खपकान- (वि०) पागल, सिर्री

खपची- (स्त्री०) लकड़ी की पतली खपीच

खपटा- (पु०) मिट्टी के बर्तन का टूटा छोटा खण्ड

खपड़ा- (पु०) वह बर्तन, जिसमें कुम्हार बर्तन बनाते समय पानी रखते हैं; खपरैल में प्रयुक्त मिट्टी की पट्टियाँ

खपती- (वि०) खब्ती, अध पागल

खपबु- (क्रि० अ०) लगना, व्यतीत होना

खपरी- (स्त्री०) वह छोटी नाँद, जिसमें चबेना भूंजा जाता है व कुम्हार पानी रखते हैं।

खबक- (पु०) घोड़े के गले में पड़े हुए छाले

खबहा- (पु०) सफेद कुम्हड़ा, जिसका पीठा बनता है

खबार- (वि०) खाने वाला; खूब खाने वाला

खबीस- (पु०) क्रूर; प्रेत; कंजूस

खब्बू- (वि०) मुफ्त खाने वाला; जिसे इधर-उधर मुफ्त खाने की लत पड़ गई हो।

खम- (पु०) गड्ढा

खमदमु- (फा० पु०) साहस

खमरा- (पु०) जौ, मटर, चना का मिश्रण; वि० बेर्रा

खमसनि- (स्त्री०) ऊधम; धरपटक के साथ शोर-शराबा

खमसबु- (क्रि० स०) मिश्रित कर देना; मिला देना; धसक देना

खमसार- (स्त्री०) आँगन के चारों ओर बनी हुई दालानें

खयका- (पु०) भोजन

खयकार- (वि०) नष्ट

खयानति- (स्त्री०) दूसरे की वस्तु हड़प लेने की क्रिया

खरउटन- (स्त्री०) सूखने के बाद दरार पड़े हुए मिट्टी के बर्तन में गोबरी मिट्टी से चिकना करने की क्रिया

खरउबु- (क्रि० स०) गरम पानी से मिट्टी के बर्तन धोना; अधिक पकाना

खरकन्ना- (वि०) पिछले पैरों को घसीट कर चलने वाला बैल; वि० टनकहा

खरखट्टी- (वि०) बिना बिछायी हुई (खाट)

खरखर- (वि०) साफ (व्यक्ति), निर्लेप; खरा हिसाब रखने वाला

खरचान- (स्त्री०) ऊँट की पीठ पर सामान लादने का ढाँचा विशेष

खरजुर- (पु०) जुकाम

खरदनी- (स्त्री०) खरादने का औजार

खरबराई- (स्त्री०) नाश्ता

खरबार- (पु०) एक वस्त्र विशेष

खरमास- (पु०) शुभ मुहूर्त की दृष्टि से त्याज्य मास; चैत मास या बुरा मास

खरसान- (पु०) औजार तेज करने का पत्थर

खरस्याइंधि- (स्त्री०) पकवान में अधिक खर होने या जल जाने की दुर्गंध

खरहरा- (पु०) घोड़े की पीठ साफ करने का ब्रुश; बड़ा झाड़ू

खरहा- (पु०) खरगोश

खरहार- (स्त्री०) श्वेत एंव की काली पीठ वाली केवल दो तोले की मछली

खरही- (स्त्री०) पैरा आदि का सुडौल ढेर

खराइंधि- (स्त्री०) पेशाब से निर्गत बदबू

खराई- (स्त्री०) असमय जलपान या भोजन के कारण गले या पेट की गड़बड़ी, सिरदर्द आदि

खरापनु- (पु०) सत्यता; सच्चाई (हिसाब में)

खराबु- (क्रि० अ०) खूब पक जाना

खरिक- (पु०) गोशाला

खरिका- (स्त्री०) रस्सी की जाल का झोला; गोशाला; दातून

खरिदवार- (पु०) ग्राहक

खरिया- (स्त्री०) रस्सी का बना झोला (फल आदि का) या छोटी जाल, दुद्धी

खरिहई- (वि०) मिट्टी का वह बर्तन, जिसमें खली भिगोई जाती हो

खरिहानु- (पु०) प्रजा जाति को प्राप्त होने वाला खलिहानों में तैयार राशि में से अंश; खलिहान

खरिहिल- (पु०) जवान बैल

खरी- (स्त्री०) खली

खरु- (पु०) भाड़ में लगने वाला ईंधन, तिनका

खरुस- (वि०) सख्त (बात), कठोर (वचन)

खर्रा- (पु०) खर्राटा; फसलों आदि का रोग विशेष; लम्बा विवरण या मसौदा

खर्‌वचना- (पु०) बर्तन को खुरचकर साफ करने में प्रयुक्त पात्र विशेष

खर्स- (वि०) (वृक्ष या डाल) जो बहुत जल्दी टूट जाए; सख्त

खलइता या खलीता- (पु०) बड़ी जेब

खलकति- (स्त्री०) जनता; दुनिया

खलडम- (पु०) खेती को देखने या संभालने के लिए बना हुआ छोटा मकान (रहने का मुख्य घर अन्यत्र होता है); पाही

खलझारु- (पु०) वह स्थान, जहाँ खर-पतवार पड़ा हो, झाड़ी आदि से युक्त स्थान

खलपटी- (स्त्री०) नीचा स्थान (खेतों में)

खलबल्लरु- (पु०) अच्छे-बुरे सामानों का मिश्रण; अनावश्यक वस्तुएँ

खलरा- (पु०) चमड़ा

खलल- (वि०) गड़बड़, बाधा (पेट आदि में)

खलाँत- (स्त्री०) लुहारों के यहाँ प्रयुक्त चमड़े की बनी हवा करने की धौंकनी

खलार- (वि०) कुछ नीचा (क्षेत्र)

खलास- (वि०) बंद, खतम

खलासी- (पु०) सामान को साफ करने वाला नौकर

खलिगर- (वि०) कुछ खाली; फुरसतवाला

खलिया- (स्त्री०) खेतों का नीचा सिरा

खलिहर- (वि०) जिसके पास समय हो

खलीफा- (अ० पु०) दर्जी; दर्जी को सम्बोधित करने का संग्रात शब्द है। अर० खलीफा (नेता) अफगानिस्तान आदि देशों में यह बढ़ई, लुहार आदि के लिए भी आता है, उनके चेले उन्हें ऐसे ही पुकारते हैं, गुरु अथवा नेता मानकर; गायक मंडली के अगुवाकार।

खलैंट- (स्त्री०) लुहारों की वह मशीन, जिससे हवा की जाती है

खवउअलि- (स्त्री०) खूब खाने की आदत, क्रिया आदि

खवही- (स्त्री०) (दूल्हे, समधी आदि के) खाने के समय दिया गया नेग

खवास- (अ० पु०) व्यक्तिगत नौकर, जो पान आदि खिलावे या भोजनादि के समय सेवा करे; खाने की इच्छा

खस- (स्त्री०) जड़ी; घास विशेष

खसकबु- (क्रि० अ०) चुपके से निकल जाना; खिसकना, सरकना; दाँतों के नीचे कंकड़ आदि पड़ना

खसबोहि- (स्त्री०) खुशबू

खसमु- (फा० पु०) पति; प्रेमी; कभी-कभी स्त्रियाँ यह शब्द एक-दूसरे को गाली देने के लिए प्रयुक्त करती हैं।

खसरा- (पु०) पटवारी का एक रजिस्टर या कागज, जिसमें प्रत्येक गाँव के खेतों का पूरा विवरण होता है; रोग विशेष

खसलति- (अ० स्त्री०) खराब आदत

खसिया- (पु०) युवा बकरा

खहान- (वि०) भूखा-प्यासा

खाँखर- (वि०) (कपड़ा) जिसके आर-पार दिखाई पड़े; हल्का कपड़ा

खाँघ- (पु०) जूते का मध्य भाग

खाँची- (स्त्री०) घास आदि रखने के लिए बड़ी डलिया

खाँड़- (स्त्री०) देहाती शक्कर, (अव्य०) तक, आसपास

खांधबु- (क्रि० स०) काटना, काँड़ना

खाँहीं- (स्त्री०) ऊँची मेंड़

खाख- (फा० स्त्री०) मिट्टी, गर्द, राख

खाजा- (पु०) खाझा; एक प्रकार की मिठाई

खाढ़ा- (वि०) लंबा और बदसूरत; लंबा-चौड़ा (व्यक्ति)

खातिन- (अव्य०) कारण, लिए

खातिर- (स्त्री०) आदर, सेवा; (अव्य०) लिए

खादर- (पु०) सड़ा हुआ गोबर आदि, खाद; नदी के किनारे का भाग

खानजादा- (पु०) एक प्रकार का उच्च श्रेणी का मुसलमान; खान + जादा; खान का पुत्र

खानसामा- (पु०) खाना पकाने वाला नौकर; मंजरी

खानि- (स्त्री०) किस्म, भण्डार

खापबु- (क्रि० स०) कोल्हाड़ में गरम रस के खौलते रहने पर उसमें धीरे-धीरे ठंडा रस डालते रहना

खापा- (पु०) घाव आदि पर लपेटने की पट्टी

खाम- (वि०) कम, छोटा

खामखाहँ, खामखाहीं- (फा० क्रि० वि०) व्यर्थ, फालतू

खार- (वि०) नमकीन, खारा

खारा- (पु०) रस्सी से बुना हुआ जाल, जिसमें घास या भूसा बाँधा जाता है; (वि०) नमकीन; -ठप्पा (पु०) जेवर ढालने का साँचा विशेष

खाल- (वि०) नीचा, गहरा (स्त्री०) चमड़ा

खाली- (अव्य०) केवल (वि०) रिक्त; नीचा

खासर- (वि०) कमजोर

खासा- (वि०) अच्छा, ठीक-ठाक, बड़ा

खाहमखाह- (क्रि० वि०) अवश्य, निःसंदेह

खिंचुहा- (पु०) कछुआ

खिंड़रिचि- (स्त्री०) खंजन पक्षी

खिखियाबु- (क्रि० अ०) जोर से हँस देना; बिना मतलब हँसना

खिचखिच- (स्त्री०) हठ; दोनों ओर खींचने की क्रिया; आपत्ति

खिजमत या खिदमत- (फा० स्त्री०) सेवा

खिझरा- (पु०) पके हुए दूध का फटा हुआ रूप, जो गाय, भैंस आदि के ब्याने के बाद दो-चार दिनों तक स्वतः बन जाता है।

खियाल- (स्त्री०) ध्यान, हँसी

खियाबु- (क्रि० अ०) घिस जाना, कम पड़ जाना

खिरनी, खिन्नी- (स्त्री०) फल विशेष

खिरपबु- (क्रि० स०) किसी काम में लगा देना

खिरिहिरबु- (क्रि० स०) चालना

खिलकति- (स्त्री०) आदत; तमाशा; भीड़

खिल्ली- (स्त्री०) हँसी, (वि०) हँसी निमग्न

खिसहटि- (स्त्री०) शर्म, झेंप

खिस्सा- (पु०) कहानी

खिस्सू- (वि०) खीस निकालने वाला; झेंपू; शर्माने वाला

खीलबु- (क्रि० स०) खूब बंद कर देना, कील से बंद करना

खीला- 'कीला' देखिए

खीलि- (स्त्री०) धान के भीतर का भुना हुआ चावल

खीसा- (पु०) जेब (भीतरी भाग); किस्सा

खुँटरा- (पु०) बैलगाड़ी में लगे खूँटे

खुँटरी- (स्त्री०) बैलगाड़ी में लगने वाले लकड़ी के छोटे खूँटे

खुँटहरि- (वि०) बुवाई में प्रयुक्त हल की किस्म

खुँटाई- (स्त्री०) फरमे पर लगे हुए जूते के ऊपरी भाग को खींचकर नीचे के भाग के साथ की गई जुड़ाई

खुँटारम- (वि०) लगभग दो बीता लम्बा बुवाई के काम आने वाला हल

खुँथेलहा- (वि०) वह खेत, जिससे ज्वार या बाजरे की कटाई थोड़े दिन पूर्व हुई हो

खुइसट- (वि०) खूसट, रद्दी

खुखुई- (स्त्री०) बरसात के दिनों में कुछ वस्तुओं पर जम जाने वाली भुकुड़ी ऐसी चीज

खुचुर- (पु०) दोष, ऐब

खुटका- (पु०) चिन्ता, खटका

खुटाबु- (क्रि० अ०) खर्चा बढ़ जाना, धन में कमी आ जाना; भैंस आदि का दूध देना बंद करना

खुटिया- (स्त्री०) चाक रखने के लिए चौपटि में ठुकी हुई इमली की लकड़ी। शक्कर की मिठाई विशेष; खूँटी

खुटिहन- (वि०) वह खेत, जिसमें 'खूँटी' वाले अनाज बोए जाएँ

खुड्डहा- (पु०) वर्षा से बचने के लिए बोरी का निर्मित छोड़

खुड्डू- (पु०) शौचालय

खुत्था- (पु०) बल्ली आदि का सिरा

खुथुई- (स्त्री०) बच्चों का नेत्र रोग

खुद- (सर्व०) स्वयं

खुदरा- (वि०) टूटा, फुटकर

खुद्दर- (पु०) कचड़ा

खुनखुनिया– यादवों के कथावाचक बंसु नामक बाजा बजाकर यादवों के यहाँ गाने वाली जाति

खुन्याद– (स्त्री०) दोष, कमी

खुमार– (पु०) अंतिम प्रभाव (नशे का)

खुम्भी– (स्त्री०) कान की लौंग; गहना विशेष

खुरखुंधि– (स्त्री०) जल्दबाजी; उतावलापन

खुरचाली– (वि०) दुष्ट, शरारती; वि० धइँताली

खुरदी– (स्त्री०) हाथी के दोनों ओर लटकती हुई थैली, जिसमें सामान रखा जाता है

खुरदुरू– (स्त्री०) बेगार; कार्य सम्बन्धी सहायता

खुरपी– (स्त्री०) मिठाई चलाने व खुरचने का यंत्र; छोटा खुरपा

खुरपेंची– (वि०) उपद्रवी, झगड़ा कराने वाला

खुरपौलिहा– (वि०) खुरपे के आकार जैसा खुर वाला (बैल)

खुरसुम्पा– (वि०) जिस घोड़े के सुम खुरों की भाँति हों

खुरा– (स्त्री०) पशु का केवल पैर बांधने की रस्सी

खुराई– (स्त्री०) खुर के चिह्न

खुरियउबु– (क्रि० स०) हल्का जमीन में रोंपना या गाड़ देना

खुरी– (स्त्री०) जूते में लगी ऐंडी; पशुओं का नाखून (गाय, भैंस आदि)

खुलता– (वि०) सुन्दर, जँची हुई

खुलासा– (वि०) साफ, स्पष्ट

खुल्ला– (पु०) बाजरे का भूसा; खुला हुआ

खुसकी– (स्त्री०) सड़क का रास्ता; सूखापन

खुसखुस– (वि०) नरम, मुलायम

खुसिया– (स्त्री०) खुशामद, चापलूसी

खूँटी– (स्त्री०) कान का गहना विशेष; दीवाल आदि में लगी लकड़ी या कीला

खूँटू– (पु०) कान का मैल; कपड़े आदि का कोना; कान का गहना विशेष

खूँड़– (स्त्री०) देशी गन्ना

खूई– (स्त्री०) खराब आदत

खूदा– (पु०) अन्न का रद्दी हिस्सा, टूटे भाग (चावल आदि के)

खूनबु– (क्रि० स०) कूटना

खूबी– (स्त्री०) विशेषता, ग्राह्यता

खूसट– (वि०) अरसिक, मनहूस

खूहा– (पु०) अपराध, तुहमत, बुरी बात

खूही– (स्त्री०) गन्ना का पिराई के बाद बचा हुआ अंश

खेचुहा– (पु०) कछुआ

खेडुका– (पु०) लत्ता, टुकड़ा

खेढ़ा– (पु०) कठिन स्थिति, बेढंगा काम

खेढ़ी– (स्त्री०) पशुओं के बच्चे पैदा होने पर योनि से निकली हुई माँस और खून की थैली; वि० झर

खेतारी– (स्त्री०) खेतों का पड़ोस; गाँव से दूर स्थान

खेप, खेवा– (स्त्री०) बोझ; जितना एक बार में लद सके

खेपुहा– (पु०) खजूर की शाखा, जिसमें पत्तियाँ लगी होती हैं; वि० डखना

खेम– (स्त्री०) कुशल, कल्याण

खेवटु– (पु०) (लेखपाल) पटवारी के कागज, जिसमें भूमि के अधिकारियों का विवरण होता है

खेह– (स्त्री०) मिट्टी

खेहा– (पु०) (लकड़ी पर लगा) घाव; चिह्न; (स्त्री०) मिट्टी

खैर– (स्त्री०) कुशल, कत्था; **–सल्लाह (स्त्री०)** कुशल क्षेम, (अव्य०) अच्छा हुआ या कहो

खैलरि– (स्त्री०) मथानी

खोंखर– (वि०) भीतर से पोला; यह शब्द प्रायः आभूषणों के लिए प्रयुक्त होता है

खोंघला–खोड़रा– (पु०) घोंसला

खोंड़िल–बाड़िल– (वि०) टूटा–फूटा; जैसा–तैसा

खोंचा– (पु०) बालू निकालने में प्रयुक्त भड़भूजे का कलछा; फल तोड़ने में प्रयुक्त रस्सी का थैला विशेष

खोंची– (स्त्री०) नाज, साग, भाजी आदि में से निकालकर लिया हुआ टैक्स; विशेष अवसरों पर नाऊनि आदि को मिलने वाला अनाज, जो व्यवहार स्वरूप मिलता है

खोंटि– (वि०) किसी त्योहार आदि के दिन किसी की मृत्यु से त्योहार न मनाने की परम्परा; दुष्ट, शैतान

खोंड़- (वि०) कम, खंडित

खोंढ़र- (पु०) पोल, खाली स्थान

खोंढ़ा- (वि०) जिसके दाँत टूट गये हों

खोंपी- (स्त्री०) कलम (हजामत की)

खोइना- (पु०) दाह-संस्कार के समय जले शव का सिर फोड़ने में प्रयुक्त आम आदि का लम्बा व हरा डण्डा

खोइनी- (स्त्री०) मँड़ाई में काम आने वाला एक औजार

खोई या खूही- (स्त्री०) गन्ना का अवशेष, जो पेरने के पश्चात बचता है

खोआौरी- (स्त्री०) खोया से बनाया गया मीठा पकवान

खोका- (पु०) लकड़ी का खुला डिब्बा

खोखा- (स्त्री०) हुण्डी की नकल

खोड़- (पु०) कपड़े का वह भाग, जो काँटा आदि लगने से फट जाय

खोजहरी- (स्त्री०) फार के नीचे की लकड़ी

खोजा- (पु०) पुरुष, जिसके मूँछ, दाढ़ी न निकलती हो

खोझर- (वि०) बीच का भाग, जिसमें खोखलापन हो

खोट- (वि०) शरारती, तंग करने वाला

खोड़िया- (वि०) बैल का प्रकार, (स्त्री०) सम्बन्ध, औपचारिकता

खोता- (पु०) घोंसला

खोपरा- (पु०) देशी हल के फार में नीचे प्रयुक्त लकड़ी की पट्टी; वि० मुड़िया, खोजहरी, ख्वाँपा

खोभार, खोभारि- (स्त्री०) विकट स्थान, भेंड़-बकरियों के रहने का स्थान

खोय- (स्त्री०) आदत, बुरी आदत

खोरवा, खोरा- (पु०) कटोरा (मिट्टी का)

खोराँट- (वि०) घाघ, पक्का

खोरि, खोरी- (स्त्री०) पशुओं के आवागमन की गली

खोरिया- (स्त्री०) पुरहाई कुएँ की पैढ़ी का दूर व गहरा वाला भाग, कटोरी

खोलराई- (स्त्री०) छिलका

खोलरी- (स्त्री०) खाल

खोह- (स्त्री०) निर्जन स्थान, दूर की जगह

खौं- (पु०) वह गड्ढा, जिसमें कुम्हार मिट्टी घोलते हैं, अनाज का भण्डारण स्थान

खौर- (स्त्री०) राख, जो मत्थे में लगाई जाती है

खौहार- (पु०) झंझट

खौही- (स्त्री०) खाने के लिए ऋण रूप में लिया गया अनाज

ख्यलबखरी- (स्त्री०) खेलकूद

ख्याप- (स्त्री०) जितना एक बार में लद सके

ख्यावा- (पु०) चक्कर, दफा, बार

ख्वाँचा- (पु०) फल आदि तोड़ने में प्रयुक्त रस्सी की जाल, जो लग्गी में बाँधी जाती हैं

ख्वाँट- (वि०) दुष्ट, शैतान; त्योहार के दिन किसी की मृत्यु से वह त्योहार न मनाने का रिवाज

ख्वाँटबु- (क्रि० स०) फूल आदि तोड़ना

ख्वाँपा- (पु०) हल में फार के नीचे लगने वाली लकड़ी

ख्वाम- (वि०) दुष्ट, खराब

ख्वारी- (स्त्री०) बेइज्जती; दुर्दशा

ख्वावा- (पु०) खोया

ख्वाहा- (पु०) रस उलचने की छोटी नाँद

गंगनधूरि- (स्त्री०) कुकुरमुत्ता की तरह की एक वनस्पति, घास विशेष

गंगबरार- (वि०) वह भूमि, जो नदी के पाट के कारण जोत में न आ सके

गंगुआ सुरइती- (स्त्री०) मिलजुलकर ठगने की क्रिया

गंगेरुवा- (पु०) अनेक शाखाओं का एक दीर्घजीवी पौधा

गँछाई- (स्त्री०) गाँछने की क्रिया, सुन्दरता या मजदूरी

गंज- (पु०) ढेर, बाजार; (स्त्री०) शकरकंद

गंजहड़- (पु०) बड़ा बर्तन (हाथी के लिए)

गंजिया- (स्त्री०) कमर में लपेटकर या लटकाकर रुपया पैसा रखने में प्रयुक्त थैली

गंजी- (स्त्री०) शकरकंद; बनियाइन; (वि०) जिसके शरीर में गंजा हो

गंजुआ- (वि०) पाल का पकाया हुआ; कुचला हुआ

गंठकाठ- (वि०) छोटी पूँछ वाला (बैल)

गंठा- (पु०) प्याज का मोटा बड़ा दाना

गंठी- (वि०) ऊँची, ठीक से तैयार की गई (बारात, बात, महफिल आदि)

गँड़खोदउवलि- (स्त्री०) छिद्रान्वेषण, मनोमालिन्य

गँड़गिल्हर- (पु०) पेड़ पर चढ़कर खेला जाने वाला खेल

गंडही- (स्त्री०) गला

गँड़हा- (पु०) टेढ़ा-मेढ़ा और खराब खीरा

गंडा- (पु०) (प्रायः हनुमान, भैरव का) प्रसाद स्वरूप रंगीन धागा, जिसे भक्त लोग पहनते हैं। चार की संख्या को भी गंडा कहते हैं।

गँड़ासी- (स्त्री०) एक औजार, जिससे चौपायों के लिए चारा काटते हैं

गँड़िहा, गंडुआ- (वि०) अप्राकृतिक व्यभिचार करने और कराने वाला

गंडू- (वि०) गांडू, यह शब्द यों भी नीच जातियों द्वारा एक-दूसरे को फटकारने या डाँटने के लिए प्रयुक्त होता है

गंडुहा- (वि०) शायद या 'गंडुआ' का प्र० या घृणित रूप है, जो फटकारने के लिए प्रयुक्त होता है

गँड़ेरी- (स्त्री०) ज्वार, बाजरे या ईख आदि के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े

गँड़ेवर- (स्त्री०) दो या चार बैलों को जोड़ने की एक विशेष रस्सी

गँदला- (वि०) गंदा; अनिश्चित

गंधि- (स्त्री०) बदबू

गंधी- (स्त्री०) हींग; धान की फसल में लगने वाला कीड़ा विशेष; इत्र बनाने वाला व्यक्ति; (वि०) गंदी

गँवउबु- (क्रि० स०) खो देना, गायब कर देना

गँसनहर- (वि०) गाँसने वाला, डाँटने वाला

गँसना- (पु०) जकड़ने की रस्सी

गँसनि- (स्त्री०) सिकुड़ने या कसने की क्रिया.

गइँठा, गइना- (वि०) नाटा, नाटे कद का

गइबुआ- (वि०) आवारा, जिसके घर-बार का पता न हो

गइरी- (स्त्री०) मिट्टी घोलने की हौदी या गड्ढा

गउँखा- (पु०) ताक, ताख

गउँगीर- (वि०) चालाक; जो अपनी 'गौं' पर न चूके

गउँछा- (पु०) नई शाखा

गउंज- (स्त्री०) गूंज; धुआँ आदि की घूमती हुई लहर

गउँतरा- (पु०) शिशु के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा, पोतड़ा

गउँतरी- (स्त्री०) रिश्तेदारी, मेहमानी

गउँसठि- (स्त्री०) सलाह

गउँहाँन- (वि०) गाँव से मिला हुआ खेत

गउआई- (स्त्री०) अफवाह

गउआरासी- (वि०) गऊ की भाँति-सीधा

गउआई- (स्त्री०) अफवाह, जनख, अनिश्चित बात

गउकसी- (फा० स्त्री०) गोवध

गउखा- (पु०) बड़े पशुओं का चमड़ा; (वि०) गायों से सम्बन्धित

गउघाती- (वि०) गऊ की हत्या करने वाला

गउचरु- (पु०) गायों के चरने के लिए सुरक्षित भूमि

गउझ, गउझा- (स्त्री०) फलों का गुच्छा, जो पेड़ पर लगा हो

गउझरे- (वि०) सघन

गउढ़ी- (स्त्री०) हाथ-पैर समेटकर बैठने की अवस्था

गउधुरिया- (स्त्री०) गोधूलि

गउहानु- (पु०) पशुओं का वन्य विश्राम-स्थल

गच- (फा० स्त्री०) चूने की जुड़ाई

गचकबु- (क्रि० स०) आराम से खाना, बेकारी में बैठे-बैठे खाते रहना

गचक्का- (पु०) निर्द्वन्द भोजन

गचबु- (क्रि० अ०) (कौड़ी या ओंड़े का) ढाही के या दूसरे ओंड़े के पास पहुँच जाना

गचर-गचर- (क्रि० वि०) जल्दी-जल्दी और अधिक (खा जाना)

गछा- (वि०) घना

गछिया- (स्त्री०) पतली डाल या छोटा पौधा

गजगहिली- (वि०) गर्वीली

गजनार, गजनाल- (स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी तोप

गजबाँकु- (पु०) वह बड़ा बाँक या अंकुश, जो पीलवान रखता है

गजबेलि- (स्त्री०) हाथी के हौदा को कसने की जंजीर

गजरदम्म- (अव्य०) प्रातःकाल, तड़के

गजरा- (पु०) फूलों की माला

ग़ज़ल- (स्त्री०) घंटा, घंटे की आवाज़; प्रेम की कविता; फारसी या उर्दू का एक छन्द

गजी- (स्त्री०) मोटे कपड़े की एक किस्म

गजु- (पु०) ९० सेमी० की माप; बैलगाड़ी का पुर्जा विशेष

गज्झा- (पु०) सुख, आनन्द; - **माल**- बहुत अधिक सम्पत्ति

गझिन- (वि०) घना (पौधों केलिए)

गटई- (स्त्री०) गला

गटकउअलि- (स्त्री०) निगले या गटकने की आदत, उसकी पद्धति या निरन्तरता

गटक्का- (पु०) एक बार में या झट खा जाने का क्रम

गट्ठा- (पु०) कलाई, हाथ; खंड

गठ- (स्त्री०) जेब; धड़

गठनि- (स्त्री०) बनावट, बनावट की मजबूती

गठा- (वि०) संगठित, चुस्त, अच्छे प्रबन्ध वाला (घर, परिवार आदि)

गठानि- (स्त्री०) गाँठ, गठान

गठारि- (वि०) गाँठ वाली

गठिबन्हनु- (पु०) गाँठ बाँधने की क्रिया, पद्धति (जो ब्याह के बाद भी अवसर विशेष पर पति-पत्नी इस रूप में बिठाए जाते हैं)

गठिया- (स्त्री०) ऊँठ पर लादने में प्रयुक्त छोटी बोरी

गठिहा- (वि०) गाँठ वाला, मन में ईर्ष्या या द्वेष रखने वाला, चुप्पा

गठुला- (पु०) भूसे की गाँठ

गठौरी- (स्त्री०) जौं, गेहूँ आदि के पौधों का छोटा भाग; गठरी

गड़कबु- (क्रि० अ०) डाँटना या चिल्लाना, शोर मचाना

गड़गड़ा- (पु०) हुक्का

गड़पबु- (क्रि० स०) खा जाना; चुरा लेना, बेईमानी से ले लेना

गड़प्प- (स्त्री०) डूबने भर का पानी; गहराई

गड़बजई, गड़िबजई- (स्त्री०) बात काटने की आदत

गड़बड़ा- (पु०) जमीन में खोदा हुआ गड्ढा, जिसमें फल आदि रखे जाते हैं

गड़मरई- (स्त्री०) अप्राकृतिक व्यभिचार

गड़म्म- (वि०) गायब, लापता

गड़रा- (पु०) एक घास, जिसकी जड़ बहुत मजबूत होती है, खस का एक प्रकार, जो पानी से दूर भी होता है

गड़ल्लरि- (स्त्री०) एक चिड़िया, जो अपनी पूँछ बार-बार ऊपर नीचे किया करती है

गड़सा- (पु०) चारा आदि काटने का विशेष यन्त्र

गड़हा- (पु०) गड्ढा

गड़ही- (स्त्री०) अत्यन्त छोटा एवं गहरा तालाब

गड़ाक- (क्रि० वि०) गिरने की आवाज

गड़ान- (स्त्री०) 'कोठिला' नामक मिट्टी के बर्तन का एक भाग

गड़ारि- (स्त्री०) बहुत निचले धरातल का खेत

गड़ालू- (पु०) एक कंद, जिसकी सब्जी बनती है

गड़ाही- खाई

गड़िआइब- (क्रि० स०) (आँखें) मूंद लेना

गड़िआबु- (क्रि० अ०) बात बदल देना

गड़िलक्का- (पु०) अपनी ही बात पर डटे रहने का हठ

गड़िहा- (वि०) गड़ुवा; दुतकारने या शरमवाने के लिए प्रयुक्त शब्द

गड़ुआई- (स्त्री०) गड़ुआ होने का भाव;

गड़ुक्का- (पु०) पानी पीने का मिट्टी का बर्तन

गड़ुघरा- (वि०) बेशरम, जिसकी गाँड़ खुली (उघार) हो

गड्डर- (पु०) गरुड़

गड्डुली- (स्त्री०) कपड़े या रस्सी की गोल टिकरी, जिसे स्त्रियाँ घड़ों के नीचे अपने सिर पर रखती हैं

गड्डुवा- (पु०) लोटा

गड़ेरू- (पु०) पुरहाई आदि कुआँ पर प्रयुक्त वह डण्डा, जिसमें गर्री पिन्हाई जाती है

गड़ेहरा- (वि०) गाली बकने वाला

गढ़वा- (पु०) गड्ढा

गढ़ियाबु- (क्रि० अ०) बढ़ना, गंभीर होना; गाढ़ा होना

गढ़ू, गरू- (वि०) वजन, भारी

गणखिल- (स्त्री०) हल के पीछे हरिस को कसने में प्रयुक्त दो लकड़ियाँ

गणपुत्तर- (पु०) काल्पनिक बच्चा जो (पुरुष के) गाँड़ मारने से हो

गतका- (पु०) एक खेल, जिसमें चमड़े से ढके डण्डे ढाल पर मारते हैं

गतिका- (वि०) योग्य, कायदे का, अच्छा

गदगद- (वि०) हल्का गीला; प्रसन्न

गदफूल- (पु०) हथेली में पहना जाने वाला गहना विशेष

गदमा- (पु०) ऊँट का एक रोग

गदर- (पु०) बलवा

गदराबु- (क्रि० अ०) पकने पर आना, अधपका होना

गदला- (वि०) गंदा

गदहपुन्ना- (पु०) वह बूटी, जिसे आयुर्वेद में पुनर्नवा कहते हैं। इसका साग सुन्दर होता है

गदहरोइयाँ- (वि०) जिसके बाल गदहे के रंग जैसे हों (पशु)

गदहिला- (पु०) एक मोटा-सा कीड़ा, जो जाडों की फसल में लगता है

गदाई- (स्त्री०) औरतों की नाजायज कमाई

गदाला- (पु०) भारी गद्दा या ओढ़ना; हत्थेदार सब्बल

गदिया- मूंज की अधबनी टोकरी; गूलर का फल

गदु- (पु०) पेड़ों से निकला हुआ लासा, जो चिपकाने के काम आता है; गोंद

गदेला- (पु०) छोटा पतला गद्दा; बच्चा

गद्दर- (वि०) अधपका; सुस्त; कामचोर

गद्दा-चाँद- (स्त्री०) वह चाँदी, जो कड़ा एवं सुतिया बनाने के काम आती है

गद्दी- (वि०) वह चाँदी ,जो टाँकेदार होती है; (स्त्री०) आसन; दूध का धंधा करने की जाति विशेष

गद्दयाला- (पु०) बेल्चा; गद्दा या बिछौना

गधइला- (पु०) गदहिला; शायद मोटा होने और धीरे-धीरे चलने के कारण कीड़े को यह नाम मिला है

गन्धइला- (वि०) बदबू करने वाला; बदनाम

गन्धनु- (पु०) सुनारों में प्रचलित 'सोना' का गुप्त नाम

गन्हकि- (स्त्री०) गंधक

गन्हकी- (स्त्री०) गंधक की -सी बू; गंधकी

गन्हउर- (वि०) बदबूदार (वस्तु)

गन्हिया- (पु०) एक कीड़ा, जिसके छूने से बुरी गंध निकलती है

गन्हौंरा- (पु०) गन्दी चीज

गपचरा- (पु०) बैलगाड़ी की पहिया में लगी आड़ी लकड़कियों को कसने में प्रयुक्त खपीच

गपोलिया- (वि०) गप उड़ाने वाला; झूठा

गपोली- (स्त्री०) गप्प; व्यर्थ की बात

गप्फा- (पु०) बड़ा कौर या निवाला

गफ- (वि०) घना

गबच्चू- (पु०) मूर्ख

गबद्दा- (स्त्री०) (स्त्री की) मोटी योनि; (व्यं) तगड़ी युवती

गबद्दू- (वि०) भोंदू, कुछ मूर्ख

गबरू- (वि०) पूरा (युवा)

गबरून- (पु०) रंगीन मोटा कपड़ा

गब्बर- (वि०) जिसकी जीभ बहुत चलती हो, गुस्ताख, व्यर्थ की; छोटे मुँह बड़ी बात करने वाला; कहना न मानने वाला; हठी, अहंकारी

गब्भा- (स्त्री०) झूठी बात; छोटे मुँह बड़ी बात

गब्बे- (पु०) बातें, लम्बी-लम्बी पर प्रायः झूठी बातें

गभ- (वि०) सघन, घनी बुनाई युक्त (कपड़ा)

गभकबु- (क्रि० स०) झट से और आसानी से काट देना; मार डालना

गभडू- देखिए **'गबरू'**

गभाक- (क्रि० वि०) साग, केले का पेड़ आदि काटने की आवाज

गभिनाबु- (क्रि० अ०) भ्रवती होना

गभुरई- (स्त्री०) गर्व; मुँह फुलाकर बोलने की प्रवृत्ति

गभुवार- (वि०) जिसका मुण्डन न हुआ हो; गर्भस्थ (बाल)

गभेर, गभेल- (पु०) भेड़ के बच्चे

गमक- (स्त्री०) महक, सुगंध

गमकबु- (क्रि० अ०) गम-गम करके बजना; महकना

गमस- (स्त्री०) गर्म व हवा रहित मौसम

गमी- (स्त्री०) शोक; मातम

गम्हीर- (वि०) भारी, वजन, गंभीर

गयतल- (वि०) बहुत पुराना, बेकार, नीच

गयल- (स्त्री०) राह, प्रायः कविता में प्रयुक्त, जहाँ यह प्रेमियों की गली के लिए या 'प्रेम मार्ग' के लिए आता है

गरु- (पु०) गला

गरक- (वि०) डूबा, नष्ट

गरकटा- (वि०) चोर या गला काटने वाला

गरगजु- (पु०) मोटा, फूला हुआ व्यक्ति; कुएँ की निचली दीवार

गरतरी- (स्त्री०) जानवरों के गले में बांधने की रस्सी

गरथा- (स्त्री०) पेड़ की मोटी और बड़ी डाली

गरदनी- (स्त्री०) गधे के ऊपर गर्दन से पीठ तक रखा गया कपड़ा

गरदिस- (फा० स्त्री०) कुसमय, दुर्दिन, आपत्ति

गरबु- (क्रि० स०) ईंट आदि व्यवस्थित करना या पंक्तिबद्ध करना; (पु०) गर्व

गरसहा- (पु०) दही और मट्ठा, गोरस

गरसी- देखिए 'गोरसी'

गरह- (पु०) ग्रह, कष्ट

गरहित- (वि०) ग्रह से प्रभावित; कष्ट में

गरही- (वि०) ग्रह द्वारा क्लिष्ट

गराज- (स्त्री०) गर्ज, गंभीर ध्वनि

गरार- (वि०) जोरदार, तगड़ा

गरारा- (पु०) मुसलमान स्त्रियों का वस्त्र विशेष; नमकीन व गर्म पानी से कुल्ली

गरिबई- (अ० स्त्री०) गरीबी, दरिद्रता

गरिबऊ- (अ० पु०) गरीब व्यक्ति

गरियाऊँ- (पु०) जानवर बांधने में प्रयुक्त कड़ेदार रस्सी

गरियार- (वि०) बैठुआ या काम चोर (बैल); गद्दर

गरी- (स्त्री०) अनाज युक्त भूसे का डंठल; (गरी) मेवा

गरीब नेवाज- (पु०) जो गरीब का पालन करे

गरीब-परवर- (पु०) जो गरीब की सहायता करे; बड़े अफसरों या महानुभावों को सम्बोधित करने का पुराना शब्द

गरुक्का- (वि०) वजनी, भारी

गरुहर- (वि०) गुरुतर, अधिक प्रभावशाली

गरु- (वि० पु०) वजन; - **दिन** (पु०) आश्विन या क्वार मास के कृष्ण पक्ष या पितर पक्ष के दिन

गरूर- (पु०) घमंड, अभिमान

गरेड़ी- (स्त्री०) गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े

गर्दी, गर्दा- (फा० स्त्री०) धूल

गर्यारबु- (क्रि० स०) घेरना, चक्कर लगाना

गर्रहिंटु- (पु०) पुरहाई कुएँ पर लगा डण्डा विशेष, जिसमें गर्री या लकड़ी का भेलन पिन्हाया जाता है

गर्रा- (पु०) कुआँ से पानी खींचने में सहायक लकड़ी की बड़ी भेलन; घोड़े के काही रंग के बालों के बीच-बीच में सफेद रंग के बालों का मिश्रण

गर्री- (स्त्री०) लकड़ी या लोहे की भेलन जो कुएँ पर लगाकर पानी भरने के काम में आती है; नारियल (कच्चा)

गर्रे- (स्त्री०) भेंड़ें

गलउधी- (स्त्री०) कच्चे दूध में जमने वाली परत या मलाई

गलकबु- (क्रि० अ०) **पिघलना,** गलना

गलका- (पु०) कच्चे आमों का पकाकर बनाया गया अचार; धान की सड़न का एक रोग; हाथ–पाँव का फोड़ा

गलगल- (वि०) भीगा, पका हुआ; परम प्रसन्न

गलगोप्फा- (पु०) गले में डाला गया हाथों का गोफा

गलचउर- (पु०) मजे की बातें, लम्बी–लम्बी बातें

गलछा- (स्त्री०) नई शाखा

गलझम्प- (पु०) हाथी का मस्तक से गले तक का पाखर

गलता- (वि०) बहुत पुराना, फटा हुआ, गला हुआ, (पु०) दीवाल में ईंटों से बनी नक्काशी विशेष

गलथन- (स्त्री०) किसी–किसी बकरी के गले में थन के समान लटकने वाली खाल

गलफर- (पु०) गाल के भीतर का भाग

गलफा- (पु०) अफवाह, गप, जनरव

गलबा- (पु०) आन्दोलन, गड़बड़, शोर

गलसटबु- (क्रि० अ०) बातें करना, व्यर्थ में लम्बी बातें करते रहना

गलसुई- (स्त्री०) गालों के नीचे रखने में प्रयुक्त छोटी तकिया

गलहंस- (पु०) निःसंतान की सम्पत्ति का अधिकार

गलार- (वि०) जोर से बोलने वाला, गुस्ताखी से बोलने वाला

गलारा- (पु०) पानी बहने का बड़ा रास्ता, जिसे पानी स्वयं काटकर बना लेता है

गलियउबु- (क्रि० स०) ढूँसना

गलीच- (वि०) अशुद्ध, नापाक

गलुआ- (पु०) फूले हुए गाल; चक्की आदि का वह पात्र, जिसमें अनाज डाला जाता है

गलुक्का- (पु०) छोआ गाल, बच्चे के गाल, जिसे मारना या डाँटना हो

गलेफिया- (स्त्री०) छोटी गुझिया

गलोना- (पु०) लाल पका हुआ फल; प्रायः बच्चे इस शब्द का प्रयोग करते हैं

गल्ता- (पु०) जूते में नाल के बीच में भरा जाने वाला चमड़ा; दीवाल की नक्काशी विशेष

गल्यांद- (स्त्री०) झुण्ड, समूह

गल्थरा- (पु०) गाल का ऊपरी भाग

गल्लई- (स्त्री०) अधिया पर देने की प्रणाली

गल्ला- (पु०) अनाज, जेब, नीम का छोटा फल

गल्ली- (स्त्री०) गली, पतला रास्ता

गल्लु- (वि०) प्रसन्न

गवँ- (पु०) दाँव, मौका; - **गीन** (वि०) उदास

गवँगीर- (वि०) चालाक; समय का लाभ उठाने वाला

गवंडर- (पु०) गवर्नर

गवमांस- (पु०) गोमांस

गवहिंया- (पु०) मेहमान, अतिथि

गवहीं- (स्त्री०) मेहमानी, ससुराल के रिश्ते में पहले–पहल जाने की पद्धति

गवई - (स्त्री०) देहात, गाँवों का समूह; (उदा०) 'गवई गाहक कौन'

गवनु- (पु०) विवाह के पश्चात बहू का पति के घर जाने का रस्म; प्रस्थान

गवतबु- (क्रि० अ०) सूझना

गवनिहरि, गउनहरि- (वि०) गाने वाली

गवाँरा- (वि०) स्वीकार

गवा- (पु०) दो उंगलियों के बीच का चमड़े वाला भाग; बेल का नया टुकड़ा

गवारा- (पु०) ग्वार फली

गहँक, गहँकी- (पु०) ग्राहक

गहगड्ढा- (वि०) सघन, काफी मात्रा में

गहगह- (वि०) प्रसन्न, परम संतुष्ट

गहगहे- (क्रि० वि०) हर्ष, उत्साह के साथ

गहत- (पु०) चक्कर

गहदी- (स्त्री०) नाले के किनारे का भाग; ऊँचा भाग

गहना- (पु०) आभूषण; - **चूड़ी** (स्त्री०) लहरी सरीखी चूड़ी, जिसमें निशान सीधे होते हैं

गहनिहा- (वि०) जिसे गहनी रोग हो गया हो

गहनी–(स्त्री०) जानवरों की जीभ का एक रोग, जिसमें दाने व काँटे पड़ जाते हैं

गहने-क-छाया- (स्त्री०) किसी बच्चे के शरीर पर वह काला चिह्न, जो जन्मजात हो। विश्वास है कि ऐसे बच्चों के गर्भ में होने पर जब ग्रहण लगता है तो ऐसे चिह्न प्रायः हो जाते हैं

गहबड़- (वि०) जिसमें रंग गहरा हो, अधिक अस्वस्थ

गहरि- केले के फलों का गुच्छा

गहवा- (पुं०) सँड़सी

गहा- (वि०) वह मिट्टी, जिससे किसी नाली का रास्ता बंद किया जाये

गहारि- (स्त्री०) दुःख के समय की पुकार; गोहारि

गहिया- (स्त्री०) मार का चिह्न

गहियाइब- (क्रि० स०) गाही लगाकर गिनना

गहिर- (वि०) गहरा

गहोरा- (वि०) बैल की एक जाति

गांगासहाई- (वि०) कल्पित व्यक्ति, जो चारों ओर उदारता प्रदर्शित करे

गाँछबु- (क्रि० स०) बटोरकर बाध देना

गाँछा- (पु०) नया क़ल्ला

गांजडु- (पु०) नदी के किनारे का भू-भाग

गांजबु- (क्रि० स०) पैरों से रौंदना; ढेर लगाना

गांजा- (पु०) खुरपे का मध्यवर्ती पतला भाग; मादक पदार्थ

गाँठबु- (क्रि० स०) पक्का करना; अपने चक्कर में फँसाना; बात मानना; सिलना

गाँड़ा- (पु०) गन्ने का टुकड़ा; मंगल कारक तंत्र, जो पशुओं के बांधा जाता है

गाँत- (पु०) माची में लगने वाले बीच के दो डण्डे

गाँसबु- (क्रि० स०) फार में दूसरा लोहा पीटकर जड़ना; रोकना; डाँटना

गाँसी- (स्त्री०) बाण में आगे लगने वाली लोहे की नोंक

गाऊ-घप्प- (वि०) जो शीघ्र न समझे; सुस्त; जो सब कुछ हजम कर जाये

गाज, गाजि- (स्त्री०) फेना; वज्र (पु०) गाज परै (वज्र परै)

गाजबु- (क्रि० अ०) हर्ष प्रदर्शित करना; परम प्रसन्न होना; गर्वपूर्वक हर्षित होना

गाजी- (अ० पु०) मुस्लिम पीर, जिसकी पूजा होती है; मियाँ- इन्हें प्रायः 'बाले मियाँ भी कहा जाता है; कहा०- एक हाथ के बाले मियाँ नव हाथ कै पूँछि।

गाटर- (पु०) लोहे का गर्डर

गाड़ा- (पु०) बड़ी बैलगाड़ी; किसी को रोकने हेतु रास्ते में बैठने की प्रक्रिया

गाढ़ा- (पु०) मोटिया (कपड़ा), जो हाथ से बुना जाता है

गात- (पु०) शरीर, बोझा बांधने की रस्सी; औकात

गाती- (स्त्री०) दोनों कंधों पर बंधा हुआ कपड़ा, जो कुर्ते की भाँति दोनों ओर नीचे तक लटका हो। यह देहात के बच्चों, साधुओं में अधिक प्रचलित है

गादर- (वि०) कम चलने वाला (हल या गाड़ी आदि का बैल), कामचोर

गादा- (पु०) कच्चे अनाज का चबेना

गादि, गांध- (स्त्री०) गोंद

गादुर- (पु०) चमगीदड़

गाफिल- (अ० वि०) लापरवाह, बेखबर

गाभ- (वि०) बहुत हरा

गाभिनि- (वि०) वह (मादा पशु) जो गर्भिणी हो

गारबु- (क्रि० स०) दुहना, (दूध); निचोड़ना

गाला- (पु०) रूई धुनकते समय रूई के बनाये गये छोटे-छोटे ढेर; गप्प, व्यर्थ की बात; फसल में बालें निकलने की अवस्था

गाली- (स्त्री०) धान आदि कूटने में प्रयुक्त पत्थर का पात्र; अपशब्द

गावा- (पु०) दों उंगलियों या शाखाओं के बीच का स्थान

गाही- (स्त्री०) पाँच की ढेरी

गाहे-बगाहे- (अ० अव्य०) कभी-कभी

गिंजइया- (स्त्री०) बरसात में निकलने वाले पतले-पतले जीव या कीड़े, जिनके सैकड़ों पैर होते हैं

गिंजउबु- (क्रि० स०) भोजन आदि को जूठा करके डाल देना या खराब करना

गिजबिज- (वि०) लिपटा हुआ

गिजा- (स्त्री०) आहार; खिलाई

गिट्टकु- (पु०) चीलम में पड़ने वाला मिट्टी का गोल ढेला, जो तम्बाकू गिरने से रोकता है

गिट्ठा, गिठा- (स्त्री०) गाँठ

गिठुरा- (पु०) अनाज के साथ आई हुई गाँठ, जो महीन नहीं हो पाती

गिधियाबु- (क्रि० अ०) हठ करना

गिब-गिब- (क्रि० वि०) जल्दी-जल्दी और व्यर्थ (बातें करना)

गिब्बे- (स्त्री०) लम्बी गप, व्यर्थ की बात

गिरदानकु- (पु०) हथकरघे का वह अंग, जिससे कपड़ा लपेटा जाता है

गिरन्दा- (वि०) जाल का फंदा बनाने वाला

गिरमिटु- (पु०) लकड़ी में छेद करने में प्रयुक्त हस्तचालित यन्त्र विशेष

गिरह- (स्त्री०) जेब

गिरहन- (पु०) ग्रहण

गिरहुँ- (पु०) गिरवी, बंधक

गिराँ- (पु०) लगभग ७ सेमी० की माप

गिरानदेबु- (क्रि० स०) ताड़ी निकालते समय कुछ वृक्ष निरन्तरता हेतु छोड़ना

गिरिस्ती- (स्त्री०) गृहस्थी

गिरीवाट- (स्त्री०) बर्तन की मुड़ी हुई बाट (धार)

गिर्दा- (पु०) चहारदीवारी

गिर्दयउबु- (क्रि० स०) घेर लेना

गिर्री- (स्त्री०) कागज की पुल्ली में लिपटी हुई रील या डोरा

गिलावा- (पु०) कच्ची मिट्टी का गारा

गिल्ला- (पु०) शिकायत

गिल्ली- (स्त्री०) गिलहरी

गिहथापनु- (पु०) चतुरता, बुद्धि

गिहथिन- (स्त्री०) गृहकार्य में निपुण स्त्री

गीदा- (पु०) पशु-घर का पतला कीचड़

गील- (वि०) गीला

गीला- (पु०) उपालम्भ, (वि०) पानी युक्त; बचन का कच्चा

गुंजहरा- (पु०) हाथ में पहनने का गहना

गुंठा- (वि०) नाटा

गुंड- (पु०) समूह

गुंदरी- (स्त्री०) छोटी चटाई

गुंधाबु- (क्रि० अ०) गरम होना (ठण्डी से)

गुइँती- (स्त्री०) गुआरी के अन्दर एकत्र मलमूत्र; वि० गोइता

गुइयाँ- (स्त्री०) सहेली, सखी

गुइलि- (स्त्री०) आलुओं को सींचने के लिए बनाई गई सँकरी नाली

गुखुरू-(स्त्री०) जंगली कँटीली वनस्पति, जिसके लगने से पैरों में गाँठ-सी बन जाती है

गुच्चा- (पु०) जमीन में खुदा हुआ छोटा गड्ढा

गुजटा- (पु०) कपड़े की सिकुड़न

गुजरान- (पु०) गुजारा

गुज्झा- (पु०) किंवाड़ या पल्ले में लगायी जाने वाली बाँस की लकड़ी की कील

गुटकबु- (क्रि० स०) निगलना

गुटका- (पु०) लकड़ी का टुकड़ा; - रंदा, रंदा विशेष

गुट्टू- (पु०) लकड़ी का वह टुकड़ा, जिस पर किंवाड़ रखा जाता है

गुट्याल, गुटैवा- (स्त्री०) दुलहिन

गुठुलू- (पु०) गुठली; वि० अठुली

गुठुवा- (पु०) सब्ज़ी विशेष

गुठूठी- (स्त्री०) गाँठ; अत्यन्त छोटी पोटली

गुड़ासा- (पु०) वर्षा ऋतु आगमन का संकेतक पक्षी

गुड़ी- (स्त्री०) पतंग

गुढ़ी- (स्त्री०) लाई (भुना हुआ जौ); वि० बहुरी

गुढ़नि- (स्त्री०) थैले को कसने की एक लम्बी रस्सी

गुण्डा पेटी- (स्त्री०) पानी उलीचने वाली टोकरी के नीचे लगा लकड़ी का घेरा

गुदबु- (क्रि० अं०) चुभना

गुदरा- (पु०) फटी रजाई

गुदाम- (स्त्री०) बटन

गुदुरी- (स्त्री०) मटर आदि की फली

गुद्दा- (पु०) घूँसा

गुध- (पु०) गोंद

गुनगुना- (वि०) हल्का गरम

गुना- (फा० पु०) अपराध; (प्रत्य०) यथा चौगुना

गुनागर- (वि०) गुणवान

गुनिया- (स्त्री०) तिरछापन देखने में प्रयुक्त यंत्र विशेष

गुनी- (वि०) गुणयुक्त, बुद्धिमान

गुनैली- (वि०) घी–दूध अधिक देने वाली (गाय)

गुपिया- (स्त्री०) जुआँरी द्वारा जमीन पर बनाया गया छोटा गड्ढा

गुमान- (फा० पु०) अहंकार, अनुमान

गुमास्ता- (पु०) गुमाश्ता, खबर लेने या देने वाला नौकर

गुम्मा- (पु०) गूमा, एक जंगली पौधा, जिसकी पत्तियाँ दवा में काम आतीं और दाल में भी पड़ती हैं; ईंट

गुम्मी- (स्त्री०) गुमनाम

गुरखुल- (स्त्री०) पैर में काँटा आदि का पुराना घट्ठा

गुरगा- (पु०) छोटा बच्चा, संदेशवाहक

गुरगुरा- (पु०) कँम कँमी

गुरधनिया- (स्त्री०) गुड़ और अनाज का मिश्रित चबेना

गुरम्ही- (स्त्री०) फोड़े की भाँति गोल गाँठ

गुरुही- (स्त्री०) जानवरों (विशेषतः भैसों) के पैर में बाँधने की रस्सी

गुरुआ- (पु०) व्यक्ति, जिसकी वृत्ति गुरु-मंत्र देने आदि के काम की हो

गुरुवही, गुरवान- (स्त्री०) गुरु का गाँव

गुरौंधा- (पु०) अधपका आम

गुर्यारबु- (क्रि० स०) दिखाना, धमकी देना

गुर्र- (स्त्री०) डाँट, फटकार

गुर्रा- (पु०) नारियल की रस्सी; अत्यन्त छोटे पहियों से युक्त अत्यन्त छोटी बैलगाड़ी; चर्रा; **-बु** (क्रि० अ०) नाराज होकर बोलना

गुलंदाजु- (पु०) छोटे–छोटे टुकड़ों वाला नमक

गुल- (पु०) फूल; दिये की टेम द्वारा छोड़ा हुआ कालिख का गोल टुकड़ा; जली हुई तम्बाकू; **-होना** (क्रि० अ०) बुझना; **-गुल**(वि०) कोमल; **-जार** विकसित (पौधा)

गुलसफरी- (स्त्री०) खर-पतवार

गुला- (पु०) धरन के दोनों सिरे, जो दीवार के अन्दर बैठाए जाते हैं

गुलासी- (स्त्री०) बरगद का फल

गुलिया- (स्त्री०) आलू के खेत में सींचने के लिए बनाई गई सँकरी नाली

गुलुमु- (पु०) सिर में चोट लगने से निकलने या उभरने वाली गाँठ

गुलुवा- जाँत में कील के ऊपर रस्सियों द्वारा कसा हुआ छोटा लकड़ी का टुकड़ा

गुलौरि- (स्त्री०) गुड़ बनाने का स्थान

गुल्टी- (स्त्री०) आँटा आदि में बंधी रोड़ी

गुल्दाना- (पु०) उर्द की पीठी से बना मोहन भोग

गुल्याल- (स्त्री०) रूई–मशीन को ऊपर टाँगने वाली लकड़ी; पत्थर आदि फेंकने में प्रयुक्त धनुष की तरह लकड़ी, गुलेल

गुल्लरु- गुब्बारे जैसा उभार या फुलाव

गुल्ला- (पु०) गन्ने का वह भाग, जो एक बार में खाया या चूसा जा सके; तागे की बड़ी गोल फुल्ली

गुल्लाना- (पु०) बेसन की नमकीन चीज

गुल्लि- (स्त्री०) शोर

गुल्ली- (स्त्री०) गले में पहनने का चाँदी या सोने का आभूषण; (वि०) नाटे कद की

गुल्लू- (पु०) महुए का फल

गुल्सुम- (पु०) छेद करने का यंत्र

गुहबु- (क्रि० स०) पिरोना, बनाना

गुहरा- (पु०) कण्डा

गुहु- (पु०) मल, विष्टा गू

गूँड़ी- (स्त्री०) रस्सी का लपेटा हुआ सुडौल बंडल

गूँतबु- (क्रि० स०) चमड़ा पक्का करने के पूर्व पशु की खाल में बबूल की छाल भरकर उसको पुनः पशु की शक्ल में सिलना

गूझा- (पु०) फल के भीतर का गूदा

गूड़र या गूड़ी- (स्त्री०) बाजरे या ज्वार की बाली का बिना दाने वाला भाग

गूढ़ी- (स्त्री०) गेहूँ-जौ का मिश्रित रूप

गूदरु- (पु०) गुदड़ा

गूमा- (स्त्री०) घास विशेष; जो फसल को अधिक नुकसान पहुँचाती है

गूरा- (पु०) ईंट का टुकड़ा; -हींसा, लाटरी द्वारा हिस्सों का आवंटन

गूल- (स्त्री०) भट्ठी; हेंगे के दोनों सिरे

गुलबु- (क्रि० स०) मारना, पीटना

गूवा- (पु०) फाँक, टुकड़ा

गेंगटी- (स्त्री०) चने की फली

गेंगें- (क्रि० वि०) प्रार्थनापूर्ण (शब्द)

गेंटि- (स्त्री०) मछली विशेष

गेंड़- (पु०) गन्ने का पत्तीयुक्त ऊपरी भाग

गेंड़ा- (पु०) खेत का बड़ा टुकड़ा; **–वरि** (स्त्री०) दो या चार बैलों को जोड़ने वाली एक विशेष प्रकार की रस्सी

गेंड़ी- (स्त्री०) गन्ने का छोटा टुकड़ा

गेंडुआ- (पु०) बड़ा गोल तकिया

गेउँठा- (पु०) जानवरों को बांधने में प्रयुक्त रस्सी विशेष

गेजुआ- (पु०) घोंघे के भीतर रहने वाला पानी का कीड़ा, जिसके अण्डों से केकड़े होते हैं

गेठुरा- 'गठुला' देखिए

गेताढ़ी- (स्त्री०) जुआठे में प्रयुक्त रस्सी

गेद- (पु०) छोटा बच्चा

गेनवरि- (स्त्री०) एक घास, जिसके डंठल से कलमें बनायी जाती हैं

गेना- (पु०) गेंदा का फूल या पेड़

गेरइयाँ- (स्त्री०) छोटा गेरावँ

गेरउंधी- (स्त्री०) जानवरों के गले में बाँधी जाने वाली रस्सी विशेष

गेरानी- (स्त्री०) घटी, मंदी

गेरावँ- (पु०) जानवरों को बाँधने में प्रयुक्त छल्लादार मोटी रस्सी विशेष,

गेरिया- (स्त्री०) मिट्टी की छोटी लुटिया

गेरुई- (स्त्री०) गेहूँ, जौ आदि की फसल का एक रोग, जिसमें उनके पत्ते लाल हो जाते हैं

गेह- (पु०) परवाह, रक्षा, चिंता

गैरमजरुआ- (वि०) वह खेत या भूमि, जिसमें जुताई–बुवाई नहीं की जाती

गैरानी- (स्त्री०) परेशानी, समस्या

गोंड़रा- (पु०) पुआल से निर्मित गोल चौका

गोंदनी- (स्त्री०) घास विशेष, जिससे डलिया आदि निर्मित की जाती हैं

गोंदरी- (स्त्री०) तिन आदि से निर्मित बिछौना

गोंयड़, गोइँड़- (स्त्री०) गाँव का पड़ोस, किनारा, सीमा

गोंसिया- (स्त्री०) हल में नसी के ऊपर लगने वाली लकड़ी

गोइंजा- (पु०) नथुनी का मुड़ा हुआ सिरा

गोइठा- (पु०) गोबर से निर्मित उपली

गोई- (स्त्री०) बैलों की जोड़ी

गोख- (पु०) खिड़की

गोगा- (वि०) मूर्ख; **–बाई** –महामूर्ख

गोछित- (स्त्री०) एक कबरे रंग की मछली

गोजई, गोजरा- (स्त्री०) गेहूँ व जौ का मिश्रित रूप

गोजर, गोझर- (पु०) बहुत पैरों वाला विषैला कीड़ा, खनखजूरा; (वि०) धीरे–धीरे काम करने वाला

गोजी- (स्त्री०) सोंटी, छोटी लाठी

गोझनवट- (पु०) स्त्रियों के अंचल का वह भाग, जो बायीं ओर लटकता है

गोट- (स्त्री०) किनारे लगा हुआ अलग से कपड़ा

गोटी- (वि०) गन्ने के रस की वह अवस्था, जब गाढ़ा होकर गुड़ बनाने लायक हो जाये

गोठिल- (वि०) धारहीन (औजार)

गोड़इतु- (पु०) चौकीदार, नौकर

गोड़फटकी- (स्त्री०) झूठी धमकी

गोड़हरा- (पु०) पैरों में पहनने का गहना

गोड़ा- (पु०) बर्तन के नीचे का वह भाग, जो 'गोड़' (पैर) की भाँति हो

गोड़ाई- (स्त्री०) पैर का एक आभूषण

गोड़िया- (स्त्री०) बेंड़ी के नीचे गलने वाली लकड़ियाँ, जो बेंड़ी को कटने से बचाती हैं

गोड़ी- (स्त्री०) आगमन का प्रभाव, 'गोड़' से; यह प्रायः नवजात वधू या अतिथि के लिए प्रयुक्त होता है

गोड़्याला- (पु०) पशुओं के पैरों का चमड़ा

गोदा- (पु०) बरगद या पीपल के फल

गोदामिल- (वि०) कुछ खट्टा (गोदा + आमिल - गोदे की भाँति खट्टा)

गोदाही- (स्त्री०) टेढ़ा-मेढ़ा अथवा ताजा तोड़ा हुआ डण्डा

गोधनु- (पु०) खटकिनों द्वारा क्वार-कातिक में गाया जाने वाला लम्बा दुःखपूर्ण गीत, जिसमे इस गीत को गाने वाली स्त्रियाँ गोबर की मूर्तियाँ बनाकर हाथ में लिए घर-घर गाती फिरती थीं पर अब खटिक पंचायत ने ऐसा करना बन्द कर दिया है।

गोनरा- (पु०) बहुत बड़ी चटाई, जो बैलगाड़ी की फर्श में बिछायी जाती है

गोना- (पु०) बड़े जानवरों की दलाली

गोप- (पु०) जानवर पालने वाला; सैनिक टुकड़ी का सेनापति

गोफ्बु- (क्रि० स०) डाँटना, रोकना

गोफियउबु- (क्रि० स०) बाँहों में समेटकर पकड़ लेना

गोबरा- (स्त्री०) रस के गर्म होने पर निर्गत मैल युक्त तह

गोबरी- (स्त्री०) सूखे गोबर के छोटे-छोटे ढेले

गोभबु- (क्रि० स०) किसी फल या अन्य वस्तु में धीरे-धीरे और ऊपर ही ऊपर छेद करना

गोभवार- (वि०) गर्भ का (बाल)

गोरखधंधा- (पु०) तरह-तरह के झंझट; खटराग

गोरसाही- (स्त्री०) पशुशाला

गोरसी- (स्त्री०) अँगीठी, जिस पर दूध गरम हो

गोरू- (पु०) गोरूप (गाय, भैंस, बकरी)

गोलई- (स्त्री०) गोल डलिया

गोलनिया- (स्त्री०) गुड़िया; ग्वालिन

गोलवा- (पु०) गोल टोकरा; गोलाकार चूड़ी; -टर्रा, नाम की गोल कील

गोलु- (पु०) समूह, झुण्ड

गोल्डेन- मुर्गी (स्त्री०) वह मुर्गी, जो अण्डा देते समय कम दिनों के लिए कुड़कती है

गोवा- (पु०) चालाक, जो अपनी बात छिपा रखे; भारतवर्ष का एक प्रदेश

गोसइयाँ- (पु०) भगवान, मालिक

गोसा- (फा० पु०) कोना

गोसाई- (पु०) एक जाति, जिसके लोग महादेव के पुजारी होते हैं

गोहनवा- (अव्य०) साथ

गोहना- (पु०) बाल बाँधने का रंगीन धागा

गोहरउबु- (क्रि०स०)पुकारना

गोहिया- (पु०) एक जाति, जो पत्थर, रस्सी आदि का काम करती है; मार का चिह्न

गोहुआँ- (पु०) मेंड़ के किनारे-किनारे गेहूँ के साथ बोया जाने वाला अनाज

गोहूँ- (पु०) गेहूँ

गौं- (पु०) सुविधा; सुयोग अवसर, पसन्द

गौंसठि- (स्त्री०) सलाह

गौर- (अव्य०) ध्यान, विचार

ग्वाँचबु- (क्रि० स०) लोकना, ऊपर से आती हुई कोई वस्तु हाथों में रोकना

ग्वाँसा- (पु०) (आखिरी) सिरा, किनारा

ग्वाट- (स्त्री०) जूते के ऊपर अलग से लगने वाला महीन किनारा

ग्वाफा- (पु०) हाथ द्वारा डाल गया फंदा

ग्वार- (वि०) गोरा; (पु०) एक पौधा, जिसकी फलियों की सब्ज़ी बनती है; -सु (पु०) दूध

ग्वाल- पशुओं का झुण्ड, पशु चराने वाले यदुवंशी सैनिक

ग्वाहा- (पु०) इंगुदी फल

घंट- (पु०) किसी के मरने पर हिन्दुओं द्वारा बांधा जाने वाला मिट्टी का घड़ा, जिसे बाहर किसी पेड़ पर लटकाकर उसमें प्रतिदिन पानी भरते हैं

घंता-घंता- (पु०) एक खेल, जिसमें छोटे बच्चे को घुटने पर बैठाकर झुलाते और 'घंता-घंता.....' कहते हैं

घइला- (पु०) घड़ा

घइहल- (वि०) घायल, चोट लगा हुआ

घई- (स्त्री०) कोल्हू का वह पात्र, जिसमें सरसों आदि छोड़े जाते हैं। कच्चे चूल्हे की भीतरी पख; नदी का कुण्ड

घउघ- (स्त्री०) सम्पत्ति

घउरी- (स्त्री०) केलों का गुच्छा

घउर्याबु- (क्रि० अ०) दाँत पीसना, क्रोध करना

घउलर- (पु०) मोटा व्यक्ति

घग्घा- (स्त्री०) गृहणी

घटका- (पु०) प्राण निकलने के समय की स्थिति; **-लागब** (क्रि० अ०) मरणासन्न होना

घटवार- (पु०) घाट वाला; मल्लाह

घटितउला- (वि०) कम तोलने वाला

घटियाही- (स्त्री०) पर-स्त्री-प्रसंग; धोखेबाजी

घटिहा- (वि०) पर-स्त्री से मैथुन करने वाला; धोखेबाज

घट्टी- (स्त्री०) हानि, घाटा

घट्टुई- (स्त्री०) हल जोतने के लिए आषाढ़ में हलवाहे को दिया गया पैसा

घट्ठा- (पु०) शरीर के किसी भाग पर पड़ा चिह्न, जिसमें चमड़ा मोटा हो जाता है

घण्टी- (स्त्री०) छोटा लोटा

घत- (पु०) दाँव, मौका

घन- (वि०) घना (फसल में पौधे); (पु०) बादल

घनई- (स्त्री०) दो गगरियों एवं डण्डों से निर्मित नौका विशेष, जो तालाबों में सिंघाड़े तोड़ने आदि कार्य में प्रयुक्त होती है

घनचक्कर- (वि०) मूर्ख; इधर-उधर घूमने वाले

घनवाह- (स्त्री०) लुहारों की दूकान में लम्बी खुदी हुई हौदी, जिसमें खड़े होकर घन चलाया जाता है

घनु- (पु०) बड़ा हथौड़ा

घन्नी- (स्त्री०) यातना

घपच्चू- (वि०) मूर्ख

घमंजा- (पु०) मिलावट, गड़बड़

घरइया- (पु०) घर का व्यक्ति (बारात का न हो), कभी-कभी 'घराती' और बाहरी को 'बाराती' कहते हैं

घरजानी- (वि०) बिना लिखा-पढ़ी के, गुपचुप (दिया गया उधार)- **मरजानी**- व्यक्तिगत (व्यवहार जिसे दूसरे न जानें)

घरबारी- (वि०) जिसके परिवार हो

घरवना- (पु०) छोटा घर, जो बच्चे खेल में बनाते हैं

घरसुमारी- (स्त्री०) जनगणना

घराय- (स्त्री०) घर का-सा व्यवहार, घरेलू रीति

घरिया, घेरिया- (स्त्री०) मिट्टी का वह बर्तन, जिसमें चाँदी आदि धातुएँ गलाई जाती हैं

घरिल- (पु०) घड़ा

घरी- (स्त्री०) सोना गलाने की मिट्टी की घरिया (कटोरी); घड़ी (समय)

घरीला- (पु०) मिट्टी का छोटा पात्र

घरुक- (पु०) एक जाति और उसके लोग

घरुही- (स्त्री०) घर का खंडहर या चिह्न

घरू- (वि०) घर का सा, मैत्रीपूर्ण

घलारा- (पु०) पानी बहने का मार्ग; जोर से बहता हुआ पानी

घलुआ- (पु०) घाला; सौदे में दिया हुआ वह अंश, जो तोल के अतिरिक्त यों ही दिया जाये

घलोना- (पु०) लाल पका हुआ फल; प्रायः बच्चे इस शब्द का प्रयोग करते हैं

घवदि- (स्त्री०) केले के फलों का गुच्छा

घसनी- (स्त्री०) तुच्छ काम; कठिन परिश्रम

घसीट- (वि०) जल्दी-जल्दी लिखा हुआ

घाँखर- (वि०) ढीठ, धृष्ट

घाँटी- (स्त्री०) गले के बीच का भाग

घाई- (अव्य०) तरफ, ओर

घाटि- (स्त्री०) पर-स्त्री-गमन; दगाबाजी

घाठ- (स्त्री०) गेहूँ या ज्वार की दलिया

घाता- (पु०) तरल पदार्थ माप भर देने के बाद अलग से दिया गया अंश

घानी- (स्त्री०) कोल्हू में छोड़ने भर की सरसों आदि की राशि; सुगंध; ढेर; धन; भण्डार

घानु- (पु०) एक बार में डालने भर की वस्तु

घाबड़- (वि०) गंभीर, अधिक बीमार

घामड़- (वि०) सुस्त, मूर्ख

घामु- (पु०) धूप

घार- (पु०) क्यारी सींचने के लिए उसकी मेंड़ में बनाया गया छोटा मुँह

घारी- (स्त्री०) पशुओं के रहने का घर

घाला- (पु०) सौदे के साथ अन्त में दिया हुआ उपहार, घलुआ

घावा- (पु०) मेंड़ आदि काटकर पानी निकालने का रास्ता

घिउ-कुँआरि- (स्त्री०) ग्वारपाठा, जिसके भीतर से घी-सा गूदा निकलता है। यह कई दवाओं में प्रयुक्त होता है, पेट के लिए इसकी तरकारी भी खाई जाती है

घिन- (स्त्री०) घृणा

घिनवना- (वि०) घृणा उत्पन्न करने वाला

घियहा- (वि०) घी वाला; घी की बनी हुई; जिसमें घी रखा जाये (बर्तन)

घियाँड़ा- (पु०) घी रखने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन

घींच- (स्त्री०) गला, गर्दन

घुघुआर- (वि०) काफी मोटा–ताजा, किन्तु कम बोलने वाला, गब्बर, बात का जल्दी उत्तर न देने वाला

घुघुटारि- (वि०) घूँघट वाली

घुघुरी- (स्त्री०) भिगोये हुए अन्न को उबालकर या छौंककर बनाया गया चबेना

घुच्ची- (स्त्री०) लग्गी में बंधी हुई दूसरी लकड़ी, जिससे लकड़ी आदि खींची या तोड़ी जाती है

घुटन्ना- (पु०) एक विशेष प्रकार का पैजामा

घुट्ठी- (वि०) वह खेत, जिसमें एक फसल काटकर दूसरी फसल बोई जाये; जुठैल

घुण्डी- (स्त्री०) करधना आदि में बनी हुई गोल गाँठ

घुमड़ा- (पु०) खेत में स्थित वह स्थान, जहाँ फसल कुछ महीने रखी रहती है

घुमनी- (स्त्री०) चक्कर, घूमने या चक्कर आने की बीमारी

घुमरबु- (क्रि० अ०) लौटना, झूमना

घुमरा- पशुओं के चारा खाने का एक ऊँचा स्थान; चक्कर

घुमरी- (स्त्री०) चक्कर (सिर में)

घुरकबु- (क्रि० स०) आँखें दिखाकर डरवाना या धमकी देना

घुरकी- (स्त्री०) घुड़की, धमकी

घुरघुच्चु- (पु०) घोंसला

घुरघुच्चु- (पु०) झुण्ड, समूह

घुरघुरू- (पु०) सँकरा रास्ता

घुरचबु- (क्रि० अ०) निर्बलता अथवा बीमारी के कारण उठ न सकना; कष्टमय जीवन बिताना; घुड़की देना

घुरमुसहा- (वि०) कम बोलने वाला पर, भीतर ही भीतर द्वेष रखने वाला; चुप्पा

घुरमुसाबु- (क्रि० अ०) भीतर ही भीतर बुरा मानना; बिना कुछ कहे नापसंद करना

घुरहू-कतवारु- (पु०) कोई भी, तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति

घुल्ला- (पु०) गन्ने का छोटा टुकड़ा

घूर- (पु०) कूड़ा–करकट का ढेर

घूरबु- (क्रि० अ०) आँखें फाड़–फाड़ करके देखना

घूहा- (पु०) कान का छेद; पतावरि का फूल

घेंघवार- (वि०) खूब ढीला–ढाला

घेंचुआ- (पु०) गर्दन

घेंटा- (पु०) सूअर का बड़ा मोटा बच्चा

घेंटी- (स्त्री०) चना आदि का डोंड़ा, जिसके भीतर दाना रहता है; ढेंढ़ी

घेघा या घ्याघा- (पु०) गर्दन, गला; गले की बीमारी, जिसमें सूजन आ जाती है

घेघी- (स्त्री) आवाज; हिसकी

घेनावन- (वि०) घृणास्पद

घेरौंदा- (पु०) बच्चों द्वारा निर्मित मिट्टी का घर

घेरियाक- (क्रि० वि०) इकट्ठा करके; समेट कर

घेवँड़ा- (पु०) एक फल, जिसकी बेल चलती है और फल का साग बनता है

घोंचू- (वि०) उल्लू, मूर्ख; जिसे ठीक बात समय पर न सूझे

घोंपा- (पु०) गोलाकार झोंपड़ी

घोंटू- (वि०) घोंटने वाला; किसी बात को रट लेने वाला; बुद्धि का कम उपयोग करने वाला

घोखबु- (क्रि० स०) रटना

घोघट- (पु०) एक काल्पनिक व्यक्ति, जिसको बुलाकर या जिसका नाम लेकर छोटे बच्चों को डराया जाता है

घोघसी- (स्त्री०) मोटे आकार वाली बकरी

घोघी- (स्त्री०) किसी कपड़े का विशेषतः कंबल का लपेटकर सिर पर ऐसा बांधा हुआ रूप, जिससे वर्षा से बचाव हो सके

घोटबु- (क्रि० स०) बाल जड़ से छीलना; दूध जलाकर खोया बनाना

घोड़न- (वि०) पाजी, बदमाश

घोड़सार, घोरसार- (पु०) अश्वशाल।

घोड़िया- (स्त्री०) लकड़ी का कोणाकार यंत्र, जिसमें दबाकर लकड़ी चीरी जाती है

घोड़िला- (पु०) मिट्टी का खिलौना विशेष

घोराघरि- (स्त्री०) घोड़ी–घोड़ों का समूह

घोरिया- (स्त्री०) लकड़ी की थूनी; घोड़ी

घोलर- (वि०) बहुत मोटा

घोला- (पु०) गहरा गड्ढा या पतला नाला

घ्याँट- (स्त्री०) गला

घ्यावा- (पु०) घी जैसा गला हुआ आलू आदि

घ्वाँटा, घोंटा- (पु०) बाँस का चोंगा, जिससे पशुओं के बच्चों को दवा आदि पिलाई जाती है

चंग- (स्त्री०) पतंग; आलस्य; (वि०) स्वस्थ

चंगेलवा- (पु०) डलिया

चंट, चंठ- (वि०) चालाक

चंड- (वि०) बलवान, प्रचंड

चंडुला- (पु०) जिसके सिर में बाल न हों

चंडू- (पु०) एक मादक पेय पदार्थ- **खाना-** ऐसा स्थान, जहाँ पर लोग एकत्र हो चिलम पीते हैं

चंडोलु- (पु०) व्यर्थ का कार्य

चंदनउटा- (पु०) एक प्रकार का लहंगा

चंदना- (पु०) विशेष प्रकार का गुड़

चंपू- (वि०) सुन्दर, विचित्र

चंबेल- (वि०) फैले हुए सींगों तथा भारी शरीर वाली (भैंस)

चँवरा- (वि०) सफेद पूँछ वाला (बैल); एक प्रकार का अनाज

चँवरी- (स्त्री०) बारीक चूर्ण; फल का गुच्छा

चँवरू- (पु०) हस्तचालित पंखा

चइतवरि- (स्त्री०) चैत्र मास की पूर्णिमा

चइता- (पु०) एक गाना, जो प्रायः चैत में गाया जाता है

चइला- (पु०) लकड़ी का चिरा हुआ खपचा या बड़ी खपची

चउँघरि- (स्त्री०) जबड़ा, चाप

चउआ- (पु०) चार अंगुल की चौड़ाई; ताश की चौकी; पशु

चउआई- (वि०) ऐसी हवा, जो चारों ओर से चले

चउआल- (स्त्री०) चारों ओर की बातें; व्यर्थ की बात

चउकरा- (वि०) चार लड़ी वाला

चउखटि- (स्त्री०) चाक के नीचे गड़ने वाला चौकी के आकार का पत्थर, देहरी

चउखाना- (पु०) चार खाने की डिजाइन से युक्त कपड़ा

चउखुँटा- (वि०) चार कोने वाला

चउगड़ा- (पु०) खरगोश, हिरन

चउगान- (पु०) गेंद का पुराना खेल, जिसका उल्लेख कविता में प्रायः होता है

चउगिरदा, चउतरफा- (अव्य०) चारोंओर

चउतरा- (पु०) चबूतरा

चउधारी- (वि०) चारधारी के (वस्त्र)

चउपटि- (स्त्री०) चाक रखने के लिए नीचे गड़ी हुई चौकी के आकार का पत्थर

चउपसर- (पु०) चौराहा; खुला स्थान

चउपहल- (वि०) चौपहल, चार किनारे वाला

चउपारि- (स्त्री०) द्वार पर का बैठकी कमरा

चउफेर- (अव्य०) चारों ओर

चउबंदा बही- (स्त्री०) सोलह खाने वाली बही

चउबोला- (पु०) छंद विशेष

चउभरि- (स्त्री०) दाढ़ के दाँत, एक स्थान के चार दाँत

चउमास- (वि०) वह खेत, जिसमें बरसाती फसल न बोई गई हो; (पु०) वर्षा ऋतु

चउमुख- (अव्य०) चारों ओर

चउमुहानी- (स्त्री०) वह स्थान, जहाँ चार सड़कें मिलें या चार नदियों का संगम हो

चउरइया- (स्त्री०) सब्जी विशेष

चउरस- (वि०) समतल

चउरसी- (स्त्री०) चौड़ी रुखान विशेष

चउरा- (पु०) चबूतरा; समाधि; स्मारक; श्वेत रंग का घोड़ा; चौपाल

चउरासी- (स्त्री०) बैल आदि के गले में बाँधने हेतु प्रयुक्त घुँघरूदार पट्टी; परेशानी, अस्सी चार चौरासी की संख्या

चउरी- (स्त्री०) श्वेत रंग की भेंड़

चउली-बउली- (स्त्री०) मौज मस्ती, प्रसन्नचित्त बातें

चउसझा- (पु०) खेती या अन्य काम, जिसमें कई लोगों का साझा हो

चऊँधी- (स्त्री०) बैलगाड़ी में पीछे दोनों बल्लियों से मिलकर बंधी हुई लकड़ी

चकउड़ी- (स्त्री०) कुम्हारों का वह बर्तन, जिसमें पानी रखकर बर्तन बनाते हैं

चकचोन्ही- (स्त्री०) चकाचौंध

चकड़ना- (पु०) कलह; शोरगुल

चकत्ता- (पु०) शरीर पर उभरा हुआ दद्दोरा

चकरई- (स्त्री०) चौड़ाई; 'चाकर' का काम

चकरबान- (पु०) पुल्लियों से जुड़े हुए घेरे; चक्कर लगाकर ऊपर उठने वाला बाण

चकर-मकर- (अव्य०) इधर-उधर

चकरार- (वि०) कुछ अधिक चौड़ा

चकरिहा- (वि०) चाकरी करने वाला; नौकरी-पेशा वाला

चकरौठ- (वि०) चौड़ा और लंगड़ा (व्यक्ति)

चकरौदु- (पु०) खेतों का रास्ता

चकला- (पु०) रंडियों के रहने का स्थान; रोटी बेलने की अड्डी

चकवड़- (पु०) प्रसिद्ध पौधा

चकाबूह- (पु०) चक्रव्यूह; झंझट

चकावर- (पु०) लकड़ी का चौड़ा-चपटा व मोटा तख्ता

चकियस- (वि०) मोटी और चौड़ी (स्त्री)

चकेठि, चकेठी- (स्त्री०) चाक को घुमाने में प्रयुक्त बाँस का डण्डा

चकोड़ि- (स्त्री०) मिट्टी के बर्तन बनाते समय पानी रखने का बर्तन

चक्का- (पु०) बड़ा पहिया

चक्की- (वि०) चाँदी की किस्म

चक्कू- (पु०) चाकू

चखनबु- (क्रि० स०) पीत देना

चखाचखी- (स्त्री०) विरोध, बैर

चखु- (पु०) गिद्ध

चगड़- (वि०) चालाक

चङ्गेरा- (पु०) मूंज का बना सुन्दर छोटा टोकरा

चचरा- (पु०) पानी सूखने के बाद मिट्टी में पड़ी हुई दरार

चटकई- (अव्य०) जल्दी

चटकनु- (पु०) चपत

चटकुलु- (पु०) वस्त्र विशेष

चटुआ- (पु०) बच्चों का खिलौना

चटोर,चटोहरा- (वि०) जो बार-बार खाता रहे; लालची

चट्टी- (स्त्री०) लकड़ी व चमड़े से बनी खड़ाऊँ

चट्टू- (वि०) चाटने वाला या वाली, दूसरे के यहाँ मुफ्त खाने वाला (व्यक्ति)

चट्ठा- (पु०) ईंटों का सुडौल ढेर; बर्तन धोने का चबूतरा

चट्टैं- (अव्य०) तुरंत

चड़ता- (वि०) क्यारियों की वह पंक्ति, जो आगे की ओर खींची जाती है

चड़बाँक- (वि०) चतुर, चालाक

चणाली- (स्त्री०) नए कुएँ की निचली छोटी दीवार को नीचे गलाने की क्रिया

चथरा- (पु०) टुकड़ा; किसी फल आदि का फूटा भाग

चनक- (पु०) चना

चनगा- (वि०) एक प्रकार की मछली

चनरमा- (पु०) चंद्रमा; चाँदी या सोने का छोटा चंद्राकार गहना, जो ग्रह शांति के लिए पहना जाता है

चमकी- (पु०) स्त्रियों का एक आभूषण, जो चंद्राकार रूप अंकित होता है और पत्थे के ऊपर पहना जाता है; सोचा जैसा अनाज

चमिया- (स्त्री०) छोटी-सी झील, जिसमें कभी-कभी खेती की जाती है

चमिहा- (वि०) चाँदी का; चाँदीमिश्रित

चमुला- दे० "चँडुला"

चन्नामाई- (स्त्री०) चंद्रमा; छोटे-छोटे बच्चे या माताएँ चंद्रमा को इसी तरह सम्बोधित करती हैं

चन्नी- (स्त्री०) चीरा पानी खिलाने पिलाने में प्रयुक्त लम्बा नाली आकार का पात्र, चरही

चनू-चेहरा- (पु०) छोटी-छोटी चिड़ियाँ, जो बहुत शोर करती हैं

चपचोई- (स्त्री०) बर्तनों की धार बनाने में प्रयुक्त मिट्टी की लीटी

चपड़ा- (वि०) लाख की किस्म विशेष

चपरचट्ट- (वि०) निर्जन, सूना; लम्बा-चौड़ा (मैदान)

चपरहा- (वि०) अभागा; हठी

चप्पर-(वि०) पक्का

चफइल- (वि०) लम्बा-चौड़ा (मैदान)

चबइनी- (स्त्री०) चबेना या नाश्ता के स्थान पर दिया हुआ नकद पैसा

चबरा- (पु०) चपत, तमाचा

चबुआबु-(क्रि० अ०) डाँटना, परेशान करना

चबेाना- (पु०) चबेना, ग्रामीण अंचल में प्रचलित निमंत्रण विसरक नाई को दिया जाने वाला अनाज, जो निमंत्रण प्राप्तकर्ता द्वारा दिया जाता है

चभका- (पु०) पशुओं के मुँह की एक बीमारी

चभुरी- (स्त्री०) क्रोध की मुद्रा, मुँह को जोर से बन्द करने की मुद्रा; चाप

चभौकी- (स्त्री०) ईख का रस निकालने में प्रयुक्त कुल्हड़ विशेष

चमइनिहा- (वि०) चमाइन रखने वाला

चमकटिया- (वि०) चमड़ा काटने वाला

चमकन- (वि०) शौकीन; जो अपने कपड़े-लत्तों को बहुत झाड़-पोंछकर रखे

चमकुल- (वि०) शौकीन, चंचल

चमरउधा- (वि०) कच्चे चमड़े का (जूता)

चमरबेली- (स्त्री०) एक प्रकार का बेला

चमरस- (पु०) जूते की रगड़ से बना घाव

चमरसउँच- (पु०) झमेला; चमारों के शुद्ध होने की (विलम्ब वाली) क्रिया

चमसुर- (पु०) एक बीज, जो बच्चों को दूध में पीसकर पिलाया जाता है

चमरही- (स्त्री०) चमारों का मुहल्ला

चमाइनि- (स्त्री०) चमार की स्त्री; फूहड़ और गंदी स्त्री

चमूना- (वि०) बना-ठना, शौकीन

चर- (स्त्री०) ऊँची नाली

चरउँबा- (पु०) महुए से बना खाद्य विशेष

चरकट- (वि०) दुष्ट, नीच; आवारा

चरकहा- (वि०) चरका (धोखा) देने वाला

चरका- (पु०) धान की फसल का एक रोग

चरखा- (पु०) पहिया, जिसे नचाकर जुलाहे ताना लपेटते हैं; सिंचाई का साधन, जिसमें बैलों द्वारा डिब्बों की श्रृंखला से पानी निकाला जाता है

चरफर- (वि०) तेज, कड़ुवा

चरबोंक- (वि०) बात-चीत में तेज

चरवरि- (स्त्री०) चरने योग्य घास

चरवाहु- (पु०) जानवर चराने वाला व्यक्ति

चरसा- (पु०) पानी निकालने में प्रयुक्त चमड़े का बर्तन; खाल

चराहा- (पु०) चरने की घास की अधिकता

चरी- (स्त्री०) जानवरों को खिलाने में प्रयुक्त हरा चारा

चरुई- (स्त्री०) भाड़ में गड़े वे पात्र, जिसमें बालू रखी जाती है

चर्‌ चार- (वि०) कड़ा, सख्त, मजबूत (छिलके आदि के सम्बन्ध में)

चर्रा- (पु०) नारियल की रस्सी

चलउनी- (स्त्री०) चबेना भूनते समय उसे चलाने वाली लकड़ी

चलता- (स्त्री०) महना, आधिकारिक मान्यता

चलाबा- (पु०) व्यवहार, आचरण, चलन

चवँरि- (स्त्री०) चँवरी

चवँला- (पु०) चंबल नदी के आस-पास पाया जाने वाला बैल

चवकाल- (वि०) जिसके चारों किनारे हों

चवफेर- (क्रि० वि०) चारों ओर

चवाई- (वि०) चुगलखोर, बातूनी, झूठा

चवासू- (अव्य०) चारों ओर

चसका- (पु०) शौक, व्यसन

चसम- (स्त्री०) आँख

चहँटा- (पु०) कीचड़

चह- (स्त्री०) लकड़ी का बना पुल

चहक- (वि०) चमकीले रंग का

चहबच्चा- (पु०) छोटा सा कुआँ या तहखाना; भण्डार

चहला- (पु०) कीचड़

चहली- (पु०) बाँसों की बनी हुई पट्टी, जो दीवाल जोड़ते समय प्रयुक्त होती है

चहारुम- (पु०) चौथा या चौथाई भाग; जमींदार का वह अधिकार, जो आसामी द्वारा लगाये पेड़ों, उनके फलों आदि पर होता था

चहुआ- (पु०) हिम्मत, उपाय, षडयंत्र

चहेंटबु- (क्रि० स०) घेरकर दबा लेना; पराजित कर लेना

चाँड़- (वि०) निडर, चतुर, घना (खेत)

चाँड़बु- (क्रि० स०) खुरपा आदि को पीटकर बढ़ाना, कुआँ की तल गहरी करना

चांडोलु- (पु०) पालकी, जिसमें औरतें बैठकर इधर-उधर जाती थीं

चाँपबु- (क्रि० स०) दण्ड देना, पटक देना; खाना; दबाना

चाइनि- (स्त्री०) चाई की स्त्री

चाई- (पु०) मछली पकड़ने और नाव चलाने वाली एक जाति के पुरुष

चाकल- (वि०) चौड़ा

चाकी- (स्त्री०) बिजली; **-परै** (पु०) बिजली गिरे

चाकु- (पु०) मिट्टी के बर्तन बनाने में प्रयुक्त गोलाकार पत्थर

चाखा- (पु०) हस्तचक्की के नीचे वाले पत्थर में लगी हुई खूँटी

चाट- (स्त्री०) आदत, व्यसन, नमकीन खाद्य पदार्थ विशेष

चाटा- (पु०) तमाचा; वि० चाँटा; **पेटी**- (स्त्री०) आशंकित मन में व्याप्त कुतूहल

चाटी- (स्त्री०) ढोलक बजाते समय प्रयुक्त छडी या लकड़ी विशेष

चाढ़- (स्त्री०) इमारत बनाते समय काम करने के लिए लकड़ी का मचान

चादर- (वि०) जोतते समय बैठ जाने वाला बैल (स्त्री०) ओढ़ने की चादर

चाना- (वि०) जिसके मत्थे पर सफेद बाल हो (प्रायः भैंसी)

चानिस- (स्त्री०) दो आदमियों द्वारा पत्तों से खेला जाने वाला जुआँ

चाप- (स्त्री०) भेलन को साधने वाला पुरजा; आवाज़; प्रत्यंचा

चापर- (वि०) नष्ट; साफ

चाबस- (वि० बो०) शाबास

चारचा- (स्त्री०) चर्चा

चारवा- (पु०) पालतू पशु

चारुंगरा- (वि०) मछली पकड़ने में प्रयुक्त जाल की किस्म विशेष

चाह- (स्त्री०) चाय; इच्छा; चाहत

चाहुति- (स्त्री०) आवश्यकता, प्रेम

चिखुरबु- (क्रि० स०) एक-एक करके उखाड़ना

चिगुरा- (पु०) किसी अंग की नस के अकड़ने की क्रिया

चिंधी- (स्त्री०) अत्यन्त छोटा कपड़ा

चिकवा- (वि०) एक रेशमी (कपड़ा) (पु०) बकरियों का मांस बेचने वाला

चिक्कारा- (पु०) सारंगी की भाँति एक छोटा बाजा

चिकिन- (स्त्री०) जाँच-पड़ताल

चिड.ना- (बो०) छोटे-छोटे बच्चों या प्रेमपूर्वक अपने से छोटों को सम्बोधित करने का शब्द, जिसे प्रायः वृद्ध, खासकर स्त्रियाँ प्रयुक्त करती हैं

चिच्चारबु- (क्रि०स०) घूसना

चिजुनि- (स्त्री०) बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द ,जो 'चीज' के स्थान में आता है; **चिट**- (स्त्री०) कपड़ों की पतली पट्टी

चिटकबु- (क्रि० अ०) चबेना भूनते समय अनाज का फूलकर लावा बनना; चिढ़ना

चिटका- (पु०) वह स्थान, जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं

चिट्टहा- (वि०) गुड़ की किस्म विशेष

चिट्ठा- (पु०) उत्तेजना, झगड़ा

चिठा, चिढ़ा- (पु०) प्रत्येक तीन खानों के बाद चौथा, खैरई

चित- (पु०) हृदय (वि०) पीठ के बल; **हवा**- (पु०) आलू की फसल का एक रोग

चिदुरबु- (क्रि० अ०) फैल जाना

चिनगरिया- (स्त्री०) चिनगरी;

चिनगा- (वि०) गुड़ की खराब भेली, जो चिपचिपी हो गयी हो

चिनचिनाबु- (क्रि० अ०) मौखिक लड़ाई लड़ना, बिगड़ना

चिन्हार- (वि०) परिचित

चिपरी- (स्त्री०) गोबर की पतली उपरी (वि०) वह स्त्री, जिसकी आँखों में चीपड़ हो

चिबिल्ला- (पु०) जिसका **व्यवहार** बच्चों–सा हो

चिमचा- (पु०) दाल, साग परोसने वाला बर्तन; हाँ में हाँ भरने वाला व्यक्ति

चिमरई- (स्त्री०) मजबूती; चीमर होने का गुण

चियाबु- (क्रि० अ०) शांत या चुप हो जाना

चिरइया- (स्त्री०) चिड़िया; **–काटबु** (क्रि० स०) महाउर लगाना

चिरई- (स्त्री) चिड़िया; प्रिया; उदा० अरे मोरि चिरई

चिरउंजिहा- (वि०) चिरौंजी की भाँति कटावदार (लाख की चूड़ी)

चिरउँठी- (स्त्री०) आषाढ़ की साधारण जुताई

चिरउरी- (स्त्री०) प्रार्थना, खुशामद

चिरकुट- (पु०) फटी-पुरानी व गन्दी पोशाक

चिरुआ- (पु०) चुल्लू

चिलखरा- (वि०) सोना का वह दोष, जिसमें चाँदी मिली होती है

चिलुआ- (पु०) जूँ

चिल्ला- (पु०) तवे पर बेसन का घोल डालकर बनाई गयी रोटी; (वि०) लगभग ४० दिन रहने वाला कठिन जाड़ा

चिहरबु- (क्रि० अ०) दरार देना, फटना

चिहार- (पु०) खेत जोतते समय दो हराइयों के बीच व सिरे पर छूटा कोना

चीक- (पु०) बकरियों का मांस विक्रेता

चीकट- (वि०) बहुत मैला

चीखबु- (क्रि० स०) स्वाद लेना; चिल्लाना

चीत- (स्त्री०) चित्रा नक्षत्र; सर्प विशेष, जो काफी मोटा होता है

चीतरि- (स्त्री०) पतला विषैला साँप, जो चितकबरा होता है

चीन्ह- (स्त्री०) जन्मोत्सव आदि पर प्रजा वर्ग को खुशी में प्रदत्त चिह्न स्वरूप वस्तु

चीन्हा- (पु०) रेखा; निशान

चीपर- (पु०) कीचर, आँखमैली

चीपा- (पु०) मिट्टी आदि का बड़ा टुकड़ा

चीपी- (स्त्री०) पतोई की किस्म विशेष

चीफुर- (पु०) गन्ना चुहने पर निर्गत छिलका

चीमर- (वि०) सख्त (कड़ा); कंजूस

चीरी- (स्त्री०) दूध देने वाली भेंड़–बकरियों के स्तनों में लगाई गई मिट्टी या गोबर से सनी कपड़े की पट्टी

चीहठी- (स्त्री०) चिट्ठी

चीहे-चीहे- (अव्य०) पशुओं को पानी पीने के लिए संकेतक अवाज़

चुआनु- (पु०) जलस्तर; फलों का टपकना

चुआबु- (क्रि० अ०) कुआँ खोदते समय जलस्तर मिलना

चुकरबु- (क्रि० अ०) जानवरों का बोलना (जो चारा आदि देखकर धीरे–धीरे बोलते हैं)

चुकरी- (स्त्री०) गागर

चुक्क- (वि०) बहुत खट्टा

चुक्की माना- (वि०) समाप्त (विशेषतः बच्चों द्वारा प्रयुक्त); चुक्का–पुक्का

चुचकबु- (क्रि० अ०) पिचक कर सूख जाना

चुपकली- (वि०) आम, जो डाल में ही सूख गया हो

चुतरी- (स्त्री०) चूतड़ों पर चढ़ी चर्बी

चुनउटी- (स्त्री०) चूना रखने की डिबिया

चुनिया पात- (वि०) अधिक कीमती एवं अच्छा कपड़ा

चुनिहा, चुट्टू- (वि०) कंजूस

चुन्दरी- (स्त्री०) चूनर

चुन्ना- (पु०) पेट में स्थित पतला एवं सफेद कीड़ा

चुप्पे- (क्रि० वि०) चुपके

चुब्भा- (पु०) पानी पीने मे प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन

चुम्बी- (स्त्री०) चुंबन

चुरइलि- (स्त्री०) चुड़ैल; झगड़ालू स्त्री
चुरकी- (स्त्री०) चोटी (पुरुष की)
चुरबु- (क्रि० अ०) दाल आदि का पकना
चुरिला- (स्त्री०) छोटी चूड़ियाँ
चुरुकि-चुरुकि- (क्रि० वि०) थोड़ा-थोड़ा
चुरुवा- (पु०) अंजुलि; चुल्लू
चुलचुलाबु- (क्रि० अ०) खुजलाना, जलना
चुल्ल- (स्त्री०) उत्साह, अभिलाषा
चुल्ला- (पु०) छल्ला, अंजुलि
चुल्हका- (पु०) एक व्यक्ति या बच्चे का भोजन जो कंडे की आँच पर बने
चुल्हिया-दुआर- (पु०) चूल्हे का द्वार; घर का भीतरी काम
चुहली-चुहला- (पु०) पशुओं आदि के पद चिह्नों से बने छोटे-छोटे गड्ढे
चुहिल- (वि०) चुभता हुआ, अच्छा
चुहुट- (वि०) चालाक, मक्खीचूस
चूहर-चूफुर- (पु०) गन्ने का छिलका
चूकु- (क्रि० स०) एक-एक करके खाना;
चूना- (पु०) चूना; बुरा
चूर- (स्त्री०) खाट की पट्टियों का पतला सिरा
चूहा- (पु०) जल-स्रोत या जल निकालने हेतु खोदा गया छोटा गड्ढा (जहाँ जल स्तर बिलकुल ऊपर होता है)
चेंचा- (स्त्री०) गर्दन
चेंचि- (स्त्री०) गेहूँ के साथ होने वाला एक जंगली पौधा, जिसके दाने से देहात की स्त्रियाँ सिर साफ करती हैं
चेंड़ा- (पु०) लम्बा-चौड़ा पर सुस्त; बहुत खाने वाला पर निकम्मा
चेंका- (पु०) बड़ा टुकड़ा (मिट्टी, पत्थर या गुड़ का)
चेंगुरा, चेंचुरा- (पु०) हाथ की गाँठ के ऊपर का पतला भाग
चेतन्न- (वि०) स्वस्थ; अधिक वय का
चेतासी- (स्त्री०) चिंता, परवाह
चेना- (पु०) अनाज विशेष
चेना- (पु०) एक प्रकार का चावल, जो दो महीने में तैयार होता है
चेफ- (पु०) गन्ने का छिलका, जो चूसते समय पहले उतार देते हैं
चेल्हवा- (पु०) सफेद व सुन्दर मछली
चेहरी- (स्त्री०) छोटी चिड़िया, जो प्रायः बाजरे आदि के खेत में चुगती है
चैना-(पु०) जेठी सावाँ
चोंगली- (स्त्री०) नाक का आभूषण विशेष;
चोंघट- (पु०) मूर्ख, उल्लू
चोंड़ा- (पु०) कच्चा कुआँ, जो सिंचाई के लिए तैयार कर लिया जाता है
चोंती- (स्त्री०) बकरी या भेंड़ की गुत्थीदार मेंगनी
चोंथबु- (क्रि०स०)नोचना
चोइँटा- (पु०) गीला व स्वाद हीन गुड़
चोई- (स्त्री०) दाल का छिलका
चोकरिया- (स्त्री०) मिट्टी का अत्यंत छोटा बर्तन
चोक्का- (पु०) बैलों को तेज दौड़ाने के लिए चुभोया जाने वाला नुकीला यन्त्र
चोख- (वि०) नुकीला, तेज, पैना
चोखा- (वि०) सुन्दर, निष्पाप, शुद्ध
चोट-बाँध- (स्त्री०) माँग से लगाकर चोटी से फँसाया जाने वाला आभूषण विशेष
चोटा- (पु०) राब से बना पतला द्रव, जिसे तंबाकू आदि में डालते हैं
चोट्टा- (वि०) चोर
चोभवा- (पु०) गोल ककरी
चोन्हर- (वि०) जिसे दीख न पड़े
चोन्ही- (स्त्री०) अधिक रोशनी
चोपी- (स्त्री०) आम तोड़ने पर उससे निकलने वाला श्वेत तरल पदार्थ
चोपु- (पु०) नमी (भूमि की); रुचि
चोबदार- (पु०) दरबार का वह नौकर, जो चोब (प्रा० डंडा) उठाता है
चोला- (पु०) शरीर, पहनावा,आत्मा
चोवा- (पु०) तेल-फुलेल, चंदन, शृंगार
चोहकरा- (पु०) अत्यन्त उत्साहित एवं मनोरंजक गीत
चोहलबाजी- (स्त्री०) मनोरंजनात्मक वार्तालाप

चौन्हिआर- (वि०) गांजा
च्वाँकबु- (क्रि० स०) चुभाना
च्वाटा- (अव्य०) दफा, बार
च्वान- (स्त्री०) नोंक
च्वापी- (वि०) काम में रुचि रखने वाला
च्वाभा- (पु०) आर
छंगुनियाँ- (स्त्री०) सबसे छोटी उंगली
छंगू, छंगुआ- (पु०) छः अंगुलियों वाला व्यक्ति
छंटा- (वि०) जो घोड़ा छाना या बंधा हुआ चरता हो
छँटा- (वि०) विशिष्ट, सर्वोच्च; चालाक
छई- (स्त्री०) क्षय रोग; छपुला की लकड़ी, जो विवाह में पूजी जाती है
छउँकटई- (स्त्री०) विश्वासघात
छउँकटहा- (वि०) विश्वासघाती
छउना- (पु०) सुअर का छोटा बच्चा
छकड़ा- (वि०) बड़ी बैलगाड़ी
छकनी- घास पीटने के लिए प्रयुक्त लकड़ी की बनी झाड़ू जैसी एक चीज
छकलिया- (वि०) जिसमें छः कली हों (कुर्ता, छाता आदि)
छगड़ाबु- (क्रि० अ०) बकरी का गर्भ धारण करना
छच्छाकाल- (वि०) क्रुद्ध
छच्छाबु- (क्रि० अ०) घास आदि का फैलकर बढ़ते रहना
छछत्र- (स्त्री०) चालाकी
छछुत्ररा- (पु०) झूठा अपयश
छटकहरि- (वि०) गाय या भैंस, जो दुहते समय उछले
छटवा- (पु०) चारा आदि डालने का टोकरा
छठियाँतर- (पु०) भेद, मनोमालिन्य; होब- बच्चों की छठी में बिच्छू के डंक आदि डाले जाते हैं, जिससे उन्हें बिच्छू काटने आदि का डर नहीं रहता है
छठियाबु- (क्रि० अ०) हठ करना (प्रायः बच्चों का), आग्रह करना
छतुला- (पु०) बच्चों को छठी के दिन पहनायी जाने वाली पोशाक
छड़बदुआ- (वि०) जो छोड़ देने से खराब हो गया हो
छड़ा- (पु०) कड़ा के ऊपर पहनने का आभूषण
छतनार- (वि०) जिसका ऊपरी भाग छत या छतरी की भाँति हो; छायादार
छतीसा- (वि०) दुष्ट, चालाक
छतुरी- (स्त्री०) छाता
छत्ता- (पु०) सीना; बर्र आदि का झोंझ
छदाम- (स्त्री०) खराब पैसा
छदर- (वि०) छः दाँतों वाला
छनउर- (वि०) वह खेत, जहाँ मवेशी गोबर करने के लिए रात में ठहराये जाते हैं
छनहनि- भीड़ रहित, शान्त
छन्नी- (स्त्री०) स्त्रियों के हाथ में पहनने का आभूषण
छपउबु- (क्रि० स०) बुवाई से पूर्व खेतों में पानी देना,
छपया- (पु०) जानवरों की एक संक्रामक बीमारी
छपरा- (पु०) छप्पर
छपहार- (वि०) छापने वाला; टीका लगाने वाला
छपाँच- (स्त्री०) छल-कपट
छबरा- (वि०) वह बैल आदि, जिसके शरीर में दूसरे रंग के धब्बे हों
छरड़ाबु- (क्रि० अ०) कड़ा हो जाना
छरछंद- (पु०) ढोंग
छरछंदी- (वि०) छलछद्म करने वाला
छरहर- (वि०) लम्बा एवं पतला (व्यक्ति)
छराछर- (क्रि० वि०) तेजी के साथ; निरन्तर
छरीदा- (वि०) बिना कुछ लादे हुए (ऊँट का), अकेले चलने वाला (ऊँट)
छर्दिहा- (वि०) (छर्दी) छोटे कंकड़ मिली मिट्टी वाला
छलंक- (स्त्री०) छलांग
छलका- (पु०) दूध आदि बर्तन स छलकने से रोकने हेतु ढक्कन में लगायी जाने वाली मूज आदि घास; ढीली खाल
छलरा- (पु०) चमड़ा
छल्ला- (पु०) बड़ी अंगूठी;
छल्ली- (स्त्री०) पैर के अंगूठों का आभूषण; बोरों आदि की कतार
छवँछियाबु- (क्रि० अ०) परेशान होना

छहरबु- (क्रि० अ०)**फहराना;** उतराना
छाँछ- (स्त्री०) थन से निर्गत दूध की धार
छाँट- (स्त्री०) उल्टी
छाँटबु- (क्रि० स०) बुंदिया बनाना; धोना; (बाल) कतरना;
छाँटा- (पु०) राशि को नापने का पात्र
छाई- (स्त्री०) सुअर की बच्ची
छागर- (पु०) बकरा
छागलु- (स्त्री०) पैरों का गहना
छाड़न- (पु०) अपवाद, त्याग की हुई वस्तु
छाड़ू- (पु०) जीभ का प्रसिद्ध रोग
छान्हि- (स्त्री०) फूस की बनी छत
छापड़, छापर- (पु०) जूते में तरा के आकृति का चमड़ा, जो उसके ऊपर लगाया जाता है; बिनवर
छाला- (पु०) चमड़ा,
छाली- (स्त्री०) छाल; सुपाड़ी
छाहीं- (स्त्री०) छाया, रक्षा, बचाव
छिंगुरी- (स्त्री०) कनिष्ठिका उँगली
छिउलारु- (पु०) पुरहाई कुएँ का वह स्थान, जहाँ पर खड़े होकर पानी डाला जाता है
छिटका, छिर्रा- (वि०) बिखेरकर बीज बोने की पद्धति
छिटकी- (स्त्री०) बूंद का छोटा टुकड़ा, जो उड़कर पड़े; आँख में हुआ मोतियाबिन्द
छिटुआ- (वि०) बिखेरी हुई (बुवाई)
छिट्टी- (स्त्री०) पानी आदि की बूंद, जो छिड़कने से पड़े
छितनी- (स्त्री०) छोटी छिछली टोकरी
छिनगाइब- (क्रि० स०) छोटी-छोटी डालों को काटकर साफ करना
छिनबु- (क्रि० स०) (सिल या जाँत) छिनना, रुखानी से खुरदुरा करना
छिनरहटि- (स्त्री०) छिनाला कराने की आदत
छिनुआ- (पु०) दही काढ़ने का पात्र
छिनहा- (वि०) जिसके मुँह पर माता के दाग हों
छिबुलकी- (स्त्री०) छोटी-सी चालाक स्त्री, धूर्त लड़की
छिया- (स्त्री०) गंदी वस्तु, मैला; (विस्म०) छीः
छिरका- (पु०) सिरका
छिहाइब- (क्रि० स०) भरकर ठूँसना
छिहुली- (स्त्री०) पलाश का पेड़
छीछ- (पु०) छिद्रान्वेषण (वि०) नष्ट
छीछिल- (वि०) फैला व कम गहरा (बर्तन)
छीजबु- (क्रि० अ०) कम हो जाना (वस्तु का)
छीटबु- (क्रि० स०) इधर-उधर फेंकना
छीटा- (पु०) अनाज बसाने की डलिया
छीरा- (पु०) कपड़े में तागा निकल जाने का निशान
छुई-मुई- (स्त्री०) एक बूटी, जिसे लाजवंती भी कहते हैं
छुछरउंधु- (पु०) हल्का अंधेरा
छुछुवाबु- (क्रि० अ०) किसी कार्य हेतु इधर-उधर दौड़ना
छुछोहरा- (वि०) इधर-उधर अधिक भाग-दौड़ करने वाला
छुट्टा- (वि०) अकेला; सादा; बंधनमुक्त
छुतमितार- (पु०) छूत का संदेह या भ्रम
छुतियउबु- (क्रि० स०) सिंचाई करते समय मांगियों पर गीली मिट्टी चढ़ाना
छुतिहर, छुतेहरा- (वि०) अपवित्र
छुतिहा- (वि०) गंदा, छूतवाला; जूठा
छुलाछन- (वि०) सुलक्षणा; दुष्टं
छूँछ- (वि०) रिक्त
छूछी- (स्त्री०) नाक का गहना विशेष
छूरा- (पु०) अस्तुरा
छेंहीं- (स्त्री०) फली
छेइहाइब- (क्रि० स०) घायल करना,
छेउबु- (क्रि० स०) मटकी से पात्र विशेष से दही निकालना
छेगड़ी- (स्त्री०) बकरी
छिटवा- (पु०) टोकरा
छेदुका- (पु०) चारपाई बुनने पर बने हुए छेद
छेपक- (पु०) बाधा; किसी कथा के बीच में यों ही जोड़ा हुआ प्रकरण
छेव- (पु०) लगाव, मोह; चिह्न;

छेवनि- (स्त्री०) चाक पर से बर्तन उतारने में प्रयुक्त धागा।

छेही- (स्त्री०) पेड़ आदि पर काटकर लगाया हुआ चिह्न

छैलचूड़ी- (स्त्री०) पैर में पहनने का आभूषण

छोंजिया- (पु०) ठिगने कद का देशी घोड़ा

छोंड़ी- (स्त्री०) कोठिली

छोइया- (पु०) दाना रहित ज्वार का भुट्टा

छोकड़ा- (पु०) लड़का

छो-छो- (संबो०) बकरे को सहवास हेतु प्रेरित करने का शब्द

छोत- (पु०) गुह या गोबर का उतना ढेर, जो एक मनुष्य या पशु का हगा हो

छोपी- (स्त्री०) बेंड़ी की सिंचाई का बहुत छोटा घाट

छोर्रा- (पु०) छुर्री हुई अरहर की फली

छोलारु- (पु०) पुरहाई कुएँ से सम्बन्धित वह स्थान, जहाँ पर पानी उड़ेला जाता है

छोहु- (पु०) ममता, प्रगाढ़ प्रेम

छ्यदना- (पु०) बरिच्छा; बरछिदी

छ्यावरि- (स्त्री०) संमूह, झुण्ड

छ्वाँह- (पु०) भैंस का थन

जंगरा- (पु०) चना निकलने पर अवशेष कुचले डंठल

जंगल फराकत जाबु- (क्रि० स०) दिशा-मैदान, मल त्याग हेतु जाना

जंघा- (पु०) मोटी टहनी, जाँघ

जंजालु- (पु०) झमेला, फँसाव, बंधन

जंता- (पु०) सुराकदार छन्नी, जिसमें तार पतले किए जाते हैं

जंत्र, जंतुर- (पु०) पैजनी को सुजवा से कसने वाली चार रस्सियाँ; जंगली पशु; जंतर

जंभीरा- (पु०) नींबू

जइहा- (अव्य०) जिस दिन

जई- (स्त्री०) धान बोने की एक विधि, जिसमें धान किसी बर्तन में भिगोकर रखे जाते हैं, जिससे अंकुर जल्दी निकल सके। जंगली जौ; जरई

जउनु- (पु०) दूध जमाने हेतु प्रयुक्त थोड़ा-सा दही; (सर्व०) जो

जउरि- (स्त्री०) खीर

जउरी- (स्त्री०) रस्सी

जक्कंदबु- (क्रि० अ०) मस्ती में उछलना

जकोइया, जकोई- (स्त्री०) मटर की फली का प्रारम्भिक आकार

जखीरा- (पु०) समान वस्तुओं का संग्रह, ढेर, पौधों का समूह

जखेड़ा- (पु०) भीड़

जगरूपु- (पु०) विवाहों में प्रयुक्त एक खंभ; **काठेक-** जिसे कहीं-कहीं 'मानिक खंभ' भी कहते हैं

जग्गि- (स्त्री०) यज्ञ

जङरइत- (वि०) ताकतवाला

जचबु- (क्रि० अ०) देखने में सुन्दर लगना

जच्छार- (वि०) रुष्ट, अत्यन्त क्रुद्ध

जजमानी- (स्त्री०) यजमानी

जैजाति- (स्त्री०) सम्पत्ति

जट्ट- (वि०) उजड्ड; जाट की भाँति असभ्य

जट्टी- (स्त्री०) स्टीमर से उतरने का स्थान; जो लकड़ी रखकर बनाया जाता है

जड्डाहिन- (वि०) जले हुए गुड़ के स्वाद-सा स्वाद वाला

जड़काला- (पु०) जाड़े की ऋतु (उदा०) 'बिरहकाल भयउ जड़काला'

जड़ावरि- (स्त्री०) जाड़े के कपड़े

जढ़ी- (वि०) ज़िद्दी

जतिगर- (वि०) अच्छे प्रकार का (बीज, पौधा आदि)

जती- (पु०) यती; जोगी; संन्यस्त व्यक्ति

जतुआ- (पु०) जोत (कृषि सम्बन्धी)

जत्ता- (पु०) सोने का तार खींचने में प्रयुक्त युक्त पट्टी

जद्द-बद्द- (क्रि० वि०) भला-बुरा

जद्दी- (स्त्री०) जायदाद

जन- (पु०) व्यक्ति; यह शब्द संख्यावाचक शब्दों के साथ बोला जाता है; मजदूर

जनखा- (पु०) नपुंसक

जनगर- (वि०) अधिक

जनारब- (पु०) जानवर, जीव; **पहेली**- "हाथ न गोड़, पहाड़ चढ़ा जात है देखो त बरखंडी बाबा कौन जनारब जात है।" (धुआँ)

जनाही- (क्रि० वि०) व्यक्ति के हिसाब से

जनुका- (पु०) ज्ञाता, जानने वाला (प्रायः मंत्र-तंत्र का); (वि०) होशियार

जनेरा- (पु०) मक्का, जोन्हरी

जनेस- (पु०) गणेश

जनौ- (क्रि० वि०) शायद; जहाँ तक ज्ञात है

जन्ता- (स्त्री०) बैलगाड़ी की पैंजनी में लगाई जाने वाली रस्सी **मशीन**- बाल बनाने में प्रयुक्त मशीन विशेष, जंता

जपबु- (क्रि० स०) हत्या करना, खा जाना

जपाट- (अव्य०) बिल्कुल; (वि०) मूर्ख; बहरा

जबर- (अर० वि०) हृष्ट-पुष्ट

जबरा- (पु०) लोटा पर चौड़ा डेहरा, जिसमें अनाज रखा जाता है

जबरियाँ- (अव्य०) जबरदस्ती

जबहा- (पु०) शक्ति, अधिकार

ज़बान- (स्त्री०) जीभ

जबाना- (फा०, पु०) ज़माना

जबुर- (वि०) बुरा, भारस्वरूप

जबून- (वि०) खराब

जबे- (वि०) खत्म

जबोर- (वि०) प्रभावशाली, हृष्ट-पुष्ट

जमइका- (पु०) जमाइका द्वीप, जहाँ भारतीय मजदूर भेजे जाते थे

जमकबु- (क्रि० अ०) भली-भाँति स्थापित हो जाना

जमतुआ- (पु०) छोटे-छोटे पौधे, जो बिना बोए उगते हैं

जमाई- (स्त्री०) घोड़े के नाचने की क्रिया

जमामर्द- (वि०) मुस्तैद

जमाल- (वि०) छूरा की क्वालिटी विशेष

जमुर्रुद- (पु०) पन्ना नामक रत्न

जमेंड़ा- (पु०) दही जमाने का बर्तन

जमोग- (पु०) आश्वासन, जमानत

जम्म- (वि०) स्थायी; न हटने वाला

जमोट- (पु०) कुएँ की जोड़ाई के समय सबसे नीचे का काठ आदि का घेरा

जम्बूरू- (पु०) कीलें खींचने का यंत्र

जययद- (पु०) अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्ति

जरई- (स्त्री०) धान बोने की एक विधि, इसमें धान भिगोकर किसी बर्तन में अंकुर निकलने के लिए रखे जाते हैं; जई

जरतार- (पु०) सोने-चाँदी के तार

जरनि- (स्त्री०) जलन

जरबन- (फा० पु०) इजारबन्द

जरलहा- (वि०) जला हुआ

जरबई- (पु०) छोटे-छोटे जरवा या जड़ें

जरवना- (पु०) ईंधन

जरवा- (पु०) पौधों में निकली हुई जड़ें

जराईंध- (स्त्री०) पकवान आदि के जलने की बू

जरायपेशा- (फा० पु०) अपराधशील जाति

जरिआबु- (क्रि० अ०) फल का सख्त होना

जरि-भूरी- (स्त्री०) जड़-मूल

जरिया- (स्त्री०) जड़; जीवन-यापन का साधन; माध्यम

जरबाना- (पु०) जुर्माना

जर्राह- (पु०) हकीम, जो चीड़फाड़ करे

जलकर- (पु०) तालाब

जलकुढ़नी- (वि०) ईर्ष्यालु (स्त्री)

जलखरि- (स्त्री०) जाल की बनी थैली, जिसमें पेड़ पर से फल तोड़े जाते हैं

जलजल- (वि०) पुराना; कमजोर

जलमबु- (क्रि० स०) जन्म देना

जलांक- (स्त्री०) भयंकर लू

जलाका- (पु०) तपनि, गरमी

जलापा- (पु०) जलन, ईर्ष्या

जल्द- (स्त्री०) गर्मी (वि०) गरम

जवनार- (पु०) किसी देवता को चढ़ाया हुआ दूध चावल

जवरिहा- (वि०) जवार का, पड़ोसी

जवा- (पु०) गरदन का स्वर्ण-आभूषण; लहसुन के दाने; **गर**-, दूसरे बीज के साथ बोने पर जौ की मात्रा अधिक हो

जवारि- (स्त्री०) पड़ोस, समूह, गुट
जवाल- (पु०) जंजाल
जस- (अव्य०) जैसा, यश
जहन्नुम- (अर० पु०) नरक; नाश
जहमति- (अ० स्त्री०) आफत, परेशानी
जहिया- (क्रि० वि०) जबा
जहुआ- (वि०) मूर्ख, अज्ञान
जहुरा- (अ० पु०) प्रभाव, नाम, प्रकाश
जाँघिया- (स्त्री०) नेकर
जाँचड़- (पु०) (पशु की) संतति
जाँतु- (पु०) चकिया का बड़ा रूप
जाँबु- (पु०) जामुन
जाउरि- (स्त्री०) खीर
जाकड़- (वि०) निश्चित मूल्य से अधिक
जाखि- (स्त्री०) यक्षिणी, कुश की बनी छोटी-सी यक्षिणी की गुड़िया, जो अनाज की डेहरी में डाल दी जाती है। विश्वास यह है कि जहाँ यह होगी अनाज घटेगा नहीं
जाजिमु- (पु०) कपड़े का लम्बा-चौड़ा बिछौना
जाठी- (स्त्री०) लकड़ी के कोल्हू में सरसों को कुचलने की लकड़ी
जादव- (पु०) यदुवंशी, यादव,
जानी- (स्त्री०) प्रिया, प्रायः गीतों में प्रयुक्त
जापदु- (पु०) कारोबार,
जाफ- (फा० स्त्री०) बेहोशी
जाबा- जानवरों के मुँह पर बाँधने की रस्सी का जाल
जाबिर- (वि०) प्रभावशाली, शक्तिवाला
जामबु- (क्रि० अ०) उगना, जम जाना
जामा- (पु०) ब्याह में दुल्हे के पहनने की पोशाक विशेष शरीर
जायँ- (वि०) उचित; बे- अनुचित
जायल- (अर० वि०) नष्ट, समाप्त (अधिकार आदि के लिए)
जायाँ- (वि०) नष्ट, बरबाद
जारबु- (क्रि० स०) जलाना; दिल दुखाना
जारी- (स्त्री०) आम के अन्दर गुठरी के आसपास का कड़ा आवरण; जाली
जावन- (पु०) दूध को जमाने के लिए दूध में डाला गया दही; जउनु
जिंगला- (पु०) जाली युक्त खिड़की; (वि०) टूटी-फूटी (खाट की बुनावट)
जिंघे- (अव्य०) जिधर
जिंदानु- (पु०) जिन्न
जिंस- (अ० स्त्री०) सामान, सामग्री
जि- (सर्व०) यह, ये
जिउका- (स्त्री०) रोज़ी, जीविका
जिउकिया- (पु०) जीवित प्राणियों को पकड़ने या शिकार करने वाला
जिउतिया- (पु०) क्वार के नवरात्रों में पुत्रवती स्त्रियों द्वारा पहना गया एक धागा, जो साल भर सुरक्षित रखा जाता है
जिउधर- (वि०) जीवधारी
जिक्किर- (स्त्री०) उल्लेख, ज़िक्र
जिगा- (स्त्री०) जगह, स्थान
जिजिया- (स्त्री०) बड़ी बहिन
जिठउत या जेठउत (पु०) जेठ का पुत्र
जित्ता- (पु०) काम के बदले काम; बदला
जिनि- (अव्य०) नहीं; जनि
जिन्द- (पु०) प्रेत (मुस्लिम धर्म के), जिन्न
जिब्भी- (स्त्री०) जीभी
जिम्मा- (पु०) उत्तरदायित्व
जियरा- (पु०) प्राण, जी
जिया- (स्त्री०) बड़ी बहन, दीदी; हृदय
जिरवानी- (स्त्री०) चावल और दही का एक पकवान, जिसमें जीरा डाला जाता है
जिराती- (वि०) धान विशेष; **खाद-** (स्त्री०) सरकारी बँटने वाली खाद
जिराबु या जीरबु- (क्रि० अ०) मक्के आदि का जीरा लेना, फूल लेना
जिलास- (स्त्री०) न्यायालय
जिल्लत- (स्त्री०) परेशानी; संकट
जिहालति- (अ० स्त्री०) तर्क नासमझी
जिहिका- (सर्व०) जिसका
जिहिन-जेहेनि- (स्त्री०) बुद्धि, समझ

जीता- (वि०) वह ब्याह, जिसमें पहली विवाहित स्त्री जीवित हो

जीरबु- (क्रि० अ०) मक्का का फूल या जीरा निकलना

जुंग- (स्त्री०) उत्साह

जुआँरि- (स्त्री०) बैलगाड़ी का जुआँठा, जिसमें बैल मचते हैं

जुआँ- (पु०) जुआँरि, जूँ

जुआठबु- (क्रि० स०) बैलगाड़ी इत्यादि को जुएँ से जोतना

जुआन- (पु०) युवक,(वि०) हट्टा-कट्टा

जुइना- (पु०) मूजा आदि की बनी लम्बी चटाई बोझ बांधने की रस्सी

जुइनि- (स्त्री०) योनि (प्रायः पशुओं के लिए)

जुक़ती- (स्त्री०) युक्ति, तरकीब

जुग- (पु०) युग; विलम्ब

जुगाधी- (स्त्री०) पीढ़ी; जमाना

जुगियाबु- (क्रि० अ०) अंकुर का दो-तीन पत्तों का होना

जुगुति- (स्त्री०) युक्ति

जुजबी- (अव्य०) बिरला, कोई

जुज्झि- (स्त्री०) युद्ध, लड़ाई

जुटउला- (पु०) जमाव

जुट्ट- (पु०) छोटा समूह (घास आदि का)

जुट्टी- (स्त्री०) जोड़ी

जुठैल- (वि०) वह खेत, जिसमें फसल तुरंत ली जा चुकी हो; वि० जुठायल, जुठिहा

जुड़िहा- (वि०) जिसे जूड़ी आती हो

जुनवधबु- (क्रि० स०) अपने समय पर भूख-प्यास का अनुभव करना

जुन्हरी- (स्त्री०) ज्वार; वि० जोन्हरी, जोंढ़ी

जुमिला- (वि०) सम्पूर्ण

जुम्मस खाबु- (क्रि० अ०) डिगना, हिलना, उठना

जुम्मा- (पु०) जिम्मा, दायित्व

जुरका- घास या मूजा का एक मूठी भर की गड्डी

जुरबु- (क्रि० अ०) उपलब्ध होना, पूरा पड़ना; जुड़ना

जुरिया- (स्त्री०) दसवाँ संस्कार में नाइयों द्वारा गाड़ी गई कुश की मूठि

जुर्रति- (स्त्री०) हिम्मत

जुर्राब- (स्त्री०) मोजा

जुलुम- (पु०) जुर्म, अत्याचार

जुसगर- (वि०) रसेदार

जुहाबु- (क्रि० अ०) इकट्ठा हो पाना; जुटना अँटना

जुहार- (स्त्री०) नमस्कार; सलाम

जू- (पु०) प्राण; कीड़ा (सर्व०) यह

जूजू- (पु०) बच्चों को डर बाने में प्रयुक्त काल्पनिक वस्तु या जीव

जूड़- (वि०) ठंडा

जूना- (पु०) मूंज आदि की लम्बी रस्सी, जिससे बोझ आदि बांधे जाते हैं

जूनि- (स्त्री०) योनि (पशु की)

जूवा- (पु०) जुआठा

जूस- (पु०) वह संख्या, जो २ से विभाजित हो जाए; रस

जेंइब- (क्रि० अ०) भोजन करना

जेंगला- (पु०) लोहे या लकड़ी की छड़ों वाली खिड़की

जेंवना- (पु०) भोजन

जेंवरा- (पु०) प्रजावर्ग को मजदूरी स्वरूप दिया गया फसल का बोझ ।

जेकर- (सर्व०) जिसका

जेठूई- (वि०) जेठ मास में पकने वाली

जेतिक- (वि०) चाहे जितना

जेरबन्दु- (पु०) पलस्तर करने में प्रयुक्त ३ फुट की पटरी

जेवउँबु- (क्रि० स०) खिलाना, परोसना

जेवनार- (पु०) सुन्दर भोजन; भोजन का स्थान ; (स्त्री०) भोजन कर्ताओं की पंक्ति

जेवर- (स्त्री०) आभूषण; गहना

जेह- (सर्व०) जिस, जो

जेहलि- (स्त्री०) जेल

जेहिया- (सर्व०) जिसमें

जेहेनि- (स्त्री०) बुद्धि

जै- (वि०) जितने,जितनी

जैका- (पु०) स्वाद; वि० जायका
जैजाति- (स्त्री०) सम्पत्ति
जोंगरबु- (क्रि० स०) बुरी तरीके से पीटना
जों धरी- (स्त्री०) छोटे दाने की ज्वार
जोइया,जोय- (स्त्री०) पत्नी
जोखबु- (क्रि० स०) तोलना
जोखरबु- (क्रि० स०) (बैल) नाँधना
जोगउटा- (पु०) पुरुषों का वस्त्र विशेष
जोगउबु- (क्रि० स०) सुरक्षित रखना, बचाना
जोगी- (पु०) योगी
जोगीड़ा- (पु०) एक प्रकार का नृत्य, जिसमें कई लोग भाग लेते हैं
जोगु- (पु०) नाम (करना), जोड़ा, मेल
जोठा- (पु०) जुआठा
जोट- (पु०) जोड़ा
जोड़ा- (पु०) ऊँट की काठी का एक भाग; युगल
जोतारु- (वि०) जोतने योग्य खेत
जोति- (स्त्री०) ज्योति
जोतिस- (स्त्री०) ज्योतिष
जोतिहा- (पु०) किसान
जोती- (पु०) रस्सी आदि की पट्टी या बंधन विशेष, मेल
जोतु- (पु०) बैलों को जुएँ से रोकने के लिए सन की बुनी हुई पट्टी; लहंगरी
जोधनि- (स्त्री०) जुएँ को कसने में प्रयुक्त रस्सी
जोधा- (पु०) योद्धा, बहादुर व्यक्ति
जोध्धा जी- (स्त्री०) अयोध्या जी; वि० जुध्या जी
जोनढिहा- (वि०) जिस (खेत) में ज्वार बोई गई हो
जोन्हरी- (स्त्री०) ज्वार
जोबना- (पु०) कुच
जोम- (पु०) जोश, रोब
जोय- (स्त्री०) स्त्री, पत्नी
जोरइँडा- (पु०) खरीफ की फसल का खर-पतवार
जोरई- (स्त्री०) लोड़ी नाम का कीड़ा
जोरनी- (स्त्री०) मक्खन; भुजरा; एवज
जोरा- (पु०) विशेष प्रकार का बोरा, जो बैलों पर लादा जाता है
जोरिया- (स्त्री०) छोटे आकार की चूड़ियों का समूह
जोरू- (स्त्री०) जीवन संगिनी, पत्नी
जोलहटिया- (स्त्री०) जुलाहों के रहने का भाग या क्षेत्र
जोवा- (पु०) बारी (पानी चलाने आदि की)
जौसम- (वि०) विशेष प्रकार की चूड़ी, जिसमें तीन-चार लकीरें होती हैं और फिर एक पत्ता सा बना होता है (पु०) भुजा का आभूषण विशेष
जोहाबु- (क्रि० अ०) पूरा पड़ना
जोहारबु- (क्रि० स०) सहायता या मदद मांगना
ज्वाटा- (पु०) जोड़ा
ज्वाता- (पु०) नस; **-मलबु** (क्रि० स०) पक्की छत डालते समय दीवालों पर मसाला लगाना
ज्वारा- (पु०) लाखकी चूड़ी
झँउस- (स्त्री०) डाँट, लपट
झंखबु- (क्रि० अ०) चिन्ता करना, पश्चात्ताप करना
झंकोर- (पु०) झोंका
झंगिया- (वि०) बच्चों के प्रथम बार लगाया गया काजल
झंगुलिया- (स्त्री०) पोशाक विशेष
झंझरा- (पु०) मिट्टी का बर्तन
झंझरी- (स्त्री०) लकड़ी अथवा पत्थर में कटी बेल आदि
झँटिहा- (वि०) झिकझिक करने वाला बदमाश
झँटुल्ली- (वि०) छोटा
झंडूलु- (पु०) बालक, जिसके सिर पर बड़े-बड़े बाल हों (प्यार का शब्द)
झंपोला- (पु०) बड़ी टोकरी
झँसाई- (स्त्री०) नीचता
झउँसबु- (क्रि० स०) सीधे आग में भूनना
झउँसहा- (वि०) निंदनीय
झउआ- (पु०) झाँखड़ आदि से बना टोकरा
झकड़ी- (स्त्री०) निरंतर और धीरे-धीरे होने वाली वर्षा
झकसा- (पु०) झंझट, झगड़ा
झझक- (स्त्री०) थोड़ा सा पागलपन

झड़ुदि या झड़ूँ- (क्रि० वि०) झटपट

झड़ूकुलाहा- (पु०) कुलाहा

झलक- (स्त्री०) रूई का थोड़ा अंश, थोड़ी मात्रा में, कपास की थोड़ी सी या थोड़ी

झलर- (पु०) पानी बरसने की बड़ी बौछार

झलझली- (स्त्री०) लम्बी सीर

झलरी- (स्त्री०) झलरी

झलरी झलरा- (वि० वि०) झोंके के साथ

झलवा- (पु०) फुटकर का दुकान

झलाह- (पु०) उलझी हुई खड़ी फसल

झलाहट- (वि०) सघन; फैलावदार

झार- (स्त्री०) पशुओं के व्याने पर बच्चों के साथ निकलने वाली एक और पोता की झिल्ली

झारबुज- (पु०) घोसम, जिसमें पानी बरसता बंद हो गया

झारू या (पु०) (स्त्री०) जो झरने की सतह से ऊपर बहता हो और नीचे के काम का न हो, विशेषतः कर, नाला, नालियों

झारोंच- (स्त्री०) पैदावार

झरुवन, झरउना- (पु०) (फसल की) ओलों सघन या छूटा हुआ अंश

झरुवाबु- (क्रि० अ०) झुलसकर या ओले से नष्ट होना

झरोहिन- (स्त्री०) मिर्च की-सी झाड़

झाड़ि- (स्त्री०) झाड़ी; लगाया की नाप

झाड़िहाच- (पु०) लगातार होने वाली वर्षा-बिना रुके वर्षा; झड़ी

झाड़ीझाड़ा- (पु०) कौने खिड़की

झाड़ीझाड़ा- (पु०) झाड़ीझाड़

झाड़ुदुनी- (स्त्री०) कटीली झाड़ियों का समूह

झाड़ू- (वि० वि०) वेग के साथ

झाड़ू- (पु०) कई दिन की रखते होने वाली

झाड़ू- (वि० वि०) (लोगों बातें) कहना, शेखी

झाड़ू- (स्त्री०) झाड़ी; झुंडिया

झाड़ेबुहा- (पु०) सिपाहा, नाहाया

झाड़ेबुहाबु- (क्रि० अ०) बहुत श्रीण करना

झाड़ेली- (स्त्री०) घास आदि डालने की गहरी गोल डलिया

झखाँड़ार- (वि०) परेशान

झख- (स्त्री०) आर्थिक सामर्थ्य, गुंजाइश

झखरबु- (क्रि० अ०) ऊपर उठकर उड़ते या हिलते रहना

झाँ- (अव्य०) बच्चों के खेलते समय एक दूसरे को चुनौती का शब्द

झाँक- (स्त्री०) विशेष प्रकार की गंध

झाँखर- (पु०) अरहर के गुच्छे पेड़

झाँड़ा- (स्त्री०) पैरों का गहना, बाल विशेष

झाँड़ा- (पु०) ककड़ी और घुली की फसल का एक रोग

झाँदू- (वि०) झाँझरी

झाँड़ा- (पु०) टट्टी

झाँप- (स्त्री०) ऊपर से ढकने का कपड़ा; कच्ची छत में बिछाये गये पटरे

झाँपबु- (क्रि० स०) ढकना, बंद करना

झाँबरि, झाबर- (स्त्री०) बैंगनी का छोटा, काला; उदास

झाँमि- (वि०) हल्का, बुरा, नीच

झाँमा- (पु०) गोंगा,

झाई- (स्त्री०) हल्की परछाई

झाऊ- (पु०) फर्नीचर विशेष

झापस- (पु०) बादल घिर रहना और धीरे-धीरे बरसात का मौसम

झाबर- (पु०) झाँझर का बना बड़ा डलैव; बड़ा पात्र जहाँ आवश्यकता पानी भरा रहता है

झाबेली- (स्त्री०) पान आदि रखकर बाजार ले जाने में प्रयुक्त छोटा झाबा

झाम- (स्त्री०) कुर्सी साफ करने की लोहे की गद्दी; सोंटा

झार- (स्त्री०) झाँझपूर्ण ऊँचा; झुंझलाहट; कड़ुवाहट भरी बू

झारबु- (क्रि० स०) आभूषण आदि साफ करना; पात्र द्वारा छिड़क देना

झारा- (पु०) तेलाही

झारि- (अव्य०) पूर्णतया, मात्र, (वि०) तेज

झारी- (स्त्री०) सुराही, झाड़ी

झाल- (स्त्री०) सहारे की लाठ का बुलौ या बुंदौ बनाने का यंत्र, लड्डा आदि भरने में प्रयुक्त बड़ा सोंटा

झाला- (पु०) कान में पहनने का आभूषण
झावँर- (वि०) मुर्झाया हुआ, सूखा हुआ
झावाँ- (पु०) खूब जली हुई पक्की ईंट
झिकवा- (पु०) मछली विशेष
झिझकबु- (क्रि० स०) संकोच करना, हिचकना कंपित होना
झिझक्वारबु- (क्रि० स०) झटका देना वि० झिझक्वारबु
झिनवाई- (वि०) छोटी, झीनी
झिनवा- (पु०) महीन चावल
झिरिक- (वि०) पतापी वाली कहने में प्रयुक्त रंदा की किस्म; -कर (क्रि० वि०) खुरचकर
झिलंगा- (वि०) खाट, जिसकी बिनावट पुरानी हो गई हो
झिलमिल- (पु०) गहना विशेष; (वि०) अस्पष्ट
झीन- (वि०) बारीक, छोटा
झीपबु- (क्रि० स०) ढक देना
झीलर- (पु०) सामान्य वर्षा; छोटा तालाब
झुँड़कुलु- (पु०) घौंसला
झुखुरी- (स्त्री०) झाँखर आदि की पतली लकड़ी या शाख
झुगी- (स्त्री०) अत्यन्त छोटी झोपड़ी
झुड़िया- (स्त्री०) झाँड़ी
झुनझुना- (पु०) बच्चों का खिलौना, जो पटवा लोग बनाते हैं
झुनाई- (स्त्री०) भोजन का सबसे छोटा अंश
झुना- (वि०) बहुत पतला (कपड़ा)
झुपसा- (पु०) गुच्छा (फल आदि का)
झुमरा- (पु०) विशेष रूप से बड़ा हथौड़ा
झुरमुट- (पु०) झुण्ड
झुरान- (वि०) सूखा हुआ
झुर्री- (स्त्री०) शिकुड़न
झुलनी- (स्त्री०) नाक में पहनने का छोटा आभूषण
झुलफुलवा- (पु०) सूर्योदय के पूर्व का समय
झुलवा- (पु०) स्त्रियों की बड़ी अँगिया
झुलवा- (पु०) झूला
झुल्ल- (स्त्री०) गुरुसा, हाथी, बैल के ऊपर लटकने वाली रंगीन नक्काशी दार चादर
झुल्लाबु- (क्रि० अ०) क्रुद्ध होना, झुंझलाना
झूँक- (पु०) झोंका; लगभग दो फुट की माप
झूँखी, झुखुरी- (स्त्री०) अत्यन्त पतली लकड़ी
झूगा- (पु०) पतली काँटेदार झाड़ियों का ढेर
झूनु- (पु०) चूल्हे में लगाया गया बंडों का सुडौल ढेर
झूमर- (पु०) करधनी का रूप विशेष, सिर पर भी पहना जाता है; झुमड़
झूर- (वि०) सूखा हुआ
झूरा- (पु०) सूखा
झोंकर- (पु०) बिखरे और गंदे बाल
झोंडु- (पु०) घौंसला
झोंझर- (पु०) पोल, खाली स्थान (खाई गड्ढे आदि में)
झोंटइया- (स्त्री०) बाल सिखा
झोंटवा- (पु०) बालों की लट, बड़े-बड़े बाल
झोपेदार- (वि०) झुलनी की बनावट विशेष
झोरिया- (स्त्री०) झोली
झोरी- (स्त्री०) चमड़े का बना थैला, जिससे सिंचाई हेतु कुएँ से पानी निकाला जाता है
झोल- (पु०) शोरबा, माँड़; (स्त्री०) ढीलापन
झोला- (पु०) ऊँट से उत्पन्न लकवा
झोलाबु- (क्रि० अ०) अग्नि का कमजोर हो जाना
झोहर- (वि०) आवश्यकता से बड़ा या लंबा (कपड़ा)
ट्यथरा- (पु०) बच्चों के बड़े व बिखरे हुए बाल; कुचैला हुआ रूप
ट्योरा- (पु०) ढोला
टंक- (पु०) तोला; -दलवा, मिट्टी का दो परतों वाला एक पात्र, जिसमें सोने के टंकि दबा दिये जाते हैं
टंच- (वि०) तैयार
टँचनी, टाँचनी- (स्त्री०) कपड़ों पर विशाव बनाने की छोटी सूई
टंटा- (पु०) झगड़ा-झंझट
टँठाबु- (क्रि० अ०) मिट्टी का कड़ा होना
टंडघरा- (वि०) कछार के खेतों में बुवाई के समय हल चलाने वाला हलवाहा

टँड़िया- (स्त्री०) हाथ के ऊपरी हिस्से में पहने का आभूषण; पछेलवा

टंडीला- (पु०) सामान

टइझा- (पु०) झगड़ा

टइनी- (स्त्री०) टहनी

टउल्यावँ- (पु०) मोलभाव

टकउरी- (स्त्री०) छोटा तराजू

टकसार- (पु०) टकसाल, खजाना

टङरी- (स्त्री०) टांग

टघिलबु- (क्रि० अ०) पिघलना

टटिया- (स्त्री०) झाँकड़ आदि से बनी दीवाल

टटुआ- (पु०) टट्टू (छोटा घोड़ा)

टटेरी- (वि०) झगड़ालू; शैतान

टट्टस- (वि०) मजबूत, स्वस्थ

टट्यार- (स्त्री०) झगड़ा, शैतानी

टठिया या टठुलिया- (स्त्री०) थाली; थरिया

टड़वरिहा- (पु०) बैलों का व्यापर करने वाली जाति का एक व्यक्ति

टड्डई- (स्त्री०) छड़ी

टनकहा- (वि०) वह जानवर, जो पैर झिटकता रहता हो

टपंखा या तिपंखा- (वि०) जिसकी आँख में टेढ़ापन हो

टप, टफ- (पु०) कान का आभूषण

टपउबु- (क्रि० स०) व्यर्थ दौड़ना, घूमना, हैरान करना; कुदाना

टपका- (पु०) पककर गिरा हुआ आम आदि फल; बूंद-बूंद टपकने का भाव; चौपायों का रोग विशेष

टमटमु- (पु०) छोटी घोड़ा गाड़ी

टयरा- (पु०) हाथी के खाने पीने के लिए पत्ते समेत पीपल, बरगद आदि की डालें; वि० टेउरा

टर्रा- (वि०) अकड़कर गुस्ताखी से बोलने वाला

टसकबु- (क्रि० स०) खिसकना, स्थान से थोड़ा-सा हटना

टसर- (स्त्री०) जुलाहों की ढरकी; तसर

टस्स- (स्त्री०) कल्पित स्थान; **-होबु-** (क्रि०अ०) जरा सा हिलना

टहँकउबु- (क्रि० स०) पिघलाना

टहरकु- (पु०) मदद; देबु- (क्रि० स०) कार्यकरना, ध्यान करना

टहलुआ- (पु०) नौकर

टाँका- (पु०) जोड़; **काटबु-** (क्रि० स०) बट्टा लगाना

टाँगुन- (पु०) अन्न विशेष, जिसका भात बनता है

टाँठ- (वि०) कड़ा

टाँड़ि- (स्त्री०) कमरे आदि में बने हुए छज्जे

टाँवाँ- (पु०) चट्टे में रखा बीस ईंटों का ढेर; छत आदि ढालते समय बल्ली के नीचे लगा ईंटों का ढेर

टाँसबु- (क्रि० स०) धातु के बर्तन की मरम्मत करना

टाकटउलु- (पु०) उलट फेर, कार्य

टाघन- (पु०) छोटा-सा जवान घोड़ा

टाठी- (स्त्री०) थाली

टाड- (स्त्री०) बाँह या गले का आभूषण

टापर- (स्त्री०) टोकरी

टायरा- (पु०) गहना विशेष

टाली- (स्त्री०) सामान वाहक ट्रैक्टर का डिब्बा या ट्राली

टाह- (स्त्री०) नदी का ऊँचा किनारा

टिउआ- (पु०) स्त्रियों की विदाई का निश्चित दिन

टिकन- (वि०) गद्दा में प्रयुक्त कपड़ा विशेष

टिकबु- (क्रि० अ०) टिकना, ठहरना

टिकरी- (स्त्री०) रुपये के आकार की गोल चमड़े की टिक्की; छोटी-सी रोटी

टिकावनु- (पु०) शादी अवसरों पर किया जाने वाला आर्थिक व्यवहार या भेंट

टिकुरई- (स्त्री०) समतल होने का गुण

टिकुरा- (पु०) भूमि से ऊँचा उठा हुआ भाग; टावर ऊँची-नीची भूमि

टिकुली- (स्त्री०) बिंदी

टिकुवा- (वि०) सफेद धब्बे से युक्त मस्तक वाला पशु

टिकोरा- (पु०) छोटे-छोटे आम के फल; हवा का झोंका

टिट्वाहबु- (क्रि० स०) खोजना, टटोलना

टिड़िक्कबु- (क्रि० स०) व्यंग्य करना, कटाक्ष करना

टिपटबु- (क्रि० स०) दो रस्सियों को मिलाकर बटना

टिपना- (पु०) टिप्पणी, जन्म, विवाह आदि से सम्बधित विवरण

टिपबाँस- (पु०) आडम्बर

टिप्पा- (पु०) लिंग; स्पर्श

टिमाकु- (पु०) शृंगार, साज-सज्जा

टिल्ला- (पु०) टीला

टिहड़ी- (स्त्री०) रीढ़ के पिछले हिस्से को टिहड़ी या करिहावँ (कमर) कहते हैं

टिहुना- (पु०) घुटना

टीकमटोक- (पु०) अनावश्यक आडम्बर

टीकुर- (पु०) सूखा मैदान

टीसि- (स्त्री०) बैलगाड़ी में जुआँ के पास लगी खुँटरी या खूँटा

टीमटाम- (पु०) सामान; सजावट

टुइयाँ- (वि०) मटर की किस्म विशेष, जिसके पौधे बहुत छोटे होते हैं

टुकनी- (स्त्री०) टोकरी

टुकरा- (पु०) टुकड़ा

टुकरी- (स्त्री०) पुराना छोटा कपड़ा

टुकवा- (पु०) वस्त्र खण्ड

टुकुर-टुकुर- (क्रि० वि०) अपलक

टुटपुंजिया- (वि०) न्यून पूँजी वाला

टुटरूटूँ- (वि०) रद्दी; किसी तरह काम देने वाला; बिल्कुल अकेला

टुटाहिल- (वि०) टूटा हुआ

टुनगू- (पु०) वृक्ष का ऊपरी सिरा, चोटी

टुरका- (पु०) टुकड़ा, कुटका; नाक की कील

टूँगबु- (क्रि० स०) छोटे-छोटे कौर (निवाला) खाना धीरे-धीरे भोजन करना

टूँडनि- (स्त्री०) मुंडन की तरह का एक संस्कार

टूँसी- (स्त्री०) पतला टुकड़ा

टूका- (पु०) जूते का ऊपरी भाग, यह शब्द प्रायः देशी जूतों में व्यवहृत होता है; टुकड़ा (रोटी का)

टूना- (स्त्री०) चक्की

टेंडरा- (पु०) कुल्हाड़ा

टेटाबु- (क्रि० स०) अकड़ना, ऐंठना

टेंटु- (पु०) धोती का वह भाग, जो कमर मे लपेटा जाता है; गोद

टेंभुआ- (पु०) आम का वह भाग, जो डाल से जुड़ा रहता है; टेभुना

टेंहसा- (पु०) बच्चों के हाथों का आभूषण

टेई- (स्त्री०) प्रेरणा, समानान्तर बात

टेउँगा- पत्तियों समेत छोटे-छोटे कल्ले

टेउका- (पु०) किसी वस्तु को ऊपर रोकने के लिए प्रयुक्त बड़ी टेक

टेटिया- (स्त्री०) हथकरघे में बालपिन का एक अंग विशेष

टेपर- (वि०) गुस्ताख, मुँहलगा

टेभुना- (पु०) आम का वह भाग, जो डंठल से जुड़ा रहता है

टेभुनी- (स्त्री०) नवांकुर

टेम- (स्त्री०) जलती हुई बत्ती

टेमरा- (पु०) बाजरे का बाल रहित पौधा; आम आदि की शाखा

टेवँ या ट्यावँ- (स्त्री०) आदत (वि०) निर्जीव

टेहरा- (पु०) नव पल्लव

टोंकी- (स्त्री०) टोकी या कही हुई बात

टोंड़ा- (पु०) हल के फाल की नोक

टोइयाँ- (वि०) तोते की किस्म विशेष, जो अशुभ कारक होती है

टोउबु- (क्रि० स०) टटोलना; परखना

टोक- (पु०) शब्द, अक्षर; संक्षेप बात

टोड- (पु०) किनारा; कोना

टोटियउबु- (क्रि० स०) पौधों में लोटा आदि से थोड़ा पानी छोड़ना; टोंट मारना

टोड़रवा- (पु०) बच्चों के हाथ का आभूषण

टोपरा- (पु०) टोकरा (लकड़ी का)

टोभु- (पु०) सिलाई का फंदा

टोरी- (स्त्री०) गैर खिला लावा

टोह- (स्त्री०) खोज

ट्याँड़ा- (पु०) छोटी जाति का बैल

ट्यांभरु- (पु०) कूल्हे की हड्डी
ट्याँव- (स्त्री०) आदत
ट्रिपिल नाइन- (वि०) (चाँदी) विशेष
ट्वान्हा- (पु०) टोना, नज़र
ठंठन्यावँ- (पु०) वाद-विवाद, झगड़ा
ठउरिग- (वि०) स्थिर, निश्चित
ठउरै- (अव्य०) पास ही में
ठकठक- (स्त्री०) विशेष स्थान, रौब; अच्छी स्थिति
ठकाठक- (वि०) बिना भोजन के
ठकुरसोहाती- (वि०) बात, जो मालिक को सुहाय
ठगहाई- (स्त्री०) ठगी धोखेबाजी
ठट्ठा- (पु०) हँसी, खिलवाड़
ठठरी- (स्त्री०) अस्थि-पंजर
ठठेरा- (पु०) भुट्टा या फल रहित ज्वार आदि का पौधा
ठड़ा- (वि०) खड़ा
ठड्ढा-(वि०) खड़ा-खड़ा
ठनगन- (पु०) नखरा, मचलन
ठप्पा- (पु०) सोना या चाँदी को किसी शक्ल में ढालने का यंत्र
ठर्रा-(वि०) देहात की बनी हुई शराब; (वि०) मोटी एवं मजबूत (रस्सी);**देना**- (क्रि० स०) नम खेत जोतने के पूर्व पाटा घुमाना
ठल-ठुला- (पु०) रहने का स्थानः ठिकाना
ठसक- (स्त्री०) गर्व, गर्वपूर्ण उक्ति
ठहकबु- (क्रि० स०) ठहरना, रुकना
ठाँठ- (वि०) वह गाय या भैंस, जो गर्भिणी न होती हो; रस विहीन
ठाउँ- (पु०) स्थान, प्रांत
ठाठु- (पु०) भीट की छत का काम देने वाला विशाल छप्पर; फूसरहित छप्पर का ढाँचा; शौक
ठाढ़ि- (वि०) खड़ी; **दुपहर**- (स्त्री०) ठीको-ठीक दोपहर
ठानबु- (क्रि० स०) तय करना, निश्चित करना, धारणा बनाना
ठामक- (वि०) नाटा, छोटे कद का
ठारी- (स्त्री०) जोर की ठण्ड
ठावैं- (क्रि० वि०) तत्काल ही, उसी स्थान पर; प्रारम्भ में ही
ठिंगना- (वि०) बौना, छोटे कद का
ठिकरिया या ठिकरी- (स्त्री०) आग रखने में प्रयुक्त मिट्टी के बर्तन का टुकड़ा
ठिलिया- (स्त्री०) मिट्टी का छोटा घड़ा
ठिल्लै- (स्त्री०) परिहास, मजाक; ठठोली
ठीकरि- (वि०) पानी न रुकने वाली जमीन; अपेक्षित ऊँची
ठीस- (स्त्री०) गर्व, रौब
ठीहा- (पु०) निहाई रखने का लकड़ी का अड्डा; नांद बनाने का साँचा; अडडा; समय निर्धारण; वादा
ठूँठी- (स्त्री०) अरहर आदि के काटने पर नीचे का बचा पेड़
ठूँठु- (पु०) शाखा रहित पेड़
ठेंका- (पु०) कुदाल या फावड़े का हत्था
ठेंगा- (पु०) डण्डा; अंगूठा
ठेंठी- (स्त्री०) शीशी या बोतल का मुँह बंद करने की लकड़ी
ठेकी- (स्त्री०) लकड़ी का सुडौल ढेर; विश्राम स्थल; लकड़ी के क्रय-विक्रय का केन्द्र
ठेकु- (पु०) ढेर
ठेठ- (वि०) **शुद्ध**; निरा; एकदम निपट
ठेनहा- (वि०) **शरारती**
ठेप- (वि०) कुछ छोटा
ठेला- (पु०) धकेल कर चलायी जाने वाली गाड़ी; ट्रक
ठेलुहा- (पु०) मसखरे लोग; अन्य या बाहरी लोग
ठेलुहावँ- (पु०) मसखरी
ठेहा- (पु०) काटने का स्थान; लकड़ी का टुकड़ा, जिस पर गड़ासे से कुट्टी काटी जाती है
ठोंठी- (स्त्री०) अन्न के दाने के ऊपर का खोल; रद्दी भाग; वि० फोकली
ठोंड़- (स्त्री०) चोंच
ठोकचा- (स्त्री०) आम की सूखी खटाई

ठोकवा- (पु०) महुवे और आँटे की बनी हुई मोटी पूड़ी
ठोपु- (पु०) बूंद
ठोर- (स्त्री०) चोंच
ठोर्रा- (पु०) भुने मक्के का गैर खिला दाना
ठ्याँक- (स्त्री०) ठोकर, ठेस
ठ्यांगा- (पु०) अंगूठा
ठ्याप- (स्त्री०) रोक, बाधा, काट (बात में); विश्राम
डंकिनी- (स्त्री०) डंकिन साहब का, इस्तमरारी (भूमि का बन्दोबस्त, जो उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में अभी तक चलता है)
डंड- (पु०) दण्ड; कष्ट
डँड़वारु- (पु०) दो घरों के बीच की दीवार
डँड़सोही- (स्त्री०) पाँच या छः लकड़ियों का छोटा सा फाटक
डँड़हर- (पु०) ज्वार-बाजरे के खड़े खेत
डँड़हरबु- (क्रि० स०) फसल के खड़े खेत में जुताई करना
डँड़हा- (वि०) डाँड़ (किनारे) का वासी
डँड़ाही- (स्त्री०) दण्ड, जुर्माना
डँड़िया- (स्त्री०) बच्चा पैदा होने के बाद, एक दिन के संस्कार में बनाई गयी चावल आदि से रेखाएँ; गाँव के बाहर का मैदान
डँड़ोई- (स्त्री०) छोटे-छोटे कच्चे फल
डँबरी- (स्त्री०) फल विशेष
डंसा- (पु०) एक बड़ी मक्खी, जो वर्षा में होती है और पशुओं को कार्तिक माह तक काटती है
डउंगी- (स्त्री०) टहनी
डउलु- (पु०) तरकीब, प्रबन्ध
डउल्यउबु- (क्रि० स०) (लकड़ी) छाँटकर सीधी करना; अंदाज करना; तय करना
डउरी- (स्त्री०) बाँस की बनी टोकरी
डकवा- (पु०) डोकवा (झउवा)
डकूरु- (पु०) बवंडर; बौड़र, नाचती हुई हवा
डखना- (पु०) पंख; खजूर की शाखा
डखुरहा- (वि०) द्वेष करने वाला
डगर- (स्त्री०) राह; पगडण्डी
डगरबु- (क्रि० अ०) चलना (राह पर)
डगरोही- (पु०) पथिक, रास्ता चलने वाला
डगार, डंगार- (स्त्री०) डाली, शाखा
डटेर, ठठेरु- (पु०) बाल (भुट्टा) रहित ज्वार का पौधा
डट्टा- (पु०) हुक्के से संलग्न खरादी हुई सीधी लकड़ी
डड़हरी- (स्त्री०) बैलगाड़ी के पीछे वाले सुजवा के नीचे लगने वाली लकड़ी
डढ़ारबु- (क्रि० स०) कपड़े को दुहराकर दोहरी सिलाई करना
डण्डु- (पु०) कष्ट, जुर्माना, मुआवज़ा
डपोर- (वि०) मूर्ख
डफ्ला- (पु०) एक बड़ा बाजा, जो लकड़ी से बजाया जाता है; डफ
डपोरसंख- (वि०) महामूर्ख
डब्बल- (पु०) पैसा
डभका- (पु०) धान, जो पकने वाला हो
डभहा- (पु०) गड्ढा
डमरा- (पु०) प्रसिद्ध टापू अंडमान, जहाँ जन्म कारावास के लिए लोग भेजे जाते थे
डयरी- (स्त्री०) डायरी, रोज़नामचा
डरई- (स्त्री०) छोटी डाल
डलइया- (स्त्री०) डलिया
डहकउबु- (क्रि० स०) लालच देना, भड़काना
डहकु- (पु०) जमीन में बना गड्ढा
डहडही- (वि०) हरी-भरी (फसल आदि)
डहनि- (स्त्री०) टहनी
डहरा- (पु०) नाज रखने के लिए मिट्टी का बड़ा बर्तन
डहरि, डहर- (स्त्री०) पगडण्डी
डहला- (पु०) कुआँ हेतु खुदा हुआ गड्ढा
डहुआ- (पु०) नाव खेने का डण्डा विशेष
डहुकु- (पु०) गड्ढा, दहकु
डाँक- (स्त्री०) कै करने की इच्छा; गाड़ी-मेल ट्रेन
डाँकरि- (वि०) नमीयुक्त (फसल)
डाँका- (पु०) डकैती

डांगर- (पु०) मृत जानवर; **छोड़उबु**- (क्रि० स०) मृत जानवर की खाल निकालना

डाँठ- (पु०) अनाज समेत पौधा

डाँड़बु- (क्रि० अ०) दण्ड भुगतना

डाँड़ा-मेंड़ी- (पु०) पड़ोसी

डाँड़ी- तराजू की डण्डी; चरखी में प्रयुक्त बल्ली; पतली मेड़; **-मारबु**- (क्रि० स०) तौल में हेरा-फेरी करना; **-सिलाई** (स्त्री०) दो कपड़ों को जोड़कर की गयी सीधी सिलाई

डाँड़ु- (पु०) गाँव आदि की हद या सीमा; कीमत; कष्ट; दण्ड

डाँढ़- (पु०) मिट्टी के बर्तन का हिस्सा विशेष

डाँस- (पु०) डंक

डाइनि- (स्त्री०) भूत की स्त्री; डाह करने वाली स्त्री

डाकट- (अं०) महत्वपूर्ण कागज़

डाकबु- (क्रि० स०) पार करना, फाँदना

डाकमुंसी- (पु०) पोस्टमास्टर

डाटबु- (क्रि० स०) पहनना

डाढ़बु- (क्रि० स०) जलाना; तंग करना

डाढ़ा- (पु०) आग

डाबी- (स्त्री०) चबेना भूनने व शक्कर पोटने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का यंत्र; दोनों भुजाओं में आने भर का पुट्ठा

डाभ- (स्त्री०) आम के मुख का तीखा रस, जिसे निचोड़ दिया जाता है

डाभकि- देखिए 'डाँकरि'

डाभरु- (पु०) कालापानी

डाल- (स्त्री०) लड़की की विदाई में बाँधी गई पूड़ी आदि; शाखा

डाली- (स्त्री०) उपहार, अनाज साफ करने में प्रयुक्त छिछली डलिया- **परलगउबु**-(क्रि० स०) गाय आदि को चारा खाते समय दुहना

डाँवाडोल- (वि०) अनिश्चित, गड़बड़

डासन- (पु०) बिछौना

डासबु- (क्रि० स०) बिछाना

डाह- (स्त्री०) ईर्ष्या

डाहबु- (क्रि० स०) परेशान करना

डिउसी- (स्त्री०) सब्ज़ी विशेष

डिंगरी- (स्त्री०) निर्णय, डिक्री; डिग्री

डिंभ- (पु०) आडम्बर

डिउहार- (पु०) डीह का देवता; ग्रामदेव

डिगना- (पु०) मिट्टी का ठप्पा, जिससे कुम्हार अपने कच्चे बर्तन पीटता है

डिग्ग- (पु०) ऊँचा भाग या स्थान

डिट्ठा- (पु०) छोटी जाति का बैल

डिट्ठान- (स्त्री०) दृष्टांत

डिठवनु- (पु०) देवोत्थानी एकादशी का दिन

डिठियाँना- (वि०) आँख से दूर

डिठियार- (वि०) दर्शक, दृष्टि वाला

डिठिबन्हवा- (पु०) जादूगर; डीठ बाँध देने वाला

डिठोन- (पु०) देवोत्थान

डिड़वारु- (पु०) डड़वारू

डिड़- (वि०) हिम्मतवाला, दृढ़

डिढ़ानि- (स्त्री०) बड़े दानों वाली मटर की फली

डिपाटु- (पु०) विभाग, महकमा

डिपकी- (स्त्री०) अत्यन्त छोटा ढेला

डियट या डिवठी- (स्त्री०) दीपक रखने की अड्डी

डिल्लार- (वि०) वह खेत, जिसमें ढेला ज्यादा हो; ढेलहा

डिल्ल- (स्त्री०) बैल की गर्दन का ऊँचा पेसल भाग; वि० बिल्ली

डिहुला- (पु०) एक प्रसिद्ध धान

डीभी- (स्त्री०) खेत में उगे नए अंकुर

डीला- (पु०) ढेला

डीलु- (पु०) शरीर, देह

डीवट- (स्त्री०) दीपक रखने की अड्डी

डीहु- (पु०) खंडहर; टीला

डुडुवा- खेल विशेष

डुँड़ही- (स्त्री०) सींचने की सुविधा हेतु खेतों में बनी पतली-पतली मेंड़ें

डुकवा- (पु०) डोकवा

डुभकी- (स्त्री०) कढ़ी में डाली हुई उड़द की पकौड़ी

डुर्छे-डुर्छे- (अव्य०) साँड़ को गर्भाधान हेतु प्रेरित करने का शब्द

डुहक्कबु- (क्रि० अ०) अकेले पड़े-पड़े लालायित होते रहना

डूँड़- (पु०) (पौदा या पेड़) जिसका सिर कट गया हो; जिसकी सींग टूट गई हो

डेंहुड़ी- (स्त्री०) भीतरी कक्ष का दरवाजा

डेउढ़ा- (वि०) निरन्तरता; (पु०) बालों की कटिंग, (वि०) डेढ़ गुना

डेउढ़ी- (स्त्री०) घर के भीतर प्रवेश करने के पूर्व का स्थान, जहाँ पहरेदार आदि बैठते हैं

डेउ- (पु०) बड़ा अनगढ़ बाँस का डण्डा

डेट- (स्त्री०) विवाह के अवसर पर माड़ौ में टांगी जाने वाली लकड़ी की मांगलिक वस्तु

डेड़ुउबा- (पु०) बेर का कच्चा फल

डेड़ककरी- (स्त्री०) एक ककड़ी विशेष; ड्वाँड़ा

डेढ़निया- (स्त्री०) मिट्टी का एक बर्तन

डेढ़ी बिसारु- (पु०) जिसमें दिये हुए अनाज का ड्योढ़ा लौटाया जाए

डेबरा- (पु०) गड्ढा; दस से पन्द्रह बिस्वे तक का खेत, (वि०) बाएँ हाथ से कार्य करने वाला

डेबरी- (स्त्री०) बहुत छोटा खेत; खड़ही

डेबला- (पु०) मटर जैसा अनाज विशेष

डेब्बी- (स्त्री०) डिबिया

डेरा डाँड़ी- (स्त्री०) सम्पूर्ण सामान

डेल- (वि०) वह खेत, जिसमें रबी की फसल तैयार की गयी हो; (पु०) ढेला

डेलरी- (स्त्री०) डलिया, टोकरी

डेली- (स्त्री०) मिट्टी का छोटा बर्तन, जिसमें दीपक बनाया जाता है

डेहुला- (वि०) धान की प्रजाति

डैमल ठीहा- (पु०) वह ठीहा, जिस पर सोने को दबाकर छिलाई की जाती है

डोंगरउ- (पु०) बुढ़ऊ

डोंगरेवा- (स्त्री०) बुढ़िया

डोंगिया- (स्त्री०) नाव

डोकिया, डोकी- (स्त्री०) लकड़ी की छोटी तश्तरी

डोरि- (स्त्री०) वह रस्सी, जिससे लोटा बाँधकर कुएँ से पानी खींचा जाता है; तागा

डोरिया कटोरी- (वि०) गोल एंगीन, नक्काशीदार (काँच की चूड़ी), जिसके भीतर एक डोर-सी चलती रहती है

डोरिहार- (पु०) पटवा

डोलडाल-(अव्य०) मल त्याग; जाबु- (क्रि०अ०) मल त्याग हेतु जाना

डोलु- (पु०) पानी भरने का लोहे का बर्तन

डोहरा- (पु०) बताशा बनाने का एक उपकरण

डौंकी- (स्त्री०) लकड़ी की सूखी हुई बड़ी टहनी

ड्वांग- (स्त्री०) अत्यन्त दुबली या मरणासन्न गाय आदि

ड्वाँड़ा- (स्त्री०) डेड़ककरी

ढँउच्चा- (वि०) साढ़े चार

ढंगु- (पु०) गुण; जुगाड़; तरीका

ढंढसु- (पु०) नाटकीयता, ढोंग

ढइया- (स्त्री०) ढाई सेर की तोल

ढइहाँ- (वि०) ढाई (झाड़ी) पर बोने वाले या चढ़ने वाले (पौधे)

ढकना- (पु०) ढक्कन

ढकवा- (पु०) मूंज की बनी बड़ी टोकरी

ढक्यालबु- (क्रि० स०) धक्का देना

ढक्वालबु- (क्रि० अ०) पीना (उपेक्षित)

ढचरा- (पु०) बुरा तरीका, व्यर्थ का नियम

ढट्ठा- (पु०) खाल में रगर लगने से बना निशान; घट्ठा

ढड्ढू- लंगूर

ढनगउबु- (क्रि० स०) लुढ़काना

ढप- (स्त्री०) आदत

ढब- (स्त्री०) तरीका, हुनर

ढमकबु- (क्रि० अ०) बजना

ढरका- (पु०) जानवरों को दवा आदि पिलाने में प्रयुक्त बाँस का पोंगा विशेष; आँसू बहने का रोग या बीमारी

ढरकउना- (पु०) देखिए 'ढरकावन'

ढरकउबु- (क्रि० स०) पानी आदि गिराना

ढरकावनु- (पु०) पानी, जो किसी आगंतुक के कल्याणार्थ देवी-देवता को चढ़ाया जाता है

ढरगही- (स्त्री०) खेत को चौरस करने की क्रिया
ढरहर- (वि०) गोल एवं चिकना; गिरने लायक
ढर्रा- (पु०) रास्ता, दस्तूर, नियम
ढलार- (वि०) ढाल युक्त
ढाँख- (पु०) वृक्ष विशेष; (स्त्री०) बात, रौब; (पु०) होलिका में प्रयुक्त रेंड आदि का पेड़
ढाँसी- (स्त्री०) जोर की खाँसी
ढाँही- (स्त्री०) काँटा आदि की छोटी डाल
ढाका- (पु०) टोकरा; बांग्लादेश की राजधानी
ढाठा- (पु०) साफा
ढाठी- (स्त्री०) आदत, खराब आदत
ढाबली- (स्त्री०) मुर्गियों को बन्द करने का छोटा घर
ढारबु- (क्रि० स०) आरोपित करना, मढ़ना; बिगाड़ना; गिराना
ढाला- (पु०) अनाज का बहुत बड़ा ढेर
ढिग- (क्रि० वि०) पास, नजदीक; (पु०) धोती का रंगीन किनारा
ढिपुनी- (स्त्री०) फाल का वह भाग, जो पेड़ से लगा रहता है; ढेंपी
ढिबरी- (स्त्री०) चिमनी, दीपक
ढिलमिल- (वि०) सुस्त
ढिल्लरी- (वि०) आलसी
ढींढ़स- (वि०) छः पसेरी का
ढींढा- (पु०) गर्भ, बड़ा पेट
ढीठ- (वि०) हिम्मती, निर्भय
ढीलबु- (क्रि० स०) छोड़ना
ढीलौ- (पु०) जूँ
ढुंढुनी- (स्त्री०) सन की फली
ढुकबु- (क्रि० अ०) छिपकर खड़ा रहना; कुछ पाने की आशा में खड़े रहना
ढुका- (वि०) ललचाया
ढुनुकबु- (क्रि० अ०) गिर पड़ना; मर जाना
ढुरहुर- (वि०) चिकना एवं गोल (अनाज)
ढुरुहुरी- (स्त्री०) पतला रास्ता
ढुसकट- (वि०) बलुई (जमीन)
ढूँढ़ी- (स्त्री०) चावल के आटे के लड्डू; गोल फली
ढूखु- (पु०) रबी की फसल में बोये हुए खेत की पहचान का चिह्न
ढूहा, ढूहु- (पु०) ढेर, ऊँची जमीन
ढेंकी- (स्त्री०) चूरा कूटने में प्रयुक्त लकड़ी की मशीन
ढेंकुरि, ढेंकुली- (स्त्री०) ढेकली; पानी निकालने का साधन
ढेंढ़ी- (स्त्री०) अंगूठी आदि का छल्ला, टेंट
ढेंपी- (स्त्री०) ढिपुनी
ढेंसर- (वि०) पकने वाला (फल), अधपका
ढेकुआ- (पु०) कोल्हू की कातरि में गड़ी हुई लकड़ी; कंधा
ढेमाका- (सर्व०) अमुक
ढेरियउबु- (क्रि० स०) अनाज को भूसे आदि से अलग करना; ढेर करना
ढेलवाँसि- (स्त्री०) रस्सी की बनी जाल, जिससे ढेला दूर तक फेंका जाता है
ढोंका- (पु०) ढेला, टुकड़ा
ढोंढ़ी- (स्त्री०) नाभि; ढोंढु
ढोआई- (स्त्री०) ढुलाने की मजदूरी या कर्म
ढोकाबु- (क्रि० अ०) स्तन में दूध उतारना
ढोठा- (पु०) हथकरघे का वह अंग, जिस पर बाबीन या छुंछी चढ़ाई जाती है; मार
ढोरा- (पु०) पशु
ढोरु- (वि०) चर्म रहित, साफ
ढोलना- (पु०) गले में पहना जाने वाला माला विशेष
ढोली- (स्त्री०) २०० (दो सौ) पानों की ढेरी
ढोवा- (पु०) बोझ, जो एक बार में जा सके
ढ्यांगा- (पु०) छोटे कद का बैल
ढ्वाँका- (पु०) स्तनों में आया या उतरा हुआ दूध
तंग- (फा० वि०) संकीर्ण; परेशान; (स्त्री०) घोड़ों की जीन कसने में प्रयुक्त पेटी; **-टोर** (वि०) जिस घोड़े के तंग बाँधने के स्थान पर भौंरी हो
तंगिया- (स्त्री०) कुछ अधिक लेने हेतु ढेर सारे किये या फैलाये गये नखरे, बहाने
तंगी- (फा० स्त्री०) आर्थिक परेशानी; संकीर्णता
तंगु- (पु०) पीछा
तंबोर, तंबोला- (पु०) पान

तइँता- (पु०) हमेल में लगी कटिया, जिसमें बच्ची पुही जाती हैं व रुपयाकार बच्चियाँ

तइके- (अव्य०) तब फिर; तदनन्तर

तइफ़ा- (पु०) संगीत पार्टी; मंडली

तइया- (स्त्री०) जलेबी बनाने के लिए प्रयुक्त थालीनुमा कराही; ताई

तउँक- (स्त्री०) गर्दन में पहनने का आभूषण

तउजा- (वि०) उधार

तउनु- (सर्व०) वह

तउबु- (क्रि० स०) बर्तन आदि का मुँह ढकना, बन्द करना

तउला- (पु०) अनाज आदि तोलने वाला व्यक्ति, अनाज क्रय-विक्रय का दलाल

तउहूँ- (अव्य०) तब भी

तक- (पु०) बड़ा तराजू; - **पट्टी बही**- (स्त्री०) काँटे द्वारा जिस माल का वजन किया जाता है, उसका विवरण व्यापारी के नाम सहित तारीखवार होता है

तकउबु- (क्रि० स०) देखभाल किसी के जिम्मे छोड़ना

तकथा- (पु०) लकड़ी का मोटा पटरा

तकदमा- (पु०) प्रभुत्व, अधिकार

तकबु- (क्रि० स०) देखभाल करना, ताकना

तकमा- (पु०) तमगा; वि० तगमा

तकरार- (स्त्री०) झगड़ा, बहस

तकरूरी- (स्त्री०) नियुक्ति

तकसीर- (स्त्री०) गलती, अपराध

तकुआ- (पु०) चरखा का पुर्जा, जिस पर तागे की फुल्ली पिन्हाई जाती है

तक्कर- (वि०) परेशान

तखरी- (स्त्री०) स्त्रियों के बाल साफ करने की कूची

तगइयति- (स्त्री०) देखभाल, रखवाली

तगाड़- (स्त्री०) मिट्टी घोलने की हौदी; खौं

तगादा- (पु०) तकाज़ा, तकादा

तग्गी- (स्त्री०) पतला तागा या रस्सी

तचबु- (क्रि० अ०) गरम होना

तजबीज- (स्त्री०) प्रस्ताव, मुकदमे का फैसला; अंदाज

तजुरबा- (पु०) अनुभव

तड़कबु- (क्रि० स०) नाले आदि को उछल कर पार करना; चटक जाना; क्रोध दिखाना

तड़का- (पु०) बघारः बड़ा सबेरा

तड़कि- (स्त्री०) छत में लगने वाली लकड़ी, कटी हुई लम्बी लकड़ी

तड़के- (अव्य०) प्रातःकाल

तड़क्की- (स्त्री०) नाम, शाबासी, शोहरत

तड़खर- (वि०) गर्म (व्यक्ति)

तड़ी- (स्त्री०) थपेड़ा

ततबीर- (स्त्री०) तदबीर, योजना

तथा- (स्त्री०) वित्तीय सामर्थ्य, गुंजाइश

तदारुक- (स्त्री०) दंड, कष्ट

तधीनी- (स्त्री०) अपच

तन- (अव्य०) ओर (पु०) शरीर

तनतना- (पु०) शासन

तनदेही- (स्त्री०) तत्परता

तनबु- (क्रि० अ०) छा जाना; अकड़कर सीधा होना; बहकावे में आना

तना- (अव्य०) समान; (पु०) पेड़ (वि०) छाया हुआ; तंग, नाराज़

तनि- (अव्य०) जरा-से

तनी- (स्त्री०) सकरी पट्टी; (अव्य०) किंचित

तनुक- (वि०) जरा से, तनिक

तनुवा- (पु०) चमड़ा तानने के काम आने वाला औजार

तनेतराज- (वि०) पूर्णतः परेशान

तन्नाबु- (क्रि० अ०) गुस्सा हो जाना

तपबु- (क्रि० अ०) गरम होना

तपसी- (पु०) तप करने वाला, तपस्वी

तपहा- (पु०) एक नदी, जो अयोध्या के पास बहती है

तपउबु- (क्रि० स०) आभूषण आदि गरम करना

तपता- (पु०) अलावः वि० कोइरा

तपाकी- (वि०) ईर्ष्यालु

तपाकु- (पु०) ईर्ष्या

तबक्का- (पु०) विश्वास, ठिकाना.

तबली- (स्त्री०) छोटा तब्बल

तबल्ची- (स्त्री०) छोटा तब्बल; (पु०) तबलावादक
तबा- (पु०) हृदय, जी; (वि०) परेशान
तबालति- (स्त्री०) तकलीफ, कष्ट
तबिजिया- (स्त्री०) बच्चों का माला विशेष
तबेला- (पु०) अस्तबल
तब्बौ- (अव्य०) फिर भी, इस पर भी
तमखुहा- (वि०) तम्बाकू पीने वाला
तमतमा- (पु०) शासन
तमसबु- (क्रि० अ०) तमकना
तमस्सुक- (पु०) ऋण सम्बन्धी अदालती कागज
तमाखू- (स्त्री०) मादक पदार्थ, तम्बाकू
तमाशबीन- (पु०) तमाशा देखने वाला
तमीज़- (स्त्री०) शिष्टता, सभ्यता
तमून- (पु०) ताऊन; प्लेग
तमेर- (पु०) ताँबे का काम करने वाला
तम्बा- (पु०) पैजामा
तयदाति- (स्त्री०) तादाद, सीमा, अंदाज
तरंतारु (पु०) मुक्ति
तरइहा- (वि०) तराई का रहने वाला
तरई- (स्त्री०) तारा
तरकी- (स्त्री०) कनफूल; वि० तरौना
तरकुल- (पु०) ताड़ का पेंड़
तरखर- देखिए 'तड़खर'
तरजुआ- (पु०) तराजू
तरपासबु- (क्रि० स०) डाँटना
तरल्ला- (पु०) कपड़े की निचली परत
तरवाँची- (स्त्री०) माची में लगने वाली नीचे की लकड़ी
तरवाँसबु- (क्रि० अ०) अधिक चलने से बैल आदि के पैर तिरछे हो जाना या खुर फैल जाना
तराँछ- (स्त्री०) गहनों की हाथ से तराश
तरा- (पु०) जूते का निचला हिस्सा
तरायल- (वि०) नीचे रहने वाला
तरासबु- (क्रि० स०) चमड़ा साफ करना
तरिवन- (पु०) कान का गहना विशेष
तरी- (स्त्री०) पुराना एकत्रित किया हुआ घृत, नमी; आभूषणों में प्रयुक्त तल्ली
तरे- (अव्य०) नीचे
तरैली- (स्त्री०) हल की एक छोटी लकड़ी
तरौंछा- (स्त्री०) जुआठा के नीचे लगी हुई लकड़ी
तलक- (अव्य०) तक
तलख- (वि०) तेज (नमक), अधिक खट्टा या मीठा
तलबाना- (पु०) किसी को कचहरी में बुलाने की फीस; चपरासी की उजरत
तलरी- (स्त्री०) तलैया, छोटा तालाब
तलहा- (वि०) शौच किया हुआ (बर्तन आदि) शौच रहित; तालाब सम्बंधी
तलिया- (स्त्री०) छोटा तालाब
तलीका- (पु०) तलाशी
तलीन- (वि०) तैयार
तल्ला- (पु०) तल, मंजिल, खण्ड सम्बन्ध, नाता
तल्ली- (स्त्री०) कील आदि में लगा हुआ पेंच; तल
तवज्जो- (पु०) देखभाल, व्यवस्था
तवान, तावान- (पु०) दण्ड के रूप में लिया गया द्रव्य (वि०) ताव युक्त
तसमई- (स्त्री०) खीर, यह शब्द साधुओं द्वारा ही प्रयुक्त होता है
तसल्ली- (स्त्री०) आश्वासन, धैर्य
तहदर्द- (वि०) ताज़ा, नया (कपड़ा या कागज)
तहदिल- (वि०) निश्चित, इतमिनान्
तहबील- (पु०) कोष; जमा किया हुआ धन
तहिया- (क्रि० वि०) ताकि, तिस दिन, उस रोज़
तहुली- (अव्य०) तब तक
ताँत- (स्त्री०) रूई धुनकने का तार
ताँता- (पु०) पंक्ति, कतार
ताई- (स्त्री०) थाली के आकार का जलाव रखने का बर्तन; चबेना आदि भूनने में प्रयुक्त कराही
ताक- (स्त्री०) घात, अवसर
ताकर- (सर्व०) उसका
ताख- (पु०) दीवारों में बने आर
ताखी- (स्त्री०) बच्चों की गोल टोपी (वि०) जिस भैंस की दोनों पुतलियाँ अलग-अलग दोरुखी चलें

ताजुक- (अव्य०) ताज्जुब, आश्चर्य
ताड़दि- (क्रि० वि०) तुरन्त
ताड़बु- (क्रि० स०) अंदाज लेना; धारणा बना लेना
ताड़ी- (स्त्री०) ताड़ आदि वृक्षों से निर्गत मादक पेय पदार्थ
तात- (वि०) गरम; (पु०) पिताजी, आर्य, प्रिय
तान- (स्त्री०) बैलगाड़ी का पुर्जा विशेष
ताना- (पु०) व्यंग्य; -मारबु- कटाक्ष करना
तापबु- (क्रि० अ०) अग्नि आदि से शरीर गर्म करना
ताब- (स्त्री०) बल, सामर्थ्य
ताबा- (पु०) अधिकार, प्रभाव
तामझाम- (पु०) सामान; एक प्रकार की खुली पालकी
तारी- (स्त्री०) हथकरघे की चरखी में लगने वाली बाँस की फर्ची
तारुआ- (पु०) बैलगाड़ी का पुर्जा विशेष
ताल- (पु०) तालाब (स्त्री०) संगीत का लय
ताली- (स्त्री०) सुनारों में प्रचलित अठन्नी का गुप्त नाम; चाबी
ताल्लुक- (पु०) सरोकार, सम्बन्ध
ताव- (पु०) आवश्यकता, पकने या तैयार होने की स्थिति, कागज़ का पर्त, क्रोध
तावखाना- (पु०) आग रखने के लिए प्रयुक्त कच्ची मिट्टी का पात्र विशेष
तास- (पु०) बैलगाड़ी का एक लोहे का पुर्जा; खेल के पत्ते
तासा- (पु०) एक बाजा, जिसमें एक ओर चमड़ा लगा होता है
तासीर- (स्त्री०) प्रभाव, आंतरिक गुण
तिकड़म- (पु०) उपाय, तरकीब
तिखारबु- (क्रि० स०) स्पष्टकरवाना
तिजरा- (पु०) ज्वर, जो तीसरे दिन चढ़े
तिजारती- (वि०) रोजगारी, व्यापारी
तिड़काइब- (क्रि० स०) हटा देना
तिड़बिड़- (वि०) कठिन, गड़बड़, रुक्ष स्वभाव वाला
तिड़ी- (वि०) गायब
तिड़ी-बिड़ी- (वि०) तितर-बितर
तितऊ- (वि०) कड़ुवा (फल); इसी प्रकार मिठऊ भी फल के लिए आता है
तितलउकी- (स्त्री०) कड़ुई लौकी
तिताबु- (क्रि० अ०) कड़ुवा होना
तितिला- (पु०) एक गीत, जो प्रायः स्त्रियाँ जाँत चलाते समय गाती हैं
तित्तुर- (पु०) तीतर
तिथा- (पु०) विश्वास, निश्चय
तिदरा- (पु०) तीन दरवाजों वाला खुला कमरा
तिदुवारि- (स्त्री०) मुख्य द्वार का वह कमरा, जिसमें किवाड़रहित तीन द्वार हों
तिनगबु- (क्रि० अ०) नाराज होना; उछलना, तड़पना
तिन्ना- (पु०) तालाबों में होने वाला एक प्रकार का चावल
तिपहलु- (पु०) तीन धारों का रेत
तिफरा- (पु०) जौ, मटर, चना आदि का मिश्रण
तिफारु- (पु०) तीन फालों वाला हल
तिसाला- (पु०) तीसरा व्यक्ति
तिरकोलहा- (वि०) चौकोर रहित; तिरछा
तिरखा- (स्त्री०) प्यास
तिरफला- (पु०) चमारों की तीन फनों वाली अड़ुडी
तिरबाँचा- (पु०) तीन बार कह कर दिया गया वचन
तिरवाह- (पु०) नदी के किनारे का क्षेत्र, गाँव आदि
तिरसुति- (स्त्री०) जनेऊ के तीन सूत
तिराता- (वि०) तीन रात का
तिराबु- (क्रि० अ०) पूरा पड़ना, पर्याप्त निकलना; किनारे लगना
तिरुआ, तिलुआ- (पु०)मन, दिल
तिलंकी- (स्त्री०) घोड़े के माथे से लेकर नाक तक बनी पतली श्वेत रेखा
तिलंगा- (पु०) अंगरेजी फौज का सिपाही
तिलकी- (स्त्री०) तीव्र गति में जाने वाले घोड़े की चाल
तिलचौरी- (स्त्री०) भुने तिल और चावल से निर्मित चबेना

तिलछबु- (क्रि० अ०) तड़पना
तिलरबु- (क्रि० स०) रस्सी को तिहराना
तिलरी- (स्त्री०) तीन लड़ियों का आभूषण
तिलेठा- (पु०) दाने निकालने के बाद तिल का सूखा पेड़
तिल्लोकु- (पु०) त्रिलोक
तिसकुट- (पु०) अलसी का कुटा हुआ डंठल या खलिहान का चूरा
तिसाला- (वि०) तीसरे साल, त्रैवार्षिक
तिसिहा- (वि०) तीसी (अलसी) वाला (खेत)
तिहाई- (स्त्री०) पात, अन्न की उपज; प्रजा को दिया जाने वाला मजदूरी स्वरूप अनाज; (वि०) एक तिहाई
तिहार- (स्त्री०) खेत जोतते समय दो हराइयों के सिरे पर छूटा हुआ कोना
तिहिका- (सर्व०) उसको
तिहिते- (अव्य०) उसी कारण
तिहिमा- (अव्य०) उसमें
तीखर- (पु०) ईंटें बनाने के लिए प्रयुक्त चिकना मैदान
तीत- (वि०) कड़ुवा
तीरकर- (क्रि० वि०) फैलाकर
तीखी- (स्त्री०) अलसी
तुक- (पु०) औचित्य
तुकुमी- (वि०) बिना कलम किया हुआ
तुक्का- (पु०) जुगाड़, सम्बन्ध, मौका
तुच्चा- (वि०) नीच, संकीर्ण
तुतुला- (वि०) हकलाकर बोलने वाला
तुत्र- (स्त्री०) घमण्ड, अहं
तुनक- (स्त्री०) तोप; छोटी तोप
तुपबु- (क्रि० अ०) मिट्टी आदि में बंद हो जाना
तुमार- (सर्व०) आपका; तुम्हारा
तुम्मी- (स्त्री०) भिक्षुक का बर्तन; लौकी का बना बर्तन
तुरंज- (पु०) फल विशेष
तुरंता- (पु०) सत्तू
तुरधुल- (वि०) कमजोर
तुरपबु- (क्रि० स०) कपड़ा को दुहराकर हाथ से सिलना
तुरसी- (स्त्री०) खटाई, खट्टापन
तुरही- (स्त्री०) भोंपू की तरह का बाजा, जो मुँह से बजाते हैं
तुसार- (पु०) पाला, जोर की ठंड; नखरा
तुलउबु- (क्रि० स०) चकिया आदि के पत्थरों में दाँत बनाना
तुली- (स्त्री०) जुलाहों की कूची
तुहार- (सर्व०) तुम्हारा
तूत- (पु०) फल विशेष
तूती- (स्त्री०) एक चिड़िया; नाम; (मु०) **-बोलबु-** नाम होना, रौब होना
तूदी- (स्त्री०) नांद बनाने में प्रयुक्त साँचा
तूर- (स्त्री०) एक बार की फसल
तूलु- (पु०) तूले रंग का कपड़ा
तेने, ते- (परसर्ग) से
तेउँरी, तेवरी- (स्त्री०) भृकुटी, दृष्टि
तेउरुस- (वि०) दो वर्ष पहले
तेकाँ- (सर्व०) उसको
तेकुआ- देखिए 'तकुआ'
तेग- (स्त्री०) रंदे में लोहे वाला वह भाग, जिससे लकड़ी कटती है; छोटी कटारी
तेतरा- (वि०) तीसरे के बाद का, जैसे लगातार तीन लड़कियाँ पैदा होने के पश्चात उत्पन्न लड़का, (मुहा०) "तेतरा बेटवा भीख मंगावै"
तेरज- (स्त्री०) आपत्ति, बाधा
तेरही- (स्त्री०) मृत्यूपरांत तेरहवें दिन का संस्कार
तेलबारा- (पु०) पनवारी लाने पर नाई को दिया जाने वाला तेल का बर्तन
तेलिया- (पु०) वर्षा में पृथ्वी से निकलने वाला तेल; तेली
तेवासी- (वि०) तीन दिन पुराना
तेसा- (पु०) गहना विशेष
तैकै- (क्रि० वि०) तब फिर, तुरन्त ही फिर
तैस- (स्त्री०) जोश, क्रोध
तोंदी- (स्त्री०) नाभि
तोंदु- (पु०) पेट
तोंबी- (स्त्री०) लौकी का बना बर्तन; तुम्मी
तोई- (स्त्री०) लहंगे, कुर्ते आदि का किनारा

तोखु- (पु०) संतोष

तोड़ा पट्टी- (स्त्री०) दीवार उठाने के लिए नीचे की ईंट लम्बाई में तथा उसके ऊपर की ईंट चौड़ाई में रखने की पद्धति

तोड़िया- (पु०) हल्के पायल

तोड्डु- (पु०) हाथ का गहना विशेष; टूटा हुआ

तोनारा- (वि०) जिसकी बड़ी तोंद हो

तोनि- (स्त्री०) तोंद; उंगली का सिरा

तोफाँ- (वि०) उम्दा

तोबड़ा- (पु०) घोड़े के खिलाने में प्रयुक्त मोमजामा आदि का झोला, जिसमें चना आदि रखकर उसकी गर्दन में लटका देते हैं

तोबा- (पु०) किसी काम के न करने का प्रण

तोमड़ा- (पु०) बड़ा तुम्मा या तुमड़ा

तोरिया- (वि०) वह भैंस आदि, जिसका बच्चा दूध पीने की अवस्था में ही छुटा लिया गया हो

तोसक, तोसा- (पु०) गुदगुदा बिछौना

तोसा- (पु०) गृह देवता के पूजार्थ अन्नों का बना हुआ मीठा-मीठा रोट; बिछौना

तोहमत- (पु०) कलंक; आरोप

तौला- (वि०) आठ दाँतों वाला; तोलक

तौहीनी- (अ० स्त्री०) अपमान, अनादर

त्याहा- (पु०) नाराज़गी, गुस्सा

त्यूर्सा- (पु०) दो वर्ष के पहले का वर्ष

त्वाँता- (पु०) दानारहित फली

त्वापबु- (क्रि० स०) ढकना, गाड़ना

थंभबु- (क्रि० अ०) थोड़ा रुकना; गर्भवती होना

थई- (स्त्री०) विश्वास; भरोसा

थकरी- (स्त्री०) स्त्रियों के बाल साफ करने की कूची

थकहर- (वि०) थका हुआ; वृद्ध

थकामांदा- (वि०) श्रमित, श्रम से थकित

थकिया- (वि०) वह चाँदी, जो टाँकेदार एवं दागी होती है

थन- (पु०) स्तन

थनइली- (वि०) स्तन की एक बीमारी, जिसमें वे पक जाते हैं

थनिहा- (स्त्री०) बाँसों का झुरमुट

थपरी- (स्त्री०) ताली

थपुआ- (पु०) खपरैल

थबरा- (पु०) तमाचा

थम्भरा- (पु०) मोटी थूनी; थोम्भरा

थम्हना- (पु०) जिससे कोई वस्तु थामी या पकड़ी जाय; हत्था

थया- (पु०) विश्वास

थरिया- (स्त्री०) थाली

थरुहट- (पु०) थारुओं की बस्ती; थारुओं का पुराना डीह

थलकुरु- (पु०) हृदय

थलर-थलर- (क्रि० वि०) मांस का हिलता हुआ

थवई- (पु०) मकान बनाने का काम करने वाला; **-गीरी**- (स्त्री०) राजगीरी

थवना- (पु०) घड़ा रखन के लिए मिट्टी की बनी गोलअड्डी

थांगी या थांघी- (स्त्री०) लता चढ़ाने के लिए प्रयुक्त एक शाखदार लकड़ी

थांभबु- (क्रि० स०) संभालना; पकड़ना

थाकि- (स्त्री०) सिवाने का पत्थर, सीमा का चिह्न

थाथी- (स्त्री०) धरोहर, पूंजी

थान- (पु०) कपड़ों व जेवरातों की संख्या; कपड़े का भारी लम्बा रूप

थान्ह- (पु०) स्थान, देवता का स्थान; **-पवान**- उचित स्थान

थाप- (स्त्री०) स्थापना; ढोलक की थपक

थापरा- (पु०) बैलगाड़ी का वह पुर्जा, जो उँटरा के ऊपर से जुआँ खिसकने से रोकता है

थापबु- (क्रि० स०) स्थापना करना

थापा- (पु०) चूड़ियाँ बनाने के लिए लाख बढ़ाने में प्रयुक्त लकड़ी का यंत्र

थापी- (स्त्री०) पिटना; बल्ला

थाम- (स्त्री०) लकड़ी का खंभा, जिस पर छप्पर रखा जाए या ढेकुर खड़ी हो

थारा- (पु०) बड़े आकार की थाली; बेंड़ी द्वारा पानी गिराने का ऊपरी स्थान

थाल्हा- (पु०) पौधे के चारों ओर बनाया गया घेरा

थाह- (स्त्री०) माप, अंदाज (जल आदि की)
थाहि- (स्त्री०) ज्ञान
थाही- (स्त्री०) गहराई की नाप, थाह
थिगली- (अ० स्त्री०) कपड़ों में लगाने वाली चकती
थिर- (वि०) स्थायी, शांत
थुआ- (अव्य०) निंदावाचक शब्द
थुक्का-फजीहति- (स्त्री०) दुर्दशा, बदनामी
थुड़ी- (स्त्री०) निंदा
थुन्हियाँ- (स्त्री०) थूनी
थूह- (पु०) ढेर, गड्ढा
थूहा- (पु०) सीधे हुए 'पैरों' का गोला एवं ऊँचा ढेर
थेथर- (वि०) परेशान, व्यग्र
थेई-थेई- (विस्म०) वाह ! वाह ! यह शब्द कहकर ताली बजाते हुए छोटे बच्चों को नचाते हैं
थेवई- (पु०) मकान बनाने वाला; राजगीर
थोंथी- (स्त्री०) घर आदि का सूखा आच्छादन
थोकु- (पु०) ढेर
थोथिहा- (वि०) लम्बी नाभि वाला (बैल)
थोमरिया- (स्त्री०) छप्पर की थूनी
थोरि- (स्त्री०) निंदा
दँसकरौं- (पु०) ईर्ष्या; दाँत पीसने की क्रिया
दँतील- (वि०) पुष्ट एवं मजबूत दाँतों वाला
दउनी- (स्त्री०) पकी फसल को कुचलकर अनाज निकालने का काम; मड़नी
दउवु- (पु०) अत्यल्प, नाम मात्र की वस्तु
दउरा- (पु०) बाँस, बेंत आदि का टोकरा; (भू० क्रि०) दौड़ा
दकब- (अव्य०) कब ? न जाने कब
दकवन- (अव्य०) कौन ? न जाने कौन
दकस- (वि०) कैसा ? न जाने कैसा
दकियानूस- (वि०) देहाती, पुरानी तरह का
दगदगी- (स्त्री०) खटका, चिंता, डर
दगधा- (स्त्री०) दुविधा, शंका
दगरा- (पु०) गैले पानी या कीचड़ वाला गड्ढा, तालाब आदि
दगल- (स्त्री०) पोशाक; -चीर- गर्म वस्त्र
दगल-फसल- (पु०) धोखे का मामला
दगहिल- (वि०) जिसमें दाग पड़ा हो; (फल) जो सड़ने लगा हो
दड़ई- (पु०) फेंटाई करने से नाल पूर्णतः मिश्रित होने की अवस्था
दस्तूर- (पु०) नियम, तरीका
ददई- (संबो०) दादा, हे दादा, अरे बाप
ददरा- (पु०) दाद, निशान
ददल्यउलु- (क्रि० स०) भूखा बनादेना, बात न मानते हुए मूर्ख बनाना
ददिया ससुर- (पु०) सास का बाप
दधिबंदो- (पु०) एक त्योहार, जिसमें लोगों पर दही छिड़का जाता है
दनगर- (वि०) दंगा से युक्त
दनाई- (स्त्री०) समझ, होशियारी
दनादन- (क्रि० वि०) निरन्तर; बिना रुके
दपाई- (स्त्री०) छिपने या चुप रहने की क्रिया
दपाउस- (वि०) साफ, चमकदार
दफा- (अव्य०) बार; (स्त्री०) कानून की धारा
दबंग- (वि०) प्रभावशाली; सबल
दबउला- (पु०) अनुचित दबाव
दबकबु- (क्रि० अ०) छिपना
दबाहुर- (वि०) (सवारी) जो आगे दबी हो
दबिला- (पु०) पकती हुई वस्तु को चलाने के लिए लकड़ी का बना बड़ा चम्मच
दबीज- (वि०) भारी, मोटा (कपड़ा आदि)
दबैल- (वि०) आर्थिक रूप से दबने वाला
दबोट- (पु०) दबाव
दब्बू- (वि०) दबने वाला, डरपोक
दमनी- (स्त्री०) बैलगाड़ी विशेष
दयंतुरु- (पु०) दैत्य
दरइची- (स्त्री०) छोटी खिड़की
दरकबु- (क्रि० अ०) चटक जाना
दरका- (पु०) दरार
दरकार- (फा० स्त्री०) अपेक्षा, जरूरत
दरक्खतु- (पु०) बहुत मोटा पेड़
दरखनी- (स्त्री०) भूमि में छेद या गड्ढा करने का एक औजार

दरगाह- (स्त्री०) मुसलमानों का पवित्र स्थान
दरजा- (पु०) कक्षा, उच्च स्थान; गण
दरजाहब- (क्रि० स०) स्पष्ट करना, निश्चित कर देना
दरज़ि- (स्त्री०) दीवाल या लकड़ी में फटने का चिह्न
दरपनी- (स्त्री०) छोटा दर्पण
दरब- (स्त्री०) द्रव्य, तत्त्व, गहत्व, मूल्य
दरदर- (वि०) मोटा पिसा हुआ (आटा)
दरबा- (पु०) छोटा गिचपिच मकान; मुर्गियों के रहने का घर
दराज- (पु०) राहगीर, जनता, झुण्ड
दरि- (स्त्री०) जगह, स्थान
दरिनई- (स्त्री०) वृद्धता
दरियाबु- (पु०) जानकारी
दरियावँ- (पु०) नदी, बड़ी नदी; (वि०) अथाह
दरीना- (वि०) वृद्ध, अनुभवी
दरीबा- (पु०) बाज़ार
दरेंती- (स्त्री०) दीवार आदि में छेद करने में प्रयुक्त लोहे का औजार
दरेग- (स्त्री०) दया, तर्स
दरेरिया- (स्त्री०) दाल दरने वाली छोटी चकिया
दरेरा- (पु०) धीड़-धाड़ की रगड़न
दरेस- (अ० स्त्री०) वर्दी
दर्द्‌दारा- (पु०) संकट, प्रकोप
दर्रा- (वि०) मोटा पिसा हुआ आटा, दला हुआ (गेहूँ, जौ आदि); (पु०) घाटी, पर्वतों के बीच का सँकरा रास्ता
दर्राक- (वि०) चालाक
दल- (पु०) पत्ता, निमंत्रण (कथा का); पार्टी, बड़ा शामियाना
दलगर- (वि०) गूदेदार (फल आदि)
दलाएलि- (स्त्री०) जोर की भीड़; रेलपेल; प्रायः गीतों में
दलिद्दुदुरु- (पु०) दरिद्रता
दले- (संबो०) महावत द्वारा प्रयुक्त शब्द, जिससे हाथी पानी में चलने एवं पानी पीने के लिए आदेश लेता है
दलेल- (स्त्री०) दण्ड (प्रायः पुलिसवालों का)
दलान- (स्त्री०) मुख्य द्वार का बड़ा कमरा, जिसमें द्वार होते हैं पर किवाड़ नहीं
दवंगम- (पु०) जोर की वर्षा
दवँरी- (स्त्री०) एक आयु के व्यक्ति
दवँरी- (स्त्री०) सिंचाई के टोकरे में लगने वाली एक रस्सी
दवँरी- (स्त्री०) कटी हुई फसल पर बैलों को घुमाने की क्रिया; मड़नी
दवना- (पु०) एक सुगंध देने वाला तुलसी के समान पौधा, जिसकी पत्तियाँ देवताओं को चढ़ती हैं
दसउन्ही- (वि०) एक जाति, जिसके पुरुष कविता गाकर जीवन यात्रा करते हैं
दसकत- (स्त्री०) हस्ताक्षर, दस्तखत
दसगर्दा- (फा० पु०) छोटा-सा मामला
दसगात्र- (पु०) मृत्यु के बाद की एक क्रिया
दसनामी- (वि०) एक प्रकार के साधू
दसपना- (पु०) चिमटा
दसबरदार- (वि०) (कानूनी अधिकार से) अलग
दसवाँ- (पु०) मृत्यु के दसवें दिन का संस्कार; (वि०) १/१० वाँ
दसा- (स्त्री०) हालत
दसाइब- (क्रि० स०) बिछाना
दसी- (स्त्री०) बैलगाड़ी में प्रयुक्त वे बल्लियाँ, जिन पर पटरे जड़े जाते हैं; दशमी तिथि
दस्तबन्द- (स्त्री०) अंगुलियों में पहना जाने वाला गहना
दस्ता- (पु०) हथौड़ी का बेंट; कागज़ों के २४ ताबों का समूह; टीम
दस्तूरी- (स्त्री०) फीस; (व्यक्ति विशेष की) उजरत
दस्सा- (वि०) बनियों की एक उपजाति
दहकच्चरि- (स्त्री०) भीड़; शोरगुल
दहकबु- (क्रि० अ०) खूब जलना या गर्म होना
दहकुर- (पु०) गड्ढा; डहुक
दहड़ि- (स्त्री०) मिट्टी की हंडी
दहपट्ट- (वि०) हट्टा-कट्टा, बहादुर
दहपेल- (वि०) परिश्रमी, धैर्यवान

दहला- (पु०) नदी के किनारे का मैदान या जंगल

दहाइब- (क्रि० स०) खूब भिगोना

दहाई- (स्त्री०) किनारा; खड़ी फसल का एक भाग; दस का समूह

दहाना- (पु०) कपड़ों का ढेर, भण्डार

दहिगलवा- (पु०) दही–पात्र

दहिजरा- (वि०) जिसकी दाढ़ी जली हो, बदमाश; यह शब्द गाली के लिए ही स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त होता है

दहिना-बावाँ- (वि०) भला–बुरा

दहिलीज- (स्त्री०) दरवाजे की देहरी

दहु- (अव्य०) कि, शायद

दाँइब- (क्रि० स०) प्रबन्ध करना

दाँता-किटकिट- (स्त्री०) कहासुनी, झगड़ा

दाँती- (स्त्री०) किनारा, तट; दाँत की बतीसी

दाँतुन- (पु०) खर–पतवार

दांदि- (स्त्री०) नुकसान, हानि

दाँया गून- (पु०) दाहिना सिरा

दाई- (स्त्री०) बूढ़ी स्त्री; बाबा की पत्नी

दाई-जोटिया- (पु०) साथी, सम वयस्क

दाख- (पु०) फल विशेष

दागबेल- (पु०) मकान आदि की नाप–जोख के बाद रस्सी के सहारे लगाया गया निशान

दाद्नी- (स्त्री०) सरकारी सहायता, जो अफीम की खेती आदि के लिए किसानों को मिलती है

दाबस- (पु०) दबाव, जोर

दाम- (पु०) मूल्य, धन

दायँ- (अव्य०) बार, दफा; (पु०) दावँ का बहुवचन; (वि०) दाहिने

दार- (वि०) उपजाऊ, मालदार; (पर०) युक्त

दारिउँ- (पु०) फल विशेष

दाल्हबु- (क्रि० स०) व्यंग्य कह–कह कर दुःख देना

दायजु- (पु०) दहेज; दइजु

दावँ- (पु०) पेंच, बारी, चाल, उपाय, धोखा

दावनि- (स्त्री०) पोशाक में नीचे की मोड़

दासा- (पु०) मकान की खंभियों के ऊपर रखी हुई लम्बी लकड़ी

दासि- (स्त्री०) सेवा, खिलाई–पिलाई

दाह- (स्त्री०) जलन; मुर्दा जलाने की क्रिया

दाहा- (पु०) ताज़िया

दिउँका- (पु०) दीपक

दिउठी- (स्त्री०) लकड़ी या मिट्टी का बना स्तम्भ, जिस पर दीया रखा जाता है

दिउली- (स्त्री०) मिट्टी का कटोरीनुमा छोटा बर्तन, जिसमें दीया रखा जाता है

दिक्क- (वि०) नाराज़, अस्वस्थ

दिक्कति- (स्त्री०) परेशानी, कष्ट

दिगउबु- (क्रि० स०) जलाना

दिनारि- (वि०) अधिक उम्र की, पुरानी

दिन्वारा- (पु०) प्रथम पुत्र का सात–आठ वर्ष बाद ननिहाल में होने वाला मुंडन संस्कार

दिपल्ला- (स्त्री०) चमड़े की एक छोटी पट्टी, जो 'मोट' में लगाई जाती है

दियँक- (स्त्री०) दीपक

दियरी- (स्त्री०) मिट्टी का छोटा दीपक

दिया- (पु०) दीपक

दियाली- (स्त्री०) मिट्टी का अति छोटा बर्तन

दिलासा- (पु०) भरोसा, ढाढ़स

दिलेर- (फा० वि०) निर्भय, वीर

दिवला- (पु०) बड़ा दिया

दिवान- (पु०) थाने का बड़ा मुहर्रिर (कहा०). लरिका ठाकुर, बूढ़ दिवान; (वि०) दीवाना

दिसकूट- (स्त्री०) पहेली

दिसा- (स्त्री०) दिशा; शंका, स्मरण; **-मैदान-**, मल त्याग; **–सुरु** (पु०) दिशाश्रम

दिहाड़ी- (स्त्री०) दैनिक मजदूरी

दीठि- (स्त्री०) दृष्टि

दीवट- (स्त्री०) दीपक रखने की अड्डी

दुइरसा- (वि०) सोना का वह दोष, जिसमें चाँदी व ताँबा दोनों मिले होते हैं

दुकड़ा- (पु०) पैसे का एक भाग

दुकान- (स्त्री०) लुहारों की भट्ठी, विक्रय केन्द्र; **-रखना या बढ़ाना-** (क्रि० स०) भट्ठी जलाना या बुझाना

दुखड़ा- (पु०) दुःख का हाल

दुखतरी- (फा० स्त्री०) लड़की का (अधिकार)

दुखलहल, दुखलहा- (वि०) (अंग) जिसमें घाव या फोड़ा आदि हो; जो शीघ्र दुःख सके

दुखिया- (वि०) दुःखी, व्यथित

दुछनिहा- (पु०) बंगला, दो पल्लों की बड़ी मड़ैया; मड़हा

दुछेहे-दुछेहे- देखिए 'दुर्छे-दुर्छे'

दुत- (विस्म०) डाँटने का शब्द

दुताई- (स्त्री०) दूत का कार्य; चुगली

दुदहँड़ि- (स्त्री०) दूध पकाने में प्रयुक्त हण्डी

दुदहा- (पु०) दूध क्रय-विक्रय करने वाला व्यक्ति

दुद्धा- (वि०) वह दाना, जिसमें दूध हो (अनाज का) अर्थात् कच्चा

दुद्धी- (स्त्री०) खरिया; एक बूटी, जिसमें दूध होता है और जो कई दवाओं में काम आती है; (स्त्री०) अंशहीन दूध

दुनवढ़- (वि०) दुगुना

दुपल्ली- (वि०) टोपी का प्रकार विशेष

दुपहरिया- (स्त्री०) दोपहर का भोजन; ऐसे भोजन का कच्चा सामान; दोपहर

दुबक्कड़- (पु०) दुबे का घृणित रूप (कहा०) "दुबे दुबक्कड़ तीबे नवाब तिवारी हरजोतना चौबे चमार"

दुबचउर- (वि०) जहाँ दूब की हरियाली और भूमि चौरस हो; सुन्दर (स्थल)

दुबरई- (स्त्री०) गरीबी, धनहीनता

दुबाढ़ा- (वि०) दुगना, अधिक

दुब्बक- (स्त्री०) अड़चन

दुभुकु- (पु०) अभाव, कमी

दुमना- (वि०) जो (पशु) खड़े-खड़े हिलता हो, ऐसे पशु कुलक्षणी माने जाते हैं

दुम्मा- (वि०) मोटी दुमवाली (भेंड़)

दुरपती- (स्त्री०) द्रौपदी

दुरभाव- (पु०) अनबन, दिलमैली

दुरमुट, दुरमुसु- (पु०) फर्श आदि बराबर करने का यंत्र

दुरित- (पु०) पाप

दुरुत्त- (वि०) ठीक-ठाक, दुरुस्त

दुरौंध- (स्त्री०) दरवाजे की ऊपरी लकड़ी

दुर्गवाँछी- (वि०) बेचैन

दुर्र्- (अव्य०) बच्चों को सुलाने का शब्द; कुत्ते को हटाने का शब्द

दुलरी- (स्त्री०) दो लड़ी वाला आभूषण

दुलरुआ- (वि०) दुलारा

दुलकी- (स्त्री०) घोड़े की एक प्रसिद्ध चाल

दुलखबु- (क्रि० स०) किसी नाजायज़ कार्य की निन्दा करना

दुलाई- (स्त्री०) हल्की रज़ाई

दुवासि- (स्त्री०) द्वादसी

दुहाजू- (वि०) वह आदमी या औरत, जिसकी पत्नी या पति छूट गया हो या मृत्यु को प्राप्त हो गया हो; (वि०) दोहजा

दूजि- (स्त्री०) द्वितीया

दूबर- (वि०) दुर्बल, कम पैसे वाला

दूभर- (वि०) दुष्प्राप्य

दूरस- (वि०) उपजाऊ मिट्टी, दोमट

दूरसा- (वि०) सोना का वह दोष, जिसमे ताँबा और चाँदी दोनों मिले होते हैं

दूलम- (वि०) दुर्लभ; -दास- प्रसिद्ध संत

देखवार- (पु०) देखने वाला, वर देखने वाला

देखार- (वि०) स्पष्ट, दिखाई पड़ने वाला

देखुवा- (पु०) लड़के को देखने आये कन्या पक्ष के लोग

देनी- (स्त्री०) आशीर्वाद या कृपास्वरूप प्राप्त वस्तु; देन

देवखरी- (स्त्री०) देवताओं का समूह

देवाँर- (स्त्री०) लकड़ी व फसलों में लगने वाला कीड़ा विशेष; दीमक

देवाई- (स्त्री०) देने का ढंग, क्रिया; संस्कार विशेष

देवारी- (स्त्री०) दीपावली

देवाल- (स्त्री०) दीवार

देसउरी- (वि०) पान की एक उपजाति; देशी

देसनी- (स्त्री०) देश का अज्ञात भाग

देसवरिया- (पु०) सफेद कुम्हड़ा; वि० झरिकोलहा

देसाउर- (पु०) व्यापार का स्थान; बाहरी मंडी

देहंगर- (वि०) पीले शरीर वाला
देहरी- (स्त्री०) दरवाजे में नीचे लगी लकड़ी की चौखट
दोंदबु- (क्रि० स०) इन्कार करना (बात को), विरोध करना
दोख- (पु०) दोष, पाप; दोखी- (वि०) दोषी, दुर्गुणी, ऐबी (व्यक्ति)
दोगला- (पु०) पानी उलीचने में प्रयुक्त बाँस द्वारा निर्मित गहरा बर्तन, जिसमें दो लोग लगते हैं; (वि०) नस्ल का कच्चा
दोगा- (पु०) रजाई का छपा हुआ कपड़ा
दोड- (पु०) ब्याह के बाद की दूसरी विदाई, जो गौने के कुछ दिन पीछे होती है
दोचा- (पु०) हिसाब में कमी, नुकसान
दोपल- (स्त्री०) अड़चन, दुविधा
दोल- (स्त्री०) रोक, नियन्त्रण
दोबिया- (स्त्री०) अन्न विशेष
दोसन- (वि०) द्वेष करने वाला, विरोधी
दोहजनु- (पु०) बालों को द्वितीय बार बनाने का संस्कार
दोहनी- (स्त्री०) पिट्ठी का बर्तन, जिसमें दूध दुहा जाता है
दोहरस- (वि०) उपजाऊ; दूरस
दोहग- (पु०) गन्ने का रस उलीचने वाला बड़ा चम्मच; (वि०) दो पर्त का
दोहरि- (स्त्री०) दुहरी चादर
दोहान- (पु०) जवान बैल
दौं- (अव्य०) धौं, अथवा
द्यंह- (स्त्री०) देह, शरीर (अव्य०) वास्ते
द्यवतँ- (पु०) देव, पारिवारिक देवता
द्यवँचरतु- (पु०) दीवाल के सहारे, छत आदि डालने के लिए बनाई गयी पतली दीवाल; वि० द्यवँचिक
द्वांढ- (स्त्री०) सम्पत्ति, रकम
द्वासम- (अ० वि०) चाँदी आदि में कम कीमती, दूसरी धातु का मिश्रित रूप
धंगरबु- (क्रि० अ०) दौड़ना
धंधरि- (स्त्री०) लौ, ज्वाला
धंधाक- (क्रि० वि०) दौड़कर; धंधाग
धँधरबु- (क्रि० अ०) चुभना, घुसना
धइगा- (पु०) कारनामा, नियम, आदत
धइँतल, धइंलाल- (पु०) लम्बी देह का एक खास किस्म का सुअर; (वि०) दुष्ट, नटखट
धउँस- (स्त्री०) रौब, गर्वपूर्ण व्यवहार
धउँसा- (पु०) बड़ा नगाड़ा
धकापेल- (क्रि० वि०) बहुतायत से
धगरिन- (स्त्री०) धोबिन (गीतों में); इसका पु० प्रयुक्त नहीं होता; डोमिन
धड़ल्लेति- (स्त्री०) बिना किसी रुकावट के
धड़ांग- (स्त्री०) पंक्ति, किनारा
धतुर- (पु०) प्रभावशाली व्यक्ति
धधाबु- (क्रि० अ०) प्रज्वलित होना; तीव्र इच्छा करना
धनइत- (वि०) धनवाला।
धनउची- (स्त्री०) आँगन में बना हुआ छोटा चबूतरा
धनकोदवा- (पु०) धान एवं कोदों मिला हुआ अन्न
धनखरा- (वि०) पत्नी के साथ आया हुआ पूर्व पति का (पुत्र); वह खेत, जिसमें धान की फसल ली गई हो
धनखरी- (स्त्री०) धान का खेत; धनखर
धनगर- (वि०) धान उत्पन्न करने वाला (खेत); धनहा
धनधुड्डी- (स्त्री०) धान कटा हुआ खेत
धना- (स्त्री०) प्रिया, वधू
धनिया- (स्त्री०) युवा स्त्री, दुलहिन; मालवी में 'धनी' पति या मालिक के रूप में प्रयुक्त होता है; धान की उपजाति; मशाल
धनुही- (स्त्री०) रूई धुनकने वाली मशीन; छोटा धनुष
धन्ना- (पु०) धना; -सेठ- धनाढ्य सेठ
धन्धि- (स्त्री०) तीव्र इच्छा, उत्कटता (प्यास की)
धन्नि- (स्त्री०) मोटी लकड़ी, जो कुएँ पर या दीवार पर रखी जाती है; (वि०) धन्य, प्रशंसनीय, आश्चर्यजनक
धन्नी- (स्त्री०) छत में पड़ने वाली मोटी लकड़ी

धत्रो- (स्त्री०) प्रिया, वधू
धपइया- (स्त्री०) कोस का आधा, एक मील की दूरी
धपाधप- (क्रि० वि०) बहुत साफ, उज्ज्वल
धमधूसर- (वि०) अधिक मोटा
धमसा- (स्त्री०) छोटी चेचक
धमारि- (स्त्री०) भार (उपभोग सम्बन्धी)
धरउआ- (पु०) बिना ब्याह के ऐसी स्त्री का लाना, जिसका ब्याह पहले हुआ हो
धरगही- (स्त्री०) पाटा चलाते समय माचि से बंधने वाली रस्सी, जिसको पकड़ कर खड़ा हुआ जाता है
धरबु- (क्रि० स०) रखना, रख देना
धरम जुहया- (स्त्री०) वह जुआँ, जिसमें तराठ के स्थान पर केवल फंदे लगे होते हैं
धरहरिया- (स्त्री०) पकड़ने की कोशिश, बाध्य करने का प्रयत्न
धराऊँ (वि०) सुरक्षित (कपड़ा आदि) विशेष अवसरों पर पहनने के लिए रखा हुआ
धरिकार- (पु०) बाँस की टोकरी आदि बनाने वाला
धवरहरा- (पु०) टीला, ऊँची इमारत, मीनार
धाँधबु- (क्रि० स०) गोबर आदि खाना
धाकड़, धाकर- (पु०) निकृष्ट ब्राह्मण; (वि०) धनाढ्य, साहसी
धानि- (स्त्री०) पुत्री या बहन की सम्पत्ति
धारि- (स्त्री०) देवी को चढ़ाई हुई वह पानी की धार, जिसमें लौंग, गुड़ आदि डाला जाता है
धारो-धार- (क्रि० वि०) बेरोक-टोक (बह जाना, पतित होना); एकदम
धाह- (स्त्री०) जलन; जलती हुई आग की दूर से लगती गर्मी
धिड़रा- (वि०) सुस्त, लुच्चा, जिसे कोई काम न हो
धिया-पूता- (पु०) बाल-बच्चे; धी (कन्या) पूत (पुत्र) स्त्रियों में प्रचलित सम-वयस्क को बहिनी-और छोटी को धिया
धीङ-धींङा- (पु०) अल्प-वयस्क
धीरधूर- (वि०) शांत एवं धैर्यवान
धीरा- (पु०) धीरज, धैर्य (वि०) धीमा
धीवर- (पु०) कहार
धुच्चि- (स्त्री०) हठ, व्यर्थ की जिद
धुनकबु- रूई साफ करने की क्रिया, मारना
धुनकहा- (पु०) रूई धुनकने वाला व्यक्ति
धुनका- (पु०) धुआँ निकलने का एक छेद
धुनकी- (स्त्री०) रूई धुनकने की मशीन; छोटी सी डेहरी
धुनि- (स्त्री०) तर्ज, ढंग, ध्वनि
धुमिल- (वि०) मटमैला
धुर- (स्त्री०) बैलगाड़ी की पहिया के अन्दर की छड़
धुरकिल्ला- (पु०) धुरी में लगने वाली लकड़ी या कील
धुरन, धूरन- (पु०) चारा आदि में लगाया गया आँटा
धुरा- (पु०) पुरहाई कुआँ का वह ऊँचा स्थान, जहाँ तक बैल आते हैं; धुर
धुरिया धाम- (पु०) नाश की ओर धूल का घर
धुरु- (पु०) खेतों का किनारा
धुसरहा- (वि०) वह जानवर, जिसकी पूँछ के प्रारम्भिक भाग में नीचे की तरफ फोड़ा जैसा आकार बन जाता है
धुस्स- (पु०) ढेर (बालू का)
धूई- (स्त्री०) धूनी
धूरा- (पु०) चिमटे के आकार की वह लकड़ी, जो कुएँ पर गगरी टांगने के लिए गाड़ी जाती है; ऊँचा जल मार्ग
धूरी- (पु०) सीमा
धूसर- (वि०) कालिमायुक्त या मटमैला
धेती- (स्त्री०) नेती, मथानी की रस्सी
धेरिया- (स्त्री०) पुत्री
धेलाय- (अव्य०) तीन सौ रुपये लेने के लिए
धोंधकी- (स्त्री०) मिट्टी की छोटी डेहरी या अनाज रखने का पात्र
धोंधा- (वि०) मोटा एवं सुस्त (पु०) लावा आदि के लड्डू
धोंनाह- (स्त्री०) बड़े और घने पौधों की आड़

धोई- (स्त्री०) उड़द की धुली दाल, जो बड़ा पकौड़ा आदि बनाने के काम में आती है

धोकर कक्सा- (पु०) काल्पनिक व्यक्ति, जो अपनी धोकरी में बच्चों को भर के उठा ले जाता है

धोकरी- (स्त्री०) बड़ी थैली

धोजा- (पु०) ध्वजा, पताका

धोबघटा- (पु०) वह घाट, जहाँ धोबी कपड़ा धोते हैं

धोबिया राग- (पु०) धोबियों में गाया जाने वाला गीत

धोवउवा- (पु०) कपड़े धोने की संख्या

नंगई- (स्त्री०) निर्लज्जता एवं हठ; दबंगई

नंगबाँड़िया- (वि०) (बच्चा) जो अपनी बात पर मचला रहे; जिद्दी

नंगा- (वि०) बेशर्म एवं झगड़ालू; नग्न

नंगिच्यउबु- (क्रि० अ०) समीप पहुँचना

नंगीचे- (अव्य०) पास; समीप

नंदोलिया- (स्त्री०) अधिक छोटी नांद

नंदवाला- (पु०) छोटी नांद

नँधाव- (पु०) नाली का वह चौड़ा व गहरा भाग, जहाँ पर बेड़ी चलायी जाती है

नइँयाँ, नायँ- (अव्य०) तरह, जैसा

नइचा- (पु०) हुक्के का नैचा

नइथुवा- (वि०) नया, युवा

नइनी- (वि०) मछली विशेष

नइहर- (पु०) (स्त्री के) पिता का घर या गाँव; (कहा०) "नइहरे मे चुनरी धुमिल भई"

नउआ झकोर- (पु०) नाइयों की लम्बी पंचायत

नउतई- (स्त्री०) पूजा, दैव शक्ति द्वारा किसी के कष्ट दूर करने की क्रिया

नउतरा- (वि०) जूते की किस्म विशेष

नउतोरु- (वि०) नये सिरे से बनाया गया (खेत)

नउधा- (वि०) नई अवस्था के

नउबति- (स्त्री०) बधाई, दशा

नउहड़िया- (वि०) व्यक्ति, जो अलग भोजन बनावे

नउहर- (वि०) नया

नकटी- (स्त्री०) नाक की मैल; (वि०) वह स्त्री, जिसकी नाक कट गयी हो

नकदम- (अव्य०) परेशान, नाक में दम

नकद्दर- (वि०) खराब, रद्दी

नकराई-सकराई- (स्त्री०) हुण्डी के भुगतान में जो घट-बढ़ी लगती हो

नकारा- (वि०) अनुचित

नकिदरौं- (पु०) परेशानी; कष्ट

नकुटा- (पु०) चप्पल में प्रयुक्त चमड़े की पतली पट्टी विशेष

नकुना- (पु०) नाक

नक्क- (वि०) अच्छी, उपजाऊ (भूमि)

नक्कटई- (स्त्री०) बदनामी

नक्की- (वि०) युग्म रहित; समीचीन

नक्कू- (वि०) मुँह छिपाने वाला, (पु०) नाक का मैल

नक्षत्तरु- (पु०) भाग्य

नक्षत्री- (वि०) भाग्यवान

नखत- (पु०) नक्षत्र

नखारु- (पु०) गाय भैंस आदि जानवरों की जाति या नस्ल

नगरा- (वि०) हल विशेष, जिसमें फार डण्डा जैसा लम्बा लगता है

नगवारा- (वि०) अप्रिय, बुरा

नगहाज्वारा- (पु०) वह लाख की चूड़ी, जिसमें नग जड़े होते हैं

नगारा- (पु०) नगाड़ा

नगिरही- (स्त्री०) स्त्रियों का एक आभूषण जिसमें नौ दाने होते है

नग्घन- (पु०) किसी रोगी के मलमूत्र को लाँघने से लगा रोग

नचना- (पु०) बारात में मित्रों एवं नातेदारों द्वारा नाचने वाले को दिया गया रुपया

नजरा- (पु०) आगे के बड़े-बड़े बाल

नजीर- (स्त्री०) दृष्टांत, मिसाल

नजोर- (वि०) कमजोर

नटई- (स्त्री०) गला, गर्दन; वि० गटई

नटवा- (पु०) जाति विशेष, जो नेक प्रकार के कार्य, कलाएँ करके पेट चलाते हैं

नटारम्भ- (पु०) प्रारंभिक तैयारी; पूरा प्रबन्ध
नटिया- (स्त्री०) छोटे आकार का बैल
नटुला- (पु०) नाटा व्यक्ति
नतअभेर- (पु०) रिश्तेदारी का सिलसिला
नतइती- (स्त्री०) रिश्तेदारी, नातेदारी
नताइति- (स्त्री०) नतइती
नतोह- (स्त्री०) नाती की स्त्री
नथइला- (पु०) बैलगाड़ी का पुर्जा विशेष
नथिया- (स्त्री०) नाक का आभूषण
नथुनी- (स्त्री०) नाक में पहनने का स्वर्ण आभूषण

नदारति- (वि०) नष्ट, गायब
नद्धी- (स्त्री०) ताँत, चमड़े की डोरी
ननियाउर- (पु०) नाना का घर, गाँव
नपाक- अपवित्र
नपान- (क्रि० वि०) प्रतीक्षा में, लालच में
नफगर- (वि०) नफा देने वाला
नफा- (पु०) लाभ; फायदा
नबूद- (वि०) नष्ट
नबेली- (वि०) नई, जवान (स्त्री०); सुन्दर
नमोसी- (स्त्री०) बदनामी
नयचा- (पु०) हुक्के की नली
नय्याब- (वि०) उम्दा
नरकुल- (स्त्री०) जंगली पौधा, जिसकी लकड़ी से कलम, बाँसुरी बनती हैं
नरखराबु- (क्रि० अ०) ऐंठ के साथ बोलना
नरगह- (स्त्री०) दुःखमय स्थिति
नरदई- (स्त्री०) नारद का काम
नरदवा- (पु०) जहाँ पर गन्दा पानी इकट्ठा होता है, नापदान
नरमा- (पु०) एक प्रकार की रूई और उसका पेड़
नरा- (पु०) तागे की बड़ी फुल्ली; पेट के भीतर नाभि के पास का भाग
नरिया- (स्त्री०) नालीनुमा खपड़ा; नाली
नरी- (स्त्री०) तागे की छोटी फुल्ली; गर्दन
नरुआ- (पु०) अनाज वाले पौधों का (पोला) डंठल; कोल्हू का वह छेद, जिससे तेल गिरता है
नरेही- (स्त्री०) झुण्ड, समूह
नरोई- (स्त्री०) घुटने के नीचे का सामने वाला भाग, जिसमें ऊपर हड्डी होती है
नर्रा-(पु०) सिंचाई का एक प्रकार, जिसमें बिना कोहा कटाए पानी दिया जाता है; हरे प्याज की पौध
नर्राबु- (क्रि० अ०) क्रुद्ध स्वर में बोलना
नलकी- (स्त्री०) माला में प्रयुक्त प्लास्टिक की नली
नलुई भट्ठी- (स्त्री०) ठठेरों की भट्ठी
नल्ला- (पु०) हथेली एवं बाँह को जोड़ने वाला भाग
नवई- (स्त्री०) नाईगीरी
नवगिरही- (स्त्री०) हाथों में पहना जाने वाला गहना
नवतना- (अव्य०) दाहिनी ओर घूमने के लिए हलवाहे का बैलों को संकेत
नवधुआ- (वि०) नया (छोटा पेड़)
नवरिया- (स्त्री०) नौका
नवलेवा- (पु०) वह स्थान, जहाँ पर नदियों द्वारा वर्षा में आकर नई मिट्टी जम जाती है
नवहरा- (पु०) तीन बीता लंबा बना हुआ नया हल
नवा- (पु०) नये अन्न का ग्रहण; संस्कार, गाँवों में यह दो बार रस्म मनाया जाता है
नवारा- (पु०) नाव पर चढ़कर खेला जाने वाला एक पुराना खेल (गीत)- "सरजू में खेलत राम नवारा"
नसउरी- (स्त्री०) नौ अंगुल की चौकोर ईंट
नसी- (स्त्री०) फार
नसीर- (वि०) रेशम सरीखी नक्काशी दार (चूड़ी), जो सतह पर रंगीन होती है
नसुड्ढा- (वि०) अपशकुनी, जिसके देखने से अपशकुन हो
नसुहा- (पु०) चारा काटने की लकड़ी, जिसका आधा भाग भूमि में गड़ा हो
नासूर- (पु०) फोड़ा, जो शीघ्र अच्छा न हो
नह- (अव्य०) बैलों को बाएँ मोड़ने की बोली (पु०)
- नाखून (स्त्री०) बैलगाड़ी के पहियों में प्रयुक्त भेलन

नहकै- (क्रि० वि०) नाहक, व्यर्थ ही

नहखरबु- (क्रि० अ०) बैलों आदि का कुद्ध मुद्रा में बोलना

नहखुरु- (पु०) नाखून काटने की क्रिया

नहट- (वि०) नष्ट

नहबु- (क्रि० स०) बैलों को माची में जोतना

नहत्री- (स्त्री०) नाखून काटने की चाकू विशेष

नहरनु- (पु०) नाखून काटने का औजार

नहरूम- (वि०) जिससे कुछ छीन लिया गया हो

नहवनिया- (पु०) स्नान के लिए जाने वाला यात्री

नहसुतु- (पु०) बीसों नाखूनों को धोने की क्रिया

नहसुनि- (स्त्री०) एक पेड़, जिसकी लकड़ी लाल होती है

नहाँ- (पु०) चबूतरा

नहान- (पु०) स्नान

नहारी- (स्त्री०) नाश्ता

नहिया- (स्त्री०) पैर की अंगुली का आभूषण

नांघबु- (क्रि० स०) लाँघना, (क्रि० अ०) गाय आदि मादा जानवरों का गर्भस्थ होना

नाँद्रा- (पु०) मिट्टी के बर्तन बनाने में प्रयुक्त औज़ार; बड़ी बाँह; चूँड़ा

नाकदारि, नाकदरी- (स्त्री०) बेइज़्ज़ती

नाका- (पु०) गली, मुहल्ले का प्रवेश द्वार; सूई का छेद; चप्पल की वह पट्टी, जो अंगूठे व उंगली के बीच होती है

नाड़ि- (स्त्री०) नाक; पानी में रहने वाला भैंस की भाँति का एक बड़ा जानवर

नाड़िआ- (वि०) दुष्ट, क्रूर स्वभाव का

नाकेदार- (पु०) कर्मचारी जो नाके का नियंत्रण करता है

नाखुरु- (पु०) नाखून काटने की क्रिया

नाखूनी- (स्त्री०) पोशाक में नीचे की मोड़; नाखून में प्रयुक्त रंग; वि० दानवि

नागा- (पु०) अनुपस्थिति; (वि०) अनुचित; (पु०) साधुओं का पंथ या उपजाति

नाजु- (पु०) अनाज

नाजो- (स्त्री०) (गीतों में) नाज़ करने वाली सुंदरी; नायिका

नाटा- (पु०) छोटे आकार का बछड़ा; (वि०) नाटे कद का; (कहा०) "नाटा खोटा बेंचकर बैल धुरंधर लेहु"

नात- (पु०) रिश्तेदार

नाथ- (स्त्री०) बैल आदि के नथुने में लगी या पड़ी हुई रस्सी; (पु०) स्वामी; (कहा०) "आगे नाथ न पीछे पगहा"

नाथबु- (क्रि० स०) बैलों को माचि में मचियाना; बनाना, बाँधना; (क्रि० वि०) चल देना, बकना

नाधा- (पु०) चमड़े की पट्टी, जो हल आदि बाँधने के काम आती है

नाधु- (पु०) नाली का वह चौड़ा व गहरा भाग, जहाँ बेंड़ी से पानी उलीचा जाता है

नान्ह- (वि०) छोटा-सा

नापास- (वि०) अस्वीकृत

नाबदि- (स्त्री०) न होने की स्थिति, अस्वीकृति

नामी- नाम वाला, प्रसिद्ध

नार- (पु०) हथकरघे का वह अंग, जिस पर ताने की फुल्ली चढ़ाई जाती है; **सल**- असली, शुद्ध सोना; बड़ा नाला

नाड़ा- (पु०) पैजामा आदि में डालने का फीता

नारी- (स्त्री०) नाड़ी; नाली; स्त्री; तालाब में होने वाली लता विशेष

नारू- (पु०) ऊबड़-खाबड़ ज़मीन, चौड़ा नाला; बोड़; **-रखबु**- (क्रि० स०) हल का भार एक बैल पर रखना; **-छीनबु**- (क्रि०स०) नवजात शिशु की नाल काटना

नार्वँ- (पु०) नाम, यश; (कहा०) "मर्द मरै नार्वँ कै निमर्द मरै पेट कै"

नास, नासी- (स्त्री०) हल के फार में लगी लकड़ी

नासा- (पु०) मुख्य रास्ता या द्वार, मेंड़ आदि का वह भाग, जहाँ से रास्ता निकला हो, नाका; **बंदी**- (स्त्री०) नाकाबंदी

नासि- (स्त्री०) नाक में घी आदि डालने की क्रिया; (वि०) नष्ट

नाह- बैलगाड़ी के पहिये के बीच वाली मोटी लकड़ी (नाभि)

निंगरबु- (क्रि० अ०) फसल में बाल या फल निकलना

निंगाली- (स्त्री०) सुनारों के यहाँ प्रयुक्त वह नली, जिससे आग फूँकी जाती है; हुक्के की नली

निंगुड़ही- (स्त्री०) चाँदी से निर्मित स्त्रियों का कलाई में पहना जाने वाला आभूषण

निंदीपारा- (पु०) काँच की गोली द्वारा खेला जाने वाला बच्चों का खेल विशेष

निंधरल्ल- (वि०) निर्भय

निंबउरी, निंबकउरी- (स्त्री०) नीम का फल

निउ- (स्त्री०) नींव

निउनी- (वि०) निपुण

निकउबु- (क्रि० स०) फसलों से खर निकालना; सन की डंठल से अलग करना

निकवाह- (पु०) निराई करने वाले लोग

निकसता- (स्त्री०) तोड़ा की जगह काम आने वाली लकड़ी

निकसबु, निखरबु- (क्रि० अ०) निकलना

निकाई- (स्त्री०) अच्छाई

निकार- (पु०) चेचक; निकलने का ढंग

निकासी- (स्त्री०) बिक्री, निष्कासन

निकासु- (पु०) निर्गत द्वार, मुख्य द्वार

निक्खा- (वि०) निरा, विशुद्ध

निखंड- (वि०) अटूट; अबाधित

निखट्ट- (वि०) निकृष्ट, खराब

निखार- (पु०) सफाई, चमक

निखालिस- (वि०) विशुद्ध, निरा, मात्र

निखोनना- (पु०) हरे जौं का एक चबेना

निगरदान- (पु०) मैदान

निगुही- (स्त्री०) सुरुहटी, छोटा चींटा

निगोड़ा- (वि०) जिसके संतान न हो

निचाट- (वि०) सुनसान, निर्जन; बहुत तेज

निचोर- (पु०) संक्षेप, असली रहस्य

निछान- (वि०) केवल, जिसमें कुछ और न मिला हो

निछावरि- (स्त्री०) न्योछावर में डाली जाने वाली मुद्रा या अनाज

निठाह- (वि०) (समय) जब कोई फसल आदि तैयार न हो

निथरबु- (क्रि० अ०) साफ हो जाना (पानी आदि द्रव का)

निदरबु- (क्रि० स०) निरादर करना

निधरक- (वि०) बेफिक्र

निनउरु- (पु०) ननिहाल

निनार- (वि०) अलग; स्पष्ट

निन्नें- (अव्य०) निहार; बिना खाये-पिये की अवस्था

निपंजा- (पु०) बीड़र (कपड़ा)

निपट- (वि०) एकदम, बिल्कुल

निपटबु- (क्रि० अ०) सम्पन्न होना, पूरा होना लड़ाई आदि से निवृत्त होना; फली लगना; मेल मिलाप से रहना

निपातबु- (क्रि० स०) मारना

निपुचि- (क्रि० वि०) सिमटकर; मन को संकुचित कर

निपौची- (स्त्री०) कमी, कंजूसी

निपोर- (वि०) कुछ नहीं, शून्य

निबहबु- (क्रि० अ०) निबटना, मेल खाना, पटना, निर्वाह होना

निबहुर- (पु०) एक काल्पनिक स्थान, जहाँ जाकर कोई लौट न सके

निबाहु- (पु०) निर्वाह

निबुकबु- (क्रि० अ०) निवृत्त होना

निमउनी- (स्त्री०) ईख कटने का पहला दिन

निमकउरी- देखिए 'निबौरी'

निमकी- (स्त्री०) नींबू का अचार

निमन- (वि०) निम्न, नीच

निम्मन- (वि०) मजबूत

नियाई- (स्त्री०) आग रखने के लिए मिट्टी का बर्तन; वि० अँधी

नियादि- (स्त्री०) समय-सीमा

नियारिया- (पु०) जाति विशेष, जो सुनारों के यहाँ निर्गत राख से चाँदी आदि निकालने का काम करते हैं

नियावँ- (पु०) न्याय

निरकेवल- (वि०) साफ (आकाश, जल आदि)

निरगह- (वि०) बिल्कुल, अमिश्रित

निरधिति- (स्त्री०) दुःखपूर्ण स्थिति

निरजूँ- (वि०) कमजोर; जिसमें जान न हो.

निरझल- (अव्य०) मात्र, केवल; निरा

निरतउबु- (क्रि० स०) ध्यान पूर्वक देखना
निरहा- (वि०) अकेला; रहित, इच्छुक
निराल- (क्रि० वि०) बिल्कुल, बहुत से, एकदम
निर्क- (वि०) एक प्रकार का गन्ना
निर्छल- (वि०) निश्छल
निर्जल- (वि०) जिस (व्रत) में जल भी न ग्रहण किया जाये
निर्नय- (पु०) निर्णय
निवाला- (पु०) कौर, ग्रास
निसतार- (पु०) निर्वाह
निसबत- (अव्य०) सम्बन्ध, तुलना; मंगनी
निसरबु- (क्रि० अ०) निकलना
निसाँसन- (पु०) निशिचर (रावण)
निसान- (पु०) चिह्न, झण्डा
निसुकबु- (क्रि० वि०) सिसकी भरना
निसुग्गा- (वि०) बात न सुनने वाला; कहे हुए कार्य पर अमल न करने वाला
निसोब- (वि०) शुद्ध
निहचिन्त- (वि०) निश्चिन्त
निहठा- (पु०) वह लकड़ी, जिस पर रखकर बढ़ई कोई चीज गढ़ते हैं
निहतूक- (वि०) पक्का, ठीक, निश्चित, एक
निहल- (वि०) कमजोर, छोटा (ऊँचाई में)
निहाइति- (अव्य०) एकदम, बिल्कुल
निहाई- लुहारों आदि की लोहे की अड्डी
निहार- (पु०) ओस, कुहरा; (वि०) प्रातःकाल बिना कुछ खाये-पिये की अवस्था
निहाल- (वि०) प्रसन्न
निहुरबु- (क्रि० अ०) झुकना (कमर के बल)
निहोर- (पु०) कृतज्ञता, एहसान (उदा०) "जो कबिरा कासी मरै रामहि कौन निहोर"
नींबर- (वि०) कमजोर, निर्बल
नींबि- (स्त्री०) नीम का वृक्ष
नीक- (वि०) अच्छा, सुन्दर; स्वस्थ
नीकसूक- (क्रि० वि०) बिना किसी के कहे, बिना आपत्ति के
नीमा- (पु०) पैजामा, जो जामा के साथ पहना जाता है
नीवाँ- (पु०) कड़ी (धूप), हवा रहित (धूप)
नीहल- (पु०) नीची जमीन, खलार
नुइयाँ- (स्त्री०) छोटी डलिया
नुनचा- (पु०) सिर्फ नमक डाला आम का अचार
नुकुस- (स्त्री०) ऐब, दुगुर्ण; खराबी
नूकी- (वि०) पताम साफ करने में प्रयुक्त (रंदा विशेष); वि० कचकटी (रंदा)
नूनी- (स्त्री०) लिंग
नें- (स्त्री०) नींव
नेइया- (स्त्री०) मिट्टी की अंगीठी
नेउजु- (पु०) भोजन; नउजु
नेउहारु- (पु०) उपकार, निहोरा
नेटा-पोटा- (पु०) शरीर की गंदगी
नेति- (स्त्री०) नीयत, इरादा, इच्छा
नेतु- (पु०) छेद, (हल आदि का)
नेनू, नैन- (पु०) कच्चा घी
नेबुला- (पु०) नींबू
नेरन- (पु०) निकाला हुआ सेम का रेशा
नेरुवा- (पु०) कोल्हू से तेल निकलने की नाली
नेरे- (अव्य०) निकट
नेवार- (स्त्री०) कुएँ की जोड़ाई के समय सबसे नीचे का घेरा, जो काठ ईंट आदि का होता है; बैल आदि के पिछले सुमों का आप में टकराने की क्रिया; मूली की किस्म विशेष; पलंग बुनने में प्रयुक्त सूत की पट्टी
नेवारी- (स्त्री०) फूल विशेष
नेवासा- (पु०) दौहित्र का अधिकार; ऐसे अधिकार से प्राप्त धन भूमि आदि
नेहसुति- (स्त्री०) एक पेड़, जिसकी डाल रोपी जाती है और उसकी लकड़ी पीली होती है
नेहा- (पु०) ध्यान, हठ
नोख- (वि०) अनोखा
नोनु- (पु०) नमक
नोहर- (वि०) अप्राप्य, दुष्टप्राप्य
नौमनियाँ- (स्त्री०) हलवाहे का अगौढ़ी, हलवाही लेकर नियमबद्ध होने की क्रिया; (वि०) नौ मनकी
नौहड़िया- (वि०) वह व्यक्ति जो भोजन अलग बनावे

न्याफा- पैजामा आदि में नारा डालने में प्रयुक्त मोड़

न्यामति- (स्त्री०) अत्यन्त पसंद की वस्तु, अत्यन्त स्वादिष्ट

न्वावा- (पु०) दुहने के समय गाय के पैरों में सांदने में प्रयुक्त रस्सी

पँखुरी- (स्त्री०) फूलों की पंखुड़ी; गेहूँ के ऊपर का आवरण

पंगति, पंघति- (स्त्री०) भोजन करने वाले व्यक्तियों की पंक्ति, कतार

पंगुला- (पु०) पंगुल व्यक्ति

पंघति- पंगति

पंचइती- (वि०) पंचायत की ओर से, सार्वजनिक

पँचरोजा- (पु०) वे दिन या समय, जिसमें आम अधिक पकते हैं

पँचवासी- (स्त्री०) हल का एक छोटा पुर्जा

पंचा- (पु०) अंगौछा से बड़ा और धोती का आधा अधोवस्त्र

पंचाइति- (स्त्री०) बैठक, श्राद्ध संस्कार

पंचुरवा- (पु०) प्रसूता को दिया जाने वाला मेवा आदि से मिश्रित पेय पदार्थ

पंचूर- (पु०) पहिए के पुट्ठों को जोड़ने वाले खाँचे

पंछा- (पु०) किसी अंग से बहने वाला पानी; चेहरा

पंछोप- (पु०) पानी का किनारा

पंजियउबु- (क्रि० स०) समझना, परखना

पंजीला- (वि०) अधिक चौड़ा

पँड़लू- (पु०) भैंस का नर बच्चा

पंडोह- (पु०) नाबदान

पँवरि- (स्त्री०) द्वार की देहरी

पँवारी- (पु०) लोहारों का एक औजार; जिससे लोहे में छेद करते हैं

पइँजनी- (स्त्री०) बैलगड़ी में पहियों को रोकने हेतु प्रयुक्त पटरा विशेष

पइँता- (पु०) पेड़ से निकला हुआ नया कल्ला

पइँती- (स्त्री०) पवित्री, जो अनेक संस्कारों में उंगली में पहनी जाती है

पइआ- (स्त्री०) अत्यन्त मरा हुआ दाना

पइजा- (पु०) पल्लों को दरवाजे में बाँधने में प्रयुक्त लोहे के छल्ले विशेष

पइठबु- (क्रि० अ०) प्रविष्ट होना, घुसना

पइढ़ी- (स्त्री०) पुरहाई कुएँ का वह स्थान, जहाँ तक बैल रस्सा खींचते हुए जाते हैं

पइना- (पु०) बैलो को हाँकने में प्रयुक्त डंडी

पइरी- (स्त्री०) लाँक के बोझ खोलकर माड़ने हेतु निर्मित गोलाकार ढेर

पइली- (स्त्री०) जोतते समय हराई में बचा थोड़ा अंश; कटोरा; डलिया

पइहाँ- (परसर्ग) पर

पउड़बु- (क्रि० अ०) तैरना; इधर-उधर भटकते रहना

पउड़ा- (पु०) एक प्रकार का गन्ना

पउनहरि- (वि०) रोटी पोने (बनाने) वाली

पउनहा, पउथहाँ- (वि०) वह खेत, जो भाइयों को बँटवारे हेतु प्रत्येक वर्ष बारी-बारी से मिले

पउनारि- (स्त्री०) कमल का पेड़, उसकी जड़ एवं शाखा, जिसका साग बनता है

पउरी- (स्त्री०) देहरी; सीढ़ी के डण्डे

पउनी- (पु०) सेवक, जैसे- बढ़ई, लुहार आदि

पउरुख- (पु०) पौरुष, बल

पउला- (पु०) खड़ाऊँ विशेष, जिसमें खूँटी के स्थान पर रस्सी लगती है

पउली- (स्त्री०) एँड़ी

पउहटु- (पु०) पड़ोस, जवार

पकना- (पु०) महुए का पका फल

पकसाइब- (क्रि० स०) (फल को) कच्चा तोड़कर पकाना

पकिया- (पु०) कीचड़

पकुसबु- (क्रि० स०) पकना

पकेठ- (वि०) अनुभवी एवं चालाक

पक्कन- (वि०) पकाने वाला (मौसम)

पक्खा- (पु०) कमरों में चौड़ाई की दीवार

पख- (पु०) कमी, दुगुर्ण, अंग

पखउरा- (पु०) कंधा

पखना- (पु०) पंख

पखवाज- (पु०) एक बाजा

पखियाबु- (क्रि० अ०) पचलना

पखुरा- (पु०) बाँह और कंधे का जोड़

पखेउ- (पु०) भैंस को खिलाया जाने वाला बाजरे का भात

पखेरू- (पु०) पक्षी

पग- (स्त्री०) पाग, पगड़ी; (पु०) पैर

पगडंडी-(स्त्री०) पैदल का सँकरा रास्ता

पगरइतिनि- (स्त्री०) वर-वधू की माँ

पगही- (स्त्री०) बैल आदि बांधने की रस्सी

पग्घा- (पु०) सुनारों के यहाँ प्रयुक्त वह बड़ा पात्र, जिसमें गली हुई चांदी जमाई जाती है

पचउखा- (पु०) पाँच ईखों का प्रसाद, जो बसियार में प्रत्येक हिस्सेदार को दिया जाता है

पचलबु- (क्रि० अ०) बर्तनों का भाग दब जाना; पिछड़ना

पचकल्यानी- (वि०) इधर-उधर का; साधारण, यह शब्द भी गुरु की भाँति बुरे अर्थ में आने लगा है

पचखा- (पु०) पंचक, पंचक प्रत्येक मास के अंतिम पाँच दिनों में प्रवृत्त माना जाता है, जो शुभ कर्म हेतु वर्जित है यहाँ तक कि मृत व्यक्ति का दाह-संस्कार भी स्थगित रहता है

पचड़ा- (पु०) बखेड़ा, झंझट

पचारा- (पु०) देवी को प्रसन्न करने हेतु गीत, जो ओझाई एवं डिहबन्हई में गाया जाता है

पचहँड़ि- (स्त्री०) बटुआ, हण्डी विशेष

पचांगुरु- (पु०) भूसा आदि समेटने में प्रयुक्त उंगलीदार यन्त्र

पचाक- (स्त्री०) लोहे की नुकीली छड़

पचाड़ी- (स्त्री०) जोठे में लगी छोटी लकड़ी

पचेड़ी- (स्त्री०) गन्ने के पेड़ से निकली ईख, जो चूसने योग्य नहीं होती

पच्चड़- (पु०) किसी भारी वस्तु को रोकने के लिए ठोंका हुआ लकड़ी का टुकड़ा

पच्छाँह- (पु०) पश्चिमी क्षेत्र

पच्छा- वह रस्सी, जो बैलगाड़ी में पीछे लगती है

पछरबु- (क्रि० अ०) पीछे हटना; पीछे रह जाना

पछीता- (वि०) मकान में पीछे की कोठरी

पछुवहाँ- (वि०) पश्चिम का (रहने वाला)

पछुवा- (पु०) जूते में लंगोटे की तरह लगने वाली बाहर की पट्टी

पछेड़- (पु०) पीछे पड़ने की क्रिया या आदत

पछेलवा- (पु०) हाथ के ऊपरी हिस्से में पहनने का गहना

पछेतरी, पछौंछी- हल का एक छोटा पुर्जा

पछ्वारबु- (क्रि० स०) सूप से अनाज साफ करना

पजरीं- (अव्य०) बगल में सट कर बैठना

पजावा- (पु०) छोटा भट्ठा

पटइन- (स्त्री०) पटवा की स्त्री

पटइला- (पु०) पटरा

पटऊ-(पु०) कपड़े का थान, जो कुल देवता को चढ़ाया जाता है

पटकनु- (पु०) डंडा

पटकोई- (स्त्री०) छोटे दाने वाली मटर

पटपरी- (स्त्री०) दाना पड़ने से पूर्व की फली

पटरी- (स्त्री०) पैर की उंगलियों में पहना जाने वाला एक आभूषण

पटहार- (पु०) सूत का काम करने वाला व्यक्ति

पटाव- (पु०) दरवाजे पर लिंटर स्वरूप रखा पटरा, भरान

पटियइती- (स्त्री०) बराबरी, प्रतिस्पर्धा

पटिया- (स्त्री०) हल में हरीस को कसने के लिए लगाई गयी लकड़ी; सँकरा व लंबा खेत; पट्टी

पटीलबु- (क्रि० स०) ले लेना, धूर्तता से प्राप्त कर लेना

पटुवा- (पु०) कमर में बांधने वाला कपड़ा

पटुली- (स्त्री०) बैठने का छोटा पाटा

पटुहा- (पु०) माला बनाने व बेचने वाला व्यक्ति

पटेहरु- (पु०) वह मोटी लकड़ी, जो कुएँ आदि पर पैर टिकाने हेतु रखी जाती है

पटोहा- (पु०) खेत की मिट्टी समतल करने का एक यंत्र

पटौधन- (पु०) पट या अदा होने का हिसाब

पट्टदि- (क्रि० वि०) अविलम्ब

पट्ट- (वि०) ठंडा, हलका , शांत

पट्ठा- (पु०) लाख की चूड़ी का कंगन; बैलगाड़ी से बैलों को जोतने में प्रयुक्त पट्टी; किनारा

पट्टी- (स्त्री०) बाजू का गहना विशेष

पट्टे- (पु०) तोता

पट्ठा- (पु०) खूब हृष्ट पुष्ट व्यक्ति

पठिया- (स्त्री०) गर्भाधान के योग्य बकरी

पड़रू, पड़वा- (पु०) भैंस का बच्चा

पड़ियाबु- (क्रि० अ०) गाभिन होना

पड़ेल- (स्त्री०) गर्भाधान योग्य पड़िया

पढ़- (स्त्री०) परत; पर्री

पढ़िया- (स्त्री०) किनारी

पढ़ेला- (पु०) सुनारों के यहाँ प्रयुक्त यंत्र विशेष

पढ़्यालबु- (क्रि० स०) भेजना

पढ़ुवारा- (पु०) विवाह आदि में भोजन पर प्रचलित चने की दाल

पतकउरा- (पु०) बड़ी पतकी

पतकी- (स्त्री०) छोटी हँड़िया

पतर-पुक्का- (वि०) दुबला-पतला

पतरवार- (वि०) पतला-पतला

पतरी- (स्त्री०) पत्तों के पत्तल; (वि०) पतली

पताई- (स्त्री०) पत्तियों का ढेर

पताय- (स्त्री०) फर्नीचर में बनी नाली

पतिंगवा- (पु०) पतिंगा नामक उड़ने वाला कीड़ा

पतिकै- (क्रि० वि०) इच्छा भर के

पतिनास- (पु०) अपकीर्ति, बदनामी

पतियाबु- (क्रि० अ०) विश्वास होना

पतिहा- (वि०) पंक्ति वाला, श्रेष्ठ ब्राह्मण जिन्हें अवध में पंक्ति पावन कहते हैं

पतीर- (स्त्री०) पंक्ति; (वि०) पत्ते जैसा

पतुरपनु- (पु०) वेश्यापन

पतुरा- (पु०) फावड़े में प्रयुक्त लोहे का पत्ता

पतुरी- (स्त्री०) हल के मुँह पर लगने वाली चद्दर (लोहे की)

पतोई- (स्त्री०) गन्ने के खौलते हुए रस में उतराया हुआ अंश

पत्तुरु- (पु०) चाँदी आदि धातु का पत्ता

पत्यालबु- (क्रि० स०) भुट्टे आदि काटना

पत्वाह- (स्त्री०) पतोहू, बहू

पथरा- (पु०) मसाला आदि पीसने का पत्थर

पदगउंज- (पु०) पाजामे का हास्यास्पद नाम

पदराउकबु- (क्रि० अ०) दौड़-धूप करना, परेशान होना

पदाति- (क्रि० वि०) पैदल

पदानि- (स्त्री०) परेशानी

पदारथि- (स्त्री०) पदार्थ

पदिक- (स्त्री०) हार के बीच में प्रयुक्त चौकी

पनु- (पु०) जीवन का एक भाग

पनव- (पु०) पणव, छोटा ढोल

पनवट- (स्त्री०) पानी ले जाने की नाली

पनवारी- (स्त्री०) बारात पहुँचने पर नाई द्वारा लाया जाने वाला सामान

पनस- (पु०) कटहल

पनही- (स्त्री०) देशी जूती

पनारा- (पु०) पनाला

पनिगर- (वि०) पानी वाला; शानदार

पनियाबु- (क्रि० अ०) सब्जी आदि में पानी जैसा असर महसूस होना; नाली से खेत तक पानी पहुँचना

पनियावनि- (स्त्री०) सिंचाई साधन से लेकर खेत तक पानी पहुँचने की प्रक्रिया या नाली में लगने या रुकने वाला पानी

पनिहल- (वि०) पानी से युक्त

पनुआ- (पु०) पानी मिला हुआ गन्ने का रस

पनेठि- (स्त्री०) बैलों को हाँकने की डंडी

पनेहथी- (स्त्री०) मोटी रोटी, जिसे पानी लगा-लगाकर हाथ से ही बनाते हैं

पन्हाबु- (क्रि० अ०) दूध देने के लिए तत्पर होना, थन सहलाकर दूध उतारना

पपटा- (पु०) छीमी, जिसका दाना मजबूत न हो; पोपरा

पपरी- (स्त्री०) खौलते हुए गन्ने के रस में निकलने वाला पपराया हुआ अंश

पपिहरा- (पु०) आम के गुठली से उगाया गया पौधा; पपीहा चिड़िया

पय- (स्त्री०) अनैतिकता का आरोप

पयजनियाँ- (स्त्री०) बच्चों के पैरों का घुंघरूयुक्त गहना

पयट- (स्त्री०) पक्ष, बात
पयठारी- (स्त्री०) प्रवेश, स्थान
पयना- (पु०) पनेठि
पयमाल- (वि०) थका हुआ, गिरा, निर्बल
पयरोकार- (पु०) प्रतिनिधि (कचहरी में), कार्यकर्ता
पयल- (स्त्री०) पायल
पयलउँठी- (वि०) पहली (संतान)
पयसरमु- (पु०) परिश्रम, कष्ट
पयसुनी- (स्त्री०) पयस्विनी, नदी
पयान- (पु०) विदाई, रवानगी
पयार- (पु०) पैरा (बिना अन्न का पौधा)
परई- (स्त्री०) मिट्टी की छोटी तश्तरी
परकबु- (क्रि० अ०) चाट लगना
परकार- (पु०) व्यंजन, भोजन; यंत्र विशेष
परकोसा- (पु०) खलियान की भूमि का बटोरा हुआ भूसा, पुआल आदि का मिश्रित भाग
परग- (पु०) कदम, पग
परगहनी- (स्त्री०) गली हुई चाँदी जमाने में प्रयुक्त नालीदार बर्तन
परचउबु- (क्रि० स०) सुलगाना
परचबु- (क्रि० अ०) सुलगना
परचनी- (स्त्री०) गुड़ निर्माण सम्बन्धी उपकरण
परचि- (स्त्री०) पतला टुकड़ा
परचौ- (पु०) परिचय; विश्वास
परछती- (स्त्री०) छप्पर पर अलग से रखी गयी फूस की पट्टी
परछबु- (क्रि० स०) आरती उतारना
परछा- (पु०) मिट्टी का बर्तन
परजलित- (वि०) स्पष्ट, ज्ञात
परतल- (पु०) मौका, अवसर
परतला- (पु०) मक्का के भुट्टे का ऊपरी आवरण
परता- (पु०) सन्तुष्टि, उचित दाम
परतारबु- (क्रि० स०) बराबर करना, बराबर बाँटना
परती- (स्त्री०) गैर जोती–बोई जाने वाली (भूमि); -**लगउबु**- (क्रि० स०) अनाज साफ करने के लिए चादर द्वारा हवा चलाना
परते- (अव्य०) औसत
परदनी- (स्त्री०) धोती (पुरुष की)
परदोस- (पु०) द्वादशी का व्रत
परधान- (वि०) ईमानदार, सच्चरित्र; मुख्य
परन- (पु०) प्रण
परांन- (स्त्री०) ढेर, अधिक संख्य।
परपाजा- (पु०) परदादा, दादा के पिता
परबतिया- (वि०) लाल मिर्च की किस्म विशेष
परबस्ती- (स्त्री०) पालन, परवरिश
परबी- (स्त्री०) पर्व
परबु- (क्रि० अ०) फलीभूत होना; शक्ल या नस्ल का होना; पड़ना; (पु०) पर्व
परभाती- (स्त्री०) प्रातःकाल का गीत
परभातु- (पु०) प्रातःकाल
परमान- (पु०) अंदाजा, आदर्श
परवरदिगार- (पु०) ईश्वर, अल्लाह
परवरधारा- (पु०) लाश को नदी आदि में बहाने की प्रक्रिया
परवाना- (पु०) आज्ञा-पत्र
परसहिजे- (क्रि० वि०) खुलेआम
परसारबु- (क्रि० स०) बोने के पहले खेतों में पानी दौड़ाना; पलेवा करना
परसेंट- (पु०) फावड़े के नीचे का जुड़ा हुआ भाग
परस्वारथु- (पु०) पुरुषार्थ, परोपकार
परहबु- (क्रि० स०) बुआई से पूर्व खेत में पानी लगाना; छपाना
परहाल- (स्त्री०) हिम्मत, शक्ति
परात- (स्त्री०) बड़ी थाल
परार, परावा- (वि०) दूसरे का, पराया
परास- (पु०) फूल विशेष
परिपाटी- (स्त्री०) रीति, प्रथा
परिया- (स्त्री०) मिट्टी का छोटा बर्तन
परियादी- (पु०) चमड़े का चार पर्तों वाला झोला
परिवा, परेवा- (पु०) प्रतिपदा, मासिक पक्षों की प्रथम तिथि
परिहत या परिहथ- (पु०) मुठिया का निचला टेढ़ा भाग

परिहाँ- (परसर्ग) पर

परिहारी- (पु०) हल से संलग्न निचला टेढ़ा भाग

परी- (स्त्री०) तेल आदि मापने का अत्यन्त लघु पात्र; अप्सरा

परुई- (स्त्री०) भड़भूजे की अनाज भूनने की नांद

परेटे- (पु०) बड़ा मैदान; ट्रिल

परेटी- (वि०) जूते की किस्म विशेष, जिसकी पूरी नोंक पतली होती है

परेवा- (स्त्री०) प्रतिपदा, चिड़िया विशेष

परोहनु- (पु०) पालतू पशु

परौं- (अव्य०) परसों

परौता- (पु०) कृत्रिम तरीके से वायु को चलाने की चद्दर

पलई- (स्त्री०) शाखा या डाल का सिरा

पलका- (पु०) पलंग

पलरा- (पु०) तराजू में प्रयुक्त डलिया

पलस्तरु- (पु०) रंदे में लगा हुआ लौह अवयव; दीवाल में किया गया सीमेंट आदि का लेप

पलहरी- (स्त्री०) काठी के ऊपर बोरों को कसने में प्रयुक्त रस्सी

पलाल- (वि०) कामचोर

पलिन्दो- (वि०) पताम साफ करने का रंदा

पलिहर- (वि०) वह खेत आदि, जो बोया-जोता न जाता हो; वि० परती

पल्याथनु- (पु०) रोटी बनाते समय सहायक सूखा आँटा; अपयश

पल्लरु- (पु०) प्रलय

पल्ला- (पु०) किंवाड़; दूरी; कोंछ या आँचल

पल्ली- (स्त्री०) जूट की चादर

पल्लें- (क्रि० वि०) अधिकार में

पल्ले- (अव्य०) समझ, दिमाग़

पल्लौ- (पु०) बड़ी चादर, नये पत्ते

पवँरि- (स्त्री०) देहरी, चौखटि

पवई- (स्त्री०) मिट्टी का बर्तन विशेष

पवपूजी- (स्त्री०) पैर पूजने के साथ दिया गया द्रव्य, ब्याह का एक अंग या संस्कार

पवबारा- (पु०) सुन्दर अवसर

पवहारी- (वि०) केवल दूध पीने वाला (साधू)

पवाई- जुता या खड़ाऊँ

पवित्री- (स्त्री०) घी (साधुओं की बोली में) पइँती

पसंघा- (पु०) तराजू में एक तरफ लटक होने वाला भार

पसगइयत- (स्त्री०) एकान्तता

पसम- (पु०) बाल, गुप्तांग के बाल

पसरबु- (क्रि० अ०) फैलना, लेटना, गिरना

पसर- (स्त्री०) फैली हुई हथेली (में जितना आ सके)

पसावन- (पु०) चावल का माड़

पसीजबु- (क्रि० अ०) द्रवित होना; चूल्हे पर चढ़ी बटूई आदि में हल्का पसीना जैसा पानी छूटना

पसुरी- (स्त्री०) पसली (हड्डी विशेष)

पसेव- (पु०) पसीना

पस्ट, पस्त, पहट- (वि०) गिरा हुआ (मकान)

पस्मीना- (पु०) कश्मीरी बकरियों के मुलायम बालों का बना हुआ ऊनी वस्त्र

पहँटवारी- (स्त्री०) बीड़र उगी हुई अरहर

पहट्यउबु- (क्रि० स०) जुताई के पहले गीले खेत को पाटा से बराबर करना

पहनबु- (क्रि० स०) प्रविष्ट करना, बन्द करना, पहनना

पहरूआ- (पु०) मूसल

पहलु- (पु०) रूई का छोटा ढेर

पहसुल- (वि०) थकावट मुक्त (अंग)

पहाट- (पु०) चौड़ाई (नदी की); (सम्बो०) पाटा चलाते समय बैलों से बोला जाने वाला शब्द

पहिती- (स्त्री०) पकी दाल

पहिलउठा- (वि०) प्रथम बार के गर्भ से जन्मा

पही- (स्त्री०) गेहूँ की फसल का ढेर

पहुँचा- (पु०) कलाई

पहुँचारी- (स्त्री०) भुजा का आभूषण विशेष

पहुँची- (स्त्री०) पहुँचारी

पहुँटिया- (स्त्री०) फली

पहुना- (पु०) मेहमान; वि० पाहुन

पाँखी- (स्त्री०) बरसात के दिनों में दीपक आदि को देखकर आने वाले कीड़े पतिंगा, पक्षी

पाँचड़ा- (पु०) पहिये के आरों को कसने हेतु ठोंके गये लकड़ी के टुकड़े

पाँचा- अनाज या भूसा समेटने के लिए पाँच अंगुलियों वाला लकड़ी का यन्त्र

पांजर- (पु०) हड्डियों का ढाँचा, पंजर

पाँड़ा- (पु०) भैंस का नर बच्चा

पाँति- (स्त्री०) पंक्ति; सरवार के सर्वश्रेष्ठ ब्राहमणों की श्रेणी, जिन्हे पाँतिहा एवं पंक्तिवान भी कहते हैं

पाँढ़े-पाँढ़े- (संबो०) जानवरों को पानी पीने के लिए संकेतक आवाज

पाँपा- (पु०) गेहूँ में लगने वाला कीटाणु

पांवटी- (स्त्री०) पैर का मांसल भाग

पाँवड़ी- (स्त्री०) हथकरघे का अंग विशेष, जिस पर पैर रखकर चलाया जाता है

पाँवरी- (स्त्री०) जूती

पाँसि- (स्त्री०) खाद

पाई- (स्त्री०) सुनारों में प्रचलित चवन्नी का गुप्त नाम; एक पैसा

पाकु- (वि०) पवित्र

पाख- (पु०) पक्ष

पाखरी- (स्त्री०) गाड़ी में सामान भरने के लिए टाट आदि का बना पल्ली

पाग, पागी- (स्त्री०) पगड़ी

पागि, पागु- (स्त्री०) मिठाई की चाशनी

पागुर- (पु०) जुगाली, चाप

पाचड़ा- (पु०) बैलगाड़ी का पुर्जा विशेष

पाचरि- (स्त्री०) गन्ने के कोल्हू का एक भाग, जिसे ठोंककर कोल्हू कसा जता है

पाचाल- (पु०) वह गढ़ा, जिसमें जुलाहे कपड़ा बुनते समय पाँव लटकाते है

पाटि- (स्त्री०) हल में हरीस को कसने के लिए लगी हुई लकड़ी; ढेकी में प्रयुक्त बल्ली; हाथ भर की लम्बाई

पाटी- (स्त्री०) बड़े पशुओं के शरीर के पूरे चमड़े का आधा भाग

पाठ- (स्त्री०) गर्भाधान के योग्य बकरी

पाठा- (पु०) हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति

पाढ़ि- (स्त्री०) साड़ियों का चौड़ा किनारा; दीवाल जोड़ते समय बनाया गया मचान

पाढ़ी- (स्त्री०) औषधि में प्रयुक्त वनस्पति विशेष

पात- (पु०) कान में पहनने का आभूषण

पातर- (वि०) पतला, अनुदार

पाता- (पु०) पत्ता

पाती- (स्त्री०) चिट्ठी; पत्ती

पाथी- (स्त्री०) नाज रखने की टोकरी

पानी-पत्ता- (पु०) जलपान, कलेवा

पायठ- (स्त्री०) प्रवेश, गुजर

पायदार- (वि०) मजबूत; समृद्ध

पार- (अव्य०) तरफ; आर-पार

पारन- (पु०) व्रत के बाद का भोजन

पारा- (पु०) आलू बोते समय बीच-बीच बनाये गये बरहा; समतल देखने का यन्त्र विशेष, तिपाग

पारबु- (क्रि० स०) छप्पर बनाते समय ठाठ पर पतावर बिछाना; काजल बनाने हेतु दीपक पर कोई बर्तन ढकना, काम बिगाड़ना

पारालबधु- (पु०) संयोग; भाग्य; समय

पारि- (स्त्री०) बच्चों के खेलों में खींची गई रेखा, सीमांकन

पारी- (स्त्री०) गुड़ की गोल व सुडौल बट्टी

पाल- (पु०) तालाब का बाँध

पालव- (पु०) ग्राम से छोटा पुरवा, पुरवा से छोटा पुरई और पुरई से छोटा अर्थात दो तीन घर वाले को पालव कहते हैं; (स्त्री०) झड़ बेर की कोमल टहनी

पाला- (पु०) बर्फ; कबड्डी खेल में बनी रेखा

पाली- (पु०) पल्लव

पावदान- (पु०) सिलाई मशीन में प्रयुक्त मशीन छोड़कर बाकी मेज सहित ढाँचा; मोचियों की तीन फनों वाली अड्डी

पावा- (पु०) खाट का पैर; स्तम्भ, खंभा

पासा- (पु०) कुदाल का सिरा

पाही- (वि०) गाँव से दूर की (खेती)

पाहुन उपही- (पु०) रिश्तेदार-व्यवहारी

पिंजनी- (स्त्री०) बैलगाड़ी की पहिया रोकने हेतु प्रयुक्त पट्टी विशेष, पइंजनी

पिंजी– (स्त्री०) दाना रहित सरसों का सूखा पौधा, डण्ठल

पिंड– (पु०) मकान की लम्बाई–चौड़ाई, मनुष्य का पीछा; लुगदा

पिउ– (पु०) पति; प्रिय

पिउरी– (स्त्री०) रुई की पूनी

पिच्चा– (वि०) पिचका हुआ; पिचड़ा

पिछउरी– (स्त्री०) दो पर्त की चादर; पिछउरा; (कहा०) कंबर पर जब परे पिछउरी, जाड़ बेचारा करै विरउरी

पिटवारी– (स्त्री०) पुर

पिट्ठूरा– (पु०) गुड़ में मसाला मिलाकर बनाई गयी बर्फी

पिट्ठू– (पु०) अनुयायी, चेला

पिठलगी– (स्त्री०) दाल आदि के दानों में लगी रह गई भूसी

पिठाला– (पु०) पीछे का भाग, पीठ

पिड़री– (स्त्री०) रुई की पूनी

पिड़िथउबु– (क्रि० स०) संगवारियों पर गीली मिट्टी चढ़ाना

पिढ़ई– (स्त्री०) पीठासन; पेढ़ई

पिढ़ान– (वि०) वह अरहुल, जिसकी धार मोटी हो जाती है

पिण्डरोगु– (पु०) कुष्ठ रोग, सिरदर्द, परेशानी

पिण्डा– (पु०) गयाजी में तर्पित शरीर का प्रतीक स्वरूप आँटा आदि का पिण्ड; मिट्टी की लोई या बट्टी

पिण्डु– (पु०) पीछा

पितकोपु– (पु०) क्षोभ; वह भाव, जो पिता को कुपुत्र मिलने पर होता है

पितियाउत– (वि०) चचेरा

पितियानी– (स्त्री०) चाची

पित्ते– (पु०) चाचा

पिनाल्क– (वि०) कठिन

पिन्चिस– (स्त्री०) कर्मा पर खींचकर चमड़ा चढ़ाने का यंत्र

पिपिहिरी– (स्त्री०) लकड़ी की बाँसुरी, जिसे बच्चे बजाते हैं

पियउस– (पु०) गाय आदि के ब्याने पर पहली बार का दूध

पियर– (वि०) पीला

पियरी– (स्त्री०) पीली धोती

पियादा– (पु०) पैदल चलने वाला; सिपाही, संदेशवाहक

पिरउधी– (वि०) पीड़ा दूर करने वाला; हमदर्द

पिरकी– (स्त्री०) फुड़िया, फुंसी

पिरथी– (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि

पिरिक– (वि०) परेशान; -होबु – (क्रि० अ०) परेशान हो जाना या ऊब जाना

पिरुआ-पिरोंसा– (पु०) धान के पुआल का टूटा व कुचला हुआ अंश

पिलबु– (क्रि० अ०) घुसना, कुओं आदि में उतरना

पिल्लही– (वि०) असमतलता से युक्त (रजाई); ओंझर

पिल्सन– (अ० स्त्री०) माहवारी; पेंशन; पेन्सिल

पिसाना– (पु०) आँटा पिसाने हेतु तैयार साफ सुथरा अनाज; (क्रि० अ०) पिस जाना

पिसरान– (पु०) पुत्र लोग; प्रायः कचहरी–कागजों में यह शब्द पहले प्रयुक्त होता था, जिनमें पिता–पुत्र के नाम लिखे जाते थे

पिसानु– (पु०) आटा; पिष्टातु

पिसुन– (वि०) दुष्ट व्यक्ति; "पिसुन छल्यो नर सुजन कों"

पिहानु– (पु०) देहरी का ढक्कन; पैहना; (कहा०) "जब आवा किसान। तब खुला पिहान।।"

पींड़– (स्त्री०) पौधों की जड़ों को रोकने के लिए उनमें बनी मिट्टी

पींड़ी– (स्त्री०) सुघनी; मिट्टी की पिंडी

पीटबु– (क्रि० स०) लोहखर में पीटकर धार बनाना; धारना

पीठा– (पु०) थोड़ा–सा आँटा, जो किसी देवता को लौंग के साथ चढ़ाया जाता है

पीठी– (स्त्री०) दाल का राना हुआ आँटा जिसका बड़ा पकौड़ा आदि बनता है

पीढ़– (स्त्री०) गगरी आदि बनाने में प्रयुक्त पक्की मिट्टी का साँचा

पीढ़ाबन्द– (पु०) गीत की प्रारम्भिक पंक्ति, टेक

पीनसि- (स्त्री०) पालकी

पीर- (स्त्री०) दर्द, पीड़ा; (पु०) मुस्लिम महात्मा

पीरा- (पु०) दर्द, पीड़ा

पीरु- (पु०) चकिया का पिल

पीहर- (पु०) मायका अर्थात् लड़की के माँ का घर

पुँछटा- (पु०) धुनकी का अंग, जो चमड़े से निर्मित होता है

पुँछ्याला- (पु०) पूँछ (पिछले भाग) के आसपास का चमड़ा

पुँजटा- (पु०) कपड़ा की सिकुड़न

पुंजापा- (पु०) पूजा-पाठ

पुआइनि- (वि०) दुर्गंधपूर्ण

पुइहट- (पु०) भीतर भरा हुआ पुआल, रूई आदि

पुच्ची- (स्त्री०) अत्यन्त छोटा आकार

पुछनी- (स्त्री०) विवाह सम्पन्न होने में प्रचलित एक रस्म, जो लड़के वाले लड़की के घर पर जाकर पूरी करते हैं

पुछ्याटा- (पु०) धुनकी की करही में प्रयुक्त पूँछ वाला हिस्सा

पुजाही- (स्त्री०) गठरी, जिसमें पूजा का सामान हो

पुटकिया- (स्त्री०) छोटी पोटली

पुट्ट- (वि०) पेट के बल लेटा हुआ; **-वानि-** (स्त्री०) दीवाल की जड़ के सहारे मजबूती हेतु बनी मेंड़

पुट्ठा- (पु०) पुट्ठे (पशुओं की पीठ का पिछला भाग) का चमड़ा

पुट्ठी- (स्त्री०) पहिया के घेरे में प्रयुक्त लकड़ी के टुकड़े

पुढ़- (पु०) चमड़ा का बड़ा पात्र, जो सिंचाई हेतु कुआँ से पानी निकालने में प्रयुक्त होता है; वि० पुरु

पुतरा- (पु०) बदनामी का बहाना

पुथा- (स्त्री०) घोड़े के थूथुन के नीचे और दाँतों के ऊपर की मुलायम खाल

पुद्दन- (वि०) खराब; भद्दा; बच्चों द्वारा प्रयुक्त

पुनस्तर- (पु०) अंग, शारीरिक शक्ति; **- ढील होबु-** (मुहा०) "अधिक थक जाना"

पुन्नवासी- (स्त्री०) पूर्णमासी

पुन्ना- (वि०) पुराना

पुन्नि- (स्त्री०) पुण्य; पुण्य संस्कार

पुपुहाबु- (क्रि० स०) कोई बात इधर-उधर प्रचारित कर देना; (क्रि० अ०) चिल्लाना

पुपुही- (स्त्री०) सरसों आदि के पौधों का गोल ढेर (माँड़ने के लिए प्रयुक्त)

पुरइनि- (स्त्री०) कमल का पेड़

पुरई- (स्त्री०) पुरवा से छोटा घर-समूह

पुरकाम- (वि०) मजबूत (वस्तु)

पुरजोर- (वि०) अत्यधिक

पुरनमासी- (स्त्री०) माह का अन्तिम दिन, पूर्णमासी, पूर्णिमा

पुरबिल- (अव्य०) पूर्व समय में

पुरबुजु- (पु०) पूर्व जन्म

पुरबुलु- (पु०) कष्ट, परेशानी

पुरसा- (पु०) पुरुष के हाथ उठाकर खड़े होने तक की ऊँचाई या गहराई

पुरहर- (अव्य०) काफी

पुरहाई- (वि०) पुर के द्वारा सिंचाई के काम में प्रयुक्त (कुआँ)

पुरायठ- (वि०) हृष्ट-पुष्ट, पूरी अवस्था का

पुराही- (स्त्री०) कुएँ से पुर द्वारा पानी निकालने का साधन

पुरु- (पु०) कुआँ से पानी निकालने में प्रयुक्त चमड़े का बड़ा बर्तन

पुरौंवाँ, पुरौंहा- (वि०) प्रतिवर्ष ब्याने वाली (गाय या भैंस)

पुर्वाहबु- (क्रि० स०) पिण्ड आदि का तीर्थ में छोड़ना या तर्पण करना

पुलई- (स्त्री०) वृक्ष या डाल की चोटी

पुलटिस- (स्त्री०) तीसी या आँटे की गर्म-गर्म गोली, जिससे सेंक की जाती है

पुलपुल- (वि०) मुलायम, नरम

पुस्तवान- (स्त्री०) किंवाड़ों की चौड़ाई में लगने वाली लकड़ी की पट्टी; अड़ुवा

पुस्तैनी- (फा० वि०) खानदानी (जायदाद आदि), कई पीढ़ियों से चला आ रहा

पुहबु- (क्रि० स०) तागा में फूल गूँथना

पुँछारि-पुँछाड़ि- (स्त्री०) मोरनी
पूँजा- (पु०) नई-नई शाखाओं का समूह
पूती- (स्त्री०) गोल जड़ (घुइयाँ आदि की), दाना
पूतु- (पु०) पुत्र
पूनो- (पु०) पूर्णिमा
पूरन- (वि०) पूर्ण
पूरबु- (क्रि० अ०) घाव आदि भर जाना; दीपक बढ़ जाना या बुझ जाना; (पु०) पूर्व दिशा
पूरा- (पु०) ज्वार आदि के गट्ठर; (वि०) पूर्ण
पूरी- (वि०) पूर्ण; (स्त्री०) पूड़ी; -तना- (क्रि० वि०) पूर्णतया, पूरी तरह
पेंडुरी- (स्त्री०) पाँव का पिछला ऊपरी भाग, पिंडरी
पेंदिया- (स्त्री०) टोकरी आदि का तल
पेउंदहा- (वि०) वह कपड़ा, जिसमें पेउंदा लगे हों
पेउंदा- (पु०) पैबंद
पेउसी, फेउसी- (स्त्री०) गाय आदि के ब्याने पर प्रथम दिन का दूध
पेट-पोछनी- (वि०) अन्तिम (सन्तान)
पेटहरा- (पु०) कमरे आदि की चौड़ाई
पेटावा, फेटावा- (पु०) अत्यन्त छोटे बाल
पेड़ार- (पु०) एक जंगली पेड़, जिसके फल की तरकारी बनती है
पेड़ियाउर- (वि०) जड़ पर मिट्टी चढ़ाने योग्य
पेडुरी- (स्त्री०) पेट के नीचे का भाग
पेढ़ई- (स्त्री०) बैठने में प्रयुक्त लकड़ी का पाटा
पेढ़वा- (पु०) गोल व चपटा पत्थर, जिस पर रोटियाँ बेली जाती हैं
पेरकवा- (वि०) पीला वाला
पेरी- (स्त्री०) पीली धोती
पेलबु- (क्रि० स०) अमान्य करना; धँसाना
पेला- (पु०) अपराध
पेवत्त- (वि०) प्रविष्ट; -होबु- (क्रि० अ०) सोख जाना, प्रविष्ट होना
पेस्तर- (वि०) अग्रिम; पूर्व
पेहँटुआ- (पु०) ककरी की किस्म विशेष; वि० कचलुआ
पेहना- (पु०) डेहरी का ढक्कन; पिहाना
पैकार- (पु०) मतलब; सब्जी के क्रेता-विक्रेता
पैज- (स्त्री०) यात्रा, लक्ष्य
पैजनिया- (स्त्री०) आभूषण विशेष
पैट- (स्त्री०) हथकरघे का वह अंग, जिसमें तागे का रंग बदला जाता है
पैड़ारी- (स्त्री०) पदचिह्नों से बना मार्ग
पैंढ़ी- (स्त्री०) पुरहाई कुएँ का वह स्थान, जहाँ बैल चलते हैं
पैदाइसि- (फा० स्त्री०) जन्म
पैदाइसी- (फा० वि०) स्वाभाविक, जन्मतः
पैधोउआ- (पु०) पैरों को धोने की प्रक्रिया
पैपिंग- (स्त्री०) आधा अंगुल चौड़े कपड़े की पट्टी, जिसे जोड़कर किसी चद्दर या तकिया की सिलाई की जाती है
पैरबु- (क्रि० अ०) तैरना
पैरवल- (अं० स्त्री०) सजा की अवधि पूरी होने के पूर्व कैदी को नियत समय के लिए प्रदत्त छुट्टी
पैरा- (पु०) धान के पौधे
पैरु- (पु०) गेहूँ माँड़ते समय एक बार में तोड़े गये बोझों का ढेर; -तोरउबु- (क्रि० स०) बोझ खोलकर उसी में डालना
पैसरपु- (पु०) मेहनत, परिश्रम
पोंगड़ा- (पु०) घुटने के नीचे के पैर का भाग
पोंगा- (पु०) पैर, (वि०) अल्पज्ञ, मूर्ख
पोंड़ा- (पु०) बाँस का नया कल्ला
पोंड़िका- (पु०) एक-दूसरे के खेतों को मिल-जुलकर जोतने की क्रिया
पोंपरा- (पु०) गीली भूमि, दीवार आदि के ऊपर का सूखा भाग; पपरा
पोंगली, पोंगिया- (स्त्री०) नाक में पहनी जाने वाली बड़ी फूलदार कील
पोंगी- (स्त्री०) माला में प्रयुक्त नलकी
पोइसि- (स्त्री०) थकावट, परेशानी
पोई- (स्त्री०) गन्ने की प्रारम्भिक शाखा
पोखरा- (पु०) तालाब
पोख्ता- (वि०) मजबूत, सुदृढ़, पुख्ता

पोटा– (पु०) नाक के भीतर से निकला हुआ द्रव मैल

पोटी– (स्त्री०) पेट के अन्दर की हड्डी

पोढ़ि– (वि०) मज़बूत

पोढ़िया– (स्त्री०) पैर की छोटी उंगली में पहना जाने वाला आभूषण

पोतनहरि– (स्त्री०) आँत, नाभिकीय नस; (वि०) पुताई करने वाली

पोता– (पु०) पौत्र; अण्डकोष

पोतिया– (स्त्री०) घुइयाँ के पौधे में जमीन से निकला हुआ अंकुर

पोती– (स्त्री०) माला में प्रयुक्त गुरिया; पौत्री

पोपटा– (पु०) छीमी, जिसका दाना मजबूत न हो; पपटा

पोपला– (वि०) जिसके मुँह में दाँत न हों

पोला– (पु०) सूत का लोटा गुच्छा; "मियाँ बजोरै ताग–ताग औ बीबी लड़ावैं पोला"

पोलु– (पु०) भेद, कलई, रहस्य

पोहतबान– (पु०) पोस्तबान

पौहियाउबु– (क्रि० स०) सिंचाई करने के लिए फावड़े से नाली बनाना

प्यउंदा– (पु०) पैबन्द

प्यौंड़ा– (पु०) पानी खींचने की रस्सी का वह भाग, जिससे बर्तन बाँधा जाता है

प्याटा अरथू– (वि०) अधिक खाने वाला

प्यतना– (पु०) कपड़ा, जिससे चौका–चूल्हा आदि पोता जाय

प्याखरु– (पु०) तालाब, पोखर

प्याढ़– (वि०) मजबूत, (पु०) लाठी आदि की गाँठ

प्यात– (स्त्री०) खेतों की लगान; पोत

प्याल– (वि०) खोखला, कमजोर

प्याला– (पु०) सड़क पर मिट्टी आदि भरने हेतु थोड़ी–थोड़ी लम्बाई में किनारे–किनारे मिट्टी आदि डालने से बीच का खाली या खोखला स्थान; (वि०) कमजोर

पैंदिया– (स्त्री०) चमड़े की पट्टी विशेष, जो वृक्षों पर चढ़ने में सहायक होती है; छोटा गट्ठर

पैंसरी– (स्त्री०) बांधने की रस्सी, फाँसी

फइँचि– (स्त्री०) बारीक लकड़ी का टुकड़ा, जो काँटे की तरह गड़ जाए

फइंट्याबु– (क्रि० अ०) नाराज़ होना

फइहाबु– (क्रि० अ०) चिल्लाना, व्यर्थ में रोना; (वि०) फेहाबु

फउल– (वि०) मरा हुआ

फउदि– (स्त्री०) फौज

फउरम– (क्रि० वि०) तुरन्त

फउरेबु– (पु०) जाल, षडयंत्र, छल–प्रपंच

फक्कना– (पु०) पतला रद्दी कपड़ा; आँटा आदि से निर्मित मीठा चूर्ण; कफन का कपड़ा

फक्यक– (वि०) बदरंग; निस्तेज (चेहरा)

फक्कड़– (वि०) मस्त, निर्भीक और पहुँचा हुआ

फगुई– (स्त्री०) होली

फजरी– (वि०) एक प्रकार का अच्छा आम

फजिरम– (क्रि० वि०) सूर्योदय के समय

फजिहति– (स्त्री०) दुर्दशा, डाँट–फटकार, बेइज्जती

फज्जी– (स्त्री०) लकड़ी का पतला टुकड़ा; फर्री

फट्टंदि– (क्रि० वि०) झट से; फट की आवाज से

फड्डु– (वि०) चालबाज (पु०) (बाँस का) चीरा हुआ लम्बा टुकड़ा; बांस; पर्त

फड्डु– (पु०) बिना पहियों की बैलगाड़ी; द्यूत–क्रीड़ा स्थल; मैदान

फतुही– (स्त्री०) स्त्रियों का छोटा ब्लाउज; सदरी विशेष

फतरू– (पु०) घोड़ा, षडयन्त्र; मैल

फते– (अर० स्त्री०) विजय, (वि०) समाप्त

फद्दा– (स्त्री०) रेतीला खेत; धूल

फर्यंकट– (वि०) धोखेबाज

फरई– (स्त्री०) लकड़ी का बना एक साँचा

फरक्का– (पु०) छप्पर का एक भाग

फरगाड्ड–(वि०) विस्तृत एवं स्वच्छ (जगह)

फरजी– (फा० पु०) (शतरंज की) वज़ीर; (वि०) काल्पनिक, झूठा

फरबु– (क्रि० अ०) फलना या फल लगना; गाय आदि जानवरों का गर्भ धारण करना

फरवट- (वि०) चतुर, चालाक, तेज

फरसी- (स्त्री०) हुक्का, जिसे फर्श पर रखकर पी सकें

फरहरी- (वि०) उपवास सम्बन्धी

फरहा- (पु०) तन्त्वहीन अनाज; थोथा

फरिका- (पु०) टटवा

फरिया- (स्त्री०) ओढ़नी

फरिवाह- (वि०) फरी मारने वाला; अद्भुत खेल दिखाने वाला

फरी- (स्त्री०) बैलगाड़ी में किनारे लगने वाली दो लम्बी पटियाँ

फरीक- (अ० पु०) पक्ष

फरुहा- (पु०) फावड़ा

फरुही- (स्त्री०) गोबर आदि समेटने में प्रयुक्त का लकड़ी का यंत्र; छोटा फावड़ा

फर्च- (वि०) साफ, शुद्ध

फर्रा- (पु०) लंगोटा में लगी आगे की पट्टी

फर्री- (स्त्री०) ईंट का लम्बाई-चौड़ाई में फटा हुआ आधा अंश, पट्टी

फर्श- (स्त्री०) जीत, मैदान या फर्श

फलाँस- (स्त्री०) गीले खेत में जोतने के पहले चलाया गया पाटा

फलाने- (वि०) अमुक

फलास- (पु०) द्यूत-क्रीड़ा, जो ताश के साथ खेला जाता है

फसला- (वि०) मछली पकड़ने में प्रयुक्त जाल विशेष

फाँक- (स्त्री०) टुकड़ा (फलादि का)

फाँका- (पु०) बड़ी फाँक; अतृप्ति; लंघन

फाँटु- (पु०) कागज़, जिस पर हिस्सेदारों की भूमि का ब्यौरा अलग लिखा हो

फाँड़- (पु०) कमर के दोनों ओर का भाग

फाँता- (वि०) होशियार

फांदी- (स्त्री०) ऊँख का गट्ठर

फाँफर- (वि०) फोंकल, दानारहित (धान आदि)

फाँफी- (स्त्री०) पतली मलाई; साढ़ी

फाजिल, फादिल- (वि०) अधिक

फाठी- (स्त्री०) थोथा सरसों

फाना- (पु०) डोरी या उबहन का वह भाग, जो बर्तन के चारों ओर बाँधा जाता है

फाफा- (वि०) झूठ, (पु०) बहुत हल्की बरसात

फारकती- (स्त्री०) पति-पत्नी के बीच अलगाव की लिखा पढी

फारी- (स्त्री०) फिरिया, ओढ़नी

फाल- (स्त्री०) बैल आदि की लिंग; साड़ी के निचले सिरे में लगायी जाने वाली अतिरिक्त पट्टी

फालिज, फालिस- (स्त्री०) रोग, जिससे अंग विशेष संज्ञाहीन हो जाता है

फिकिर- (फा० स्त्री०) फिक्र, चिंता

फितरती- (वि०) मेहनती, बुद्धिमान

फितूरु- (पु०) संशय, नाराज़गी

फिदा- (वि०) आसक्त

फिन- (अव्य०) फिट; -**फिना**- (पु०) रुलाई, नखरा

फिरंट- (वि०) खिलाफ

फिरकी- (स्त्री०) पुर में लगाई गयी अलग से चमड़े की छोटी-छोटी टिक्कियाँ; तागा की फुल्ली; वनस्पति विशेष; ऊँट की नकेल की लकड़ी

फिरउबु- (क्रि० स०) दही मथना; वापस करना

फिराक- (अव्य०) विचार, चक्कर, खोज; (स्त्री०) फ्राक; जुदाई

फिरिउ- (अव्य०) फिर भी

फिरिक- (स्त्री०) सबसे छोटी बैलगाड़ी

फिलेट- (वि०) सुनहली और चमकदार सीमी (काँच की चूड़ी)

फीलखाना- (पु०) घर, जिसमें हाथी रहें

फुंदिया- (स्त्री०) इजारबन्द के फुलरे

फुचरा- (पु०) लकड़ी आदि का किनारे का पतला भाग

फुटमति- (स्त्री०) असहमति, वैमनस्य

फुटहरा- (पु०) भूना हुआ चना, जिसका छिलका उतर गया हो

फुट्टइल- (वि०) अलग असम्मिलित

फुट्टा- (वि०) फुटकर

फुफुनी- (स्त्री०) स्त्रियों की धोती का वह चुना भाग, जो पेट के ऊपर रहता है

फुफुरी- (स्त्री०) घेरा
फुर- (पु०) सप
फुरफुरिया- (स्त्री०) फुलझड़िया
फुरिया- (स्त्री०) फोड़ा
फुलका- (पु०) हल्की, पतली रोटी
फुलरा- (पु०) कृत्रिम फूल
फुलवाई- (स्त्री०) फुलवारी
फुल्ला- (पु०) लावा
फूवा- (स्त्री०) बाप की बहिन
फूसरी- (स्त्री०) फुड़िया
फूह- (स्त्री०) पकड़, गाँठ
फूट- (स्त्री०) बैर भाव; पकी ककड़ी
फूहर- (वि०) बेढंगा
फूली- (स्त्री०) आँख का सफेद जाला
फूही- (स्त्री०) फुहार
फेंटार- (पु०) काला साँप
फेंटू- (पु०) धोती का वह भाग, जो कमर में ऊपर से बाँध लिया जाता है; फ्याँटा
फेउसी- (स्त्री०) देखिए 'पियउस'
फेल्कारे- (क्रि० वि०) खोले हुए
फेटार- (पु०) सर्प विशेष
फेदर- (पु०) स्त्रियों का गुप्तांग
फेनिया- (स्त्री०) कच्ची दीवालों में, मिट्टी व गोबर मिश्रित लगाया जाने वाला लेप
फेफन- (पु०) गला
फैंकट- (वि०) शरारती
फैन- (पु०) नखरा
फैलसुफा सैलानी- (वि०) खर्चीला
फैलसूफ- (वि०) व्यर्थ का व्यय करने वाला
फोंकाजोर- (पु०) ईख के छोटे-छोटे टुकड़ों में एक-दूसरे से मिलाकर बोने का कार्य
फोकट- (वि०) मुफ्त
फोकली- (स्त्री०) अन्न के ऊपर का छिलका; ठोंठी
फोटका- (पु०) फफोला
फोपसाउबु- (क्रि० स०) कृत्रिम ढंग से अमरूद को पकाना
फ्याँटा- (पु०) धोती का वह भाग, जो कमर में ऊपर से बाँध लिया जाता है; फेंटु
फ्यारा- (पु०) चक्कर; छाया (भूत-प्रेत सम्बन्धी)
फ्वाँक- (स्त्री०) कपड़ा आदि में फटने का निशान, खुचकर, चीरा
बंक- (अ० स्त्री०) बैंक, नहर के आसपास का किनारा
बंकनार, बंकलाप- (स्त्री०) सुनारों के यहाँ प्रयुक्त छोटी फुकनी
बंगरहा- (वि०) अवध में पायी जाने वाली बैल की जाति विशेष, बांगर
बंगरी- (स्त्री०) गहना विशेष
बंगली- (स्त्री०) सबसे पीछे या बगल की छोटी कोठरी या कमरा
बंगा- (पु०) बच्चों का एक खेल, जिसमें पानी में पत्थर-ईंट आदि फेंककर सब चिल्लाते हैं "कै सेर बंगा" और फिर सब पानी में डुबकी लगाकर उसे ढूँढते और कहते- "अढ़ाई सेर बंगा"; (वि०) वह (भैंस) जिसके सींग फैले हुए हों
बँटबु- (क्रि० स० अ०) हाथ से रस्सी बनाना; वितरित होना
बंटाढार- (वि०) गड़बड़, सर्वनाश
बँड़ेरी- (स्त्री०) कच्ची छत पर आसपास उठी मेंड़ मुँड़ेरि
बंता- (पु०) स्त्रियों के आने-जाने का मुहूर्त (जो 'बनता' हो)
बंदु- (पु०) बैलगाड़ी में लगे जगह-जगह लोहे के बाँध
बंदरी- (स्त्री०) रबी की फसल में होने वाली घास विशेष
बंदा- (पु०) कपड़े के पतले बंद, जो किनारे बाँधने के लिए लगे होते हैं; दास, प्राणी
बंदिस- (फा० स्त्री०) प्रतिबन्ध; गाँठ; योजना
बंदी- (स्त्री०) माथे पर धारण करने वाला एक आभूषण
बंदेल, बंद्याला- (वि०) ज्वार के जिन पौधों में भुट्टे नहीं पड़ते
बंदौबस्तु- (फा० पु०) इंतजाम, प्रबन्ध
बंधान- (पु०) सूप आदि में लगे बंधन

बंध्याज- आँड़, रोक

बंबा- (पु०) हैण्ड पम्प; नहर से निकला नाला

बंबु- (पु०) रणनाद; बड़ा गड्ढा

बंभनी कुम्हड़ा- (पु०) एक फल विशेष, जिसकी पेठा नामक मिठाई बनती है

बँवरा- (पु०) कपड़ा पकड़कर हवा करने का तरीका (खलिहान में नाज साफ करने में प्रयुक्त) वि० परती

बँसवाड़ि- (स्त्री०) बाँसों का वृक्ष समूह

बँसुली- (स्त्री०) कृषि यंत्र

बइंगबु- (क्रि० स०) फेंकना; वि० झिकबु

बइठकी- (स्त्री०) हलवाह के काम न करने का दिन; छुट्टी

बइठुआ- (वि०) काम करते समय बैठ जाने वाला बैल आदि

बइकल- (वि०) पागल; गूंगा

बइना- (पु०) संस्कार विशेष में वितरण की जाने वाली पूड़ी, मिठाई आदि

बइपारु- (पु०) व्यापार, री- व्यापारी

बइबी- (वि०) अपरिचित, बाहरी

बइरिहा- (वि०) छोटा

बइला- (वि०) बुद्धिहीन, मूर्ख; (पु०) बैल

बउँका- (पु०) पानी का एक ख़र; लौकी आदि पेड़ों की शाखाएँ

बउंग्याबु- (क्रि० अ०) फसल का अत्यधिक या अपेक्षा से अधिक बढ़ जाना; बड़बड़ाना

बउँड़रु- (पु०) चक्कर काटती हवा

बउआबु- (क्रि० अ०) निद्रा में कुछ बड़बड़ाना

बउखा- (पु०) पौधों का बौखा (शाखा); हवा (थोड़ी देर तक चलने वाली)

बउगर- (वि०) बोने योग्य खेत

बउंगरा- (वि०) दूर-दूर (पौध), बीड़र

बउचट- (वि०) विक्षिप्त, मूर्ख

बउझाक- (वि०) पागल

बउझाड़- (पु०) झंझट, झगड़ा

बउनी- (स्त्री०) बुवाई; (वि०) अति छोटे कद की (स्त्री)

बउरु- (पु०) फूल (आम का)

बउरेंठ- (वि०) अर्द्धविक्षिप्त

बउसबु- (क्रि० अ०) गर्व से कहना; डींग मारना

बउसाब- (पु०) शक्ति

बउहरि- (स्त्री०) बहू, पुत्रवधू; बहुरिया

बऊँड़ी- (स्त्री०) लता

बएतरके- (वि०) बड़े सबेरे

बकउबु- (क्रि० स०) गुमराह करना, झूठी सीख देना

बकउरा- (पु०) बैलगाड़ी में प्रयुक्त लकड़ी का पुर्जा, जो मडगार्ड का काम करता है

बकतैंठैं- (स्त्री०) देर तक होने वाली एवं व्यर्थ की बातें जो जोर-जोर से हों

बकला- (पु०) छिलका; बोकला

बकलोल- (वि०) पागल, मूर्ख

बकवाह- (स्त्री०) हल्की-सी लड़ाई, शोर

बक्सीस- (फा० स्त्री०) इनाम

बकुचा- (पु०) गट्ठर (कपड़े आदि का)

बकुरबु- (क्रि० अ०) लोलना

बकुला- (पु०) बगुला

बकुल्याबु- (क्रि० अ०) जानवरों के मन में किसी भावना के उत्पन्न होने पर रास्ता देखे बिना इधर-उधर खूब भागना

बकेनि, बकेन्रा- (वि०) वह गाय आदि, जिसको ब्याये हुए ज्यादा समय हो गया हो

बकोट- (स्त्री०) मुट्ठी

बक्कल- (पु०) चमड़ा

बक्काल- (पु०) बनिया; बनिया- नीच जाति के लोग; बाणिज

बक्कुरु- (पु०) बोल, आवाज

बक्खर- (पु०) जलाव, चासनी

बखत- (पु०) वख्त, वक्त

बखरा- (पु०) हिस्सा; घोड़े की पीठ पर रखा जाने वाला एक गद्दा

बखरी- (स्त्री०) अनाज कूटने में प्रयुक्त लकड़ी का यंत्र, फर; मूसरु, पहरुआ

बखानु- (पु०) वर्णन, प्रशंसा

बखारी- (स्त्री०) नाज रखने का स्थान

बखिया- (स्त्री०) सिलाई, खाल (पु०)

उधेड़ना– अत्यधिक पीटना या बेइज्जती करना

बखील– (फा० वि०) पौधों के दूर–दूर होने की स्थिति; बीड़र

बगई– (वि०) गुड़ विशेष, जो गंभीर चोट लगने पर पिलाया जाता है

बगली– (वि०) ऊँची–नीची लकड़ी साफ करने का (रंदा)

बगार– (पु०) झुण्ड

बगुचा– (पु०) कपड़ों का वह गट्ठर, जो कंधे आदि पर रखकर विक्रेता फेरी लगाकर बेचते हैं

बगेदबु– (क्रि० स०) भगाना, निकालना

बगैरत– (अ०, फा०, वि०) बेशर्म, बेहया

बगैरती– (स्त्री०) बेशर्मी, निर्लज्जता

बग्गरु– (पु०) घरेलू पशुशाला

बड्.आ– (वि०) बिना पते–ठिकाने वाला, लावारिस

बचवा, बेचुका– (पु०) बगुचा

बच्ची– (स्त्री०) गहनों में पड़े हुए विशेष घुंघरू

बच्छ– (पु०) वक्ष, सीना

बछउआ– (पु०) बछड़ा; बछवा

बछरा– (पु०) बछड़ा, गाय का नर बच्चा

बछेड़ा– (पु०) कम उम्र का घोड़ा या गधा

बछेला, बछ्याला– (वि०) कम उम्र के जानवरों का (चमड़ा)

बजकबु– (क्रि० अ०) ऐसी स्थिति में पहुँचना कि कीड़े पड़ जाएँ

बजड़ा, बजरा– (पु०) बाजरा

बजनिहा– (वि०) वादक

बजनी– (स्त्री०) कुश्ती (वि०) बजने वाली

बजमार– (पु०) डाकू

बजबजाबु– (क्रि० अ०) बजबज करना (भिगोई हुई वस्तु का); कीड़ों की अधिकता होना; सड़ जाना

बजरी– (स्त्री०) बाजरा के पौधे; पत्थर की गिट्टी

बजागि– (स्त्री०) बहरा जन्तु विशेष

बज्जर– (वि०) अत्यधिक, पूर्णतः; (पु०) बज्र

बज्जह– (स्त्री०) महत्वपूर्ण विधि

बज्जाद– (वि०) दुष्ट

बज्जुरु– (पु०) बज्र

बझनि– (स्त्री०) व्यस्तता

बटइहरु– (पु०) खेती को बटाई बोने वाला व्यक्ति

बटखरा– (पु०) छोटा बाट

बटगायन– (पु०) रास्ता चलते गाने वाला, सच्चे गवैये को "सभा गायन" कहते हैं

बटमार– (पु०) डाकू, जो रास्ते में लूटे

बटहा– (पु०) सिंचाई के लिए बनाया गया जलमार्ग

बटाऊ– (पु०) राहगीर, यात्री

बटाना– (पु०) गहनों में लगने वाली छोटी–छोटी बच्चियाँ; घुंघरु

बटिया– (स्त्री०) पतला रास्ता, छोटा बट्टा

बटुट्टा– (पु०) बालतोड़ (फोड़ा)

बटुरबु– (क्रि० अ०) इकट्ठा होना, सिमटना

बटुली– (स्त्री०) छोटी बटूई

बटुही– (वि०) अंगिया का रूप विशेष

बटूई– (स्त्री०) बटलोई

बटोर– (पु०) समूह; **बंभन**– ब्राह्मणों का जमाव

बटोही– (पु०) राहगीर, यात्री

बट्टा– (पु०) फर्क, अन्तर, दाग

बड़उखा– (पु०) एक प्रकार का लम्बा पर सख्त गन्ना (बड़ + ऊख)

बड़उना– (पु०) बड़ा पान; वि० अकेला

बड़उछा– (वि०) जिसके कोई न हो, अकेला

बड़हल– (वि०) कुछ बड़ा

बड़हार– (पु०) ब्याह का दूसरा दिन जब बारात ठहरी रहती है

बड़ैलु– (पु०) जंगली सुअर

बड्ढी–(स्त्री०) लकड़ी के पटरे बनाने में निशान हेतु सहायक यंत्र विशेष

बढ़इता– (पु०) जेठ या उसके भाई

बढ़का– (पु०) पान की वृद्धि को रोकने वाला एक रोग

बढ़ती– (वि०) अपेक्षित मात्रा से अधिक; (स्त्री०) समृद्धि

बढ़नी- (स्त्री०) सींको का छोटा झाड़ू

बतकही- (स्त्री०) बातचीत (मुहा०) "करत बत कहीअनुजसन"

बतक्कड़- (स्त्री०) लम्बी बात व व्यर्थ बात

बतखाव- (पु०) वार्तालाप

बतना- (पु०) छानी में लगने वाली सरपत की बाती; कोर्रा

बतफरूसी- (स्त्री०) अत्यधिक बातें, फिजूल की बातें

बतसिया- (वि०) आम की जाति विशेष

बतास- (स्त्री०) हवा

बतिधर- (वि०) जो अपनी बात पर पक्का रहे, जो बात को पकड़े

बतिया- (स्त्री०) छोटा कच्चा फल, बात; (उदा०) "इहाँ कुम्हड़ बतिया कोऊ नाहीं"

बतूनी- (वि०) बातूनी, बात करने वाला

बतेरा- (वि०) बातें बनाने वाला

बत्त- (फा० स्त्री०) वस्तु; **-मींज**- (वि०) अशिष्ट, बदतमीज

बत्तर- (फा० वि०) उससे खराब, बदतर

बदउलति- (अव्य०) बल से, माध्यम से

बदनखुरी- (स्त्री०) जानवरों के खुरों के ऊपर के छोटे-छोटे दो खुर

बदबु- (क्रि० अ०) बाजी लगाना, मानना, दबना

बदली- (स्त्री०) स्थानान्तरण, छाये हुए बादल

बदहजमी- (स्त्री०) अपच

बदहवास- (वि०) जिसका दिमाग खराब हो

बदा- (वि०) भाग्य में निश्चित

बदा-बदी- (स्त्री०) सशर्त (हार-जीत)

बदि- (अव्य०) वास्ते, एवज; **-बदि**- (क्रि०वि०) सशर्त, बाजी लगाकर

बदी- (स्त्री०) अपकार, बुराई

बद्द- (वि०) शरारती, बदनाम, डेढ़ सौ रुपये के लिए

बद्दवँ- (वि०) बुरा, दुश्मन

बद्धी- (स्त्री०) वर के भाई के बाँधने में प्रयुक्त पुष्पाभूषण, अस्तुरा टेने का एक चमड़ा, चप्पलों आदि की पट्टी

बधइया, बधउआ- (स्त्री०) बधाई

बधना- (पु०) मुसलमानों का लोटा

बधिया- (वि०) वह नर पशु, जिसके अण्डकोष न हों; (स्त्री०) बैल के लिए प्रयुक्त शब्द

बधियाबु- (क्रि० अ०) रोटी आदि का सूखकर ऐंठ जाना, कड़ा हो जाना

बनगइली- (वि०) वन या जंगल में रहने व घूमने वाली, जंगली, असभ्य

बनबिलारु- (पु०) बिल्ली जाति का जंगली जंतु, बनबिलाव

बनरा, बना- (पु०) वर, दूल्हा; बन्ना

बनाट- (पु०) ऊन और सूत से मिलकर बना हुआ वस्त्र

बनिका- (स्त्री०) वाटिका

बनिजि- (स्त्री०) तिजारत

बनियई- (स्त्री०) व्यावसायिकी

बनियहरा- (वि०) खेत में गिरी हुई बालियों को चुनने वाला

बनिहारी- (स्त्री०) खेत की मजदूरी

बनेठी- (स्त्री०) लाठी की भाँति चलाने और फिराने के लिए एक लकड़ी, जिसमें तीन गिट्टक लगे होते हैं

बनेवा- (वि०) निःसहाय

बनौबन्तु- (पु०) व्यवस्था; बानाबन्तु

बन्द- (स्त्री०) पहिए के पास गाड़ी के बाहर की ओर लगी हुई लकड़ी

बन्नय- (क्रि० वि०) बिल्कुल, एकदम

बन्ना- (पु०) दूल्हा

बपंस- (पु०) बाप से प्राप्त (भूमि पर) अधिकार

बपई- (संबो०) हे पिता !

बपउती- (स्त्री०) बाप की जागीर, अधिकार

बपऊ- (पु०) दरिद्र बाप, बेचारा बाप

बफारा- (पु०) भाप की गरमी

बब्बरी- (वि०) तगड़ा

बमचक- (स्त्री०) शोर, ऊधम

बमन- (पु०) नेत्र

बम्बाबु- (क्रि० अ०) गाय आदि का बोलना, रंभाना

बम्मड़- (वि०) उजडड, बेढंगा

बयकल- (वि०) फूहड़, बेढंगा, बेअक्ल

बयजा- (अ० पु०) अण्डा

बयना- (पु०) उपहार, जो ब्याह अथवा पुत्र जन्म पर बाँटा जाता है

बयलर- (वि०) बेढंगा, फूहड़

बया- (पु०) अनाज क्रय-विक्रय में सहायक या दलाल; पक्षी विशेष

बयाई- (स्त्री०) दलाल को क्रय-विक्रय कराने में प्राप्त होने वाला प्रतिशत या पारिश्रमिक

बयाबु- (क्रि० अ०) सूखना

बयाला- (पु०) घर में पीछे की तरफ छोटी खिड़की

बयाली- (स्त्री०) तीन बाँसों से रस्सी की बनी एक जाली

बरंगा- (पु०) खुरपा

बरंडा- (अं० पु०) बरामदा; बराण्डा

बरंबा- (पु०) छेद करने में प्रयुक्त यंत्र विशेष; बरमा

बटई- (पु०) पान की खेती करने वाली जाति; (वि०) बकरी जो ब्याई न हो

बरउखा- (पु०) फसल का बारहवाँ भाग (मजदूरी)

बरउबु- (क्रि० अ० स०) टालना, जलवाना, छोड़ना, बचाना

बरकाउबु- (क्रि० स०) अलग करना

बरक्कति- (अ० स्त्री०) वृद्धि, लाभ

बरखा- (स्त्री०) वर्षा

बरखी- (स्त्री०) वार्षिक श्राद्ध

बरछिदी- (स्त्री०) बरिच्छा; छेदना

बरजबु- (क्रि० स०) डाँटना, मना करना

बरतउनी- (स्त्री०) बारात में बारातियों को मिलने वाला नेग

बरताव- (पु०) व्यवहार

बरदवार- (वि०) बैल चराने वाला

बरदा- (पु०) बैल

बरदाही- (स्त्री०) बैलों की बाजार

बरदी- (स्त्री०) बैलों का समूह

बरना- (पु०) वर्ण, रंग

बरपो- (वि० वि०) उत्पन्न, पूर्ण, संपन्न

बरबट- (अव्य०) बच गये नहीं तो; (वि०) नष्ट

बरबटा- (स्त्री०) केवाँच

बरबु- (क्रि० स०) (रस्सी) निर्मित करना, वरण करना; (क्रि० अ०) जलना

बरमु- (पु०) भूत, ब्रह्म

बरमौज- (अव्य०) बराबर, मुताबिक

बररबु- (क्रि० अ०) टेढ़ा-मेढ़ा हो जाना

बररु- (पु०) जुआँ बाँधने मोटी रस्सी

बरवै- (वि०) फूल आदि से लदा हुआ; छंद विशेष

बरसी- (स्त्री०) अंगूठे में पहनने की अंगूठी, श्राद्ध विशेष

बरहँछा, बराँछा- (पु०) अरहर की झाड़ियों का कूँचा

बरहा- (पु०) खेतों में पानी लाने के लिए रास्ता; नाली

बरही- (स्त्री०) मयूर; (वि०) बारह दिन या १/१२ अंश वाला

बराँभन- (पु०) ब्राह्मण

बरारी- (स्त्री०) रस्सी, जिससे हेंगा बाँधा जाता है

बराव- (पु०) भेद, विवेक, परहेज

बरियत, बरेत- (स्त्री०) मोटा रस्सा

बरिया- (स्त्री०) छोटे आकार का खेत; उड़द की दाल से निर्मित पकवान विशेष; कोलवा

बरियार- (वि०) तगड़ा, साहसी

बरु- (अव्य०) बल्कि, अच्छा हो, भले ही

बरुआ- (पु०) वह व्यक्ति, जिसको यज्ञोपवीत धारण कराया जा रहा हो; बालू

बरुआर- (पु०) डाकू

बरुक- (अव्य०) बल्कि, भले ही

बरुका- (पु०) पानी पीने का मिट्टी का बर्तन

बरेल, बिरैल- (स्त्री०) हल में हरीस रोकने वाली लोहे की कील

बरोठु- (पु०) बाहर का बड़ा कमरा, जिससे रास्ता भी हो

बरोरीं- (क्रि० वि०) जबरदस्ती, हठ करके

बरोह- (स्त्री०) बरगद की जटाएँ

बर्दिया-बर्धिया- (पु०) बैलों का व्यापारी; वि० बंजारा

बर्द्धु- (पु०) बैल

बर्र- (स्त्री०) जुआँ बाँधने की मोटी रस्सी

बर्रा- (वि०) धारीदार

बर्सैल- (वि०) वह गाय आदि मादा जानवर, जो हर वर्ष बच्चा देती है

बलकिन- (फा० अव्य०) साथ ही, बल्कि

बलगमु- (अ० पु०) कफ

बलगर- (वि०) शक्तिशाली

बलथक- (वि०) बलहीन

बलफबु- (क्रि० अ०) बहँकना, बल दिखाना

बलहनु- (पु०) छप्पर में लगने वाला लम्बा बाँस

बलहा- (वि०) जिस बैल के माथे से नथुने तक श्वेत रंग की रेखा हो; (पु०) आयोजन

बलाय- (स्त्री०) बला, आफत

बलाहक- (पु०) लाल मोता

बलु- (पु०) टेढ़ापन, ताकत, सहारा

बलौंछा- (पु०) पटसन के पौधे का ऊपरी भाग

बलौंछी- (स्त्री०) हल का एक भाग विशेष

बल्लमु- (पु०) भाला

बल्ला- (पु०) डलिया बुनने में प्रयुक्त पतावर आदि की मुलायम पत्ती, होली में छोड़ने हेतु प्रयुक्त गोबर के उपले विशेष

बसंधरु- (पु०) देवताओं के निमित्त निकाली या दी गयी अगियारि

बस- (स्त्री०) सुअर की चर्बी, मोटर; (वि० फा०) पर्याप्त होने का संकेत; **-गिति**- (स्त्री०) गाँव, बस्ती

बसकोरु- (पु०) धानुक (जाति विशेष)

बसर- (फा० स्त्री०) गुजर, निर्वाह

बसही- (स्त्री०) स्त्री, पत्नी

बसियानि- (वि०) बासी

बसियार- (पु०) गुड़ बनाने का स्थान

बसेंट- (पु०) छोटा बाँस

बसेंड़- (पु०) बसेरा

बसेलिया- (स्त्री०) बाँस की फर्चियों से निर्मित डलिया

बस्यार- (स्त्री०) निवास, ठौर, कब्जा.

बहकउना- (पु०) बहाना

बह- (अव्य०) बैलों को दाएँ मोड़ने की बोली; **तरा**- (वि०) नटखट, दुष्ट

बहदुरा- (पु०) चने की फसल आदि में लगने वाला कीड़ा

बहना- (पु०) गन्ने का रस पकाने के लिए प्रयुक्त बड़ी भट्ठी

बहपट- (वि०) आवारा

बहम- (स्त्री०) भ्रम, साहस

बहमी- (वि०) साहसी

बहरवाँसू- (वि०) जो बाहर रहे (बाहर + वास)

बहलि- (स्त्री०) ढकी हुई दरवाजेदार बैलगाड़ी

बहवाँ- (पु०) पाटा, सेरावनि

बहागल्ल- (वि०) आवारा, घुमक्कड़

बहा ठप्पा- (पु०) आभूषणों को ढालने में प्रयुक्त ठप्पा विशेष

बहिंगा- (पु०) पानी ढोने में प्रयुक्त डण्डा, जिसमें दो बर्तन बांधे जाते हैं

बहिपार- (वि०) आवारा, सदैव बाहर घूमने वाला

बहिया- (स्त्री०) बाढ़

बहिर- (वि०) बहरा

बहिला- (वि०) जो गाय या भैंस गर्भिणी न होती हो; ठाँठ

बहुँटा- (पु०) बाजू का गहना विशेष

बहुगुनवाँ ठप्पा- (पु०) विशेष प्रकार का ठप्पा, जिससे गहने ढाले जाते हैं

बहुरबु- (क्रि० अ०) लौटना, वापस आना

बहुरिया- (स्त्री०) पुत्रवधू; बहुरेवा

बहुरी- (स्त्री०) जौं का लावा

बहेंड़- (स्त्री०) स्थान, जहाँ से खेत का पानी बहता हो

बहेतू- (वि०) जिसका पता-ठिकाना न हो (व्यक्ति अथवा पशु)

बहेल्ला- (वि०) जो फेंकने योग्य हो, बेकार, काहिल (व्यक्ति)

बाँक- (स्त्री०) टँड़िया के ऊपर पहना जाने वाला स्त्रियों का एक आभूषण, चूड़ी विशेष, दबाने में प्रयुक्त यंत्र

बाँगरु- (पु०) कृषि के अयोग्य भूमि, बैलगाड़ी में प्रयुक्त लम्बे दो बाँस

बाँगा- (वि०) सरसों की उपजाति

बांगुर, बांगुरी- (पु०) घोड़े की पीठ पर चढ़ने-उतरने में प्रयुक्त रस्सी के फंदे

बाँचबु- (क्रि० स०) पढ़ना

बाँट- (पु०) तोलने में प्रयुक्त भार विशेष के लौह-खण्ड, बँटवारा

बाँठा- (वि०) बहुत छोटे कद का

बाँड़ा- (वि०) वह पशु, जिसकी पूँछ टूट या कट गई हो; अकेला

बांदी- (स्त्री०) सेविका, दासी

बाँभि- (वि०) गड्ढे में रहने वाली मछली; (स्त्री०) जमीन में निर्मित जन्तुओं का घर

बाँभन- (पु०) ब्राह्मण

बाँसा- (पु०) नाक की मुख्य हड्डी

बाँसुड़ी- (स्त्री०) बंसरी, वंशी

बाँहू- (पु०) हाथ का गहना विशेष

बाउस- (स्त्री०) पुरुषार्थ, शक्ति

बाकला- (पु०) माला आदि में प्रयुक्त चमकीला गोटा; वि० मुकेश

बाग, बागि- (स्त्री०) लगाम, उद्यान

बागड़बिल्ला- (पु०) बेढंगा व्यक्ति

बागर- (स्त्री०) स्त्रियों का एक गहना

बाघी- (स्त्री०) पशुओं का एक घातक रोग, जो कभी-कभी मनुष्यों को भी हो जाता है

बाड.ड़- (वि०) बेढंगा

बाछ- (पु०) चंदा

बाछा- (पु०) बछड़ा; बछरा

बाजीगढ़- (फा० पु०) बाज़ीगर

बाजू- (स्त्री०) दरवाजे की खड़ी पट्टी; **-बन्द**- हाथ का गहना विशेष

बाझबु- (क्रि० अ०) भिड़ना

बाटि- (स्त्री०) टोकरा आदि का ऊपरी किनारा

बातावरन- (पु०) वार्तालाप, वातावरण

बाती- (स्त्री०) झाँकरों को जोड़कर बनाये गये मोटे-मोटे लट्ठे, जो छप्पर व भीट में लगाये जाते हैं, बत्ती

बाध- (पु०) मूंज की पतली रस्सी, जिससे चारपाई बुनी जाती है

बाधवाई- (वि०) व्यर्थ, बेकार

बाधी- (स्त्री०) बैल आदि हाँकने के लिए प्रयुक्त चमड़े की पट्टी

बानगी- (स्त्री०) अनाज का नमूना, जो क्रय-विक्रय के समय उपस्थित होता है

बाना- (पु०) भेष, पहनावा, बारीक धागा, एक पौधा, जो दूसरे पेड़ों पर उगता है

बानाबन्तु- (पु०) व्यवस्था, साइत

बाफ- (स्त्री०) वाष्प, भाप

बाबरी- (अर० स्त्री०) सिर के आगे रखे हुए बड़े-बड़े बाल

बाबीन- (स्त्री०) तागे की पुल्ली

बाबुल- (पु०) पिता

बामकी- (स्त्री०) भविष्य जानने या अद्‌भुत बातें बताने की विद्या

बायर- (वि०) पर्याप्त

बायल- (वि०) बदली के बीच खुला (दिन), वर्षा का रुककर बादल का छँटा हुआ (रूप)

बारन- (पु०) हँसिया का वह नुकीला भाग, जो बेंट के भीतर रहता है

बारबु- (क्रि० स०) जलाना

बारहाँ- (वि०) बलशाली, बहादुर

बारा- (पु०) पौधों की पतली जड़; (वि०) बारह

बाराजोरी- (अव्य०) संग-साथ, संयुक्तावस्था में

बारिगह- (पु०) बड़ा शामियाना, जिसके नीचे लगभग दस हजार लोग बैठ सकते हैं

बारी- (स्त्री०) नाक व कान में पहनने का स्वर्ण आभूषण; फलों का खेत; जाति विशेष; क्रम

बारीक- (वि०) उम्दा, महीन

बालबाँखीरा- (पु०) फल विशेष, यह पेट के लिए अत्यन्त लाभप्रद होता है; वि० बालमखीरा

बालम- (पु०) पति, प्रियतम

बाला- (पु०) कान में पहना जाने वाला छल्ला; (वि०) पवित्र, ईमानदार

बाली- (स्त्री०) गेहूँ आदि की बाल; कर्णाभूषण

बालूचर- (पु०) चिलम पर पीने का एक नशा

बालेमियाँ- (पु०) मुसलमानों के एक पीर (कहा०) "एक हाथ के बालेमियाँ, नौ हाथ के पूँछि"

बावँ- (पु०) जोतते समय हल के कूँड़ में चले जाने पर बन गया निशान या टेढ़ापन

बासिंदा- (पु०) निवासी, रहने वाला

बाहँ- (स्त्री०) जुताई की संख्या या पूरा काम; भुजा; ताड़ी निकालने का अड्डा

बाहबु- (क्रि० स० अ०) बैल आदि द्वारा गाय आदि के साथ संभोग करना; (क्रि० अ०) गर्भ धारण करना

बाहरि- (स्त्री०) सींचने के पानी को नीचे से ऊपर ले जाने का मार्ग

बाहा- (पु०) छोटा नाला, पानी बहने का मार्ग

बाहीं- (स्त्री०) खेत का वह टुकड़ा, जो एक बरहा से सींचा जाए; जुताई की संख्या

बाहुरू- (पु०) लकड़ी का खम्भा, जो मकान की छत को रोकने हेतु लगाया जाता है

बिअहुती- (वि०) वह लड़की, जिसकी शादी अभी हुई हो

बिकसबु- (क्रि० अ०) फूलना, खिलना, खिंचना (तागों का)

बिखड़बु- (क्रि० अ०) क्रुद्ध होना

बिगर- (अव्य०) बिना; (स्त्री०) बिगाड़

बिगवा- (पु०) भेंड़िया

बिगहा- (पु०) पैमाना विशेष, बीघा

बिचऊपुर- (पु०) बीच का स्थान; काल्पनिक स्थान; अनिश्चित स्थान

बिचकउठा- (पु०) बीच का घर

बिचारबु- (क्रि० स०) चुनना(ठीकअंश), विचार करना, ज्योतिष देखना

बिचुकबु- (क्रि० अ०) किसी को देखकर चौकन्ना हो जाना; बिजुकबु

बिछिया- (स्त्री०) पैर की उंगलियों में पहनने का आभूषण

बिछुआ- (पु०) पट्टी की तरह कमर का आभूषण, एक जल जन्तु विशेष

बिछुलबु- (क्रि० अ०) फिसलना; रपटबु

बिजलउबु- (क्रि० स०) किसी की नकल करते हुए परेशान करना या चिढ़ाना

बिजायठु- (पु०) भुजा का आभूषण विशेष

बिजुकबु- (क्रि० अ०) किसी चीज को देखकर जानवर का चौकन्ना होना

बिजुली- (स्त्री०) कच्चे आम के अन्दर की कोमल गुठली, विद्युत

बिज्जो- (स्त्री०) बाँस के झुरमुट में रहने वाला बिल्ली जैसा जन्तु

बिटचर- (पु०) शूकर, कौआ

बिटुहुरा- (पु०) कंडों का सुडौल ढेर

बिड़मना- (स्त्री०) निंदा

बिड़र- (वि०) दूर-दूर (बोया या उगा हुआ)

बिड़वा- (पु०) पुआल का बना हुआ गोल छोटा मोढ़ा

बिढ़ता- (वि०) कमाया हुआ (अन्न, धन आदि)

बितउबु- (क्रि० स०) व्यतीत करना

बिताना- (पु०) चंदोवा

बिती- (अव्य०) प्रकार

बित्ता- (पु०) बारह अंगुल की माप

बित्थार- (पु०) विस्तार, दर्द

बिदखोरबु- (क्रि० स०) खोद कर खराब करना

बिदगउबु, बिथरउबु- (क्रि० स०) बिखराना

बिदहबु- (स्त्री०) निराई के बाद मक्का आदि फसल को गोड़ने के बजाय दूर-दूर जोतना

बिदुरबु- (क्रि० अ०) टेढ़ा हो जाना (ओंठ)

बिदोर- (वि०) देखने में भूर्ख

बिद्दति- (अ० स्त्री०) परेशानी, विपत्ति, बुराई

बिधना- (पु०) ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता

बिधाँ- (क्रि० वि०) विधि से, भाँति

बिनमि- (स्त्री०) बिनावट; बिनवट

बिनवर- (पु०) जूते में लगा पैतावा, कपास का बीज; छापर

बिनिया- (स्त्री०) (अन्न) बीनने का समय

बिनुआ- (वि०) बीना हुआ कंडा, जो जंगल से बीना गया हो, हाथ से पाथे हुए कण्डे को 'पथुआ' कहते है

बिन्धबु- (क्रि० अ०) लिपटना

बिन्नी- (स्त्री०) किंवाड़ों को एक-दूसरे में फँसाने के लिए एक किंवाड़ में लगी खड़ी पट्टी, पलक के बाल बरौनी; बेनी

बिन्वादा- (पु०) छत के बीच में हउदा रखने का स्थान

बिबरा- (पु०) बुवाई समाप्त होने पर छोटे बच्चों एवं हलवाहों को दिया गया अन्न

बिमउटु- (पु०) भूमि में बना हुआ साँप आदि जन्तुओं का घर या उसके ऊपर का भाग

बिमरस- (पु०) रोब, विमर्ष

बिम्बाफलु- (पु०) लाल कुंदरू

बियहुता- (पु०) ब्याह का कपड़ा

बिया- (पु०) बीज

बियाबु- (क्रि० अ०) गाय आदि मादा जानवरों का बच्चा देना

बियारि- (वि०) बीजयुक्त, कड़े बीज वाली

बियारी- (वि०) ताजा (दूध)

बियासबु- (क्रि० अ०) गेहूँ आदि में पेंड़ी से कल्ले निकलना

बिरई- (स्त्री०) पौधा; बिरवा

बिरझ्याबु- (क्रि० अ०) क्रुद्धवश बिगड़ना

बिरतन्तु- (पु०) वृतान्त

बिरति- (स्त्री०) बहुत रात, विलम्ब

बिरथा- (वि०) व्यर्थ, बेकार

बिरन- (पु०) भाई, प्रियबन्धु; बिरना

बिरलै- (अव्य०) शायद ही, कठिनाई से

बिरवा- (पु०) पौधा; बीड़ा

बिरवाही- (स्त्री०) छोटे पौधों का समूह

बिरादरी- (स्त्री०) जाति

बिरान- (वि०) पराया

बिरिया- (स्त्री०) कानों में पहनने का आभूषण, पान का बीड़ा

बिरैल- (स्त्री०) हल में हरीस रोकने के लिए लगी एक लकड़ी; काँटा

बिरोग- (पु०) हार्दिक दुःख

बिर्ति- (स्त्री०) दान में दी हुई भूमि.

बिलंगबु- (क्रि० अ०) चढ़ना

बिलंद- (वि०) उच्च, जोरदार, बुलंद

बिलउटा- (पु०) नर बिल्ली

बिलटबु- (क्रि० अ०) उलट जाना, नष्ट हो जाना, ढेर-सा देना

बिलनी- (स्त्री०) एक उड़ने वाला कीड़ा, जो मिट्टी का घर बनाता है, आँखों के किनारे होने वाली छोटी फुंसी

बिलबिलाबु- (क्रि० अ०) घुटन से पीड़ित होना, घबरा जाना

बिलम- (स्त्री०) देर

बिलम्हाइब- (क्रि० स०) फँसा रखना, रोक रखना

बिलरहवा- (पु०) जुताई में बैलों के विपरीत दिशा में मुड़ जाने का कार्य

बिलल्ला- (वि०) बेढंगा

बिलांग- (स्त्री०) फलास के खेल में मोहर की जगह रुपया-पैसा चलने की स्थिति

बिला- (अ० अव्य०) बिना, बगैर

बिलान- (वि०) नष्ट प्राय

बिलाबु- (क्रि० अ०) गायब हो जाना

बिलारी- (स्त्री०) दरवाजे को भीतर से बंद करने की लकड़ी; सिटकिनी

बिलारू- (पु०) हरीस में अगले कीलों के साथ लगने वाली खाँचेदार लकड़ी

बिलिया- (स्त्री०) मिट्टी की कटोरी

बिलिर-बिलिर- (क्रि० वि०) सिसक-सिसक कर आँसू बहाते हुए (रोना)

बिलुक्का- (पु०) छेद

बिलेंट- (पु०) चूहे आदि द्वारा बनाया हुआ खेत में बड़ा छेद

बिलोरबु- (क्रि० स०) मथना

बिल्लाबु- (क्रि० अ०) परेशान होना, उकता जाना

बिसा- (पु०) बीज

बिसाबु- (क्रि० अ०) मान्य होना, बात चलना, अस्तित्व होना, संकट पड़ना

बिसाहिन- (वि०) मछली-सी बू वाला

बिसुआ- (पु०) खेत से पहले पहल काटकर लाया हुआ नया हरा अन्न, बीघे का बीसवाँ अंश; वि० औली

बिसुआबु- (क्रि० अ०) चोट आदि का प्रकोप बढ़ना

बिसुकबु- (क्रि० अ०) दूध देना बन्द करना (पशु का)

बिसेंडी- (स्त्री०) व्यंग्य भरी हुई बात

बिसेख- (पु०) विचित्र प्रभाव या बात

बिहतुइया- (स्त्री०) छिपकली

बिहतुर- (वि०) दूर, ओझल

बिहफै- (स्त्री०) बृहस्पति (दिन)

बिहानु- (पु०) प्रातःकाल

बिहून- (वि०) देखने में भद्दा, मूर्ख

बींजड़, बींजर- (वि०) छोड़ा गया बकरा

बीजर- (वि०) बीज को जला देने वाली भूमि

बीजू- (वि०) बीज से उत्पन्न (कलम न किया हुआ, आम आदि)

बीरर- (वि०) बखील; बिड़र

बीरा- (पु०) ईंट का लम्बाई–मोटाई में फटा हुआ आधा अंश, पान की पुड़िया, बींड़ा, चुनौती की स्वीकृति

बीरी- (स्त्री०) छेद करने में प्रयुक्त यंत्र

बीरौ- (पु०) बिरवा–पौधा

बीहड़- (वि०) लम्बा–चौड़ा एवं मजबूत (व्यक्ति, वस्तु); ऊबड़–खाबड़ व घना; साहसी

बुकनी- (स्त्री०) बूका (पिसा) हुआ पदार्थ

बुकला, बोकला- (पु०) छिलका

बुकवा- (पु०) उबटन

बुजरी- (वि०) निर्बल, नालायक

बुज्जहिया- (वि०) गन्ने की पतोई का प्रारम्भिक रूप

बुज्जा- (पु०) बुलबुला

बुझारति- (स्त्री०) सन्तोष

बुट्टबु- (क्रि० स०) उड़ा देना, लेकर भाग जाना

बुड़जरी- (स्त्री०) नालायक स्त्री

बुड़हा- (पु०) मजदूरी के अतिरिक्त हलवाहे को प्रदत्त पैसे या अनाज

बुडुआ- (पु०) जो पानी के भीतर डुबकी लगाकर गिरी हुई चीज़ उठा लावे

बुड़क्की- (स्त्री०) डुबकी

बुढ़नाबु- (क्रि० अ०) (अंग का) ठण्ड से ठिठुर जाना

बुढ़भस- (पु०) बुढ़ापे के दुर्गुण

बुत- (वि०) भला

बुतांति- (स्त्री०) (खाने–पीने का) सामान

बुताबु- (क्रि० अ०) बुझ जाना

बुत्त- (फा० स्त्री०) मूर्ति; (वि०) चुपचाप

बुत्ता- (पु०) प्रोत्साहन

बुनका- (पु०) बिंदी; बूंद

बुनेला- (वि०) बढ़िया

बुसौंड़बु- (क्रि० स०) अरहर की पत्तियों को पीटने के बाद ओसाना

बुन्ननद- (फा० स्त्री०) नींव; जड़; यथार्थ

बुल्ला- (पु०) बुलबुला (पानी का)

बूक- (स्त्री०) मुट्ठी

बूकबु- (क्रि० स०) पीसना; बोलना

बूझ- (स्त्री०) बुद्धि

बूझबु- (क्रि० स०) जानकारी करना, उत्तर देना, समझना

बूट- (स्त्री०) हरे चना की फली; **-जूता-** क्रम चमड़े का जूता

बूड़ा- (पु०) बाढ़

बूत- (स्त्री०) बूता, शक्ति

बूरा- (पु०) शक्कर

बूह- (पु०) व्यूह (चक्रव्यूह)

बेंची- (स्त्री०) बिक्री का दस्तावेज

बेंटि- (स्त्री०) पंक्ति, किनारा

बेंटु- (पु०) कन्नी आदि का हत्था

बेंड़कना- (पु०) दरवाजे आदि में रोक हेतु लगाया गया डण्डा

बेंड़का- (वि०) तिरछा, बेंड़ा

बेंड़ियउबु- (क्रि० स०) काट गिराना, छोटे–छोटे टुकड़े बना देना

बेंड़ी- (स्त्री०) पानी उलीचने की टोकरी

बेंड़ेम- (अव्य०) गोद में

बेंड़ौरी- (स्त्री०) खरपतवार

बेंदी- (स्त्री०) सुनारों में प्रचलित 'चाँदी' का गुप्त नाम; आभूषण विशेष

बेंदुआ- (पु०) रस्सी के द्वारा कसी हुई जाँत की एक लकड़ी

बेंवड़- (स्त्री०) दरवाजा बन्द करने में प्रयुक्त लकड़ी की साँकल

बेंवड़ा- (पु०) झोपड़ी का दरवाजा

बेंवार- (पु०) लम्बा छेद, दराज

बेई- (स्त्री०) बारी 'बेरि' का 'र' लुप्त होकर यह शब्द बना है

बेउहार- (वि०) व्यवहारी
बेकरका- (पु०) किसी के मरने का १०वाँ दिन
बेकूफ- (फा० वि०) मूर्ख
बेगी- (स्त्री०) बेगम या रानी (ताश के खेल में)
बेगुचा- (पु०) 'बगुचा' देखिए
बेखटके- (क्रि० वि०) निडर, बिना झिझक
बेजा- (फा० वि०) अनुचित
बेजाप्ता- (वि०) नियम विरुद्ध
बेजार- (वि०) बीमार, नाराज
बेझरा- (पु०) चना-जौ का मिश्रण; वि० बेर्रा
बेटहना- (पु०) छोटा या खराब लड़का
बेठन- (पु०) बाँधने का वस्त्र
बेड़िन- (स्त्री०) नाचने गाने वाली जाति; पतुरिया; (वि०) दुश्चरित्र
बेढ़ई- (स्त्री०) आलू भरी रोटी
बेढ़ा- (पु०) खेत या बगीचे के चारों ओर लगा कँटीला तार आदि
बेतरह- (क्रि० वि०) बुरी तरह (बिगड़ना)
बेतहरि- (वि०) अधिक बच्चे दे चुकने वाली (गाय आदि)
बेतहासा- (वि०) अत्यधिक
बेतुका- (फा० वि०) अनुचित, बेमेल
बेदवार- (वि०) वेदज्ञ
बेध- (स्त्री०) शामत
बेनउठा- (पु०) बाँस का छोटा टोकरा
बेनाबंदी- (स्त्री०) गहना
बेनिया- (स्त्री०) छोटा हस्त पंखा
बेनी, बेन्नी- (स्त्री०) किंवाड़ों में लगी लम्बी पट्टी, जो परस्पर रोकने का काम करती है; पान- पान के आकार का एक आभूषण; बिन्नी
बेनुली- (स्त्री०) जूड़ा बनाने में सहायक एक गोल छल्ला विशेष
बेफाँट- (वि०) निरर्थक
बेफै- (स्त्री०) बृहस्पति
बेबस- (वि०) विवश, पराधीन
बेबाक- (फा० वि०) नष्ट, निस्तरित
बेभाँति- (वि०) बेमेल, बुरा लगने वाला
बेमना- (पु०) पेड़ों पर रहने वाला लाल चींटा
बेराम- (वि०) बीमार
बेरि-बेरि- (क्रि० वि०) बार-बार
बेरिया- (स्त्री०) समय, वक्त
बेर्रा- (पु०) कुमुदिनी के बीज; बेझड़ा
बेलंभउबु- (क्रि० स०) रोक रखना; चुप करना
बेलउंजा- (पु०) फसल को नष्ट करने वाला खर या घास
बेलउना- (पु०) रूई का घागु या ढेर
बेलगरा- (वि०) मछली विशेष
बेलचूड़ी- (स्त्री०) कलाई का गहना विशेष
बेलझरा- (पु०) जंगली बेर, झलबेरी
बेलन्दा- (पु०) बैलगाड़ी में लगा लकड़ी का पुर्जा विशेष; घास
बेलल्ला- (वि०) बेढंगा
बेलवा- (पु०) कटोरा
बेलि- (स्त्री०) गुड़ की पारी; भेली
बेलिया- (स्त्री०) छोटा कटोरा
बेली- (स्त्री०) लताएँ, पतली रोटी, चपाती
बेलौस- (वि०) ममताहीन
बेवँ- (पु०) चाक का वह गड्ढा, जिसमें डण्डा डालकर चाक घुमाया जाता है
बेवहरु- (पु०) कर्ज
बेवा- (फा० वि०) विधवा
बेसर, बेसरि- (स्त्री०) नाक का आभूषण; मोल लेना, नथुनी
बेसहनी- (स्त्री०) खरीद
बेसहबु- (क्रि० स०) मोल लेना; खाना; स्वीकार करना
बेसही- (स्त्री०) पत्नी; (वि०) खरीदी हुई
बेसारु- (पु०) खेतों में बोने में प्रयुक्त बीज
बेसी- (फा० वि०) अधिक
बेहना- (पु०) रूई धुनकने वालों की एक विशेष जाति; धुनिया
बेहून- (वि०) कुरूप
बैंढ़- (स्त्री०) बेंड़ी में नीचे प्रयुक्त चमड़े की वह डोरी, जिससे रस्सियाँ बाँधी जाती हैं
बैकल- (वि०) मूर्ख, बेढंगा
बैकुण्ठी- (स्त्री०) कान का गहना विशेष

बैठाहुर- (वि०) जो प्रायः बैठा रहे कुछ काम न करे

बैतबाजी- (स्त्री०) अंत्याक्षरी

बैदरा- (वि०) बैद्य की (सौंट)

बैनु- (पु०) रिश्तेदारी मे संस्कार विशेष में आई हुई पूड़ी या मिठाई (जो गाँव में बँटवाया जाता है), वचन, वाणी

बैपरबु- (क्रि० स०) व्यवहार में लाना, काम में लेना (वस्तु का), उपभोग करना

बैरंग- (अं० वि०) जिस पर महसूल लगे (पत्र); शीघ्र पहुँचने वाली

बैलट- (अ० पु०) शक्ति, इंजन, पानी निकालने का साधन विशेष; (अं० पु०) मत

बैलर- (वि०) फूहड़

बोंका या बोंटु- (पु०) कीड़ा, जो कूद-कूदकर चलता है, घसकुदा

बोंड़र- (पु०) 'जुएँ का एक विशेष भाग

बोई- (स्त्री०) रबी की बुआई समाप्त होने पर किया गया पर्व, जिसमें बैलों को भी भोजन दिया जाता है

बोउनी- (स्त्री०) बोने की क्रिया।

बोक- (पु०) बड़ा बकरा

बोकरिहा- (वि०) बकरी पालने वाला

बोक्का- (पु०) सिंचाई के काम आने वाला बड़ा टोकरा

बोखा- (वि०) जिसके कोई भी दाँत न हों (पुरुषों में)

बोगी- (स्त्री०) जल स्रोत निकालने हेतु प्रयुक्त यंत्र विशेष

बोङ- (पु०) बड़ा सा मोटा डण्डा

बोझु- (पु०) फसलों आदि का गट्ठा, भार; गट्ठा

बोड़रा- (पु०) लहंगे का वस्त्र

बोड़ा- (पु०) बड़े दाने की एक फली, जिसका साग खाया जाता है

बोड़ियाँ- (वि०) जिस बैल की टांगें अधिक लम्बी हों

बोता- (पु०) ऊँट का बच्चा

बोदा- (वि०) सुस्त, भद्दा; (पु०) कीचड़

बोबा- (पु०) स्तन (दूध भरा हुआ)

बोय- (स्त्री०) बदबू, दुर्गंध

बोरदार- (वि०) घुंघुरु वाला

बोरु- (पु०) भेद, रहस्य; जल-स्रोत, गड्ढा

बोरो- (पु०) एक प्रकार का चावल, जो पानी में होता है; वि० फँसही

बोह, बोह्य- (पु०) (जल में भैंसों का) आनन्द; घमण्ड

बोहनी- (स्त्री०) बिक्री का शुभारम्भ; -बट्टा- (पु०) नकद शुरुआत

ब्यउंगबु- (क्रि० स०) चमड़े में निशान लगाना

ब्यउंगी- (स्त्री०) कठोर लकड़ी या सींग से बना यंत्र, जिससे चमड़े पर निशान लगाया जाता है

ब्यल्हराबु- (क्रि० अ०) बच्चों का, किसी को परेशान करते हुए हँसना

ब्याँड्डा- (पु०) विभाजक दीवार, टुकड़ा; -मारबु- (क्रि० स०) वाहन को वाहन के आगे खड़ा कर रोकना

ब्याझबु- (क्रि० स०) जानवरों द्वारा सींग से किसी वस्तु को खोदकर गिराना या बिखराना

ब्याढ़- (स्त्री०) रोपने में प्रयुक्त पौधा

ब्यात- (पु०) ब्याने की संख्या; बियात

ब्याधि- (स्त्री०) कष्ट, अड़चन

ब्याना- (पु०) हाथ से धौंकने वाला पंखा

ब्यार- (पु०) फल विशेष, बेर

ब्याहबु- (क्रि० अ० स०) विवाह कर देना या कर लेना

ब्यूह- (पु०) खाट आदि की बुनावट में बने छेद, घेरा

ब्रिसलेट- (स्त्री०) हाथ का गहना विशेष

ब्वांगा- (पु०) छोटे कद का बैल

ब्बाज- (पु०) हल में फँसा हुआ मिट्टी व घास का मिश्रण; वि० लेटारु

ब्बाटा- (पु०) मोटी लकड़ी के गुटके

ब्बादा- (पु०) कीचड़; (वि०) सुस्त

भंगड्डु- (पु०) वाद-विवाद, भड़भड़

भँजाइबु- (क्रि० स०) भजाना (पैसा तोड़ाना)

भँटइती- (स्त्री०) भाँट का सा व्यवहार

भँड़खेलि- (स्त्री०) गड़बड़ी

भंड़रौ- (पु०) गन्ना पेराई का वह पहला दिन, जब गुड़ भी तैयार होता है

भँड़वन- (पु०) मिट्टी के पात्र

भँड़सार- (पु०) रसोईघर

भँड़ा- (पु०) किसी भारी वस्तु को उठाने में प्रयुक्त लकड़ी

भँड़ियही-भँड़ियाही- (स्त्री०) घर में घुसकर चोरी करने की आदत

भँड़िया- (स्त्री०) मिट्टी की हण्डी

भँड़ुआ- (पु०) वेश्या के साथ रहने वाला पुरुष; गुलाम; नीच व्यक्ति

भँड़ेरि- (स्त्री०) गड़बड़ी

भँड़ेहरी- (स्त्री०) डेहरी आदि रखने की कोठरी या कमरा

भंभुहा- (पु०) सावाँ का भूसा

भंभूरि- (स्त्री०) दल, समूह

भँवक्खा- (वि०) जिसकी आँखें टेढ़ी हों

भँवरकली- (स्त्री०) बकरियों के गेराव में लगा लोहे का अंग, जो उनके घूमने पर घूमता रहता है

भँवरि- (स्त्री०) नदी आदि के पानी का चक्रवात, सिर में बना बालों का चक्र

भंसारु- (पु०) भण्डार

भँसीड़- (स्त्री०) सब्जी विशेष

भ- (भू० क्रि०) हुआ, हो गया

भइँडयाबु- (क्रि० अ०) लड़ने की मुद्रा में खड़ा होना

भइने, भइना- (पु०) भाँजा, बहिन का पुत्र

भइपनु- (पु०) भ्रातृत्व

भउजी- (स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री

भकचुम्मा- (वि०) जो कुछ बोल न सके

भकभेलर- (वि०) फूहड़, बेढंगा

भकस- (स्त्री०) मन में छिपा असन्तोष, भड़ास

भकुहा- (वि०) जो कुछ कर न सके, निःसहाय एवं मूर्ख

भक्कलु- (पु०) छेद

भक्खर- (पु०) खाने का स्थान; बलि-वेदी

भख- (पु०) भोजन

भखबइया- (वि०) भाखने वाला, भविष्यवाणी करने वाला, स्वीकारकर्त्ता

भगंदरु- (पु०) प्रसिद्ध रोग, जिसमें गुदा से मवाद या पीव आता है

भग- (स्त्री०) स्त्री की गुप्तेंद्रिय, गुदा

भगति- (स्त्री०) कीर्तन, भक्ति

भगमच्छरु- (पु०) शोरगुल, झगड़ा

भगवा- (पु०) छोटा-सा कपड़ा, जो गुप्तेन्द्रियों पर गरीब लोग लपेट लेते हैं

भगूति- (स्त्री०) विभूति, सम्पत्ति

भगोहड़ा- (वि०) भागने वाला या भागा हुआ व्यक्ति

भग्गलु- (पु०) इज्जत

भङरा- (पु०) कीड़ा विशेष, बोरे का टुकड़ा, पुराने कम्बल का भाग

भचक- (स्त्री०) पैर की खराबी, चलने में अड़चन

भच्छनागु- (पु०) भूख की अधिकता

भटक- (स्त्री०) संदेह, दुविधा

भटभटी- (स्त्री०) ऐसी अवस्था, जिसमें चकाचौंध के कारण न दिखाई पड़े

भटभ्यारा- (पु०) मिलन, संयोग, सामना

भठिया- (स्त्री०) धोबियों की भट्ठी; कण्डों (उपलों) का सुडौल ढेर

भठियारा- (पु०) भट्ठी चलाने वाला, रोटी पकाने वाला(मुसलमान)

भड़ंग- (स्त्री०) दिखावा, व्यर्थ की बनावट

भड़कदंता- (वि०) जिस बैल के सब दाँत समय से पूर्व निकल आवें

भड़कील- (वि०) देखने में सुन्दर व बड़ा

भड़रबु- (क्रि० स०) खुरपी से मिट्टी (पौधे की जड़ की) खोदकर उलट देना

भतइत- (पु०) हलवाहा, जो भाता पर काम करे

भतरहा- (वि०) भूना या उबला हुआ पदार्थ, जिसमें कोई भाग गला न हो

भतरिन्हा- (वि०) खाना बनाने वाला

भतार- (पु०) पति, मालिक

भदेस- (वि०) भद्दी

भद्दरा- (पु०) खराब मुहूर्त; कहा० "घरी मँ घर जरै नव घरी भद्दरा"; सन्नाटा

भद्दा- (पु०) धूल; (वि०) धूमिल, खराब

भद्दि- (स्त्री०) बदनामी, दुर्गति

भनछबु- (क्रि० अ०) फिरते रहना, तलाश करना

भनबु- (क्रि० स०) कहना, वर्णन करना

भन्ना- (पु०) बैलगाड़ी में चौड़ाई में लगने वाले बाँसों के छोटे होने पर उनमें जोड़े गये छोटे बाँस, अदायगी; -**मारबु**- (क्रि० स०) व्यापारियों द्वारा छोटे व्यापारियों को रकम न देना

भन्नाबु- (क्रि० अ०) भिनभिनाना, भन्न-भन्न की या फटी आवाज़ करना; नाराज होना

भभक्का- (पु०) बड़ा छेद

भभरी- (स्त्री०) वृद्धावस्था या बीमारी के कारण उत्पन्न होने वाली शारीरिक सूजन

भयवादी- (स्त्री०) बिरादरी, भाई चारा

भरकुंडा- (वि०) ऐसी जुताई, जिसमें 'कूँड़' कुछ अन्तर पर बनते हैं

भरजालि- (स्त्री०) भार्दूल

भरमजालु- (पु०) दायित्व, भ्रमजाल

भरमबु- (क्रि० अ०) भ्रम में पड़ना, घूमना

भरसा- (पु०) छत की कमजोर बल्ली को रोकने हेतु दीवाल से टिकाकर लगाई गई लकड़ी

भरसायँ- (पु०) अन्न भूनने का चूल्हा

भरहर- (वि०) छिद्रयुक्त; बीड़र; मोटा

भराव- (पु०) फर्नीचर विशेष; (वि०) गहरा

भरी- (स्त्री०) तोला

भरुआ मटका- (पु०) पेशाब करने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन

भरुहाबु- (क्रि० अ०) परेशान होना, उपेक्षित करना

भर्ती- (स्त्री०) लेई द्वारा चिपकाया जाने वाला टुकड़ा; नियोजन

भर्रा- (पु०) अनाज से मिट्टी आदि छानने का पात्र, चलना; मंझा के नीचे बंधी हुई मोटी रस्सी को कसने में प्रयुक्त लकड़ी

भलकुछु- (अव्य०) हर तरह से, सब कुछ

भलमंसी- (स्त्री०) सज्जनता

भलिपूछौ- (अव्य०) सच पूछो तो

भलेमानुस- (पु०) सज्जन

भवँरि- (स्त्री०) पानी का चक्रवात; चक्र

भवँरी- (स्त्री०) भाँवर

भवर- (पु०) विचार, मंसूबा

भवातुलि- (वि०) मंडराती हुई

भसमी- (वि०) गंभीर या सघन, भस्म

भसमु- (पु०) साथी, भस्म, पालन-पोषण

भसोटु- (पु०) शक्ति प्रायः दूसरे को ललकारने में प्रयुक्त

भाँज- (स्त्री०) रोक, विघ्न, ऐंठन

भाँजबु- (क्रि० स०) रस्सी की अनेक लड़ियों को एक में लपेटना

भाँटा- (पु०) बैंगन

भाँड़ा- (पु०) बर्तन

भाँपत- (वि०) खेत का वह भाग, जहाँ पलड़ों द्वारा उचित दूरी पर खाद न गिराई गई हो

भाँपबु- (क्रि० स०) परख लेना, ताड़ना

भाँयँ-भाँयँ- (क्रि० वि०) निर्जन स्थान में सन्नाटे की आवाज

भाखबु- (क्रि० स०) कहना, भविष्यवाणी करना

भागि- (स्त्री०) भाग्य, नियति

भाठि- (स्त्री०) मांद; वि० भारि

भाता- (पु०) हलवाही करने की वह पद्धति, जिसके अनुसार उसे पूरी उपज का १/६ भाग मिलता है

भाती- (स्त्री०) धरोहर, सम्पत्ति; (वि०) अधिक कच्ची

भाबिता- (स्त्री०) भवितव्यता, भावी

भाभी- (स्त्री०) भवितव्यता, बड़े भाई की पत्नी

भारकस- (स्त्री०) बैलगाड़ी (बोझा लादने में प्रयुक्त)

भारनु- (पु०) मकान निर्माण सम्बन्धी उपकरण विशेष

भारि- (स्त्री०) मांद, वि० भाठि

भारु- (पु०) चबेना भूनने की भट्ठी, भाड़;

भास- (स्त्री०) पानी या कीचड़ में धँस जाने की स्थिति

भिंजारनि- (स्त्री०) सर्वनाश

भिंजारबु- (क्रि० स०) नष्ट या समाप्त करना

भिकबु- (क्रि० स०) फेंकना

भिजउबु- (क्रि० स०) भिगोना

भिटुहुरा-भटुहुरा- (पु०) उपलों (कण्डों) का सुडौल ढेर

भिटुरा- (पु०) मिट्टी का ऊँचा उठा हुआ स्थान

भिटुरी- (स्त्री०) गठरी, दुःख

भिड़काइब- (क्रि० स०) (दरवाजों का) बंद करना

भिड़नी- (स्त्री०) संघर्ष, भिड़ंत

भितलिया- (स्त्री०) पतली दीवार

भितल्ला- (पु०) कपड़े का भीतरी पल्ला, खजाना

भितिया- (स्त्री०) छोटी व पतली दीवाल अधिकतर रसोईघर में प्रयुक्त

भितूरि- (स्त्री०) भाण्डार, रसोईघर

भिनउखा- (पु०) प्रातःकाल

भिन्नही- (स्त्री०) प्रातःकाल; (वि०) अधिक भिनभिन करने वाली

भिन्सार- (पु०) प्रातःकाल

भियानु- (पु०) प्रातःकाल, वि० बिहान

भिरवारु- (पु०) ज्वार-बाजरे के गट्ठों का खड़ा ढेर

भिलिर-भिलिर- (क्रि० वि०) फूट-फूटकर (रोना)

भिल्ला- (पु०) भेंड़ का नर बच्चा

भिहलाबु- (क्रि० अ०) बिखरकर खराब हो जाना; ठण्ड लग जाना

भीठ- (स्त्री०) किसी ऊँचे टीले पर लकड़ी एवं फूस से बना विशाल छप्पर, जिसमें पान की खेती की जाती है

भीति- (स्त्री०) दीवाल

भीरा- (पु०) लकड़ी के कोल्हू में पटरे पर रखा जाने वाला बोझ, हस्त चक्की का निचला से निर्मित अड्डा

भीरी- (स्त्री०) अरहर आदि का गट्ठर, बैल की पीठ पर लदा हुआ 'जार' नामक भेदा

भुई- (स्त्री०) भूमि; जमीन

भुकुर-भुकुर- (क्रि० वि०) आँसू गिरा-गिराकर; मुँह बिदोर-बिदोर कर

भुक्का, भूका- (पु०) सत्तू

भुगुत्ति- (स्त्री०) भुक्ति, मृत व्यक्ति की स्मृति में एक ब्राह्मण का भोजन

भुग्गा- (पु०) मूर्ख

भुचकुरु- (पु०) कचूमर

भुच्चड़- (वि०) जिसकी समझ में बात जल्दी न आवे

भुजवा- (पु०) चबेना भूनने वाली जाति

भुजाली- (स्त्री०) नैपालियों द्वारा प्रयुक्त कुकुड़ी; छोटी तलवार

भुड़ागरु- (वि०) वह जमीन, जो बलुई व ऊँची-नीची हो; वि० भुड़ही

भुट्टा- (पु०) मकाई या ज्वार का फल; -होना- (मु०) मर जाना

भुताही- (स्त्री०) भूतों के प्रकोप की निरन्तरता

भुन्नासु- (पु०) शिश्न, अपशब्दपरक वस्तु

भुरका- (पु०) पानी पीने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन; रूपान्तर- कुज्झा, घट, कुल्हड़

भुर्रा- (वि०) खुला हुआ; जो गोली के रूप में बंधा न हो

भुसइला- (पु०) बरसात में प्रथम दिन गिरा हुआ पानी; वि० दौंगरा

भुसउरा- (पु०) वह कमरा, जहाँ भूसा भरा जाता हो

भुसु- (पु०) भूसा

भुलभुलउबु- (क्रि० स०) (फल आदि को) आग में थोड़ा-सा भून लेना

भुलभुलि- (स्त्री०) भूमि की तपनि

भुवा- (पु०) सफेद बाल की सी चीज, जो कुछ फूलों तथा पेड़ों में से निकलती है

भूँजबु- (क्रि० स०) भूनना

भूँभुरि- (स्त्री०) आग से भरी हुई राख; वि० भुलभुलि

भूजा- (पु०) चबेना

भूड़ा- (पु०) धूलयुक्त मिट्टी

भूभा- (पु०) मकरे का खोला, बीजकोष

भूही- (स्त्री०) खर-पतवार आदि की राख

भेंगि- (स्त्री०) शक

भेंड़- (स्त्री०) विघ्न, छिद्रान्वेषण; पशु विशेष

भेड़िया- (वि०) बैल की किस्म, जिसकी सींगें बिल्कुल छोटी व खूब मोटी हों

भेड़हा- (पु०) भेंड़िया
भेथन- (पु०) मुँह से निकला हुआ थूक, पानी आदि
भेलनी- (स्त्री०) चरखी में लगा छोटा भेलन
भेलस- (पु०) भेष, वेश
भेलि, भेली- (स्त्री०) ब्याने के थोड़ी देर बाद किसी-किसी भैंस के शरीर से निकलने वाला मांस; गुड़ की बट्टी
भेव- (पु०) रहस्य, अन्तर, भेद
भैवदी- (स्त्री०) भाई का रिश्ता
भोंड़ी- (स्त्री०) पेट का मध्य भाग, यह शब्द प्रायः धमकी देने के लिए ही प्रयुक्त होता है; (उदा०) "भोंड़ी फोरि देब"
भोंसड़ी- (स्त्री०) योनि
भोड़ा- (पु०) लम्बी वस्तु, जिसमें आर-पार छेद हो
भोटिया- (वि०) छोटा-मोटा एवं हृष्ट-पुष्ट (व्यक्ति)
भोथा- (पु०) भद्दा एवं कम समझवाला व्यक्ति
भोरइब- (क्रि० स०) बहकाना, फँसाना
भोरका- (पु०) भुरका.
भोरहरु, भोरू- (पु०) प्रातःकाल
भौठी- (स्त्री०) एक अन्न विशेष
भ्याँट- (स्त्री०) बलि, मुलाकात
भ्याजा- (पु०) भेजा, दिमाग
मंगना- (पु०) विवाह
मंगउरा- (पु०) दसवाँ संस्कार में प्रयुक्त उड़द की दाल का बना गोल बड़ा
मंगतरहा- (वि०) असमानता (बुवाई में)
मंगनी- (स्त्री०) वैवाहिक रस्म विशेष
मंगरी- (स्त्री०) जीर्ण-शीर्ण छप्पर के ऊपरी सिरे पर बाँधी जाने वाली अलग से पट्टी; (कहा०) "मंगर मंगरी बुद्धै खाट बेफै बढ़नी बाराबाट"
मंगवारी- (स्त्री०) पतली मेंड़
मंजरुआ- (वि०) प्रतिवर्ष जोता-बोया जाने वाला खेत
मंजूर- (पु०) मजदूर; (वि०) स्वीकार
मंजूरी- (स्त्री०) पारिश्रमिक; स्वीकृति
मंझखुटरा- (पु०) बैलगाड़ी में लगने वाली खुटरियों में से बीच की खुटरी
मंझरेहटा- (पु०) छप्पर बाँधने के लिए पहले इसके बीच वाले भाग को बनाते हैं, जिसे मंझरेहटा कहते हैं
मंझिया- (पु०) विवाह आदि में स्थापित मध्यस्थ; मंझवानी
मंझी- (स्त्री०) ईंटें पाथते समय गीली मिट्टी ढोने में प्रयुक्त बाँस की निर्मित पट्टी
मंझोला- (स्त्री०) छोटी कन्नी
मंड- (स्त्री०) बू, हवा
मंडल- (वि०) बहुत-सा, असंख्य; (पु०) प्रदेश का एक अंश; दल (गाने बजाने वालों का)
मंडली- (स्त्री०) समूह, संगीत पार्टी या दल
मंतरा- (पु०) मात्रा
मंसा- (स्त्री०) इच्छा, उद्देश्य, अभिप्राय
मइजिलि- (फा० स्त्री०) राह, शवयात्रा
मइया- (वि०) ममेरा; -ससुर- (पु०) पति अथवा पत्नी का मामा; -सासु- (स्त्री०) पति अथवा पत्नी की मामी; (स्त्री०) माता
मइला- (पु०) गू, विष्टा (वि०) गंदा
मइहरु- (पु०) घी की तलछट
मइहाँ- (परसर्ग) में
मउका- (अ० पु०) बारदात का स्थान; अवसर
मउगा- (वि०) पुरुष, जो स्त्रियों की भाँति बोले या वस्त्र पहने
मउजा- (अ० पु०) गाँव (ग्राम सभा का)
मउताज- (अ० वि०) इच्छुक, कंगाल
मउना- (पु०) मूज का टोकरा, मिट्टी का बड़ा पात्र
मउरा- (वि०) जिस बैल के सींग पीछे की ओर झुके हों
मउरी- (स्त्री०) छोटा मौर, जो दूल्हन के बाँधा जाता है
मउरूसी- (अर० वि०) पैतृक
मउला- (अ० पु०) अल्लाह, बादशाह
मउवा- (पु०) टोकरा
मकइहरु- (पु०) मक्का का पौधा या डंठल
मकाई- (स्त्री०) मक्का
मकुना- (वि०) हाथी, जिसके बाहर वाले दाँत न हों, छोटा हाथी

मकुनी- (स्त्री०) मोटी ... जो मटर, चने या जौ के आँटे की बनती है

मकूला- (पु०) कहावत

मखउड़ा- (पु०) प्रसिद्ध स्थान, जहाँ राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। यह सरयू के उत्तर दिशा में है प्रतिवर्ष जँहा मेला लगता है

मखड्डी-(स्त्री०) जानबूझकर न सुनने की प्रवृत्ति

मगजी- (स्त्री०) बैलगाड़ी की चौड़ाई में लगी सम्पूर्ण पट्टियाँ जोड़ने के लिए किनारे की ओर लगी हुई दो लम्बी एवं पतली पाटियाँ; जूते एवं पोशाक में लगा अलग से किनारा

...जु- (पु०) भेजा, दिमाग

मगरमत्तु- (वि०) चिन्तामुक्त, गैर-जिम्मेदार

मगरूर- (अ० वि०) कहा न मानने वाला; घमण्डी

...घा- (पु०) मघा ... पक्षिक का छोटा जग

मघेरू- (वि०) माघ ... में होने वाली (बारिश)

मङ्ता- (पु०) माँगने वाला, याचक

मड़रि- (स्त्री०) छप्पर या खपरैल के बीच का भाग

मचक्का- (पु०) ... आघात

मचलबु- (क्रि० अ०) ... जाना, मितलाना

मचला- (पु०) कच्ची दीवाल बनाने योग्य मिट्टी, गीली मिट्टी

मचवा- (पु०) बड़ी मचिया, खाट का पावा; (कहा०) "आन्हरि मउसी चूमै मचवा"

मचहना- (पु०) मक्का आदि के खेतों में बना लकड़ियों का मंच या मचान

मचियउबु- (क्रि० स०) बैलों को काम के लिए माची से जोड़ना; नाहबु

मच्छ- (स्त्री०) मछली

मछोतरा- (पु०) हल में हरीस कसने में प्रयुक्त लकड़ी; वि० मछ्वातरु; पाटि

मजकूर- (वि०) उल्लिखित, प्रायः कचहरी के कागजों में प्रयुक्त

मजक्का- (पु०) हास्य

मजगर- (वि०) बढ़िया, अच्छा

मजगोदरा- (वि०) बीच वाला

मजमा- (अ० पु०) जनसमूह, भीड़

मजरुआ- (पु०) वह खेत, जिसमें खेती होती हो

मजहम- (पु०) भेद, रहस्य; धर्म

मजाज- (अ० पु०) अधिकार

मजाल- (अ० स्त्री०) हिम्मत, बल

मझिअरिया- (स्त्री०) रसोईघर

मटरगस्ती- (स्त्री०) बेफिक्री, आवारागर्दी

मटियामेट- (वि०) मिट्टी में मिश्रित; बरबाद

मटियार- (वि०) वह जमीन, जिसकी मिट्टी कड़ी व उपजाऊ हो

मट्टी- (स्त्री०) शव; मिट्टी

मट्ठर- (वि०) सुस्त; जिसे काम करने की इच्छा न हो; वि० मट्ठु

मठई- (स्त्री०) कुदाल

मठल्याबु- (क्रि० अ०) भोजन आदि खाद्य-पदार्थ को बेमन खाना

मठिया- (स्त्री०) गहना विशेष; छोटा मठ

मठूस- (वि०) बात न सुनने या न मानने वाली; गर्वीली

मठोरि- (वि०) सुस्त

मड़इया- (स्त्री०) छोटा बंगला

मड़ई- (स्त्री०) लुहारों का मिट्टी का वह बड़ा चूल्हा, जिसमें औजार गरम किये जाते हैं; छप्पर, झोपड़ी या मड़ैया

मड़नी- (स्त्री०) अनाज अलग करने हेतु बैलों द्वारा फसल कुचलने की क्रिया

मड़मड़ा- (पु०) भोजन विशेष

मड़ियर- (पु०) जंगली बेर और उसका चारा

मड़िया- (पु०) कीचड़

मड़ुहा-(पु०) छप्पर का ओसारा

मड़वा- (पु०) मण्डप

मड़हा- (वि०) माड़ युक्त (कपड़ा); वि० मड़िहा

मड़ुआ- (पु०) खाद्यान्न विशेष

मढ़- (पु०) बोझ, व्यर्थ का उत्तरदायित्व

मढ़क- (स्त्री०) बाधा .

मतउना- (वि०) जिसके खाने से सिर घूमने लगे

मतान- (पु०) तोंद

मतीरा- (पु०) तरबूज; वि० हिंदोना, कलिंदा

मत्त- (वि०) मस्त, उन्मत्त

मत्थवानि- (स्त्री०) मत्थे में पानी स्पर्श करने की क्रिया

मत्था- (पु०) मस्तक; कोर

मथवाह- (स्त्री०) झालरदार पट्टी, जो घोड़े के मत्थे पर धूप की चमक रोकने हेतु प्रयुक्त होती है

मथार, मथारि- (स्त्री०) पुरवट की सिंचाई में बैलों के खड़े होने का स्थान

मदति- (स्त्री०) सहायता, मदद

मदनी- (स्त्री०) स्त्रियों का गुप्तांग, मदन का घर

मदामी- (वि०) सदा रहने या होने वाला, शाश्वत

मदिया- (स्त्री०) मादा

मदुवा- (वि०) सस्ता, कम कीमती

मद्धिम- (वि०) द्वितीय श्रेणी का, धीमा

मद्धे- (अव्य०) हिसाब में, सम्बन्ध में

मधन्ध- (वि०) सुस्त

मनका- (पु०) जपने की माला; कबीर- "करका मन का छोड़ि कै, मनका मनका फेर; (वि०) इच्छित

मनगर् याबु- (क्रि० अ०) तन्दुरुस्त होना, स्वास्थ्य में वृद्धि होना

मनगो- (पु०) एक प्रकार का अच्छा गन्ना

मनजउकी- (वि०) जो मन में आई बात कह डाले

मनसेधू- (पु०) प्रियतम, पति, पुरुष, मर्द

मनहूस- (अ० वि०) बुरा, अशुभ

मनाही- (स्त्री०) निषेध, रोक

मनिया- (स्त्री०) लकड़ी के कोल्हू में जाँठि को घुमाने में प्रयुक्त पुर्जा विशेष; बैलों में प्रचलित रोग विशेष, जिसमें घाव बन जाते हैं

मनिहारु- (पु०) चूड़ी बनाने की जाति विशेष; चुरिहारु

मनुहाबु- (क्रि० अ०) तैयार होना, मन बना लेना, आकर्षित होना

मनुहारि- (स्त्री०) फुसलाने या मनाने की क्रिया

मन्दिल- भवन, मन्दिर; मन्डिल

मन्नि- (वि०) मान्य

ममाँखि- (स्त्री०) मधुमक्खी

ममानियत- (स्त्री०) मनाही, रोक

ममारक- (पु०) मुबारक

मयँनी- (वि०) जिस भैंस का सींग नीचे लटककर गालों तक आ जाता है

मयउनी- (वि०) कावा से माचि तक बाँधी जाने वाली रस्सी; वि० मैगहा

मयउबु- (क्रि० स०) पाटा चलाना

मयर- (वि०) रिक्त

मया- (स्त्री०) प्रेम; **-बु-** (क्रि० अ०) ममता दिखाना

मयारी- (स्त्री०) मोटी धन्नी

मरकहा- (वि०) मारने वाला (जानवर)

मरगी- (स्त्री०) (वंश में) मृत्यु हो जाने की अवस्था

मरघटा- (पु०) श्मशान, मुर्दा घाट

मरघिल्ला- (वि०) बहुत दुबला-पतला

मरचटना- (पु०) बच्चे को प्रथम बार अन्न ग्रहण कराने का संस्कार; वि० अन्न-प्राशन

मरजाद- (स्त्री०) मर्यादा, इज्ज़त

मरजील- (वि०) रोगग्रस्त, रोगी

मरतकहा- (वि०) दुबला-पतला, बीमार

मरतबा- (अ० अव्य०) बार, दफा, चक्कर

मरतलहा- (वि०) मृत्यु के सन्निकट, अधिक दुबला-पतला

मरदुमी- (फा० स्त्री०) मर्दानगी, बहादुरी

मरमहित- (वि०) विशेष प्रेम करने वाला, मर्म को समझने वाला

मरलहा- (वि०) (अन्न) जिसमें पाला या ओला आदि लगा हो

मरवट- (वि०) पटुवा या सन की वह अवस्था विशेष, जो पानी में भिगोयी न गयी हो

मरवा- (वि०) अच्छी तथा काली मिट्टी वाले (खेत)

मरायल- (वि०) मरने के निकट, दबा हुआ

मरियल- (वि०) मरणासन्न, दुबला

मरी- (स्त्री०) ग्राम देवी, जिन्हें मीरा माई भी कहते हैं

मरुआ- (पु०) एक पौधा, जिसका पत्ता तथा फूल -देवी को चढ़ाया जाता है, बाँस की छड़ी;

-मारबु- (क्रि० अ०) गर्व करना

मलंग- (पु०) निर्जन स्थान में रहने वाला मुस्लिम भूत

मलक्यातमु- (पु०) स्वामित्व

मलमासु- (पु०) हर तीसरे वर्ष होने वाला १३वाँ महीना

मलसा- (पु०) गुड़ निर्माण सम्बन्धी उपकरण

मलार, मलाल- (अ० स्त्री०) रंज, नाराज़गी; अफसोस; वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला गीत विशेष

मलिच्छ- (वि०) गंदा, अपवित्र; अधर्मी; म्लेच्छ

मलिया- (स्त्री०) बच्चों का माला, मिट्टी की लुटिया, चारपाई में पैताने लगी रस्सी

मलीदा- (फा० पु०) शक्कर, घी एवं आँटे का बना भोजन, बढ़िया खाद्य

मलेपंज- (वि०) अशंक्य, थका, जिसका पंजा टूट गया हो

मल्हार- (अ० स्त्री०) वर्षा ऋतु का गीत विशेष

मवनि- (स्त्री०) मिट्टी का बड़ा पात्र, जिसमें ताड़ी आदि रखी जाती है

मवाजा- (अ० पु०) मुवाब्जा

मवादु- (पु०) पस, पीव

मसक- (फा० स्त्री०) भेंड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ थैला जिससे भिश्ती पानी ढोते हैं

मसकबु- (क्रि० अ०) अत्यन्त हल्का फटना, नाराज़ होना; वि० चिड़चिड़ा

मसका- (पु०) मक्खन (वि०) नाराज़

मसक्कति- (स्त्री०) मेहनत, परिश्रम

मसनद- (स्त्री०) गद्दी, तकिया

मसरफ- (पु०) काम, उपयोग

मसल- (अ० स्त्री०) मिसाल, कहावत

मसलहति- (स्त्री०) नीति, रहस्य

मसला- (अ० पु०) मामला, कहानी

मसहरी- (स्त्री०) फूलों का पर्दा; (वि०) पट्टी से बुना पलंग

मसहिंनि- (स्त्री०) गुड़ की बट्टी बनाने के लिए बना चक्राकार ढाँचा

मसा- (पु०) मच्छर

मसान- (स्त्री०) विदेह आत्मा, सुलाने का जादू

मसियानी- (स्त्री०) स्याही

मसी- (स्त्री०) रोशनाई

मसील- (वि०) मांस युक्त

मसूल- (स्त्री०) बाजार में विक्रेताओं को पड़ने वाला कर

मस्ताब- (अ० स्त्री०) बहुत ही प्रकाश करने वाली आतिशबाज़ी, अस्तुरा विशेष

महज- (अ० अव्य०) सिर्फ़ शुद्ध

महजिद- (स्त्री०) मस्जिद

महदूर- (पु०) मास्टर

महतमा- (पु०) साधु, महात्मा

महतारी- (स्त्री०) माँ

महतीनि- (स्त्री०) मालकिन, महतौ की पत्नी

महतो, महतौ- (पु०) (वैश्यों में) ससुर या जेठ, जातीय मुखिया

महरा- (पु०) जाति विशेष, जो अवसर विशेष पर पानी भरते हैं, कहार

महरानी- (स्त्री०) सम्राज्ञी, देवी

महरूल- (पु०) हास्य नाटिका

महातमु- (पु०) माहात्म्य, महत्व

महाना- (पु०) बहुत बड़ा ढेला

महाबरा- (पु०) अभ्यास, आदत

महाल- (पु०) गाँव का एक भाग

महावन- (वि०) अत्यधिक, बहुत

महास- (पु०) महान व्यक्ति, महाशय

महाहौं- (वि०) अत्यधिक; तमाम

महि- (स्त्री०) पृथ्वी, धूल, घमण्ड

महिका- (सर्व०) मुझको

महुआरी- (स्त्री०) महुआ की बाग

महिना- (पु०) माह, मास, मासिक धर्म

महुलाबु- (क्रि० अ०) मुरझाना

महूँ- (सर्व०) मैं भी

महूरति- (स्त्री०) मुहूर्त, शुभ समय

महेउ- (पु०) मट्ठा

महेर- (पु०) विघ्न, रुकावट

महेसी- (स्त्री०) बवासीर

महेल्ला- (पु०) मसालायुक्त खड़े उड़द या मसूर की खिचड़ी

मांगी- (स्त्री०) सिंचाई की सुविधा हेतु खेतों में बनी पतली–पतली मेड़ें

मांजरि- (स्त्री०) कंकाल

माँझा- (पु०) शरीर, व्यवस्था

माँड़बु- (क्रि० स०) गेहूँ की फसल का बैलों से कुचलना; घूमना

माँड़ी- (स्त्री०) कपड़े या सूत पर दिया जाने वाला कलफ

मांदगी- (स्त्री०) बीमारी

मांदी- (वि०) बीमार

माँहू- (पु०) छोटा उड़ने वाला कीड़ा, जो सरसों आदि के फूलों पर बैठता है

माकड़ा, माकरा- (पु०) बैलगाड़ी का पुर्ज़ा विशेष

माँकड़ी- (स्त्री०) बुनकरों का एक औजार

माकूल- (वि०) परिपुष्ट, संतोषप्रद

माख- (स्त्री०) प्रेमपूर्वक शिकायत; (वि०) बुरा

माखबु- (क्रि० अ०) नाराज़ होना

माड.नु- (पु०) वरदान; वि० मड.न

माची- (स्त्री०) लकड़ियों का वह ढाँचा, जिसमें बैल मचियाए या जोते जाते हैं

माजु- (पु०) मवाद

माझा- (पु०) शरीर का मध्य भाग (कमर); (कहा०) "नई जवानी माझा ढील"

माटी- (स्त्री०) मिट्टी

माठा- (पु०) मट्ठा

माड़ु- (पु०) पके चावलों से निर्गत पानी

माड़ौ- (पु०) विवाह आदि अवसर पर छाया गया सेंठा आदि से मण्डप

मात- (अ० स्त्री०) हार, पराजय, माँ

मातबु- (क्रि० अ०) नशे में होना

मातिवर- (वि०) धनाढ्य, विश्वसनीय

माथु- (पु०) माथा, मत्था

माथे- (अव्य०) सहारे, आश्रित

माना- (पु०) लकड़ी का एक बर्तन, जिसमें अनाज, दही, दूध आदि मापा जाता है; मानने का भूतकालिक रूप

मानी- (स्त्री०)१६ सेर की तौल; हस्तचक्की में प्रयुक्त छिद्रयुक्त लकड़ी

मारतौलु- (पु०) बड़ा हथौड़ा; वि० हथौरु

मारमूर- (पु०) बड़ा पत्ता, जो दवा के काम आता है; वि० मालमल

मारा- (पु०) माला

मार्ल–बाँसा- (वि०) नमी के अभाव में चोंगे द्वारा की जाने वाली बुवाई

मालियत- (स्त्री०) कीमत, मूल्य

मास- (फा० पु०) उड़द

मासूक- (वि०) प्रिय

माहिर- (वि०) कुशल

माहुरु- (पु०) घी पकाने पर निकलने वाली तलछट; जहर; वि० मइहरु

माहुल- (वि०) हल्का नम, आर्द्र (कपड़े)

मितर- (पु०) मित्र

मिचकुड़ा- (पु०) जोतने में निर्मित हराई का आखिरी थोड़ा अंश

मिचकुरी- (स्त्री०) छोटा पतला मेंढक, जो घरों के कोनों में रहता है; वि० मेंझुकी

मिजाँ- (पु०) पसंद, स्वभाव, तालमेल

मिजाजु- (पु०) अंतर्मन; दिमाग

मिजान- (पु०) हिसाब

मिटहुरु- (पु०) मिट्टी घोलने का गड्ढा; खौं

मिट्ठा–चुक्की- (वि०) हल्का–फुल्का (बोलचाल)

मिठखोर- (पु०) मट्ठे के साथ बनाया गया चावल

मिताई- (स्त्री०) मित्रता; कहा० "तित गुर भोजन तुरुक मिताई, पहिल मीठ पाछे पछिताई"

मित्तिरी- (पु०) कारीगर, मिस्तिरी

मिथिहा- (वि०) लाख से निर्मित चूड़ी की किस्म विशेष

मिनहा- (वि०) मना

मिरगिसा- (पु०) जेठ में लगने वाला नक्षत्र, मृगशिरा

मिरजई- (स्त्री०) छोटी अंगरखी, पुराने ढंग की कमीज़; 'मिरज़ा' का पहनावा

मिरजा (अ० पु०) मुसलमानों का एक सम्भ्रांत पद

मिरतुका- (स्त्री०) मृत्यु

मिरदहा- (पु०) कानूनगो और अमीन का सहायक

मिरुकबु- (क्रि० अ०) टेढ़ा हो जाना, थोड़ा-सा ऐंठ जाना

मिर्चि- (स्त्री०) काली या छोटी मिर्च

मिर्तलोकु- (पु०) मृत्युलोक

मिलकियति- (स्त्री०) सम्पत्ति

मिलानी- (स्त्री०) बुझौव्वल कहानी में उत्तर न दे पाने पर उत्तरदाता द्वारा कही गयी कहानी; उदाहरण

मिसिर- (पु०) मिश्र, एक प्रकार के ब्राह्मण; कहा० "मिसिर करैं घिसिर घिसिर रहिला लोन चबायँ"

मिसिल- (अ० स्त्री०) फाइल, पंजिका

मिहान- (वि०) आर्द्र, नम (अनाज)

मीर- (वि०) प्रथम, आगे (बच्चों के खेल में प्रयुक्त), शासक

मुगरा- (पु०) बड़ी मुंगरी

मुंदरी- (स्त्री०) अँगूठी; मुद्रिका

मुदा- (पु०) योगियों का गहना विशेष

मुँहका, मुक्का- (पु०) घूँसा

मुँहठात- (अव्य०) सामने

मुअबु- (क्रि० अ०) मरना

मुइला- (वि०) मुँह चुराने वाला, मक्खीचूस

मुकउआ- (पु०) गुलवरि का वह भाग, जिधर से धुआँ, आँच आदि निकले

मुकहली- (वि०) बरी, मुक्त

मुकबरु- (अ० पु०) जासूस, गुप्तचर

मुकाम- (अ० पु०) ठहरने का स्थान

मुकुर- (पु०) शीशा, आईना

मुखहरी- (स्त्री०) जानवरों के मुँह पर बाँधने में प्रयुक्त रस्सी का गहना; वि० मुहारा

मुगा (स्त्री०) चाँदी-सोने के तार; चमकीला तार

मुखतै- (वि०)-मुफ्त ही, मुख से

मुखारी- (स्त्री०) दातौन, दतून

मुचंडा- (पु०) हट्टा-कट्टा युवक

मुचमुचहा- (वि०) ढीला-ढाला (व्यक्ति)

मुच्छाइब- (क्रि० अ०) एकाधिकार स्थापित करना

मुच्छारोइयाँ- (पु०) नवयुवक

मुजबानी- (वि०) जबानी, मौखिक

मुजरा- (पु०) वेश्यालय में आयोजित गाना-बजाना

मुट्ठा- (पु०) दोनों मुट्ठियों भर की वस्तु, हत्था

मुठिया- (स्त्री०) रूई धुनकते समय तार पर चोट करने की हत्थी

मुड़ना- (पु०) संस्कार; (क्रि० अ०) घूम पड़ना

मुड़वाई- (स्त्री०) छत पर चारों तरफ बनी मेंड़; वि० मुंडेरि

मुड़ाई- (वि०) चूड़ी की किस्म विशेष

मुड़िया- (स्त्री०) फार के नीचे लगने वाली लकड़ी; खोपरा; (वि०) निरा

मुड्ढुकुला- (क्रि० वि०) मुँह के बल

मुँड़ेरि- (स्त्री०) मुड़वाई

मुड्याला- (पु०) मूड़ (शिर) के आसपास का चमड़ा

मुड्ढा- (पु०) कोना (पतंग आदि का)

मुतहरा- (पु०) पेशाब (मूत्र) युक्त कीचड़

मुदा- (अव्य०) परन्तु; मुलु

मुद्दई- (अ० पु०) दुश्मन, अभियुक्त

मुद्दत- (अ० स्त्री०) लम्बी अवधि; 'मुद्दती'

मुन- (स्त्री०) नोंक; -मुन- (पु०) बच्चा

मुनगा- (पु०) सहिजन की फली

मुनरी- (स्त्री०) अँगूठी, कुएँ की गोलाई; (गीतों में) मुनरी बरन करिहावँ

मुनसरिमु- (पु०) जज का पेशकार

मुनासिब- (अ० वि०) उचित, समीचीन

मुनियाबु- (क्रि० अ०) मुन (नोंक या अंकुर) निकलना, फोड़ा आदि का मुँह उभरना

मुफट्ठ- (वि०) स्पष्टवक्ता

मुफस्सिल- (वि०) विस्तृत

मुरइला- (पु०) मोर

मुरई- (स्त्री०) मूली

मुरउवति- (स्त्री०) हमदर्दी, स्नेह
मुरकी- (स्त्री०) मक्का आदि अधखिला लावा
मुरगाबी- (फा० स्त्री०) पानी की चिड़िया
मुरचा- (पु०) मोर्चा, आमना-सामना, जंग, लोहे में लगने वाला मैल
मुरदार- (वि०) (शरीर का भाग या चमड़ा), जो सूखकर निर्जीव हो गया हो
मुरधुनि- (स्त्री०) संघर्ष, परेशानी
मुरमुरी- (स्त्री०) कच्चे अनाज का चबेना
मुरस्साकार- (अ० फा० पु०) जेवर में नगीने और जवाहिर जड़िया (जड़ने वाला)
मुरहटा, मुरइठा- (पु०) साफा, पगड़ी
मुरहरु- (पु०) केन्द्रीय कक्ष
मुरहा- (वि०) चालाक, तरकीबी; (पु०) अश्लील व्यक्ति; मुर राक्षस को मारने वाला (कृष्ण)
मुराही- (स्त्री०) चालाकी, अश्लीलता
मुरीद- (अ० पु०) शिष्य, अनुयायी
मुरुकबु- (क्रि० अ०) मोच आना, घूमना
मुर्चा- लोहे में लगने वाली जंग, लड़ाई
मुर्दनी- (स्त्री०) चेहरे पर मुरझाने का भाव, मृत्यु; शव की अन्त्येष्टि
मुर्रा- (पु०) छल्ला; -नजमी- (वि०) चूड़ी की किस्म विशेष, जिसमें दो रंग मुड़ते हुए दिखायी पड़ते हैं
मुर्री- (स्त्री०) तागे की गाँठ
मुलम्मा- (पु०) गिलिट आदि के पानी से युक्त धातु; -कार- मुलम्मे का काम करने वाला; -साजी- मुलम्मे का काम
मुला, मुलु- (अव्य०)परन्तु
मुलाहिजा- (पु०) विचार, संकोच, ध्यान
मुलुर-मुलुर- (क्रि० वि०) रुक-रुक कर, धीरे-धीरे
मुसचंड- (वि०) हट्टा-कट्टा
मुसब्बरु- (पु०) बैलगाड़ी का एक पुर्जा विशेष, धुरा, पदार्थ विशेष
मुसरा- (पु०) बैलगाड़ी में आँकु की जगह पर लगाया जाने वाला पुर्जा; जिस गाड़ी में आँकु नहीं लगता, उसमें मुसरा लगाया जाता है; बड़ा मूसल
मुसिक्का- (पु०) बैल आदि के मुँह पर बाँधने की रस्सी की जाली; जाबा
मुसुकुरु- (पु०) मसूड़ा
मुस्तकिल- (अ० वि०) स्थायी, दृढ़
मुस्ति- (स्त्री०) मुट्ठी
मुहकवरि- (वि०) मुँह के बराबर
मुहटी- (स्त्री०) फोड़ा आदि का मुँह
मुहड़ा- (पु०) सामना, धार, मुख
मुहन्दी- (स्त्री०) पहिए के छेद में लगी लोहे की पत्ती
मुहारा- (पु०) जानवरों के मुँह पर बाँधने की रस्सी; मुकेहरी
मुहाल- (अ० वि०) कठिन, असम्भव
मुहिम- (स्त्री०) लड़ाई की तैयारी
मूँज- (स्त्री०) पतावरि का वह अंश, जिसे कूटकर रस्सी आदि बनाई जाती है
मूँजी- (वि०) कंजूस
मूँड़बु- (क्रि० स०) बाल छीलना; ठगना
मूँडु- (पु०) सिर
मूँढ़ी- (स्त्री०) जोतते समय हल कूँड़ में जाने पर कूँड़ में आया हुआ टेढ़ापन, गेहूँ आदि पौधों का गुच्छा; बाँव
मूठि- (स्त्री०) प्रथम दिन की बुवाई को मूठ कहते हैं, दिशाग; तंत्र-मंत्र विशेष
मूड़ा- (पु०) पुरहाई कुएँ का ऊँचा वाला भाग; वि० लिलारी
मूढ़- (वि०) बिना जुता हुआ (खेत); मूर्ख (स्त्री०) औषधि विशेष
मूड- (पु०) पेशाब, मूत्र
मूर- (पु०) मूल
मूसनि- (स्त्री०) चोरी
मूसरु- (पु०) अनाज कूटने में प्रयुक्त लकड़ी का यंत्र; पहरुआ, बखरी
मूसु- (पु०) चूहा
मेंगनिया, मेंगनी- (स्त्री०) लेंड़ी
मेंझुका, मेंढुका- (पु०) मेंढक
मेंड़रा- (पु०) मिट्टी के बर्तनों में बनी हुई ऊपरी धार; वि० अवलि
मेंड़ुकी- (स्त्री०) कान का एक गहना

मेउढ़ी- (स्त्री०) वनस्पति विशेष
मेखु- (पु०) बुरा
मेघा- (पु०) मेंढक
मेटि- (पु०) सड़क पर काम करने वाले मजदूरों का जमादार
मेटिया- (स्त्री०) जल, दूध आदि रखने में प्रयुक्त, मिट्टी का लोटेनुमा पात्र
मेटुका- (पु०) मिट्टी का बड़ा पात्र, जो अनाज आदि रखने के काम आता है
मेडुआ- (पु०) अन्न विशेष; मडुवा
मेढुकी- (स्त्री०) कान का गहना विशेष
मेढुला- (पु०) भेंड़ का बच्चा
मेदा- (पु०) आमाशय
मेम- (स्त्री०) अंग्रेज की स्त्री
मेर- (अव्य०) प्रकार, भिन्नता
मेरा- (पु०) कुटे हुए धान में वह चावल, जिसकी भूसी न छूटी हो
मेरी- (वि०) प्रेमी
मेरुआ- (पु०) मिट्टी का छोटा बर्तन
मेलान- (पु०) एक प्रकार का भूत
मेलिया- (स्त्री०) मिट्टी का गोलाकार छोटा बर्तन
मेसरुआ- (पु०) चुनरी के प्रयोग में आने वाला झीना वस्त्र
मेहरि- (स्त्री०) जोरू, पत्नी
मैंजा- (वि०) काना से माचि तक बाँधी जाने वाली रस्सी; वि० मयउनी
मैदवाह, मैदवाह- (वि०) बुवाई की पद्धति, कूँड़ में बीज बोकर पाटा चला देने के बाद फिर न जोतने को मैदाह कहते हैं
मोंगर- (पु०) मुह के ऊपर दो छोटी-छोटी [illegible] मोंग; वि० बदनखुरी
मोंडी- (वि०) जिन बैलों के सींग सामने झुके होते हैं
मोकाम- (अ० स्त्री०) समाज, महफिल
मोचन- (पु०) खेत का मचान
मोंगरा- (पु०) फूल विशेष, बड़ी मुंगरी
मोघी- (वि०) दुष्ट (प्रायः बच्चों के लिए)
मोट- (स्त्री०) चमड़े का बर्तन, जिससे कुएँ से पानी निकाला जाता है
मोटमर्द- (वि०) सन्तुष्ट, अमीर
मोटरी- (स्त्री०) गट्ठर, बोझ
मोटहा- (वि०) कुली, निकम्मा
मोटासा- (वि०) जो किसी का काम न करे, बमण्डी
मोठिया- (स्त्री०) हल का हत्था; वि० मुठिया, कुढ़
मोताब- (स्त्री०) अंदाज, अनुपात
मोतिया- (पु०) फूल विशेष
मोथी- (स्त्री०) दाल सम्बन्धी अनाज
मोदी- (पु०) खाने-पीने का सामान बिक्रेता
मोयन- (पु०) निश्चित मूल्य, चिकनाई
मोरई- (स्त्री०) पाँच या सात ऊँखों का पत्तियों से बंधा गड्ढा
मोरङ.- (पु०) दूर का स्थान, इस नाम का एक स्थान नेपाल में है
मोरछल- (पु०) हवा करने का या मक्खी उड़ाने का सुसज्जित पंखा
मोरम- (पु०) ईंट के छोटे-छोटे टुकड़े
मोरी- (स्त्री०) नाली
मोलहिजा- (पु०) दया, आपसदारी
मोहंदी- (स्त्री०) पहिये के पास गाड़ी के भीतर की ओर लगा हुआ लकड़ी का पुर्जा
मोहकमा- (अ० पु०) विभाग; मुहकमा
मोहबिल- (वि०) उपस्थित, प्रकट
मोहरा- (पु०) दरवाजा, मुर्चा
मोहारा- (वि०) जानवरों के मुँह में पिन्हाने वाला रस्सी का आभूषण विशेष
म्याँड़- (स्त्री०) मर्यादा, रीति; मेंड़
म्याना- (पु०) बारात में दूल्हा या दूल्हन को ले जाने में प्रयुक्त; पालकी
म्वाखं- (स्त्री०) छप्पर में प्रयुक्त बाँसों का सिरा, जो फूस से बाहर निकला होता है
म्याँख- (स्त्री०) नोंकदार खूँटा, बुरा; -होना- (मु०) अनापेक्षित कार्य भार पड़ना
म्वार- (सर्व०) मेरा; (स्त्री०) प्रहर
म्वावनि, म्वावा- (स्त्री०) चिकनई, आँटा गूँधते समय प्रयुक्त तेल आदि
यकबैग- (अव्य०) एकाएक, अचानक

यकदली– (स्त्री०) प्रतिद्वन्द्वी की टुड्डी में हाथ से लगाकर तथा नीचे से पैर पकड़कर गिराने का दाँव

यकनधा– (पु०) एक ही बैल पर जोर देने के लिए, नाधा को एक ओर करने की पद्धति

यकसर– (वि०) इकहरा, एक परत का

यकसरा– (पु०) एक्स–रे

यकसाँ– (फा० वि०) एक तरह का, संगठित

यकहत्र– (वि०) एकत्र, संगठित

यकाह– (वि०) पहला (ब्याह)

यठई– (क्रि० वि०) इस स्थान पर

यथापरमान– (क्रि० वि०) आवश्यकतानुसार

यवैं– (अव्य०) यों ही

यसवँ– (अव्य०) इस वर्ष; वि० आसवँ

यहू– (सर्व०) यह भी

यहौ– (अव्य०) यह भी

याँड़–ब्याँड़– (क्रि० वि०) उल्टा–सीधा

या– (सर्व०) यह (स्त्री०)

याक– (वि०) एक (पु०) हिमालय पर मिलने वाला एक जंगली बैल

याका– (स्त्री०) एकता

यानी– (अव्य०) अर्थात्

यार– (फा० पु०) दोस्त

यारी– (फा० स्त्री०) दोस्ती, मित्रता

यवँ– (अव्य०) इस तरह, इस प्रकार से

रंज– (फा० स्त्री०) शोक; गुस्सा

रँड़ापा– (पु०) वैधव्य

रँड़पुतवा– (पु०) राँड़ का पुत्र

रंदबु– (क्रि० स०) रंदे से लकड़ी चिकनी करना

रइंधा– (पु०) संघर्ष, झगड़ा; रोना–धोना

रइयत, रइयति– (स्त्री०) प्रजा, जनता

रई– (स्त्री०) लकड़ी या काँटे की फाँच या फाँस

रउका– (पु०) बदली या वर्षा के बीच निकला हुआ दिन या धूप

रउताई– (स्त्री०) इधर–उधर लगाने की आदत

रउतुआ– (पु०) रायता

रउरियाबु– (क्रि० अ०) कुछ पाने की आशा में डटा रहना

रउल– (पु०) चक्कर, पर्यटन

रउस– (स्त्री०) आलुओं को सींचने हेतु बनाई गयी पतली–पतली नालियाँ

रकबा– (पु०) क्षेत्रफल

रकाबी– (अ० स्त्री०) तश्तरी

रकील– (स्त्री०) कर्मा की तीनों फरों में भीतर की ओर बनी एक पतली रेखा

रखड़ला– (पु०) रखाया या बचाया हुआ घास का मैदान; वि० रखउना, रक्खा

रखउनी– (स्त्री०) रक्षा बन्धन

रखरी– (स्त्री०) कँटीली पत्तियों वाली ऊँख

रखवारु– (पु०) रक्षक, चौकीदार

रगर– (स्त्री०) ज़िद; ईर्ष्या; संघर्ष

रगवाही– (स्त्री०) वर्षा न होने का समय, वर्षा बन्द हो जाने का समय

रगा– (स्त्री०) वर्षा न होने का दिन

रचका– (वि०) ज़रा–सा, थोड़ा–सा

रजाने– (वि०) सुरक्षित, मुबारक, फलीभूत

रज़ामन्द– (फा० वि०) सहमत

रजिन्ना– (वि०) दैनिक, रोज़ाना

रजुरी– (स्त्री०) लेजुरी

रज्ज–गज्ज– (स्त्री०) अधिकता, आराम

रडु– (पु०) फसल आदि का ढेर

रठाबु– (क्रि० अ०) फसल का खूब पक जाना

रतवाई– (स्त्री०) कोल्हू चलने पर पहले दिन रस बाँटने का चलन या रस्म

रतियाही– (स्त्री०) रात में चोरी करने की आदत या प्रणाली

रतुली– (वि०) रात्रि सम्बन्धी, लाल

रत्ता– (पु०) रास्ता

रधिया– (वि०) कपास की किस्म विशेष

रनिकजरा– (वि०) एक प्रकार का काला धान

रपारप्प– (वि०) तेज़ धार वाला, (तलवार आदि)

रप्पस– (स्त्री०) घोड़े की चाल

रप्फल– (पु०) पतला कम्बल

रबदा– (पु०) कीचड़, दलदल

रबाजा– (पु०) एक बाजा जो हाथ से बजाया जाता है, विदा

रबावँ- (पु०) दलदल
रब्बा- (पु०) छोटी बैलगाड़ी
रब्बी- (स्त्री०) गेहूँ की फसल
रमझल्ला- (पु०) आनन्द, गपशप; बाधा
रमदेहुला- (वि०) एक प्रकार का धान
रमना- (पु०) चरागाह
रम्मा- (पु०) कंकड़ खोदने या दीवार आदि गिराने में प्रयुक्त लोहे का लम्बा औजार
रयपर- (पु०) चद्दर
ररां- (वि०) बक-बक करने व और माँगने वाला
रवँ- (पु०) क्रोध, घमण्ड
रवंजक- (वि०) परम प्रसन्न, प्रोत्साहित
रवन्ना- (पु०) खरीदी वस्तु का क्रय-पत्र, जो रवानगी आदि को अधिकृत करे
रवहाल- (वि०) खुश
रवाँ- (फा० वि०) अभ्यस्त, प्रशिक्षित, बहता हुआ
रवाइसि- (स्त्री०) आतिशबाज़ी
रवादार- (वि०) अहसानमंद
रवाबु- (क्रि० अ०) सूखते जाना (व्यक्ति का); इर्द-गिर्द घूमते या उड़ते रहना
रसउती- (स्त्री०) एक प्रकार की ईख
रसदि- (स्त्री०) खाने-पीने का सामान, कमाई, बरतौनी
रसम- (फा० स्त्री०) रिवाज, दस्तूर
रसरा- (पु०) मोटी रस्सी, रस्म
रसवाई- (स्त्री०) गन्ना पेरकर पंचायती रूप से रस बाँटने की रस्म
रसहंग- (पु०) हल्का ज्वर, शरीर की हरारत
रसाई- (स्त्री०) पहुँच, सिलसिला
रसियाबु- (क्रि० अ०) बर्तन आदि से हल्का-हल्का पानी आदि बहना
रसियाव- (पु०) मीठा भात; वि० रस्यावरि
रसूम- (अ० पु०) नियम, रस्म
रसौते या रसौधे- (स्त्री०) नम खेत में की गई धान की बुवाई
रस्यावरि- (स्त्री०) गन्ने के रस में पकाए गये चावल; वि० रसियाव
रहँकला- (पु०) छोटी बैलगाड़ी
रहँटा- (पु०) बैल से खींचा जाने वाला सिंचाई का साधन, सूत कातने की मशीन
रहँटियाबु- (क्रि० अ०) दुबला होते जाना
रहँटी- (स्त्री०) कपास ओटने की चर्खी
रहकल- (स्त्री०) एक पुराने प्रकार की बंदूक, जो टूटदार होती थी
रहगर- (फा० वि०) चला हुआ, घर से बाहर
रहठा- (पु०) अरहर का सूखा पेड़; वि० झाँखर
रहतिया- (वि०) बची हुई
रहना- (पु०) दहेंड़वा को रखने के लिए ज़मीन में बनाया गया गड्ढा
रहनि- (स्त्री०) लय
रहरिया, रहरी- (स्त्री०) अरहर
रहलू- (पु०) विशेष प्रकार की बैलगाड़ी
रहसधारी- (पु०) बधइया (रहस) बजाने तथा लहचारी गाने वाली जाति
रहसु- (पु०) रहस्य, रासलीला, बाजा जो देवी के नाम से बजाया जाता है
रहसुति- (स्त्री०) रहने की सम्भावना
रहाइसि- (स्त्री०) चैन, सहन, रहने की दशा, सम्भावना
रहाव- (पु०) गर्भस्थ हो जाने के बाद जानवरों का दूध उतारने की क्रिया, गर्भस्थ होने के पूर्व दूध उतारने को पन्हाव कहते हैं
रहिला- (पु०) चना; वि० लहिला; (उदा०) "मिसिर करैं घिसिर-घिसिर रहिला नोन चबायँ"
रहीस- (फा० वि०) रईस, मालदार
रहुनियाँ- (स्त्री०) चरवाहों द्वारा जानवरों को गाँव के बाहर एकत्र करने का स्थान
रहुवा- (वि०) दूसरे के घर में रहने वाला
रहूँ- (पु०) धुएँ का जाला जो घाव ठीक करने में दवा का काम करता है; -बहूँ- (वि०) अनाथ, व्यर्थ
राँकर या राँकरि- (स्त्री०) असमतल तथा कँकड़ीली भूमि
राँपी- (स्त्री०) चमड़ा काटने का यन्त्र

राउत- (पु०) अहीर के लिए आदर प्रदर्शक शब्द; रावल; सिंगरौर क्षत्रियों की एक उपजाति; रावत

राक्स- (पु०) राक्षस

राङु- (पु०) राङा

राचि- (स्त्री०) हथकरघे का वह अंग, जिसमें तागा भरा या लपेटा जाता है

राछि- (स्त्री०) विवाह की एक रस्म

राजि- (स्त्री०) शासन, राज्य, मनमानी

राड़ा- (पु०) घास विशेष

रातुलि- (वि०) रक्तिम

रान- (स्त्री०) जाँघ

रापी- 'राँपी' देखिए

राब- (स्त्री०) गुड़ का गीला एवं प्रारम्भिक रूप विशेष

रामदाना- (पु०) चबेना में प्रयुक्त अनाज विशेष

रामरस- (पु०) नमक (संतों में अधिक प्रचलित)

रामरोसु- (पु०) शांति

रारि- (स्त्री०) झगड़ा

राव- (पु०) बड़ा जमींदार

रावट- (पु०) महल

रावटी- (स्त्री०) माला में पड़ने वाला मूंगा विशेष, कपड़े द्वारा निर्मित घर

रावल, रावलि- (वि०) दुश्चरित्र

रासि- (स्त्री०) अनाज का ढेर, जो खलिहान में तैयार हो, ज्योतिषी राशि, घोड़े की लगाम

रासी- (वि०) दागी; घोड़ा की जाति विशेष

राह- (स्त्री०) रास्ता, - देखबु- (क्रि०स०) इन्तज़ार करना

रिगिर- (स्त्री०) हठ, द्वेष

रिग्घी- (स्त्री०) आलू बोने के लिए खेत में बनाई गई रस्सी से रेखा

रिनु- (पु०) कर्ज

रिसि- (स्त्री०) क्रोध, ऋषि

रींधबु- (क्रि० स०) दाल-चावल आदि पकाना; वि० रीन्हबु

रीकड़- (वि०) भूमि, जिसमें कंकड़-पत्थर हों, अनुपजाऊ (खेत)

रीच्चा- (पु०) छोटी-सी बात; बात का मूल

रीठी- 'रेठिया' देखिए

रीरी- (स्त्री०) आम का अत्यन्त छोटा रूप; वि० कील

रुंगाउना- (पु०) फल बेचते समय क्रेता को एक अतिरिक्त फल देने की रस्म

रुंगाउबु- (क्रि० स०) बच्चे को कुछ देकर सन्तुष्ट करना

रुइया- (स्त्री०) चारा काटने में प्रयुक्त जमीन में गड़ी हुई लकड़ी की अडडी

रुइहरु- (पु०) रूई का छोटा टुकड़ा, रूई से युक्त पोशाक विशेष; वि० रुइहा

रुक्सति- (स्त्री०) विदाई, छुट्टी

रुखान- (स्त्री०) लकड़ी में छेद करने की छेनी विशेष

रुगरुगाबु- (क्रि० अ०) अच्छा होना, तन्दुरुस्त होना

रुज- (पु०) रोग

रुजुक- (स्त्री०) रोजी, जीवन-यात्रा

रुतबा- (अ० पु०) प्रतिष्ठा, पद

रुनझुन- (क्रि० वि०) घंटियों की आवाज़

रुरानि- (स्त्री०) रोगग्रस्त मूली

रुरुहाबु- (क्रि० अ०) पौधों या फसल का अत्यन्त कम विकास होना, कमजोर होना

रुसबति- (स्त्री०) घूस

रुहकबु- (क्रि० अ०) किसी वस्तु के लिए तरसते रहना

रूख- (पु०) वृक्ष; (वि०) सूखी (रोटी)

रूखड़- (वि०) मतलब से कम नम

रून- (स्त्री०) ऊन; मुलायम रोयेंदार वस्तु, जो कुछ फलों आदि पर होती है

रूपा- (पु०) चाँदी, सोना

रूबरू- (क्रि० वि०) आमने-सामने (व्यक्ति के) मुँह पर

रूमबु- (क्रि० स०) खड़े-खड़े हाथ बाँधकर शरीर के धक्के से गिराना

रूसा- (पु०) पलस्तर हेतु प्रयुक्त लकड़ी का ६x६ इंच का यंत्र; वनस्पति विशेष

रूह- (स्त्री०) आत्मा, प्राण

रेंड़- (पु०) एक पेड़, जिसमें रेंड़ी होती है; (उदा०) "रूख न विरूख तहाँ रेंड़वै पुनीत"

रेंड़बु- (अर० क्रि० अ०) दाने पड़ने के निकट होना (गेहूँ आदि के पौदे का)

रेड़ब- (क्रि० स०) टांग देना, बहुत दिनों तक टांग रखना

रेंडती- (स्त्री०) माचि से मिलकर बंधी हुई लकड़ी; वि० डड़ैंचनी

रेंडरी- (स्त्री०) रेंदड़ी

रेजा- (पु०) छोटा-छोटा टुकड़ा, मिट्टी रौंदने का कार्य करने वाले मजदूर

रेठिया- (स्त्री०) बच्चों के भाला में पड़ने वाला मूंगा विशेष

रेढ़ा- (पु०) झाड़ा, बखेड़ा

रेतु- (पु०) लकड़ी आदि को डिज़ाइन साफ करने या थार रखने का यंत्र

रेखा- (स्त्री०) घर के चारों ओर दीवार पर लगाई गई गोबर की रेखा; बही- बनियों की एक बही

रेशाप-चूड़ी- (वि०) प्रायः पीले और लाल रंग की पुरानी चाल की सादी चूड़ी

रेहू- (स्त्री०) कपड़े धोने में प्रयुक्त मिट्टी

रैज- (पु०) तरीका, व्यवहार

रैन- (स्त्री०) रात

रोकादानी या रोकदानी- (स्त्री०) बेइमानी (खेल में)

रोगन- (पु०) तेल; मसाला

रोचना- (पु०) जन्में शिशु के मामा के घर, नौआ द्वारा ले जाया गया हल्दी व चावल का मिश्रण, खुशखबरी

रोज़मर्रा- (वि०) दैनिक

रोजिगार- (पु०) फलादि की खेती

रोज़ी- (स्त्री०) जीविका

रोजु- (क्रि० वि०) प्रतिदिन

रोटब ि- (वि०) रोटी बनाने हेतु पहनी जाने वाली धोती

रोटखउआ- (पु०) वर पक्ष वालों को पहले-पहल रोटी या कच्चा खाना खिलाने की रीति व दक्षिणा

रोश- (पु०) आँख का एक रोग

रोसइयाँ- (स्त्री०) रसोईघर

रोहनिया- (वि०) एक प्रकार का आम, जो रोहिणी नक्षत्र में सब आमों के समाप्त होने पर पकता है

रोहबु- (क्रि० अ०) अच्छा फल देना, चलन होना (रिवाज या दस्तूर का)

रोहू- (स्त्री०) वह मिट्टी, जिससे धोबी कपड़े धोते हैं; मछली विशेष

र्‌याँघनि- (स्त्री०) कमजोरी, परेशानी; (मुहा०) "चलैकि र्‌याँघनि आवति रजई केरि फ्याँट"

र्‌याख- (स्त्री०) मूँछ की प्रारम्भिक अवस्था

र्‌यागा- (वि०) नष्ट, छिन्न-भिन्न

र्‌याड़बु- (क्रि० स०) बातें करना

र्‌याया- (स्त्री०) जनता

र्‌याल- (वि०) पर्याप्त, अधिक

र्‌यांघट- (पु०) अत्यन्त गन्दा (कपड़ा); पूहट

र्‌याब- (स्त्री०) रौब, शान

लंकलाट- (वि०) उच्च स्तर के व्यक्तियों में पहना जाने वाला (कपड़ा)

लंग- (अव्य०) ओर; (वि०) लंगड़ा

लंगई- (स्त्री०) नीचता

लंगडु- (पु०) पशुओं को भागने से रोकने के लिए गले में लटकाई गयी लकड़ी

लँगरी- (स्त्री०) धोती का वह भाग, जो नीचे से पीछे ले जाकर ऊपर कमर पर खोंस लिया जाता है; वि० लांग, काँच

लंगी- (स्त्री०) लंगड़ी, कुश्ती का एक दाँव

लंघना- (वि०) भूखा, अतृप्त

लंघनु- (पु०) क्षुधा

लंग्वाटा- (पु०) भेलन को साधने वाला पुरजा; जूते के पिछले भाग में लगी विशेष पट्टी; लंगोट; चाप

लंबर- (पु०) नम्बर

लंभबु- (क्रि० अ०) हाँफना, दौड़ना

लइमार- (वि०) किसी का धन लेकर बेइमानी करने वाला (व्यक्ति)

लइयन-पइयन- (अव्य०) तुरन्त, अविलम्ब

लइरा- (पु०) गाय, भैंस का बच्चा

लइसन- (अ० पु०) लैसंस, आज्ञा-पत्र
लउंगा- (पु०) प्रशाखा
लउँचा- (पु०) छोटी पतली डाल; वि० लउछा
लउँड़ी- (स्त्री०) दासी, गुलाम
लउंदु- (पु०) अधिमास, मलमास
लउआर- (स्त्री०) चुगली
लउक- (अव्य०) लायक
लउका- (पु०) कद्दू, मिट्टी के बर्तन
लउछा- (पु०) कई फलियों का गुच्छा, छोटी पतली डाल
लउता-बउता- (पु०) इधर-उधर की बात
लउनिया- (स्त्री०) तुलना, बराबरी
लउनी- (स्त्री०) फसल काटने-पीटने की मजदूरी स्वरूप मिलने वाला अनाज, जिसका निर्धारण अनाज की राशि के हिसाब से होता है
लउर- (पु०) बड़ा डण्डा या लाठी
लउर्याबु- (क्रि० अ०) धान आदि की बालियों (बाल) का झुकना
लकड़चिर्रा- (पु०) लकड़ी चीरने वाला; वि० आराकस
लकड़िहार- (पु०) लकड़हारा
लकलक्का- (वि०) खूब साफ एवं चमकीला
लक्का- (अव्य०) तक
लखउड़ी- (स्त्री०) पतली ईंट (विशेष)
लखनी- (स्त्री०) बच्चों का एक खेल, जिसमें पेंड़ की डालों पर चढ़ते-कूदते रहते हैं; वि० सियरि चटकना
लखबु- (क्रि० अ० स०) लगना, प्रतीत होना, मालूम देना, देखना
लग- (अव्य०) तक
लगउना- (पु०) जानवरों के चारे में लगाया जाने वाला आँटा आदि पदार्थ; (वि०) रोपा जाने वाला
लगछुआई- (स्त्री०) सम्पर्क छूत
लगवरहा- (पु०) किसान का लगा हुआ स्थायी हलवाहा
लगहर- (पु०) कच्ची छत में मिट्टी रोकने हेतु पड़ी पतली लकड़ियाँ; (वि०) रास्ता रोकने वाला (कुत्ता आदि); जुड़ा हुआ
लगा- (पु०) प्रारम्भ
लगदा- (पु०) हरी छड़ी या डण्डी
लगाक- (स्त्री०) रस्सी विशेष, जिसे पाटा देते समय पकड़कर खड़ा हुआ जाता है
लगुठिया- (स्त्री०) छोटी व पतली लाठी
लगे- (अव्य०) पास, निकट
लगेनिया लगेरू- (वि०) दूध देने वाला (जानवर)
लग्गी- (स्त्री०) लम्बा व पतला बाँस, डलिया में लगने योग्य झाँखर; उपाय
लचबु- (क्रि० अ०) झुकना, सम्मान करना; उबु- (क्रि० स०) झुकाना
लच्छन- (पु०) लक्षण
लच्छा- (पु०) पैर में पहनने का आभूषण; वि० सूत
लजाधुर- (वि०) शर्मीला
लट- (स्त्री०) रस्सी में प्रयुक्त कई लटों में से एक लट, कुछ बालों का समूह
लटकन, लटकनिया- (स्त्री०) गहना विशेष
लटपटाबु- (क्रि० अ०) (दिन आदि का) समाप्त होना, कमजोर पड़ना
लटी- (वि०) तुच्छ, दुष्ट; कड़वी
लड़ुम-पड़ुम- (क्रि० वि०) जैसे-तैसे
लड़ुइतु- (वि०) लाठी चलाने में निपुण
लट्ठा- (पु०) बड़ा डण्डा, एक प्रकार का कपड़ा, ९९ इंच की माप
लट्ठु- (पु०) मोटी लाठी; (वि०) मूर्ख
लड़कपिल्ली- (वि०) चिबिल्ला लड़का
लड़हरा- (पु०) चरी का लम्बा पेड़
लढ़मपढ़ा- (पु०) जुगाड़
लढ़ी- (स्त्री०) बड़ी बैलगाड़ी
लत- (स्त्री०) आदत
लतखोर- (वि०) लात खाने वाला; 'खोर' कई निंदात्मक शब्दों में लगता है; जैसे- हरामखोर, हलालखोर
लतना- (पु०) जलेबी बनाने में प्रयुक्त छिद्र युक्त मोटा कपड़ा
लतमरा- (पु०) लात खाने वाला, पैर रखने व जल रोकने हेतु कुएँ पर रखी हुई लकड़ी

लतरा- (पु०) पुराना जूता

लतर् याबु- (क्रि० अ०) शरीर से कमजोर होना

लतहा- (वि०) लात चलाने वाला (पशु); (पु०) पुराना जूता

लतिहड़- (वि०) लात खाने वाला, कमजोर

लत्ता- (पु०) चिथड़ा, फटा कपड़ा

लत्ती- (स्त्री०) लट्टू नचाने में प्रयुक्त मोटा तागा, जो कई लड़ों से मिलकर बनता है

लदरा, लेदरा- (वि०) खूब फलने वाला

लदुआ- (वि०) बोझ ढोने वाला; (पु०) दीवाल को पानी से बचाने के लिए उस पर रखा गया फूस आदि

लदोई- (स्त्री०) गुड़ की पतोई विशेष

लद्धड़- (वि०) भारी एवं सुस्त, कमजोर

लन्ती- (फ़ा० वि०) निंदा का

लपकबु- (क्रि० अ०) अत्यन्त लम्बी चाल चलना, चमकना

लपटा- (पु०) नमकीन लपसी

लपटेउना- (पु०) घास विशेष, जो कपड़ों में बहुत जल्दी लिपट जाती है

लपलपउवाँ- (वि०) खूब स्वच्छ

लपसी- (स्त्री०) आँटे से निर्मित पतला हलुवा या घोल

लपेटन- (पु०) हथकरघे का पुर्जा, जिसमें तागा लिपटता है

लबड़धौंधौं- (पु०) अव्यवस्था, शोरगुल

लबड़ा- (वि०) बायाँ

लबदा- (पु०) ताजा तोड़ा हुआ डण्डा, जिससे फल तोड़ा जाए; वि० लगदा

लबनी- (स्त्री०) छोटा घड़ा, जो ताड़ वृक्ष में ताड़ी हेतु लटकाया जाता है

लबरा- (वि०) लालची, बात पर कायम न रहने वाला

लबलबउवाँ- (क्रि० वि०) ऊपर तक (भरा हुआ) लबालब

लबलबी- (वि०) जल्दबाज़; (कहा०) "लबलबी क बियाह कनपटी मँ सेनुर"

लबाबु- (पु०) गाढ़ा द्रव

लबार- (वि०) झूठा; वि० लबरा

लबेद- (स्त्री०) मनमानी बात, वेद विरुद्ध बात, शास्त्रीय मत तथा ढकोसला

लबेदम- (वि०) चरम सीमा पर, अत्यन्त शिथिल

लब्बर- (स्त्री०) पशु बाँधने की एक बड़ी रस्सी

लब्भचब्भु- (पु०) मनचाहा भोजन

लब्भा या लरफा- (पु०) चिलम की ऊँची लौ

लब्भी- (स्त्री०) खिलवाड़ में लिपटने की क्रिया

लभकु- (पु०) लालच, फायदा

लभ्याड़- (स्त्री०) बाधा, झंझट

लमउझ- (वि०) दूर का (रिश्तेदार)

लमछर- (वि०) कुछ लम्बा, लम्बा वाला

लमेरा- (पु०) धान के साथ उगा हुआ वह पौधा, जिसमें अन्न न पैदा हो

लम्बर- (अं० पु०) संख्या, नम्बर

लयमड़- (वि०) सुस्त और फूहड़ (व्यक्ति)

लर- (स्त्री०) गहनों में लगी हुई लड़ी, पक्ष

लरजबु- (क्रि० अ०) शरम खाना, काँपना, भयभीत होना

लरजर- (स्त्री०) आधार बात

लरिकउरी- (वि०) गर्भवती

ललंगा- (वि०) लाल-लाल

ललक- (स्त्री०) प्रबल आकांक्षा; सुविधा

ललखरि- (वि०) लाल रंग की

ललटैना- (पु०) वनस्पति विशेष, जिससे डलिया आदि बनायी जाती हैं

ललमुनिया- (स्त्री०) वनस्पति विशेष, पक्षी विशेष

ललाम- (वि०) सुन्दर

लल्ली- (स्त्री०) प्रिय पुत्री, पुत्री

लल्ला- (पु०) छोटा प्यारा बच्चा; (वि०) लाल

लल्लु- (वि०) प्रसन्न; (पु०) फायदा

लल्लो-पत्तो- (पु०) चिकनी-चुपड़ी बात, खुशामद

लवगहा- (वि०) वह खेत, जिसमें अगहनी धान रोपा जाता है

लवता-बवता- (पु०) इधर-उधर की बात

लवहार- (पु०) मर कर जीवित हो जाने की दशा
लवाय- (स्त्री०) तत्काल ब्याई हुई गाय
लवारि- (स्त्री०) बड़े लावा वाली ज्वार, दूध देने वाली गाय या भैंस
लस- (स्त्री०) चिपचिपाहट, अपनत्व
लसबु- (क्रि० अ०) किसी के शरीर से स्पर्श करते हुए खड़ा होना, बैठना, लेटना, सहायता की अपेक्षा करना
लसय- (स्त्री०) चिपकने की प्रवृत्ति
लसोहरु- (पु०) एक वृक्ष विशेष, जिसमें बेर जैसे फल लगते हैं, लसोड़ा
लस्त- (वि०) शिथिल, थका हुआ
लस्सुन- (पु०) लहसुन; वि० लासुन
लहँकट- (वि०) पशुओं में अवसर मिलते ही भागने की प्रवृत्ति वाला; हरहँटा
लहंगर- (वि०) लम्बा-चौड़ा
लहंगरी- (स्त्री०) बैलों को जुएँ से रोकने हेतु प्रयुक्त सन की बुनी हुई पट्टी; छोटा लहंगा
लहँड़ा- (पु०) झुण्ड, टोली
लहकवरि- (स्त्री०) विवाह में प्रचलित कलेवा
लहचार- (फा० वि०) विवश, लाचार
लहचारी- (स्त्री०) देवी गीत
लहजा- (पु०) क्षण
लहट्याबु- (क्रि० अ०) लालचवश खड़ा होना या रुकना
लहड्, लाद्- (पु०) छोटी बैलगाड़ी
लहतगा- (पु०) सिलसिला
लहना, लेहना- (पु०) प्रजा जाति को वार्षिक मिलने वाला फसल का गट्ठा; वि० जेंवरा
लहबड़- (पु०) पताका, झण्डा; (वि०) तोते की किस्म, जो शुभ व उत्तम होती है
लहरपटोर- (पु०) रेशमी वस्त्र
लहरि- (स्त्री०) लहर, पानी की तरंग; कृपा
लहरिया- (स्त्री०) टेढ़ी-मेढ़ी रेखा
लहरी- (वि०) लहरदार, ऊँची-नीची, रंगीन और भड़कीली काँच की (चूड़ी)
लहरे-बहरे- (अव्य०) कुछ न कुछ, आस-पास
लहर्रा- (पु०) ज्वार
लहसुआ- (पु०) नवांसुर, वनस्पति विशेष
लहालोट- (वि०) अतिशय प्रसन्न
लहासि- (स्त्री०) लाश, शव
लहिला- (पु०) चना
लहुरा- (वि०) सामान्यतः पाँच में से चौथे का उपनाम, जैसे- मंझला, संझला
लांक- (स्त्री०) पकी फसल, मात्रा
लांग, लांगि- (स्त्री०) पहनी हुई धोती का एक भाग
लांगा- (वि०) नंगा
लाई-लूसी- (स्त्री०) चुगली; चापलूसी
लाखा- (पु०) गेहूँ आदि फसलों में लगने वाला रोग; धुनते समय रूई के बने ढेर विशेष
लाखु- (अव्य०) बहुत ज्यादा; (पु०) लाख
लाग-डाँट- (स्त्री०) शत्रुता, रंजिश
लागन- (वि०) लगने वाला; -हरहा- दूध देने वाला जानवर; -कुत्ता- (पु०) मार्ग रोकने वाला कुत्ता
लागा- (पु०) पाटा चलाते समय माची से बाँधने में प्रयुक्त वह रस्सी, जिसे पकड़कर खड़ा हुआ जाता है; वि० धरगही
लागु- (पु०) बैलगाड़ी में फरी के नीचे लगने वाला पुर्जा, गलती, दोष
लागेम- (अव्य०) साथ ही
लाटा- (पु०) महुए तथा तिल का वह व्यंजन
लाटि- (स्त्री०) वृक्ष की पेंड़ी, बैल के कंधे का मांसल भाग
लाटी- (स्त्री०) चाँदी
लाद- (फा० स्त्री०) दीवार की चुनाई का एक रद्दा, किराये पर भार ढोने की क्रिया
लादी- (स्त्री०) गधों पर लादने में प्रयुक्त कपड़ों का गट्ठर विशेष
लानति- (स्त्री०) निन्दा, लज्जा; चुनौती
लाबर-लिल्ला- (वि०) फूहड़, बेढंगा
लाभ- (वि०) तौलते समय अन्न आदि का वह अंश, जो अलग निकाल दिया जाता है; मुनाफा
लाम- (स्त्री०) ड्यूटी, दूर, भीड़

लाय– (अव्य०) निकट, सहारे; (स्त्री०) विवाहोत्सव में भुनाई गई धान की लइया, लावा; –**लाय**, सिफारिश; विनय

लासा– (पु०) गोंद

लासी– (स्त्री०) आम में लगने वाला रोग विशेष, जिससे पत्तों में चिपचिपाहट उत्पन्न होती है

लाह– (स्त्री०) नया कल्ला (आम आदि में)

लाही– (स्त्री०) सरसों का एक प्रकार

लिंधि– (स्त्री०) कलंक (अनैतिकता का)

लिटिहा– (वि०) लीटा (गीला) युक्त गुड़

लिट्टी– (स्त्री०) आटे की गोल मोटी रोटी, जो कण्डों पर सेंकी जाती है

लिबड़ी बिरताना– (पु०) पोशाक, दिखावटी कपड़े

लिभुआ– (वि०) लालची

लिम्मसु– (पु०) अपयश

लिलगाह– (पु०) नील गाय

लिलज्ज– (वि०) बेशर्म, निर्लज्ज

लिलारि, लिलारी– (स्त्री०) पुरहाई कुआँ की पैढ़ी का ऊँचा वाला भाग; वि० मूड़ा

लिल्लामी– (स्त्री०) नीलामी

लिल्लाह– (वि०) मुक्त, दान में दिया हुआ

लिल्लाही– (वि०) असुरक्षित

लिल्ली घोड़ी– (स्त्री०) बरसात में होने वाला एक कीड़ा, जो एक–दूसरे के ऊपर चढ़ा हुआ घूमता है, बारात आदि अवसरों पर आयोजित एक तमाशा विशेष; उरई के राजा माहिल की घोड़ी

लिहाज– (अ० स्त्री०) अदब; सम्मान

लीक– (स्त्री०) बैलगाड़ी आदि के पहिया का चिह्न; रीति; –**पीटबु**– (मुहा०) "प्रचलित परम्परा का निर्वहन करना"

लीकबु– (क्रि० स० अ०) सुतारी में रस्सी बाँधकर उसे परकार की भाँति बड़े चमड़े के बीचो–बीच घुमाकर पुर बनाने के लिए गोल निशान लगाना; रिसना

लीख– (स्त्री०) जूँ का अण्डा

लीचड़– (वि०) निकम्मा, जाहिल

लीचर–(पु०) पैंस आदि के बच्चे

लीझी– (स्त्री०) उबटन लगाने के बाद गिरी हुई उसकी सूखी मैल, लीपने के पश्चात बचा गोबर का अवशेष

लीटा– (पु०) गीला और खराब गुड़

लीपबु– (क्रि० अ०) गोबर पानी से जमीन गीली कर पोंछना

लीलबु– (क्रि० स०) निगलना

लुंगाड़ा– (वि०) लुच्चा, नंगा

लुअनु– (पु०) नमक

लुकउबु– (क्रि० स०) छिपाना;

लुकबु– (क्रि० अ०) छिपना

लुकुड़ी, लुकुरी– (स्त्री०) जलती हुई छोटी पतली लकड़ी; चुगली; वि० लुक्की

लुक्की– (स्त्री०) जलती हुई लकड़ी; झुंझलाहट

लुगठ्याबु– (क्रि० अ०) (अग्नि का) फीका पड़ना, मन्द पड़ना; वि० लगुठ्याबु

लुगरी– (स्त्री०) फटा पुराना वस्त्र (स्त्री के पहनने का) या फटी पुरानी धोती

लुगाई– (स्त्री०) औरत

लुचुई– (स्त्री०) पतली नरम पूड़ी

लुच्चा– (वि०) नीच व्यक्ति

लुजलुज– (वि०) ढीला–ढाला

लुटुकुनियाँ– (पु०) कालर में फंसे दो हुक

लुटुटु–कुटुटु– (पु०) गृहस्थी का सारा सामान, सम्पूर्ण सामान

लुडुरी– (स्त्री०) ओसाने के बाद बचा हुआ खुरदुरा भाग

लुनाई– (स्त्री०) फसल काटने की क्रिया

लुबुरी– (स्त्री०) चुगली

लुमड़ा, लूमड़– (वि०) फूहड़, बेहूदा

लुरका– (पु०) बैलगाड़ी में लगा एक रस्सी का सामान

लुरकी– (स्त्री०) कान का गहना विशेष

लुरखुरिया– (स्त्री०) खुशामद

लुलुइयाँ– (स्त्री०) छोटी रोटी, फुलका

लुलुहा– (पु०) हाथ का पंजा

लुवाठ– (पु०) हाथ का खड़ा अँगूठा

लुवाठी– (स्त्री०) जलती हुई लकड़ी; "कबिरा खड़ा बजार में लिए लुवाठी हाथ।" – कबीर

लूँड़ि- (स्त्री०) घास या पुआल का छोटा गट्ठर जो पानी रोकने में प्रयुक्त होता है

लूक- (पु०) आकाश से टूटा हुआ तारा; (स्त्री०) ज्येष्ठ मास में चलने वाली गरम हवा, लू; (उदा०) "दिन ही लूक परन कपि लागे"

लूगा- (पु०) कपड़ा

लूहँ- (स्त्री०) गरम हवा; वि० लूह, लूक

लेंड़हरा- (पु०) मक्का

लेंढ़ा- (पु०) छोटा कच्चा फल (विशेषतः कटहल का)

लेंजुरि- (स्त्री०) रस्सी

लेउँड़ी- (स्त्री०) सिर का पिछला हिस्सा

लेखे- (अव्य०) लिए, नजर में

लेगारु- (पु०) पशुओं का झुण्ड, पशुओं को दिया जाने वाला दाना

लेटलागबु- (क्रि० स०) हल में काँदों तथा घास का लगना

लेटारु- (पु०) हल की नसी में फँसी हुई घास आदि, नवजात बच्चों के शरीर पर लगा हुआ मैल आदि

लेड़ार- (वि०) कायर, डरपोक, भयप्रद दृश्य उपस्थित होने पर टट्टी कर या लेंड़ (टट्टी का लोंदा) गिरा देने वाला

लेरउँड़ी- (स्त्री०) चरही

लेलक- (अव्य०) निकट, सुविधाजनक

लेवकरबु- (क्रि० स०) पानी में पाटा चलाकर बीज बो देना; वि० लेवारा करबु

लेसब- (क्रि० स०) (दीपक) जलाना

लेसु- (पु०) लेप (मिट्टी का); ल्यासबु (क्रि० स०) लेप करना

लेसो- (पु०) पानों की कई ढोलियों का समूह

लेहदरि- (स्त्री०) झुण्ड, समूह

लेहरहा- (वि०) बाजरा बोया हुआ खेत

लेहेंड़ि- (स्त्री०) पशुओं का झुण्ड

लैकति- (अ० स्त्री०) योग्यता, गुण

लैन- (स्त्री०) रेखा; आचरण; रेलवे पटरी; कतार

लैरा- (पु०) गाय भैंस का छोटा बच्चा

लोइया- (पु०) शाल, मध्यम व उच्च वर्ग के लोग इस नाम का प्रयोग करते हैं

लोई- (स्त्री०) रोटी आदि बनाने हेतु बनाई गयी आँटे की गोली; (कहा०) "हाथेम लोई तो सब कोई"

लोखर- (पु०) कृषि उपकरण

लोट- (स्त्री०) नोट; पुआल का बड़ा गट्ठर

लोटि- (स्त्री०) राब रखने में प्रयुक्त खड़ी आकार की मटुकी

लोटिया- (स्त्री०) लोटे से बड़ा एवं गोल आकार का पात्र

लोढ़बु- (क्रि० स०) उतारना

लोढ़वा- (पु०) मसाला आदि पीसने वाला में प्रयुक्त पत्थर; पथरा

लोनी- (स्त्री०) नमकीन मिट्टी; चने का भूसा

लोनु- (पु०) नमक; (अं० पु०) कर्ज

लोफरु- (वि०) असभ्य, उजडड व्यक्ति

लोर- (फा० स्त्री०) धुनकने की कमान; (पु०) आँसू

लोलापेच- (फा० पु०) वह कपड़ा, जिसका थान दफ्ती में लपेटा जाय और ऊपर कागज चढ़ाया जाय

लोहँड़ा- (पु०) लोहे की बड़ी कराहिया

लोहखर- (पु०) लोहे के औजार

लोहरई- (स्त्री०) लौह-कर्म

लोहसार- (स्त्री०) फौलादी लोहे की बनी झूल

लोहाबाना- (पु०) लोहे की अनेक वस्तुओं का मिश्रण

लोहारु- (पु०) लौह-कर्म करने वाली जाति का पुरुष; लुहारु

लौं- (अव्य०) तक

ल्याखा- (पु०) औसत, समानता

ल्यादा- (पु०) पानी से हल्का-हल्का भिगोया गया भूसे का रूप; वि० कोहला

ल्वाढ़ा- (पु०) प्रसाद

ल्वारा- (पु०) ईंटों का टूटन

वंगु- (पु०) गीदड़

वंदनु- (पु०) मस्तक पर पहना जाने वाला गहना विशेष; प्रार्थना

वइरबु- (क्रि० स०) (हस्त चक्की आदि में अनाज आदि) डालना

वइरा- (पु०) फसल काटने आदि कार्यों में खेत की चौड़ाई की वह पाट, जो एक बार में कटता जाता है

वखरीयस- (वि०) मोटा-ताजा

वगरबु- (क्रि० स०) बूंद-बूंद करके टपकना, गाय-भैंस आदि के थनों में दूध का आ जाना

वछाहुँ- (पु०) पेंड़ आदि की स्थायी छाया, छाया का प्रभाव

वछाँ- (क्रि० वि०) हल्के स्पर्श के साथ (चोट आदि का लगना)

वजे- (अव्य०) कारण, वजह

वझासु- (पु०) ओझल या फँस जाने का स्थान

वठंगउबु- (क्रि० स०) किंवाड़ बन्द करना

वठई- (क्रि० वि०) वहाँ

वढ़नी- (स्त्री०) ओढ़नी

वतरा- (सर्व०) उतना

वतहँत- (क्रि० वि०) कुछ दूर, उधर

वतीरा- (पु०) तरीका, स्वभाव

वदरबु- (क्रि० अ०) (मिट्टी, दीवार आदि का) फटकर गिरना

वनउबु- (क्रि० स० अ०) जोतना, सुनना

वनसिल- (वि०) कुछ खराब

वनाबु- (क्रि० अ०) सुनना, ध्यान देना

वरकबु- (क्रि० अ०) झुकना, गाय आदि के ब्याने की अवस्था में शरीर में भारीपन आना

वरक़साजी- (अ० फा० स्त्री०) चाँदी-सोने के वरक़ बनाने का काम

वरखबु- (क्रि० अ०) प्रतीक्षा करना

वरहनु- (पु०) उलाहना

वरा- (वि०) सस्ता, समुचित दाम का

वसलहति- (स्त्री०) कमी, औसत

वसहनु- (पु०) अनाज, जो खलियानों में वसाये जाते हैं

वसाइबु- (क्रि० स०) अनाज आदि को साफ करने हेतु हवा में थोड़ा-थोड़ा गिराना

वसाही- (अव्य०) संख्या सूचक शब्द, बार

वहकारबु- (क्रि० स०) हाँकना, बैलों को हाँकने में 'व तता' ये तीन अक्षर के दो शब्द प्रयुक्त होते हैं

वहारी- (अव्य०) चक्कर, दफा, बार

वहिका- (सर्व०) उसका

वांगबु- (क्रि० स०) गाड़ी के धुरे में तेल लगाना; वि० औंगबु

वाँछ- (वि०) लम्बाई में कुछ कम; उटंग

वाँठ- (पु०) ओंठ

वांधबु- (क्रि० अ० स०) छा जाना, घिर आना, तान देना

वा- (सर्व०) वह (स्त्री के लिए)

वाकिफ़- (अ० वि०) परिचित

वाकिया- (अ० पु०) घटना

वाजिब- (अ० वि०) उचित

वाढ़र- (पु०) पालकी के परदा का रंगीन कपड़ा; आरोप; वि० ओढ़र

वाद- (वि०) गीला; (पु०) विचारधारा

वायल- (वि०) विशेष रूप (कपड़े का)

वार- (अव्य०) ओर; (पु०) आक्रमण

वारा-न्यारा- (पु०) निस्तारण; खर्च

वालपिन- (स्त्री०) हथकरघे का वह अंग, जिस पर तागा चढ़ाकर सुलझाया जाता है; कील विशेष

वालावरसी- (पु०) मददगार, वारिस

वासर- (स्त्री०) गर्भ धारण करने योग्य भैंस

वासिल- (फा० वि०) उचित रूप से प्रयुक्त, अ. ज. या मिला

वासिल बाकी नवीस- (पु०) तहसील का एक कर्मचारी, जो आई हुई और बाकी लगान का हिसाब रखता है

वास्ता- (पु०) सम्बन्ध, लगाव, मतलब

वाहियात- (वि०) व्यर्थ, मूर्खतापूर्ण

वाही- (वि०) मूर्ख, व्यर्थ, फालतू

विरिख- (पु०) वृक्ष

वींदरी- (वि०) एक प्रकार का कपड़ा

वैत- (स्त्री०) सुविधा, आराम, फायदा

संकेली- (स्त्री०) तंगी, कमजोरी, अभाव

संखा- (पु०) श्वेत रंग का घोड़ा

संखानि- (स्त्री०) संतति

संगर- (पु०) समर, युद्ध-मैदान

संगसा- (पु०) बड़ी संगसी
संगीन- (फा० स्त्री०) एक लम्बी और पतली बरछी, जो बंदूक के सिरे पर लगायी जाती है; (वि०) उत्तम, भयंकर
संघरो- (पु०) साथी; (स्त्री०) साथ, संगति
संघाती- (पु०) मित्र, दोस्त; वि० संघी
संच- (वि०) ठीक-ठाक, कारबार
सँचरबु- (क्रि० अ०) प्रचलित होना
संजमी- (वि०) संयमी
संजाफ- (पु०) रंगीन किनारा
संझलउका- (क्रि० वि०) संध्या के निकट
संझवाती- (स्त्री०) सायंकाल का गीत, शाम
संझा- (स्त्री०) सायंकाल
संझिलीपहर- (स्त्री०) दोपहर बाद का प्रहर
संटा- (पु०) डण्डा
संटेला- (स्त्री०) लड़िया
संड-मंड- (वि०) सूजा हुआ; मीठा
संडासु- (पु०) लम्बा-चौड़ा छेद; पाखाना
संती- (अव्य०) स्थान पर, बदले
संतोला- (पु०) संतरा
संदानु- (पु०) गर्भी को सांदने की रस्सी
संदना- (पु०) गाय को दुहते समय उसके पैरों को सांदने में प्रयुक्त रस्सी
सँदबु- (क्रि० अ०) कीचड़ में भरना, फँसना
संबालु- (क्रि० अ०) समा जाना
संभर- (स्त्री०) तैयारी, चढ़ाई
सँवाचबु- (क्रि० स०) पूछना, जाँच-पड़ताल करना
सइँतबु- (क्रि० स०) पाखाना उठाना, एकत्र करना, परवरिश करना
सइँयाँ- (पु०) पति, स्वामी, ईश्वर
सइका- (पु०) मिट्टी का बर्तन, जिससे कोल्हाड़ में रस उड़ेलते हैं
सइगर- (वि०) प्रचुर, अधिक
सइरहँदु- (पु०) व्यर्थ का कार्य
सइरा- (वि०) हल्का काला
सइल- (पु०) लाख की चूड़ी बनाने में प्रयुक्त लकड़ी का साँचा; (वि०) अधिक
सइला- (पु०) पानी में प्रयुक्त बैलों की गर्दन रोकने में सहायक डण्डा
सइलानी- (वि०) मौजी
सइहा- (पु०) भेद; (वि०) भेदिहा
सई- (स्त्री०) उत्तेजना, सहायता, एक नदी
सउँघ- (पु०) सामना
सउँघर- (वि०) ठीक, दुरुस्त (दिमाग से)
सउरि- (स्त्री०) सूतिकागृह
सक्कट- (पु०) रथ या रब्बा
सकठी- (वि०) जो 'भगत' न हो, अदीक्षित
सकरी सैतनवा- बच्चों का खेल विशेष, जो जमीन में रेखाओं से कई खाने का रेखांकन करके खेला जाता है
सकलाल- (पु०) अंग-प्रत्यंग; -ढील होबु- गम्भीर रूप से अस्वस्थ होना
सकहा- (वि०) श्वाँस का मरीज
सकारे- (क्रि० वि०) शाम
सकीमी- (स्त्री०) कमी, तंगी
सकूनति- (फा० स्त्री०) सन्तुष्टि
सकोरा- (पु०) छोटा मिट्टी का बर्तन
सक्वालबु- (क्रि० स०) पानी आदि पीना
सखर- (वि०) अपव्ययी, खर्चीला; -दखड़- (वि०) बीमार
सखरबु- (क्रि० अ०) हामी भरना
सखरमा- (पु०) जुकाम
सगत्तर- (अव्य०) सर्वत्र
सगरा- (पु०) बड़ा तालाब; (वि०) सम्पूर्ण
सगियान- (वि०) सचेत, बड़ा
सगुनइती- (वि०) शकुन विचारने वाली
सगुनु- (पु०) बैलगाड़ी में प्रयुक्त सबसे आगे बाहर की ओर निकली हुई लकड़ी; शकुन
सग्गड़- (स्त्री०) विशेष प्रकार की बैलगाड़ी
सड्हा-(पु०) गुड़ बनाने के लिए प्रयुक्त भट्टी में झोंकने योग्य ईंधन
सजिल सजील- (वि०) हृष्ट-पुष्ट, उत्तम, सुव्यवस्थित
सज्जी- (वि०) सारा, पूरा
सटक- (स्त्री०) फरसी की पतली नली

सटल करघा- (पुं०) मशीनी करघा, जिससे कपड़ा बुना जाता है
सटल्लहा- (वि०) रद्दी, पुराना
सटहा- (वि०) निकृष्ट जाति का
सट्टा- (पु०) इकरारनामा, पूरी नकद राशि न देकर उसके बदले दी गई कोई वस्तु
सट्टी- (स्त्री०) बाजार
सड़इंधि- (स्त्री०) सड़ने की दुर्गंध
सड़इंधी, सरइंधी- (वि०) सड़ी हुई
सत्तारी- (वि०) कार्य से निवृत्त
सत्ती- (स्त्री०) सती, पवित्रता; -होबु- (क्रि० अ०) पति-शव के साथ जलना, (मुहा०) किसी कार्य में तन-मन-धन लगा देना
सतलड़ी- (स्त्री०) सात लड़ों का गहना विशेष
सतवाँसा- (वि०) सात महीने का (बच्चा)
सत्तु- (पु०) सतीत्व
सत्या- (स्त्री०) प्रसिद्धि, नाम, दशा
सथरिया- (स्त्री०) बिछौना
सदमा- (अ० पु०) भय, आघात, रंज
सदर- (पु०) मुख्य स्थान
सदाफर- (वि०) सदैव फलने वाला
सदर- (वि०) सात दाँतों वाला (बैल आदि)
सधउरी- (स्त्री०) साद्य या सीमन्त सामग्री
सधर- (वि०) बड़ा और बढ़िया (फल)
सनई- (स्त्री०) बारीक सन वाला पतला पेड़
सनकी- (वि०) शक या सनक करने वाला, सन्देहशील
सनखर- (पु०) सन का टुकड़ा
सनद- (अ० स्त्री०) सबूत, प्रमाणपत्र
सनफर- (वि०) सस्ता
सनसलति- (स्त्री०) सम्पत्ति; सब कुछ
सनीनौ- (पु०) रक्षाबन्धन
सनु- (पु०) रस्सी बनाने में प्रयुक्त छाल विशेष; वर्ष
सनेहु- (पु०) प्रेम, स्नेह
सन्तकला- (वि०) ऐंठे काँच में लकीरों के चिह्न से युक्त (रंगीन चूड़ी)
सन्न-गन्न- (वि०) स्तब्ध, जड़वत्
सन्नहटा- (पु०) सन्नाटा
सन्नाम- (वि०) प्रसिद्ध, चर्चित
सन्नूकि- (स्त्री०) सन्दूक
सपठा- (पु०) छोटा सन्दूक (जेवर आदि रखने का)
सपनहा- (वि०) वह दोष, जिसमें जानवर अपनी जीभ निकाला करते हैं
सपरबु- (क्रि० अ०) हो सकना, सधना
सपरहिटा- (पु०) अंशहीन दूध
सपहरि- (क्रि० वि०) सब के सब, बिना किसी को छोड़े
सपेद- (वि०) सफेद
सफरा- (पु०) बैलगाड़ी में बिछाने और ढकने में प्रयुक्त सुतली का कपड़ा
सफीना- (पु०) उपस्थित होने का आज्ञा पत्र
सफील- (वि०) साफ
सबज, सबुज- (वि०) हरा
सबजा- (पु०) नाक का एक आभूषण
सबद- (फा० स्त्री०) टोकरी, डलिया
सबधरि- (वि०) सम्पूर्ण
सबरखऊ- (वि०) बेसब्र, जिसको इन्तजार की सब्र न हो, अधिक या सब कुछ खाने वाला
सबरी- (स्त्री०) नकब काटने में प्रयुक्त लोहे का हथियार, त्रेतायुग में भीलनी विशेष का नाम
सबूदान- (फा० पु०) घड़ा रखने की तिपाई आदि
सबूरी, सबुर- (स्त्री०) सब्र, धैर्य; संतोष
सब्जी फरोश- (फा० वि०) साग-तरकारी बेचने वाला, कुंजड़ा
सब्बलु- (पु०) लोहे का लम्बा औजार, जिससे कंकड़ आदि खोदे जाते हैं
सभदि- (स्त्री०) शब्द, गूढ़ ज्ञान
समगम- (वि०) शांत
समथर- (वि०) बराबर, समतल
समथ्याबु- (क्रि० अ०) थोड़ा आराम करना; दम लेना
समदा- (वि०) हल्के लाल रंग के शरीर वाला
समध्यानु- (पु०) समधी का घर

समसी– सँड़सी

समहे– (अव्य०) समक्ष

समुल्ला– (वि०) सम्पूर्ण, समूल

समुहाबु– (क्रि० अ०) इच्छा करना, किसी कार्य हेतु लग जाना

समौं– (पु०) समय

सम्बल– (पु०) बैलगाड़ी आदि के जुएँ में लगने वाले छोटे–छोटे डण्डे विशेष

सम्याता– (स्त्री०) सहनशक्ति, व्यवस्था, सामर्थ्य

सयगर– (वि०) अधिक

सयमड़– (वि०) मस्त, मनमौजी

सयम्मर– (वि०) बहुत–सा

सयरा– (पु०) आल्ह खण्ड या उसका पाठ

सयराठ– (पु०) झंझट, तैयारी

सयलानी– (वि०) मनमौजी

सयान– (वि०) अधिक वय का; चतुर

सयाना– (वि०) सयान

सयार– (पु०) जल्दी होने वाला काम

सरउती– (स्त्री०) एक प्रकार का गन्ना, जो नरम एवं पतला होता है

सरकतु– (पु०) प्रबन्ध, समझौता

सरकवाँसी– (पु०) पशु बाँधने में प्रयुक्त रस्सी का फंदा

सरकस– (वि०) उद्दण्ड, बेढब; (स्त्री०) नट आदि का तमाशा

सरकसी– (स्त्री०) उद्दण्डता, बदमाशी

सरकिहार– (वि०) गाँव के समीप के खेत; वि० गोइँड़हर

सरखत– (पु०) लिखित ठेका या किरायानामा

सरगही– (स्त्री०) सूर्योदय के पूर्व का वह भोजन, जो रोजे के दिनों में मुसलमान लोग करते हैं

सरगु– (पु०) विष्णु धाम, बैकुण्ठ, स्वर्ग

सरजि– (स्त्री०) प्रसिद्ध कपड़ा

सरट– (पु०) गिरगिट

सरतराश– (फा० पु०) नाई

सरथबु– (क्रि० स०) समझाना

सरपट्टबु– (क्रि० स०) तीव्र गति से खा–पी जाना

सरपुत– (पु०) साले का बेटा; वि० सरउत

सरपेच– (फा० पु०) पगड़ी में बाँधने का एक आभूषण

सरपोटबु– (क्रि० स०) बटोरकर खा लेना, झटपट खा लेना

सरफ या सरफा– (वि०) खर्च

सरफुराई– (स्त्री०) सनई की सूखी लकड़ी

सरबती– (वि०) एक बढ़ीक कपड़ा

सरबराही– (स्त्री०) कार्य करने में मदद

सरबावलि– (स्त्री०) सर्वनाश, समाप्ति

सरया– (पु०) एक प्रकार का अच्छा धान

सरसई– (स्त्री०) किसी फल का प्रारम्भिक गोल रूप (विशेषतः आम के)

सरसब्जी– (फा० स्त्री०) उपजाऊपन

सरस्यौंटबु– (क्रि० अ०) डरकर सिमट जाना

सरहंग– (वि०) लम्बा–चौड़ा (व्यक्ति); प्रभावशाली

सरहद्– (फा० स्त्री०) सीमा, हद

सरहर– (वि०) पतला एवं लम्बा; (पहे०) "सावन टेढ़ि चइत मा सरहरि कहै सबलसिंह बूझौ नरहरि"

सरा– (पु०) समाधि

साकति– (फा० स्त्री०) साझा

साजामु– (पु०) व्यवस्था, तैयारी

साथन– (स्त्री०) अनाज साफ करने के लिए प्रयुक्त की गयी झाड़ू; वि० सरहँटी

साबोर– (वि०) लथपथ

सरि– (स्त्री०) गड्ढा, तुलना

सरिया– (स्त्री०) सुनारों में प्रचलित 'पारिश्रमिक' का गुप्त शब्द, लौह छड़; पशुशाला

सरियारिक– (वि०) आयु में बड़े

सरीक– (वि०) सम्मिलित, हिस्सेदार

सरीहन– (क्रि० वि०) स्पष्टतः, खुल्लमखुल्ला; वि० सरिहन

सरेख– (वि०) चतुर

सर्तिया– (क्रि० वि०) दृढ़तापूर्वक; पक्का, अचूक

सर्याखा– (पु०) असरेखा नक्षत्र

सर्रउवाँ– (वि०) चिकना व ऊँचा (पेड़); (क्रि० वि०) सर्राटे के साथ

सलकठ- (पु०) प्रबन्ध

सलतन्त- (वि०) शांत, कुशलतापूर्वक

सलना- (पु०) दीवाल में लेसु (प्लास्टर) हेतु प्रयुक्त मिट्टी में छोड़ा जाने वाला भूसा आदि

सलफ- (वि०) आसान, सस्ता

सलमा- (पु०) सोने-चाँदी आदि का वह तार, जो कपड़ों पर बेलबूटे के काम आता है

सलाक- (फा० स्त्री०) सोने-चाँदी की सलाख या छड़

सलाक्र- (स्त्री०) पेंसिल

सलिल- (वि०) आसान

सलीपट- (पु०) लकड़ी या लोहे का मोटा लम्बा टुकडा; वि० सिलापट

सलूका- (पु०) आधी बाँह की बनियान, जिसमें सामने बटन लगते हैं

सलोन- (वि०) नमकीन, सुन्दर

सलोनी करबु- (क्रि० स०) सोने से चाँदी निकालना

सवँरि- (स्त्री०) प्रसवगृह

सवँलिया- (पु०) प्रेमी, पति

सवाई- (स्त्री०) बैलगाड़ी का पुर्जा विशेष; सवा गुना

सवाङ- (पु०) वयः प्राप्त पुरुष; सुन्दर व्यक्ति

सवाङिनि- (स्त्री०) बारात में आये हुए मेहमान

सवाल-खानी- (स्त्री०) कचहरी में प्रार्थना पत्र लेने का समय, दस्तूर आदि

ससरी- (स्त्री०) साँस

सह- (स्त्री०) प्रोत्साहन

सहउल- (पु०) दीवाल की ऊँचाई में सीधापन देखने का यंत्र

सहजोर- (फा० वि०) अपेक्षाकृत बली

सहडिट्ट- (वि०) प्रत्यक्ष; स्पष्ट

सहतीर- (पु०) लम्बा, लट्ठा

सहना- (पु०) फसल सम्बन्धी मुकदमों में अदालत द्वारा नियुक्त पंच, जो खड़ी फसल का उत्तरदायी होता है

सहनी- (स्त्री०) छोटी नांद, जिसमें गन्ने का रस गरम होता है

सहन्ची- (स्त्री०) एकान्त व बन्द कोठरी, जिसमें हर प्रकार का सामान डाल दिया जाता है

सहलोलवा- (वि०) जो बोलने में चतुर व मीठा पर धोखा देने वाला हो

सहाना- (फा० वि०) एक प्रकार की तबकदार (चूड़ी) जो प्रायः शादी में पहनी जाती है

सहिलउबु- (क्रि० अ०) विश्राम करना

सहिदान- (पु०) चिह्न, पहचान

सहिष्याना- (पु०) शामियाना, बड़ा तम्बू

सहूरु- (पु०) विवेक, गुण; यंत्र विशेष

साँक- (स्त्री०) श्वाँस, दराज, पुरानी खाँसी

साँकलि- (स्त्री०) जंजीर, होम सामग्री

साँची- (पु०) एक प्रकार का पान, जो शायद पहले-पहल साँची में उत्पन्न होता रहा हो; (वि०) सत्यवादिका, सच्ची

साँट- (स्त्री०) कपड़े में तागा के निकलने पर बना निशान, मोचियों की हथौड़ी विशेष

साँटिगाड़ा- (वि०) ईख के टुकड़ों को एक-दूसरे से सटाकर बोने की पद्धति

साँड़िया- (पु०) तेज दौड़ने वाला ऊँट जो पागल हाथी को भी हरा देता है

साँति- (स्त्री०) चप्पड़ा और कीलें ठोकने का औजार

साँथबु- (क्रि० स०) सिलना (बड़े-बड़े पंदों से)

साँथर- (वि०) सीमंत सम्बन्धी

सांबि- (स्त्री०) मूसल आदि में लगने वाला लोहे का छल्ला

साइति- (अव्य०) शायद; (स्त्री०) ग्रह-दशा

साक, साका- (स्त्री०) दबदबा

साख- (स्त्री०) पहचान, इज्जत, रौब

साखी- (स्त्री०) साक्षी

साखोच्चार- (पु०) विवाह में पंडितों द्वारा सुनाया जाने वाला दोनों पक्षों का गोत्र विवरण

सागड़ी- (वि०) गोलाकार

साड.ठ- (पु०) प्रबन्ध

साढ़ा- (पु०) लालच, आकर्षण

साढ़ी- (स्त्री०) वस्त्र विशेष, पके हुए दूध में जमी हुई मलाई

साध- (स्त्री०) हार्दिक इच्छा, लालसा

सान- (स्त्री०) मर्यादा, इज्जत, धार; **-धरबु-** (क्रि० स०) औजारों में धार बनाना

सानी- (स्त्री०) पानी में भिगोया हुआ चारा

साफट- (वि०) शांत; (स्त्री०) चुप्पी

साफी- (स्त्री०) छोटा रूमाल, जिसे साधू लोग चिलम में नीचे लगाकर गांजा आदि पीते हैं; दवा विशेष

साबड़ या सामड़- (पु०) वह चमड़ा, जिससे गहना चिकनाया जाता है; मिट्टी आदि भरने का फावड़ा विशेष

साबर- (पु०) एक जंगली जानवर, जिसका चमड़ा बहुत मजबूत होता है और जूते आदि बनाने के काम में आता है

सावुत- (फा० वि०) शुद्ध, पूर्ण

साम्रति- (अ० स्त्री०) दुर्भाग्य

साम्रतूल- (वि०) शांत, चारों ओर बराबर

सामा- (स्त्री०) वस्तु, सामान, एकता

सामि- (स्त्री०) लोहे की गोल टोपी, जो मूसल में लगती है; वि० सांबि

सारी- (स्त्री०) पशुशाला; साड़ी

सालगिराँ- (पु०) वर्षगाँठ

सालनु- (पु०) सहायक, सब्जी, दाल आदि

सालिस- (स्त्री०) षडयन्त्र

साली- (फा० स्त्री०) धान, पत्नी की छोटी बहन; (वि०) वह खेत, जिसमें वर्षा ऋतु की फसल न ली गयी हो

सालीना- (वि०) वार्षिक; सालाना

इ- (वि०) ईमानदार, जो चोर न हो

साहुल- 'सहउल' देखिए

सिंगरौर- (पु०) श्रृंगी ऋषि के वंशज एक क्षत्रिय, एक प्रकार के कुर्मी

सिंग्वाहबु- (क्रि० स०) रखरखाव करना, समुचित उपभोग करना

सिंघउटा, सिंगउटा- (पु०) सीगों में बाँधा जाने वाला रस्सी का आभूषण

सिंघड़ी, सिंघरी- (स्त्री०) बबूल की फली

सिंघुरबु- (क्रि० अ०) बीमारी के बाद स्वस्थ होना, संभलना

सिंजराब- (पु०) मिट्टी के खिलौने बनाते समय साँचों में छोड़ने वाला पाउडर

सिंद्राह- (स्त्री०) दूध की अंदाज या थाह

सिंहोरा- (पु०) लकड़ी का लाल डिब्बा, जो सिंदूर रखने के लिए होता है

सिकउला, सिकहुला- (पु०) सींक का बना टोकरा; नीम की पत्तियों का डंठल

सिकचा- (पु०) छोटी खिड़की

सिकत्त- (वि०) बीमार

सिकन- (स्त्री०) चमड़े आदि की सिकुड़न

सिकमी- (वि०) छोटा या मुख्य काश्तकार के नीचे का जुतारा

सिकहरु- (पु०) छीका; (कहा०) "टूट बिलारी क भागि से"

सिकहुला- (पु०) सींकों का बना टोकरा; सिकौला

सिक्का- (वि०) चाँदी की किस्म, जो रुपये में छः पैसे दागी होती है; (पु०) प्रभाव

सिक्कीन- (अ० स्त्री०) छुरी, बड़ा चाकू

सिखरनु- (पु०) मीठा मट्ठा

सिजरा- (पु०) हाल, तथ्य, विवरण

सिजिल- (वि०) भड़कीला, सुन्दर

सिट्टि- (स्त्री०) सृष्टि; पंक्ति

सिड़बिड़हा- (वि०) टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा

सिंदवाही- (स्त्री०) बैलगाड़ी का एक वह पुर्जा, जो एक पहिया निकालने पर सन्तुलन बनाये रखने के लिए गाड़ी में लगाया जाता है

सिन्नी- (स्त्री०) प्रसाद

सिपावा- (पु०) बैलगाड़ी को उलार रखने में प्रयुक्त लकड़ी की कैंची

सिपुरुस- (अव्य०) सुपुर्द

सिप्पा- (पु०) तिकड़म, सिलसिला

सिप्पी- (स्त्री०) पानी युक्त अत्यन्त छोटा गड्ढा, जो पदचिह्नों से बन जाते हैं

सिफ्त- (अ० स्त्री०) विशेषता, तारीफ

सियरडंडा- (पु०) अमिलतास का लम्बा फल

सियरि चटकना- (पु०) देहात में प्रचलित बच्चों का वह खेल, जो पेड़ की डालों से कूद-कूद कर खेलते हैं

सिरई- (स्त्री०) चारपाई में लगी वह लकड़ी, जो सिर के ओर हो

सिरकी- (स्त्री०) मूजा की लम्बी पतली लकड़ी

सिरजब- (क्रि० स०) सृष्टि करना

सिरवन्तु- (पु०) सीमन्तोनयन संस्कार

सिराक- (अ० स्त्री०) चप्पल, जूते या खड़ाऊँ की डोरी

सिरी- (स्त्री०) श्री नाम का आभूषण, हाथी हेतु निर्मित लोहे के छल्लों व जंजीर की झूल; **फल-** लौंग; **मिंट-** सीमेंट

सिरेश- (फा० स्त्री०) एक चिपकाने वाला पदार्थ, जो ऊँट, गाय-भैंस आदि के कच्चे चमड़े से बनता है और लकड़ी आदि जोड़ने के काम आता है

सिल- (वि०) चाँदी का प्रकार विशेष ,जो बजाने से न के बराबर बजती है; (पु०) पत्थर

सिलउटि, सिलवट- (स्त्री०), मशाला पीसने व उस्तरा रगड़ने में प्रयुक्त पत्थर की चौकी

सिलनि- (स्त्री०) सिलाई; बखिया

सिलफोंका- (पु०) खरपतवार

सिलसिला- (अ० पु०) क्रम, सम्बन्ध

सिलापटु- (पु०) लकड़ी या लोहे का मोटा लम्बा टुकड़ा; सलीपट

सिलाब्बु- (क्रि० स०) गाड़ी में लगी नाँह को ठोंकना

सिलार- (वि०) शीलवान, दूसरे का ध्यान रखने वाला

सिलिप- (स्त्री०) सीमेन्ट की पटरी

सिली- (स्त्री०) भूसे का वह लम्बा, सुडौल व समतल ढेर, जो बाँटने में सुविधाजनक होता है; वह पत्थर विशेष, जिस पर अस्तुरा रगड़ा जाता है

सिलेठी- (स्त्री०) सरसों के पौधे का डंठल

सिलोतर- (वि०) समतल, बराबर

सिल्ली- (स्त्री०) बड़ा टुकड़ा (लकड़ी, पत्थर आदि का); अस्तुरा में धार धरने में प्रयुक्त छोटा पत्थर

सिल्लैट- (वि०) मोटी और चौड़ी तथा लाल एवं पीले रंग की (काँच की चूड़ी), जिनका प्रचलन सामान्य जाति की स्त्रियों में अधिक होता है

सिवान- (पु०) पड़ोस का गाँव, सीमा

सिसियाइंधि- (स्त्री०) बदबू

सिहाबु- (क्रि० अ०) प्रसन्न होना, ढिठाई करना

सिहिटि- (स्त्री०) मछली पकड़ने में प्रयुक्त लोहे का काँटा

सींकड़ि- (स्त्री०) जंजीर, पतली जंजीर

सींकि- (स्त्री०) मूजे का सींका

सींकुर- (पु०) गेहूँ आदि की बालियों का ऊपरी भाग, जिसमें नुकीले रोएँ होते हैं

सींग- (वि०) मछली विशेष; सींग

सींगट- (पु०) सियार

सींगौ- (पु०) उजड़ी हुई इमारत के ऊपर का खेत

सीठा- (पु०) सूखा हुआ नीरस अंश

सीड़ा- (पु०) सीलन

सीताफलु- (पु०) कद्दू, कुम्हड़ा

सीतारामी- (स्त्री०) आभूषण विशेष

सीति- (स्त्री०) ओस

सीधा- (पु०) ब्राह्मण आदि को दी जाने वाली भोज्य सामग्री; जैसे- आँटा, दाल, नमक; (वि०) सरल, कमसाहसी

सीप- (स्त्री०) डाल में पका हुआ आम; जलजंतु विशेष

सीमी- (फा० वि०) चाँदी का बना हुआ

सीरि- (स्त्री०) स्वयं जोता हुआ खेत

सीला- (पु०) पके नाज की टूटी हुई बालियाँ आदि, जो फसल काटते समय खेत में गिरती हैं

सीव- (पु०) सीमा, परकाष्ठा

सीसु- (पु०) एक विशेष पदार्थ, जिस पर रखकर गहना गढ़ा जाता है, सिर

सुंदरापा- (पु०) सुन्दरता

सुंदूक- (स्त्री०) लकड़ी का बड़ा बक्सा

सुंबारी- (वि०) सोमावती

सुंबारु- (पु०) अंदाज, सोमवार

सुंबी- (स्त्री०) लोहे या लकड़ी में छेद करने का छोटा औजार

सुअन- (पु०) स्वर्ण, पुत्र

सुआ- (पु०) तोता; वि० पट्टे

सुइया- (वि०) बैल की किस्म विशेष, जिसकी सींगें लम्बी व नोकदार हों

सुइलार- (वि०) नुकीला
सुकवा- (पु०) शुक्र तारा
सुकसुक, सुगसुग- (स्त्री०) शिनाख्त
सुकसुकहा- (वि०) सुस्त एवं अकर्मण्य
सुकुराना- (पु०) काम हो जाने पर दिया गया द्रव्य
सुखतरी- (स्त्री०) स्त्रियों के पुरानी चाल के चप्पल
सुखरसी- (स्त्री०) पानी की सुविधा
सुगना- (पु०) प्यारा तोता, परम प्रिय व्यक्ति
सुजनी- (वि०) बिछौना, जिसमें बहुत पास-पास तागा डाला जाता है
सुजवा- (पु०) बैलगाड़ी का वह पुर्जा, जिसमें पैजनी लगाई जाती है। पीछे वाला सुजवा ऊपर और आगे वाला नीचे लगता है; पशुओं के पैरों का रोग विशेष
सुढ़ियाबु- (क्रि० अ० स०) सोना, सूँड़ हिलाना
सुतकरा- (पु०) चप्पल का देहाती, साधारण और गँवारू संस्करण
सुतना- (वि०) खूब सोने वाला (बच्चा)
सुतरा- (पु०) नाखून के किनारे का पतला चमड़ा, पतली शकरकंद
सुतबु- (क्रि० अ०) सोना
सुतार- (वि०) सीधा, आसान
सुतारी- (स्त्री०) चमड़ा सिलने का सूजा
सुतिया- (स्त्री०) गर्दन में पहनने का आभूषण; वि० हँसुली
सुतुहा- (पु०) बड़ा चम्मच
सुतुही- (स्त्री०) सीपी
सुत्ती- (स्त्री०) नदियों की रेत में प्राप्त होने वाली चम्मच जैसी वस्तु विशेष, जो अनेक कार्यों में प्रयुक्त होती है
सुत्तुरु- (पु०) ध्यान, दिमाग
सुथना- (पु०) सँकरा पायजामा; (उदा०) "सुथना पहिरे हर जोतैं औ पउला पहिरि निरावैं।"
सुदरसन- (पु०) फूल विशेष
सुद्धा, सुधा- (अव्य०) साथ, समेत
सुधि- (स्त्री०) स्मरण
सुनगा- (पु०) कोयल
सुनरइ- (स्त्री०) स्वर्णकारी
सुनरि- (वि०) चुनरी का प्रकार
सुपलिया- (स्त्री०) छोटा सूप
सुपास- (स्त्री०) आराम, सुविधा
सुबहित- (वि०) सुरक्षित
सुबिस्ता, सुबिहता- (स्त्री०) सुविधा
सुबीता- (पु०) व्यवस्था
सुभई- (स्त्री०) विवाह के पूर्व की एक रस्म
सुभा- (स्त्री०) संशय, शक
सुमई- (स्त्री०) कंजूसी
सुम्बा- (पु०) छेद करने में प्रयुक्त छेनी विशेष
सुम्बारु- (पु०) अंदाज, शुमार, सोमवार
सुम्मी- (स्त्री०) सुंबी
सुरइया- (अ० स्त्री०) झुमका
सुरखी- (स्त्री०) लाल रोशनाई, पिसी हुई लाल मिट्टी, जो जुड़ाई में लगती है
सुरमई- (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, जो सुरमे के रंग का होता है
सुरता- (स्त्री०) ध्यान, स्मृति
सुरवा- (पु०) अन्धा व्यक्ति, पेय पदार्थ विशेष
सुरही, सुरा- (वि०) अनब्यायी युवा गाय
सुराक, सुराख- (पु०) सुराग, छेद
सुरेमनि- (स्त्री०) परमप्रिय पदार्थ
सुर्ज- (पु०) सूर्य
सुल्हा- (पु०) अंकुर
सुहारी, सोहारी- (स्त्री०) पूड़ी
सुहेलरी- (वि०) चारा कम खाने वाली तथा अधिक दूध देने वाली (गाय)
सूकसंठु- (वि०) सूखा-सूखा, केवल
सूघरि- (वि०) सुन्दर
सूजी- (स्त्री०) सूई
सूझबु- (क्रि० अ०) दिख पड़ना, विचार में आना
सूटर- (अ० पु०) गर्म बनियान, स्वेटर
सूतबु- (क्रि० अ० स०) सोना, पीटना
सूथनि- (स्त्री०) सँकरा व छोटा पायजामा
सूदक- (पु०) परिवार में प्रभावी वह समय, जब किसी के मरणोपरान्त १३ दिनों तक अशुद्धि रहती है

सूबर- (वि०) सोना की वह किस्म, जिसमें ताँबा मिला होता है

सूम- (वि०) कंजूस (व्यक्ति)

सूल- (स्त्री०) दर्द

सेक्का- (पु०) ज्वार आदि की बाल

सेंगा-पोंगा- (पु०) बहुत-सा सामान

सेंता, स्याँता- (पु०) सरपत या मूँज के भीतर की लकड़ी, सन का डण्ठल

सेंति-सेंति- (क्रि० वि०) मुफ्त, व्यर्थ

सेंदुरी- (वि०) आम की जाति

सेंधउरा- (पु०) सेंदुर रखने का डिब्बा

सेई- (स्त्री०) सेर भर के लगभग की एक तौल, इस तौल का एक लकड़ी का बर्तन

सेउरा- (वि०) चापलूस, खुश करने वाली बातें करने वाला

सेखी- (स्त्री०) गर्व, गर्वीली बातें

सेखुआ- (पु०) साखू

सेड़हा- (वि०) ऊसर एवं दर्रों वाली (भूमि)

सेतुआ- (पु०) भुने हुए गेहूँ, जौ व चना के आटे का मिश्रण, सत्तू; -ही- (वि०) सत्तू पूजन वाली (अमावस्या)

सेनाया- (स्त्री०) चमड़े की पतली डोरी

सेनुरु- (पु०) सिन्दूर

सेन्हिहा- (वि०) सेन्हि (सेंध) काटने वाला

सेथरुआ- मूसल का वह भाग, जो लोहे का बना होता है; वि० सामि

सेउबु- (क्रि० स०) मुर्गी का अण्डे में बच्चा पोषित करना, पालन-पोषण करना

सेर- (पु०) १६ छटाँक की तोल; शेर; शायर

सेरउनिहउबु- (क्रि० स०) पाटा चलाना; वि० ठर्रा देबु

सेरख- (वि०) घमंडी

सेरवा- (पु०) बैलगाड़ी में पहिया रोकने वाली बल्ली, दीपक जलाने में प्रयुक्त मिट्टी की प्याली

सेरसई- (स्त्री०) शीशम

सेराग- (स्त्री०) लाख की चूड़ी बनाने में प्रयुक्त लौह छड़, जिसमें लाख लगाकर गरम किया जाता है

सेरावनि- (स्त्री०) खेतों में मिट्टी बराबर करने का लकड़ी का पाटा

सेलियउबु- (क्रि० स०) कपड़ा आदि पहनना

सेल्हबु- (क्रि० अ०) अकस्मात मर जाना, तकलीफ उठाना

सेल्हा- (पु०) फल या फूल का गुच्छा, जो छेद करके रस्सी आदि में लटकाये गये हों; (वि०) चावल विशेष

सेल्ही- (स्त्री०) बच्चों की सोने की जंजीर

सेवँ- (वि०) कूँड़ में बीज बोने की पद्धति, नमकीन, उथला; वि० कुँड़सार

सेवती- (स्त्री०) फूल विशेष

सेवान- (पु०) सीमान्त (खेत)

सेवारु- (पु०) जल में उगने वाली घास विशेष

सेवाला- (पु०) शिवालय

सेहा- (फा० पु०) स्याहा, हिसाब की समाप्ति

सेहुआँ- (पु०) चमड़े पर पड़े चित्तीदार चिह्न, चर्म रोग विशेष

सैल- (पु०) मौज, पर्वत, डण्डा विशेष

सोंथ- (स्त्री०) सूजन

सोंदिका- (पु०) काफी मोटा गोल गद्दा

सोइँठा- (वि०) अकड़ा हुआ

सोई- (स्त्री०) भूमि, जिसमें धान की खेती होती हो; (अव्य०) वही

सोउतापरे- (अव्य०) रात में सोने के समय

सोक- (पु०) खाट आदि के छेद, शोक

सोकटा- (वि०) पिचका हुआ, चिपटा

सोकन- (वि०) थोड़े-थोड़े काले बालों वाला (बैल)

सोकाड़ा- (पु०) कुएँ के किनारे का वह स्थान, जहाँ ढेकली चलाते समय पानी गिरता है

सोखा- (पु०) भूत, पिशाच आदि के प्रकोप का पता लगाने वाला व्यक्ति

सोग- (पु०) शोक

सोगहग- (वि०) पूरा-पूरा; सीधा; समूचा

सोजनकारी- (फा० स्त्री०) सूई से बनाया गया कपड़े पर बारीक कशीदा

सोजनी- (फा० स्त्री०) सोजनकारी किया हुआ कपड़ा

सोझवा-साही- (वि०) सीधा-सादा
सोनारि- (स्त्री०) स्वर्णकार की स्त्री
सोन्हउला- (वि०) सुनहरा
सोफियाना- (वि०) बढ़िया
सोरहिया- (पु०) मछली मारने वाली एक जाति
सोरहौ- (पु०) मृत्यु के उपरान्त एक संस्कार, जिसमें महाब्राह्मण को प्रत्येक वस्तु १६ की संख्या में दान की जाती है
सोरि- (स्त्री०) जड़
सोरी- (स्त्री०) मादा सुअर
सोलख- (वि०) हल्का, कम (बीमारी)
सोल्हनी- (स्त्री०) गेहूँ के आँटे का खुरदुरा भाग
सोबनार- (पु०) सोने का स्थान
सोहगउली- (वि०) सौभाग्यवती, सुहागिन
सोहदई- (अ० स्त्री०) बदतमीजी
सोहदा- (अ० वि०) नालायक, पाजी
सोहबु- (क्रि० स० अ०) निराई करना, सुशोभित होना
सोहनी- (स्त्री०) निराई के समय गाया जाने वाला गीत
सोहबति- (फा० स्त्री०) साथ
सोहरउबु- (क्रि० स०) सहलाना
सोहरति- (फा० स्त्री०) प्रसिद्धि, नाम
सोहरा- (पु०) चर्चा, प्रचार
सोहाबु- (क्रि० अ०) अच्छा लगना
सोहारी- (स्त्री०) बड़ी व पतली पूड़ी
स्टाट- (स्त्री०) चमरौधे जूते की ऐंड़ी में लगने वाला काँटेदार लोहे का पुर्जा
स्याँट- (स्त्री०) थन से एक बार खिंचे हुए दूध की माप, दूध की धार; -पचारबु- (क्रि०स०) दूध की धार निकालना
स्याँबरु- (पु०) रूई का बड़ा वृक्ष, सेमल
स्याबस- (फा० अव्य०) शाबास !
स्यावा- (स्त्री०) सेवा; (भू० क्रि०) लालन-पालन किया
स्टिबल- (वि०) रेशम जैसा चमकदार (सूती कपड़ा)
स्यंदनु- (पु०) रथ
स्याँक्का- (पु०) खेतों में पानी भरने से जमी हुई परत; वि० कठा
स्याल्ह- (स्त्री०) बोने के बाद सींचने की सुविधा के लिए खेत में बनाई गयी विभाजक रेखा
स्याबँ- (वि०) उथला
स्यावरि- (वि०) कुछ कच्ची (रोटी); वि० आलि
स्याह- (वि०) उथली (जुताई)
स्योरहा- (वि०) अपरिपक्व, चापलूस
स्वान- (स्त्री०) सोना; (सं० पु०) कुत्ता
स्वाभी- (स्त्री०) रोशनी, प्रकाश
स्वाहबु- (क्रि० स०) उचित प्रतीत होना
हँकड़बु- (क्रि० अ०) झगड़ना
हँकनी- (स्त्री०) बैलों को हाँकने का एक तरह का डण्डा, जिसमें एक कील लगी रहती है
हँकरबु- (क्रि० स०) हाँक देकर बुलाना
हँकारी- (स्त्री०) निमन्त्रण, न्यौता
हँड़कोली- (स्त्री०) छोटी हाँड़ी
हँड़िया- (स्त्री०) हण्डी
हँड़ुहउबु, हँढ़वाइब- (क्रि० स०) स्त्री का पर पुरुष-प्रसंग कराना, बेइज्जती कराना
हँथवड़- (स्त्री०) वह टेढ़ी लकड़ी, जिसे पकड़कर जाँत घुमाया जाता है
हँथोड़ा- (पु०) हाँथ का गहना विशेष
हँफनी- (स्त्री०) श्वाँस की बीमारी
हँसउवा- (पु०) हँसी, बदनामी
हँसमुसकी- (स्त्री०) हँस-हँसकर बात टालने की आदत
हँसा- (पु०) कँटीला झाड़
हँसारति- (स्त्री०) हँसी
हँसि- (वि०) समान
हँसुआ- (पु०) हँसिया
हँसुली- (स्त्री०) गर्दन का आभूषण विशेष
हँसोड़- (वि०) जिसे हँसी करने का शौक हो
हइँचनी- (स्त्री०) हत्थी
हइँचलाबादु- (पु०) हंगामा, शोरगुल
हरबी-दइबी- (स्त्री०) आकस्मिक घटना, आपत्ति
हड़मस- (पु०) द्वेष

हइलरि- (स्त्री०) पारिवारिक सदस्यों का झुण्ड, शोरगुल

हइला- (पु०) बकरी

हइलाबु- (क्रि० स० अ०) बकरी भगाना, हाँकना, तालाब में कुलेल करते नहाना

हई- (स्त्री०) हानि, दूसरे के खेत या पेड़ से नाज, फल आदि की चोरी

हउँकबु- (क्रि० स०) हवा करना; वि० धउँकबु

हउँकनि- (स्त्री०) हवा करने की मशीन, जो लुहारों के यहाँ प्रयुक्त होती है; धउँकनी

हउक्का- (पु०) शंका, आशंका, लालच

हउचियाबु- (क्रि० अ०) घबरा जाना, दंग रह जाना

हउदा- (पु०) बड़ी नाँद

हउदु- (पु०) लम्बा-चौड़ा घाव, गड्ढा

हउफा- (पु०) जनश्रुति

हउला- (अ० पु०) दहशत, भय; -पैठबु- बैठबु (मु०) मन में दहशत घर कर जाना

हउलू- (वि०) जो अपना काम बेढंगे हिसाब से करे

हउवा- (पु०) एक कल्पित वस्तु या नाम, जिसका नाम बच्चों आदि को डराने के लिए लिया जाता है

हउसा- (पु०) फल आदि का गुच्छा

हउहारा- (पु०) जोर की हवा

हकतलफ- (पु०) अधिकार का ह्रास

हकपकाबु- (क्रि० अ०) घबरा जाना

हकसफा- (अर० पु०) मुकद्दमा, जिसमें प्रथमाधिकार का निश्चय हो; हकशफा

हक्का-बक्का- (वि०) चकित, घबराया हुआ

हगना- (वि०) बहुत टट्टी करने वाला

हगसउँचा- (वि०) अशुद्ध, टट्टी करके पानी न लेने वाला

हगास- (स्त्री०) मल त्याग की इच्छा

हच्चा- (पु०) पहिए को गड्ढे में से लगा धक्का या झटका

हजरत- (पु०) चालाक व्यक्ति

हजारदाना- (फा० पु०) एक पौधा, हजार मनकों की माला

हजारा- (फा० पु०) छिड़काव के काम आने वाली एक बाल्टी, जिसमें बहुत से छेदों वाला नल लगा रहता है; वि० हजार का, गेंदा की उपजाति, जाल विशेष

हजूरे- (फा० क्रि० वि०) सामने, सम्मुख

हटकबु- (क्रि० स०) मना करना, रोकना

हड़उबु- (क्रि० स०) खेतों में चिड़िया उड़ाना या भगाना

हड़कबु- (क्रि० स०) डाँटना, धमकाना

हड़गर- (वि०) जिसकी हड्डियाँ मोटी हों

हड़होरबु- (क्रि० स०) ढूँढना, मिलाना

हड़ावरि- (स्त्री०) जानवरों की हड्डियाँ या शव

हड़ाहड़ाई- (वि०) प्रज्वलित अग्नि का रूप विशेष

हड़िया- (स्त्री०) कोआ

हतक- (स्त्री०) अपमान

हता- (सहा० क्रि०) था

हत्था- (पु०) खेत सींचते समय पानी उलीचने का पात्र

हत्यारु- (वि०) हत्यारा

हथउरु- (पु०) बड़ा हथौड़ा; वि० मारतौल

हथपानु- (पु०) अंगुलियों का गहना, जिसमें शीशा लगा होता है; आरसी

हथफूल- (पु०) हाथ का गहना विशेष

हथार- (वि०) हाथ वाला; - पयार- हाथ-पैर से मजबूत एवं लम्बा-चौड़ा

हथियउबु- (क्रि० स०) हस्तगत करना, अधिकार जमा लेना

हथिया- (पु०) चरखा घुमाने वाला हत्था

हदस- (स्त्री०) डर, भय

हदहद- (वि०) छोटा (व्यक्ति), छोटे कद का, अधिक मुलायम, दलदल

हद्द- (स्त्री०) सीमा; वि० हदि

हद्दादी- (अ० स्त्री०) लुहार का काम

हनबु- (क्रि० अ० स०) कसना, मार देना

हनाबु- (क्रि० अ०) स्नान करना, नहाने का अपभ्रष्ट रूप

हन्नदि- (क्रि० वि०) हन की आवाज के साथ

हत्रहवा- (पु०) तीन तारों का समूह, जो एक सीध में रहते और देहात के लिए रात में घड़ी का काम देते हैं, हत्री–हत्रा

हत्रा- (पु०) हिरन

हत्री-हत्रा- (पु०) तारा–समूह विशेष, हिरनी–हिरन

हबकबु- (क्रि० स०) जल्दी–जल्दी खाना, मजबूती से पकड़ना

हबड़ा- (पु०) कीचड़; (वि०) बड़े दाँतों वाला

हबस- (फा० स्त्री०) उत्कट इच्छा; हवस

हमजोली- (अव्य०) एक वय के, साथी

हमहमु- (पु०) प्रचार–प्रसार, प्रशंसा, चर्चा

हमासुमा- (फा० वि०) सर्वसाधारण, हम जैसे (लोग)

हम्ब्याल- (स्त्री०) हमेल

हयकड़- (वि०) मजबूत, प्रभावशाली

हयचड़- (वि०) कठिन काम करने वाला

हयराठिया- (वि०) सब कुछ सहन करने वाला

हया- (स्त्री०) लज्जा

हयि- (सहा० क्रि०) है;(अव्य०) जानवरों को डाँटने का शब्द या आवाज

हरउटी- (स्त्री०) वह खेत, जहाँ हल चलता हो

हरक्कति- (स्त्री०) हर्ज, बाधा; अपच

हरगहना- (पु०) अनाज विशेष

हरगिज- (अव्य०) कतई, बिल्कुल

हरजाई- (वि०) पुंश्चली, पर पुरुषगामिनी, बदचलन; वि० हरिजइली

हरपारउेरी- (स्त्री०) एक फल विशेष

हरबर- (वि०) जल्दी में

हरबरहा- (वि०) जल्दबाज

हरबराबु- (क्रि० अ०) जल्दबाजी करना; पेट-मल त्याग की उत्कट इच्छा होना

हरबा- (पु०) आदत, अभ्यास, हथियार

हरबोंग- (वि०) हड़बोंग, गँवार

हरमिंजी- (स्त्री०) विलायती खाद

हरमुनिया- (स्त्री०) हारमोनियम

हरवा- (पु०) जोतने के अन्त में बना हुआ कूँड़, हराई का अन्तिम थोड़ा अंश

हरवाहु- (पु०) हल चलाने वाला

हरवाही- (स्त्री०) हल चलाने का कार्य

हरहँटपनु- (पु०) छूटते ही भागने वाली प्रवृत्ति

हरहँटी- (वि०) मौका मिलते ही भागने वाली गाय, भैंस

हरहा- (पु०) पालतू पशु; -घर- कांजी हाऊस; -मुंशी- कांजी हाऊस का मुंशी

हरौंस- (स्त्री०) ज्वर का ताप

हराई- (स्त्री०) जोतते समय खेत को विभाजित किये गये हिस्से

हरारति- (स्त्री०) गर्मी, ज्वर, असर

हरावति- (स्त्री०) हल चलाने का मुहूर्त

हरावनि- (स्त्री०) मजबूरी

हरिस- (स्त्री०) हल में लगने वाली लम्बी बाँस या लकड़ी की बल्ली; वि० हर्स

हरी- (स्त्री०) असामी का अपना हल–बैल ले जाकर जमींदार का खेत मुफ्त जोतने की पद्धति; (वि०) हरे रंग की

हरीरा- (पु०) प्रसूता के लिए सोंठ हल्दी, मेवा आदि को गुड़ में पकाकर बनाया जाने वाला पेय

हरु- (पु०) हल; -**नाधबु**- (क्रि० स०) हल मचियाना

हरेरी- (स्त्री०) फसलों की हरियाली; हरी घास

हरैली- (स्त्री०) हल से सम्बन्धित एक छोटी लकड़ी; चिड़िया विशेष

हरोही- (स्त्री०) कृषि

हरौ- (पु०) संतोष, सहन

हर्राफ- (वि०) दुष्ट, शैतान

हर्स- (स्त्री०) हल में लगने वाली

हलउबु- (क्रि० स०) हिलाना

हलक- (स्त्री०) गला (भीतरी)

हलका- (पु०) क्षेत्र, मंडल; (वि०) हल्का

हलबलि- (वि०) शीघ्रता करने वाली; (स्त्री०) शोरगुल

हलबली- (स्त्री०) जल्दबाजी, शीघ्रता; (वि०) हलबलु

हलब्बी- (वि०) बढ़िया, बड़ा

हलहलाक- (क्रि० वि०) कसकर, तेजी से

हलानि- (स्त्री०) नदी या तालाब में पाँव–पाँव चलने की सम्भावना

हलालखोर– (फा० वि०) मांसाहारी; बदमाश
हलुक– (वि०) हल्का; नारी या मूठी– (स्त्री०) हल्की जुताई हेतु हल की मुठिया को ढिलाई से पकड़ने की पद्धति
हल्लोलबु– 'अल्होरबु' देखिए
हलोहल्ल– (वि०) बहुत अधिक (फसल, पानी आदि)
हल्ट– (पु०) नुकसान; (वि०) बन्द; (स्त्री०) रेलगाड़ी के रुकने का छोटा स्थान
हल्ला– (पु०) शोर, -करबु– (क्रि० स०) डाँटना
हल्लु– (वि०) थकित, परेशान
हल्लोकु– (पु०) संसार
हल्वालबु– (क्रि० स०) फसल के मड़े हुए रूप को हिलाकर अनाज निकालना
हवलदिल– (फा० वि०) जिसका मस्तिष्क असन्तुलित या बेचैन हो, हतकंप
हवाल– (अ० पु०) हाल, समाचार, स्थिति
हवेल– (स्त्री०) गर्दन का आभूषण विशेष
हसीर– (अ० स्त्री०) खजूर की चटाई
हस्ती– (स्त्री०) शक्ति, हैसियत
हहक– (स्त्री०) स्नेहपूर्ण उत्साह, वियोग जनित इच्छा
हहर– (स्त्री०) निचली जमीन (धान हेतु)
हहरबु– (क्रि० स०) उत्कट इच्छा करना, किसी पदार्थ को देखकर आवश्यकता से अधिक कहना
हहान–खहान– (वि०) शोकाकुल स्थिति
हाँक– (स्त्री०) रोब, प्रभाव, आवाज;–लगउबु– (भु०) ऊँचे स्वर से पुकारना; डाँक– प्रतिस्पर्द्धा
हाँकड़– (वि०) तेज, घमंडी
हाँड़– (पु०) मोटी हड्डी
हाँड़ी– (स्त्री०) मिट्टी की बड़ी पतीली
हाँसिल– (अ० वि०) प्राप्त, नतीजा
हाँही– (स्त्री०) स्वीकृति, हामी
हाजमा– (अ० पु०) पाचन–शक्ति
हाड़ा– (पु०) ततैया, बर्र
हाड़ी– (स्त्री०) कटहल के भीतर की लम्बी लकड़ी
हाता– (पु०) अहाता; जेल में पैसे देकर काम से मिली मुक्ति
हाथा– (पु०) लकड़ी का बर्तन, जिसमें लम्बा हत्था लगा रहता है और जिससे सिंचाई होती है; पोनिया विशेष
हाथीगज– (पु०) एक बहुत बड़ा पत्ता, जो चोट में दवा का काम करता है
हादिक– (पु०) औषध करने वाला, जिसे रोगों का ज्ञान हो
हाफा दड़या– (स्त्री०) कातर क्रन्दन
हाबड्डु, हामड्डु– (पु०) ठोंकने के लिए मोचियों का यंत्र विशेष; वि० साँट, साँति
हायल– (वि०) बीता हुआ
हारु– (वि०) हार, खेतों की दिशा
हारे–अटके– (अव्य०) आवश्यकता पड़ने पर; वि० हारे–खाँगे
हाल– (स्त्री०) पहिया के ऊपर चढ़ी हुई लोहे की पट्टी; समाचार
हाली– (क्रि० वि०) शीघ्र
हाहू– (पु०) वंस का प्रतीकात्मक नाम
हिंदवाना– (पु०) तरबूज; वि० कलिंदा
हिंवार– (स्त्री०) बर्फीली हवा
हिंसका– (पु०) अपेक्षा, किसी के कार्य करने की प्रतीक्षा;–होरी– (अव्य०) एक–दूसरे को देखकर; दांजी– प्रतिस्पर्द्धा
हिकना– (वि०) निर्लज्ज
हिकमति– (अ० स्त्री०) बुद्धि, चातुर्य
हिकारति– (स्त्री०) अपयश, बदनामी
हिगरबु– (क्रि० अ०) स्पष्ट होना, अलग मालूम पड़ना
हिगारबु– (क्रि० स०) अलग करना, छाँटना
हिट्ठि– (स्त्री०) हठ
हिट्ठी– (वि०) हठी, हठ करने वाला
हितलगुआ– (वि०) हितैषी
हितुआ– (पु०) मित्र, साथी
हिनमिनहा– (वि०) छोटा तथा दुबला–पतला
हिनवता– (स्त्री०) नम्रता
हिपाजति– (अ० स्त्री०) देखरेख, सुरक्षा
हिब्बा– (पु०) दान; –नामा– दानपत्र
हियाँ– (अव्य०) यहाँ
हियाब– (स्त्री०) हिम्मत

हियारी- (स्त्री०) स्मृति, समझ
हिरकबु- (क्रि० स०) जानवरों को खेद लाना
हिरगिज- (अव्य०) कतई, बिल्कुल
हिरास- (वि०) हताश
हिरिक- (क्रि० वि०) छेककर
हिरोंह- (स्त्री०) कै करने की इच्छा
हिलवद्दारबु- (क्रि० स०) पानी को हिलाना या शांति भंग करना
हिलगबु- (क्रि० अ०) अटकना, लटकना
हिलगउबु- (क्रि० स०) लटकाना
हिलबु- (क्रि० अ०) पशुओं या बच्चों का किसी के प्रति अधिक प्रेमाबद्ध या आकर्षित होना, हिलना
हिला- (अव्य०) बकरी को भगाने की आवाज
हिल्ला- (पु०) सम्बन्ध, सिलसिला, बहाना, रोजगार या व्यवसाय
हींक- (स्त्री०) दुर्गन्ध, इच्छा
हींठबु- (क्रि० अ०) बालकों का चलना
हींसा- (पु०) हिस्सा
हीक- (स्त्री०) पूरी इच्छा
हीकाबोर- (क्रि० वि०) जितनी इच्छा हो
हीर- (पु०) असली या बहुमूल्य भाग, हीर तत्त्व या सन का रेशा
हील- (वि०) गीला; (अं० स्त्री०) ऐंड़ी
हीला- 'हिल्ला' देखिये
हुँकरबु- (क्रि० स०) गाय का बोलना
हुँकारी- (स्त्री०) हाँ-हाँ करके दी गयी स्वीकृति, हामी; समर्थन
हुँड़ार- (पु०) पानी में रहने वाला एक प्रकार का साँप या मछली, जो प्रायः झुण्ड रूप में ऊपर मुँह करके कूदते तथा तैरते रहते हैं
हुँड़ी फूंदा- (पु०) गले के फीते की नोक की एक घुण्डी
हुँदो-तुंदा- (पु०) कहा-सुनी, रस्सा-कसी
हुक्केरी- (वि०) हुक्का पीने वाला
हुचुकी- (स्त्री०) हिचकी
हुज्जबु- (क्रि० अ०) बुलाना
हुज्जति- (अं० स्त्री०) बहस, प्रवाद, तर्क
हुज्जती- (वि०) बहस या तर्क करने वाला
हुड़कबु- (क्रि० अ०) किसी की याद में विकल होना
हुड़दंगा- (पु०) व्यर्थ का शोरगुल या हँसी-मज़ाक
हुड़ी- (स्त्री०) ऊँट
हुतका- (पु०) घूँसा
हुत्ता- (अव्य०) अउजी या बारी
हुड़्यासबु- (क्रि० स०) सिर से धक्का देना
हुण्डा- (पु०) पानी पीने में प्रयुक्त मिट्टी का बर्तन
हुदकारबु- (क्रि० स०) प्रेरित करना
हुद्दा- (पु०) पद, ओहदा, अधिकार
हुन्ठा- (अव्य०) साढ़े चार
हुन्नर- (पु०) गुण, विद्या
हुमकबु- (अर० क्रि० अ०) उल्लसित होना; उछलना, ठुमकना; उठना
हुमसबु- (क्रि० अ०) उठना
हुम्मी-हुम्मा- (पु०) एक-दूसरे को खूब मारने की प्रतिस्पर्द्धा
हुरफबु- (क्रि० स०) डाँटना, फटकारना
हुरमत- (स्त्री०) हिम्मत
हुरमति- (स्त्री०) इज्जत
हुराह- (वि०) तंग, कोताह, कम
हुरियउबु- (क्रि० स०) बाध्य करना, ढकेलना, प्रोत्साहित करना
हुर्र- (वि०) गायब, लुप्त
हुर्रे- (अव्य०) गर जानवरों को सहवास हेतु प्रेरित करने की आवाज
हुर्राबु- (क्रि० अ०) दौड़ पड़ना, विरोध में बोल पड़ना
हुलकारबु- (क्रि० स०) प्रेरित करना
हुलसबु- (क्रि० अ०) प्रसन्न या उत्साहित होना
हुलास- (स्त्री०) प्रसन्नता, उल्लास
हुलिया- (अ० स्त्री०) व्यक्तिगत चिह्न, मुखमण्डल; -बिगारबु- (मु०) "चेहरे का रंग फीका कर देना"
हुलुका- (स्त्री०) बीमारी; वि० हुलका
हुलुम-हुलुम्मा- (पु०) आन्दोलन, विप्लव
हुवाँ- (सर्व०) वहाँ
हुसकउबु- (क्रि० स०) प्रेरित करना, भगाना
हूँसा- (पु०) कुहनी का धक्का
हूक- (स्त्री०) दर्द, जो रह-रहकर उठे; आवाज

हूरा- (पु०) लाठी का मोटा वाला सिरा
हूल- (स्त्री०) झटके का दर्द;-बु- (क्रि०स०)चुभो देना, धक्का दे देना
हूस- (वि०) उजड्ड, बेढंगा
हूही- (स्त्री०) अफवाह, झूठी खबर
हेंत- (अव्य०) प्रेम, वास्ते, लिए
हेकड़ी- (स्त्री०) गर्व, अकड़; (वि०) हिम्मती
हेङ्ग- (पु०) जुते खेत की मिट्टी बराबर करने में प्रयुक्त लकड़ी का पाटा
हेठ- (वि०) नीचा
हेठी- (स्त्री०) अपयश, बदनामी
हेमु- (पु०) सोना; गरिमा
हेरवउबु- (क्रि० स०) खो देना, ढुँढ़वाना
हेरानि- (वि०) खोयी हुई
हेल- (वि०) जिसकी कोई चिन्ता न करे, निराद्रित; (अं० पु०) नर्क, ओला
हेला- (पु०) मेहतर, झुण्ड
हेली- (स्त्री०) बैलों का झुण्ड
हेवँ- (अव्य०) बैलों को रोकने की बोली
हेवंत- (पु०) हेमन्त ऋतु; वि० ह्यावँत
हैंचल- (वि०) जो कष्ट सह सके
हैकड़- (वि०) शक्तिशाली, परिश्रमी, दुःख या विरोध का सामना करने वाला
हैबति- (स्त्री०) आश्चर्यजनक घटना
हैराठिया- (वि०) जो कठिन से कठिन कार्य कर सके
हैवान- (पु०) पशु
हैहँस- (पु०) निरन्तर या छोटे-छोटे कष्ट
होनी- (स्त्री०) भवितव्यता
होबिता- (स्त्री०) भावी घटना; वि० होनी
होरसा- (पु०) छोटी पत्थर की चौकी, जिस पर चन्दन आदि घिसा जाता है
होरिल- (पु०) बालक
ह्यावँतु- (पु०) हेमन्त ऋतु
ह्याला- (पु०) झुण्ड, समूह
ह्वार- (अव्य०) आदि, वगैरह
ह्वारा- (पु०) भुने हुए हरे चने के बूट (फलियाँ); वि० होला
ह्वाहरि- (स्त्री०) शोरगुल